संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के
51वें आचार्य पदारोहण दिवस (मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया) एवं **अर्हं योग प्रणेता**
पूज्य मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी महाराज के रजत दीक्षा वर्ष
(माघ सुदी पूर्णिमा वीर नि. सं. 2548, सन् 2022) के पावन अवसर पर प्रकाशित

ग्रंथांक : 14

रामकथा

रचयिता
मुनि श्री प्रणम्य सागर

आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव

कृति : **रामकथा**

आशीर्वाद : परम पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

मंगल देशना : अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज

अधिकार : सर्वाधिकार सुरक्षित किसी को भी प्रकाशित करने का अधिकार है। किताब का स्वरुप, ग्रन्थ नाम, लेखक संपादक एवं स्तर परिवर्तन न करें। प्रकाशन से पहले लिखित अनुमति आवश्यक है।

पुण्यार्जक : **श्री विकास जैन, अंशु जैन, तनिष्क जैन, अर्हं जैन**
जाग्रति एन्क्लेव, दिल्ली

संस्करण : प्रथम, फ़रवरी 2023

प्रतियाँ : 1000

मूल्य : रुपये 160/- मात्र

प्रकाशक : आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव
मोबाइल: 9425837476

प्राप्ति स्थान : 1. आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव,
मोबाइल : 9425837476 (नवीन जैन)

2. आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति
109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन
मोबाइल : 9425092483 (शैलेन्द्र जैन)

मुद्रक : अरिहंत ग्राफ़िक्स, दिल्ली
दूरभाष - 9958819046

प्रस्तावना

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, सरस्वती पुत्र अर्हं ध्यान योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर महाराज जी ने बरेला, जबलपुर में मार्गशीर्ष एकादशी 2022, से ग्यारह दिन तक सुप्रसिद्ध सुपरिचित सिद्ध प्रभु श्री राम के चारित्र का गुण गान किया। यह गुरुदेव द्वारा प्रथम बार भगवान श्री राम की कथा की वाचना हुई जिसे बरेला में जैन अजैन समुदाय के व्यक्तियों ने उल्लास पूर्वक श्रवण किया। गुरुदेव ने बताया कि लगभग 300 रामायण प्रचलित हैं जो अनेक भाषाओं में लिखी गईं, जिनके माध्यम से भगवान श्री राम का चारित्र गाया जाता है। **पउम चरिउ** जैन संप्रदाय का प्राकृत भाषा में प्राचीन ग्रंथ है जिसमें रामायण का व्याख्यान किया गया है। तत्पश्चात आचार्य रविषेण द्वारा पद्मपुराण की रचना हुई जिसमें श्रीराम के चारित्र का संपूर्ण वर्णन है।

सभी सुधी श्रावक जन का यह असीम पुण्य का उदय रहा जो पूज्य मुनि श्री प्रणम्यसागर महाराज जी के मुखारविंद से **अनेकांतिक दृष्टि-कोण** से भगवान श्री राम के चारित्र को श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ। राम-कथा पर गुरुदेव की देशना का लिपिबद्ध होना, जैन-जैनेतर समाज की वर्त्तमान एवं भावी पीढ़ी को ज्ञानार्जन हेतू अपूर्व अवसर प्रदान करेगा। गुरुदेव की इस अभूतपूर्व वाचना में भगवान श्री राम के जीवन के वह पहलू उजागर हुए हैं जिनसे सभी अनभिज्ञ हैं।

उदाहरणार्थ—

कैकयी द्वारा श्री राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास नहीं मांगना, केवल भरत के लिए राज्य मांगना —- एक ऐसा चिंतन गुरुदेव द्वारा जिसने सभी के पूर्वोपार्जित ज्ञान की जड़ें हिला दीं। कैकयी के प्रति संपूर्ण दृष्टि-कोण को बदल दिया। यह तो मात्र एक उदाहरण है।

भगवान श्री राम ने शबरी के झूठे बेर नहीं खाए। आर्यिका माता शबरी को आहार कराने के पश्चात चौके में श्री राम ने, सीता और लक्ष्मण ने भोजन ग्रहण किया था।

सीता के भामंडल के रुप में भाई का होना, जन्म होते ही हरण हो जाना, देव रक्षित दोनों धनुषों पर श्रीराम और लक्ष्मण द्वारा प्रत्यंचा चढ़ाना, यह वर्णन केवल जैन रामायण में ही मिलता है। बिना किसी पूर्वाग्रह के अर्जित ज्ञान, ज्ञान की वृद्धि में ही कारण बनता है अतः सभी खुले हृदय से जैन रामायण का पठन-पाठन करें, श्रवण करें।

सीता हरण किसी सोने के हिरण के कारण नहीं हुआ। जब लक्ष्मण चंद्र नखा के पति खर दूषण से युद्ध करने जाते हैं तब वह राम से कहकर जाते हैं कि अगर मुझे आवश्यकता होगी तो मैं सिंहनाद करके आपको बुला लूंगा। रावण अपनी विमान से वहां से गुजरता है और सीता को देख, उस पर मोहित हो जाता है। रावण अपनी अवलोकिनी विद्या से लक्ष्मण की बात जान लेता है और सिंहनाद करता है जिससे श्री राम लक्ष्मण की मदद करने चले जाते हैं। तब रावण सीता का हरण कर लेता है। जैन रामायण में कहीं भी सोने के हिरण का व्याख्यान नहीं है।

इस प्रकार गुरुदेव द्वारा रामायण का एक मनोरंजक कथानक के रूप में नहीं, एक शिक्षाप्रद कथा के रूप में भगवान श्री राम के जीवन चारित्र का गुणगान किया गया है। समर्पण बलिदान सिखाता है तभी श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। पिता के वचन के लिए समर्पित श्री राम ने सभी ऐश्वर्य और सुखों को स्वेच्छा से त्याग दिया।

लक्ष्मण और सीता का त्याग मर्यादा पालन करने का उत्कृष्ट उदाहरण है। वह चाहते तो राजमहल में रह कर राजसी सुखों का आनंद ले सकते थे। लक्ष्मण के भातृ स्नेह और सीता के पति प्रेम का गुरुदेव ने बड़ा मार्मिक वर्णन किया है।

रामायण के सभी पात्रों से कुछ न कुछ शिक्षा अवश्य मिलती है। यहां तक की गुरुदेव कहते हैं कि पंचम काल में रावण से भी सीख ले लें

तो बहुत बड़ी बात होगी। पराई स्त्री को बिना इच्छा वरण न करने का व्रत उसने अंतिम समय तक निभाया।

गुरुदेव कहते हैं प्रथमानुयोग के ग्रंथों का सभी को स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। इन महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने से हमारा मानस भी कष्ट सहन करने के लिए, किसी भी परिस्थिति में भयभीत न होने के लिए और धैर्यवान बनने के लिए प्रेरित होता है।

परम पूज्य मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज जी की मंगल वाणी ने जैन अजैन सभी को आग्रह रहित होकर जैन रामायण सुनने व पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है।

पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों को लिपिबद्ध करने का परम सौभाग्य मुझे मिला जिसने जीवन को जीने का लक्ष्य प्रदान कर दिया। इस पुनीत कार्य के माध्यम से गुरु सेवा करने का स्वर्णिम सुअवसर मिला है जिससे मेरा रोम रोम गुरुकृपा का ऋणी है, अनुगृहित है। यही भावना करती हूं कि गुरुदेव की मंगल देशना से सभी लाभान्वित हो और स्वयं को मोक्ष मार्ग पर अग्रसर करें। इन्हीं भावनाओं सहित परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के चरणों में कोटि कोटि वंदन एवं गुरुदेव मुनि श्री प्रणम्यसागर महाराज जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन निवेदित करती हूँ

टीम अर्हं
कमल नयनी जैन

अनुक्रमणिका

अनेकान्त दृष्टिकोण से जैन रामायण	1
राजकुमारी सीता के स्वयंवर का महोत्सव	27
श्रीराम जी संग सीता, लक्ष्मण का भी वनगमन	52
श्री राम को वनवास दिया गया या खुद स्वीकारा	80
श्री राम, सीता, लक्ष्मण का दण्डक वन की ओर गमन	99
रावण का सीता को देख मोहित होना	129
रावण द्वारा नकली सिंहनाद	159
विरह में व्याकुल सीता-हनुमान का संवाद	190
रावण का वध	226
लव, कुश का जन्म	254
सीता की अग्नि परीक्षा	283

अनेकान्त दृष्टिकोण से जैन रामायण

अगहन मास प्राकृत भाषा का शब्द है

श्री राम चरित्र कीर्तन एक लघुकाय ग्रंथ है। जिसके माध्यम से हम उन सिद्ध प्रभु श्री राम भगवान की कथा का श्रवण करेंगे, जिनके बारे में हर कोई जानता है। अनेक तरह की रामायण इस संसार में प्रचलित हैं। लगभग 300 तरह की रामायणों के माध्यम से श्री राम का चरित्र गाया जाता है। ऐसे श्रीराम के चरित्र कीर्तन करने के लिए, उनके गुणों का गान करने के लिए, आज हम सभी लोग भी अपना मन बनाए हैं और यह मन बरेला के अन्दर सर्वप्रथम बना है। जहाँ अनेक जैन, अजैन, सभी श्रावक इस मार्गशीर्ष माह में जिसे हम **अगहन** का माह कहते हैं, इस माह में विशेष रुप से कुछ ऐसे आयोजन करने की भावना अपने आप बलवती हो जाती है। जब हम हिंदी तिथि के अनुसार इन मासों का कुछ विज्ञान समझते हैं, कुछ वर्णन करते हैं तो उसमें मार्गशीर्ष माह का भी अपना एक विशेष महत्व होता है। आप सभी जानते हैं कि भारतीय संस्कृति के अनुसार चैत्र मास से वर्ष का प्रारंभ माना जाता है और चैत्र मास के उपरांत जब यह अगहन का मास आता है, तो तब तक यह नौवां महीना कहलाता है। अगर आपने कभी महीने पढ़ें हो तो आप गिन सकते हैं। चैत्र, बैशाख, जेठ, आषाढ़, सावन, भादो, क्वार, कार्तिक और यह नौवें नम्बर पर आता है अगहन। आपको पता नहीं होगा कि इसे अगहन क्यों कहते है? यह अगहन एक प्राकृत भाषा का नाम है। जो बोली भाषा के रूप में जानी जाती है। **अग्रगण्य** इस शब्द से यह **अगहण** बनता है और इस अग्रगहण शब्द से यह अगहन बोलने में आने लग जाता है। लेकिन इस महीने को सभी महीनों में एक श्रेष्ठ मास के रूप में माना जाता है और जो लोग श्रीराम से परिचित होंगे वह इस बात से भी परिचित होंगे कि यह वही महीना है जिस महीने में श्री राम और सीता का विवाह हुआ था। यह बात आप लोगों को संज्ञान में नहीं होगी। लेकिन इस माह की यह विशेषता है और इस माह

की जो यह एकादशी आज तिथि है, यह भी अपने आप में एक विशेष महत्व रखने वाली तिथि कहलाती है। कई लोग इस तिथि को एक उत्पन्ना देवी की तिथि के रूप में मानते हैं। लेकिन हमारे लिए यह तिथि श्री राम की कथा को उत्पन्न करने वाली तिथि के रूप में हमारे सामने है, जो एकादशी तिथि के रूप में है। जब कुछ उत्पन्न हो और उस उत्पत्ति के माध्यम से जगत का कल्याण हो तो इस तिथि को उत्पन्ना तिथि के रूप में मनाया जाता है। आज यह तिथि आपके सामने इसी रूप में सार्थक हो रही है और इस राम चरित्र की कथा को आगे बढ़ाते हुए हम सर्वप्रथम 24 तीर्थंकर भगवान को और मां सरस्वती को नमस्कार करके इस कथा को आगे बढ़ाते हैं।

चौबीसों जिनराज को, प्रणमु बारम्बार।
राम-चरित वर्णन करूँ, तुच्छ बुद्धि अनुसार॥
सरस्वती मां शारदे, तुमको सुमरूँ आज।
वीर प्रभु रखना मेरी, लाज सभा में आज॥
श्री पद्मपुराणाधार से ही, कुछ छन्द बनाना चाहता हूँ।
यदि भूल कहीं पर रह जाए, गुणियों से क्षमा चाहता हूँ॥
जिस वंश में हुए आदि प्रभु जी, भरतेश आदि वैभवधारी।
उस कुल में राम ने जन्म लिया, दशरथ गृह में भव दुःखहारी॥
अवधेश राय के महलों में, थीं चार राणियाँ रूप भरी।
कौशल्या, सुमित्रा, कैकेई, सुप्रभा निछावर सब नगरी॥
कौशल्या के श्रीराम हुए, लक्ष्मण की सुमित्रा थी माता
शत्रुघ्न सुप्रभा के सुत थे, कैकेई के भरत सब सुखदाता॥

तीर्थंकर ऋषभदेव इक्ष्वाकु वंश के प्रथम महापुरुष

जिस वंश में हुए आदि प्रभु जी, आदिनाथ भगवान, ऋषभदेव जिनकी गौरव गाथा विष्णु पुराण में शिव पुराण में उपलब्ध होती है और जिन ऋषभदेव को प्रथम तीर्थंकर कहा जाता है, वह इक्ष्वाकु वंश के सर्वप्रथम महापुरुष थे। उसी इक्ष्वाकु वंश का यह चलन, यह प्रचलन अनेक तीर्थंकरों से होता हुआ मुनिसुव्रतनाथ भगवान तक पहुँचा और

मुनिसुव्रतनाथ भगवान के काल में श्री राम, राजा दशरथ के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए, यह बात सभी को ज्ञात है। श्री राम इक्ष्वाकु वंश के ही वंशज थे और जिस कुल में स्वयं भगवान ऋषभदेव उत्पन्न हुए थे, उनके पुत्र भरत चक्रवर्ती उत्पन्न हुए। उनके दूसरे पुत्र बाहुबली उत्पन्न हुए, जिन भरत के नाम पर यह देश भारत देश के नाम से जाना जाता है, यह सभी इक्ष्वाकु वंशी क्षत्रिय महापुरुष थे। उन्हीं क्षत्रिय वंशियों की परंपरा में श्री राम, राजा दशरथ के पुत्र के रूप में हमारे सामने आते हैं। वह राजा दशरथ जिनकी चार रानियाँ हैं- कौशल्या, सुमित्रा, कैकेई और सुप्रभा। आपको जब भी यह रामायण सुनने का भाव आए आप अपने दिमाग को खुला रखना।

अनेकान्त दृष्टिकोण से सुनिए जैन रामायण

आपको जब भी यह रामायण सुनने का भाव आए आप अपने दिमाग को खुला रखना। अपने विचारों को अनेकान्त मय विचार करके रखना। कभी भी हमें भगवान के विषय में एक धारणा बना करके नहीं चलना। दुनिया में अनेक ऋषि मुनि हुए, अनेक तरह की परंपराएँ हुई और अनेक भाषाओं में यह रामायण लिखी गई, उन्हीं भाषाओं में एक **पउमचरिउ** करके प्राकृत भाषा में भी जैन संप्रदाय के अन्दर यह रामायण का व्याख्यान किया जाता है। फिर उसी के उपरांत रविषेण आचार्य के माध्यम से एक पद्मपुराण की भी रचना हुई, जिनके माध्यम से पूरा श्री राम का चरित्र पद्मपुराण में वर्णित किया गया। भगवान के विषय में अनेक-अनेक तरह की कथाएँ प्रचलित हो सकती हैं लेकिन सुधी जनों को हर कथा को अच्छे ढंग से श्रवण करना चाहिए और सुधी जनों को कभी भी भगवान के विषय में ऐसा आग्रह नहीं बनाना चाहिए कि नहीं! यह तो ऐसा ही था, ऐसा नहीं था। अगर आप ऐसा सोचेंगे तो कभी आपको भगवान की कथा सुनने में आनन्द नहीं आएगा। अनेकान्त विचारधारा से हम जाने तो कि उन श्रीराम के बारे में और भी लोग क्या सोचते हैं। जो श्री राम की कथा रामायण के रूप में टी.वी. में दिखाई गई, वह भी ठीक है। लेकिन उसके अलावा भी बहुत से ऐसे पहलू हैं, बहुत से ऐसे कथानक हैं जो इस टी.वी. के माध्यम से नहीं दिखाए गए। जिनके बारे में लोगों को ज्ञान नहीं हुआ। अगर ऐसे लोग उत्सुक होकर के

इस कथा को सुनने की इच्छा करेंगे तो उन्हें बहुत ज्ञान मिलेगा और उनके मन के अन्दर श्री राम की और अनेक-अनेक विशेषताएँ ज्ञान में आयेंगी। लेकिन इसके लिए आपको किसी भी तरह का आग्रह नहीं रखना। अपने मन के अन्दर यह विचार रखना कि जो यहाँ बताया जा रहा है ऐसा भी प्रचलित है, ऐसा भी होता आया है और यह भी हमारे लिए एक नई बात सुनने को मिली है। ऐसा आप अपने अन्दर जब अपने ज्ञान का विस्तार करेंगे तो आपको बहुत आनन्द उत्पन्न होगा। इसी आनन्द को उत्पन्न करने

के लिए अनेकांतिक दृष्टिकोण से जैन रामायण के अनुसार हमें भगवान श्रीराम का चरित्र सुनने के लिए यह एक मौका मिला है। इस मौके पर जब हम यह देखते हैं कि उस अयोध्या नगर के अधिपति राजा दशरथ के यह कौशल्या, सुमित्रा, कैकेई और सुप्रभा जैसी यह चार-चार महारानियाँ थी। उनमें कौशल्या के माध्यम से श्री राम की उत्पत्ति हुई। लक्ष्मण की उत्पत्ति सुमित्रा माँ से हुई। शत्रुघ्न सुप्रभा माँ से उत्पन्न हुए और कैकेई से भरत की उत्पत्ति हुई। ये चारों महापुरुष जिनके नाम आप सब लोगों को परिचित हैं, ये सब अच्छे धनुर्धर थे, अच्छे शास्त्रों के ज्ञाता थे, समाज की मर्यादाओं में चलने वाले थे, इसलिए यह इक्ष्वाकु वंश के क्षत्रिय पुरुष कहलाते थे।

क्षत्रिय पुरुष कौन होते हैं?

क्षत्रिय पुरुष का मतलब होता है- जो समाज की लोक की मर्यादाओं को ध्यान में रख करके सब कुछ छोड़ने की क्षमता रखता हो, उसे क्षत्रिय कहा जाता है। जो अपने स्वार्थों में नहीं जीता हो, परोपकार के लिए जीता हो। जो लोक और समाज को ध्यान में रख करके कोई भी बड़ा निर्णय अपने स्वार्थों को छोड़ करके लेने की क्षमता रखता हो। इतना उदारमना जो होता है, इतना साहस जिसके अन्दर होता है वह क्षत्रिय पुरुष कहलाता है। ऐसे क्षत्रिय पुरुष श्री राम की कहानी आपके सामने आ रही है। अब आगे पढ़ते हैं-

चारों सुपुत्र थे लासानी, अद्भुत बल विक्रम के धारी।
मन मोहन रूप देखकर के, मोहित होती दुनिया सारी॥
मर्यादा पालन हारे थे, पुरुषोत्तम चरम शरीरी थे।
सम्यक्-दर्शन श्रद्धानी थे, जिनराज चरण अनुरागी थे॥

दोहा-

मिथिलापुर राजा जनक, सीय पिता कहलाएँ।
रानि विदेहा नाम की, उनकी कथा सुनाएँ॥
भामंडल और जानकी, थी जुड़वाँ संतान।
शत्रु देव भामंडल हि, बाल चुराया आन॥

राजा जनक के यहाँ युगल संतान का जन्म

यह कथा जहाँ पर एक तरफ चल रही है वहीं पर दूसरी ओर थोड़ा सा सीता का परिचय करने के लिए मिथिला पुरी चलते है जहाँ के राजा जनक हैं। उनकी विदेहा नाम की रानी है और उनके युगल संतान की उत्पत्ति हुई है। वह युगल संतान जिनके नाम भामंडल और जानकी के रूप में हैं लेकिन उस युगल संतान की उत्पत्ति होते ही उनके घर में एक बहुत बड़ा शोक छा जाता है, एक मातम छा जाता है। क्या होता है? जैसे ही सीता की उत्पत्ति और भामंडल उनके भाई की उत्पत्ति होती है, तो उस पुत्र को उत्पन्न होते ही एक शत्रु देव उसका हरण कर लेता है। वह शत्रु देव उस बालक को उठाकर के ले जाता है, कुछ पूर्व जन्म के बैर के कारण से और जब घर में पता पड़ता है कि इस बालक को कोई देव ले गया है, बालक का मुख भी माँ नहीं देख पाई और इससे पहले उसका हरण हो गया तो उस समय पर वह रानी विदेहा विलाप करती है, रोती है कि बहुत मुश्किल से तो हमें संतान की प्राप्ति हुई और उस संतान में भी मैं अपने पुत्र का मुख नहीं देख पाई। मैंने ऐसे कौन से पूर्व जन्म में कर्म किए जिसके कारण से मुझे अपने पुत्र का जन्म लेते ही वियोग सहन करना पड़ा। ऐसा विचार वह करती है और इधर वह पुत्र कौन हरण करके ले जाता है? कैसे उस पुत्र का कहाँ पर निर्वाह होता है? यह आगे की घटना आपके सामने आ रही है।

ले जाके बनी में पटक दिया, वहाँ रथनुपुर राजा आया।
विद्याधर चंद्रगति नामक, जो उठा बाल निज घर लाया॥
निज राज पहुँच, जन्मोत्सव कर, के नाम रखा था भामंडल।
और इधर जनकजी ढूँढ रहे, सब छान लिया था भूमण्डल॥
पुत्र मिला कहीं पर नहीं, लुटा दिया सब कोष।
हार मान कर सिया पर, ही कीना संतोष॥
अनुपम उसका रूप गुण, बोले तुतले बैन।
मात-पिता हर्षित हृदय, देखें भर-भर नैन॥
कभी चले कभी गिरे पड़े, कभी हंसे कभी रोय।
नर नारी मोहित हुए छवि निराली जोय॥
मर्यादा पुरूष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम॥
मर्यादा पुरूष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम॥

भामंडल का शत्रुदेव द्वारा अपहरण और विद्याधर राजा चन्द्रगति द्वारा महलों में पालन पोषण

यह कथानक अब आगे बढ़ता है। एक विद्याधर राजा होते हैं। वह विद्याधर राजा जो रथनुपुर का राजा है जिसका नाम है- चंद्रगति। जब वह शत्रु देव उस बालक को उठाकर के ले जाता है तो उसके बाद वह उस बालक को मारने की इच्छा करता है। पूर्व भव से उसका बैर था। उसके मन में एक बार विचार आया कि मैं इस बालक को तुरंत इस पत्थर पर मारकर, पछाड़ करके इसको मार डालूँ। लेकिन उस बालक के पुण्य के कारण से, उसके मंगल रूप को देख करके उसके भाव बदल गए और वह सोचने लगा कि मैं देव होकर के इस जघन्य काम को क्यों करूँ। एक सामान्य व्यक्ति भी कभी निहत्थे व्यक्ति पर वार नहीं करता, अबला स्त्रियों पर वार नहीं करता, कभी नन्हे-मुन्ने बालकों को मारता नहीं है क्योंकि इनको मारने का बहुत बड़ा पाप कहलाता है और मैं देव होकर के आज इस बालक को मारने का भाव कर रहा हूँ। ऐसा विचार करके वह उस बालक को मारने का

भाव बदल देता है लेकिन उसने मारने के लिए ही बालक का हरण किया था। सोचता है इससे मेरी शत्रुता है, मैं इससे अपनी शत्रुता को इसी रूप में पूरा कर लेता हूँ कि मैंने इसके माता-पिता से इसका वियोग करा दिया। अब मैं इसको इसके हाल पर छोड़ देता हूँ और उस देव ने एक विद्या उसके अन्दर प्रवेश करा दी। जिस विद्या के माध्यम से वह बालक बिल्कुल हल्का हो जाता है जिसे **'पर्णलघ्वी विद्या'** कहते हैं। पत्ते के तिनके की तरह वह बालक हल्का हो जाता है और वह बालक को ऊपर से गिरा देता है। उस विद्या के कारण से उस बालक को कुछ नहीं होता अगर वह नीचे भी आ जाता। लेकिन उस बालक के पुण्य के कारण रथनुपुर के राजा विद्याधर चंद्रगति ने, उसको बीच में थाम लिया और उस बालक को बीच में ही अपनी गोदी में ले लिया। वह उसे उठाकर के अपनी रानी के पास ले गया। जिस रानी के लिए कभी पुत्र उत्पन्न नहीं होता था, उसके लिए कोई संतान नहीं थी उसके लिए जाकर के उस बालक को दे दिया। रानी से कहा, लो तुम्हारे लिए आज देवोपनीत रत्न लाया हूँ, देवोपनीत यह बालक लाया हूँ, यह बालक आपके लिए उत्पन्न हुआ है, यह आपका बालक है। रानी सोचती है- हमें तो पहले से ही पता है कि हमारे लिए कभी गर्भ ठहरने वाला नहीं है। हमारे लिए कभी पुत्र उत्पन्न होने वाला नहीं है। आप हमारा मजाक क्यों बना रहे हैं? तब वह चंद्रगति विद्याधर राजा कहता है- किसी का भी पुण्य कभी भी किसी के सामने आ सकता है। ऐसा विचार मत करो कि तुम्हारे लिए पुत्र नहीं हो सकता। हो सकता है कि तुम्हारे लिए गर्भ से पुत्र नहीं हो सकता लेकिन देवों के माध्यम से तुम्हारे लिए पुत्र की उत्पत्ति हो सकती है। यह वही देवोपनीत पुत्र तुम्हारे सामने लेकर के आया हूँ। जब उस पुत्र को वह रानी देखती है विचार करती है कि यह पुत्र तो बहुत सुंदर है, इसके दोनों कानों में यह बड़े-बड़े कुण्डल कहाँ से आ गए? जो कुण्डल उस देव ने उस बालक को पहना करके उसे ऊपर से पर्णलघ्वी विद्या के साथ छोड़ा था और उस समय पर जब राजा चंद्रगति ने उस बालक को ग्रहण कर लिया, वह उसे अपनी पत्नी के पास लाया तो वह रानी कहती है- इसका नाम क्या रखा जाए? उनके कुण्डलों की आभा को देखकर के,

देव के द्वारा दिए गए उस कुण्डल की सुंदरता से जिसका मुख मंडल बहुत ही झिलमिला रहा है, आभा जिसकी बढ़ रही है, सुंदरता जिसकी बढ़ रही है, ऐसे उस पुत्र को देख करके, उसके आभामण्डल को देख करके, उसका नाम उन चंद्रगति विद्याधर और उसकी पत्नी ने भामण्डल घोषित किया। उसका नाम भामण्डल रखा गया। यह भामण्डल कौन है? सीता का भाई है। देखें आप कैसी-कैसी परिणतियाँ जीव की होती हैं? जब उसका वह नाम रख दिया गया, यह नाम तो उन्होंने गुप्त रूप से रख लिया लेकिन रानी को पुत्र हुआ है इस बात का समाचार पूरी नगरी को देना है। इसलिए यह घोषणा की गई कि रानी प्रसूति गृह में है और वह प्रसूति गृह में चली गई। दूसरे दिन बालक की उत्पत्ति दिखाई गई और उस चंद्रगति राजा ने पूरे नगर में पुत्र का उत्सव मनाने के लिए पूरे नगर को आमंत्रित किया और पूरे नगर में यह उत्सव मनाया गया कि एक प्रच्छन्न गर्भ के माध्यम से रानी के लिए यह पुत्र की उत्पत्ति हुई है। यह गर्भ कई तरह के होते हैं। प्रच्छन्न गर्भ का मतलब होता है- जो गर्भ किसी को दिखाई न दे लेकिन गर्भ में बालक रह जाता है। ऐसी घोषणा की गई और उस प्रच्छन्न गर्भ के माध्यम से यह पुत्र की उत्पत्ति हुई है, ऐसा नगर में समाचार दिया गया। पुत्र का उत्सव मनाया गया और सभी लोगों ने उन भामण्डल के उत्सव में शामिल होकर के पूरी नगरी में आकर के राजा को बधाई दी और उस जन्मोत्सव के बाद में उसका नाम भामण्डल रख दिया गया। यह कार्य तो विजयार्ध पर्वत की श्रेणी पर रहने वाले विद्याधर के नगरों में हो रहा है। अब आपको अगर इस लोक की संरचना का कुछ ज्ञान हो तो आपको यह सब चीजें समझ आएँ। जहाँ यह अयोध्या है, मिथिला पुरी है यह भरत क्षेत्र है। यह भूमिगोचरियों के स्थान कहलाते हैं और यह जो विद्याधर होते हैं यह विद्याओं के माध्यम से आकाश में उड़ाने भरते हैं, विमानों में चलते हैं, विद्याओं के माध्यम से अपना जीवन यापन करते हैं। ऐसे विद्याधर के हाथ यह बालक लग गया और वहाँ इसका पालन पोषण होने लगा। इधर सब जगह पर ढूँढने के लिए इस बालक के लिए अनेक तरह के राजाओं ने राजा

जनक की सहायता की और स्वयं राजा जनक के दशरथ जी मित्र थे उन्होंने दशरथ जी के पास में समाचार पहुँचाया कि मेरे पुत्र को कोई हरण करके ले गया है और उस समाचार के माध्यम से राजा दशरथ भी दुःखी हुए और उन्होंने अपनी सेना भेज करके अपने सामंतों को भेज करके चप्पा-चप्पा छान डाला लेकिन इस भारत भूमि पर कहीं पर भी वह बालक का कोई भी पता नहीं लगा क्योंकि वह बालक कहाँ पहुँच चुका था? देवों और विद्याधरों के माध्यम से विजयार्ध की श्रेणियों पर पहुँच चुका था। वहाँ पहुँचना सामान्य व्यक्तियों का काम नहीं होता तो उसी को यहाँ पर आगे इस कथानक के माध्यम से आगे बढ़ाते हुए कहते हैं-

सीता का यौवन संपन्न और सोलह कलाओं से संपन्न होना

पुत्र मिला कहीं पर नहीं, लुटा दिया सब कोष।
हार मानकर सिया पर, ही कीना संतोष॥

उन जनक जी ने जब सब कुछ देख लिया। कहीं पर भी वह पुत्र नहीं मिला तब उन्हें संतोष करना पड़ा, किस पर! जो अपनी बेटी एक बची रह गई है, जिस बेटी का नाम था सिया, सिया मतलब सीता। उस सीता बेटी पर ही उन्होंने संतोष किया और फिर उसी को उन्होंने लाड़-प्यार से पाला पोसा और उसी को आगे बढ़ाया।

अनुपम उसका रूप गुण, बोले तुतले बैन।
मात-पिता हर्षित हृदय, देखें भर-भर नैन॥
कभी चले कभी गिर पड़े, कभी हंसे कभी रोय।
नर-नारी मोहित हुए छवि निराली जोय॥
बीते दिन बीते वर्ष और, यौवन ने रंग जमाया है।
था जनक दुलारी आनन पे, कुछ रूप सवाया छाया है॥
सीखी हैं सोलह विद्याएँ, और कला सभी मन मोद भरे।
संगीत नृत्य और चित्र आदि, जो देखे वो ही मौन धरे॥
सम्यक् दर्शन धारणहारी, छवि देख शची शर्माती है।
वय देख पिता को फिक्र हुई, पुत्री वर योग कहाती है

वह सीता बड़ी हो जाती है और जब बड़ी हो जाती है, तो बड़े होते-होते उसे अपने राज महल में ही सब विद्याओं का ज्ञान करा दिया जाता है। सोलह विद्याओं में उसे निपुण बना दिया जाता है। सभी चौंसठ कलाएँ जो स्त्री की होती हैं उनमें वह निपुण बन जाती है। संगीत जानती है, नृत्य जानती है, चित्र बनाना जानती है सब तरह की उसे fashion designing के course अपने आप आ जाते हैं। सब तरह की उसे पाक शास्त्र की कलायें आती हैं और सब तरह का वह विज्ञान, चाहे वह ज्योतिष का हो, चाहे वास्तु का हो, वह सब विज्ञान उसके ज्ञान में उसे आ जाता है और इसे देखकर के शचि जो स्वर्ग के इंद्र की इंद्राणी होती है, वह भी उसे देखकर के उसके रूप को, उसके यौवन को देखकर के शर्माती है और विचार करती है कि यह सम्यग्दर्शन को धारण करने वाली इस पिता की यह पुत्री कितनी सौभाग्यवती है, जिसके कारण से पूरे नगर में, पूरे राजमहल में हमेशा सबके लिए आनन्द बना रहता है। लेकिन बेटी को बड़ा होते देखकर के पिता के मन में चिंता उत्पन्न होती है और होनी भी चाहिए। जब बेटी बड़ी हो जाती है, माता-पिता उसका पालन कर लेते हैं और जब उसे देखते हैं कि यौवन संपन्न हो गई है तो हर माता-पिता के मन के अन्दर सबसे प्रथम विचार आता है कि इस बेटी के लिए उचित वर की तलाश की जाए। किसकी? सुन रहे हो? अगर आप क्षत्रिय वंश में जन्म लिए हो, इक्ष्वाकु वंश के इन महापुरुषों का चरित्र सुन रहे हो तो अपने चरित्रों को संभालना और अपने चरित्रों की इनसे तुलना करना। इन महापुरुषों की गुण गाथा इसीलिए गायी जाती है कि यह कभी भी सब प्रकार के रूप, सब प्रकार के ज्ञान विद्याएँ, कलाएँ सबसे संपन्न होने पर भी कभी भी मदमस्त होकर के अहंकारी नहीं बनते। कभी भी लोक मर्यादाओं के विपरीत नहीं जाते और सब प्रकार के पुण्य को धारण करके भी यह धर्म भाव के साथ कोमल हृदय के साथ अपने उस पुण्य को संभालते हुए आगे बढ़ते हैं। इस कारण से ऐसे महापुरुषों का गुणगान किया जाता है। आज हमें जितना राम के चरित्र के प्रति अनुराग रहता है, उतना ही हमारे अन्दर सीता के

चरित्र के प्रति भी अनुराग होना चाहिए। अगर सीता के चरित्र के प्रति भी अनुराग इस महिला समाज के अन्दर, स्त्री समाज के अन्दर, नारी शक्ति के अन्दर आने लग जाए तो यह देश आज भी उसी तरह का भारत देश बन सकता है। उसी तरह का यह काल आज भी दिखाई दे सकता है जैसा राम राज्य में रहा करता था।

बेटियाँ माता पिता के निर्णय और भावनाओं का सम्मान करें

आज भी यह रामराज्य आपके सामने आ सकता है। जरूरत है हमें इन चरित्रों से अपना चरित्र संभालने की। इन चरित्रों के आईने में अपना चरित्र देखने की और जब हम इस तरह से देखते हैं कि सीता बड़ी हो गई है लेकिन उसके बारे में चिंता सीता खुद नहीं कर रही है। कौन कर रहा है? चिंता हमेशा बेटी की माता-पिता को रहा करती है। यह बात नहीं है कि जिन बेटियों के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है, वह बेटियाँ सोचे कि यह मेरा जीवन है मेरे जीवन का अधिकार मेरे लिए है। आप मेरे जीवन के बारे में निर्णय लेने वाले कौन होते हैं? इस तरह की जो बेटियाँ बातें करती हैं, इसका मतलब है कि उन्हें अपनी माता-पिताओं की भावनाओं का, उन्हें अपनी माता-पिता के प्रति सम्मान का कोई ख्याल नहीं है। यह वचन बताते हैं कि अगर हमारे अन्दर अपने से बड़ों के प्रति सम्मान नहीं होगा उनके प्रति भावनाएँ हमारी जुड़ी हुई नहीं होंगी। तभी हमारे अन्दर से इस तरह की बातें निकलती हैं। अन्यथा कुलीन जो स्त्रियाँ होती हैं अच्छे कुल में उत्पन्न हुई जो स्त्रियाँ होती हैं, वे कभी अपने माता-पिता से कुछ भी दुर्व्यवहार या दुर्वचन नहीं बोलती हैं और कभी भी अपने माता-पिता के सामने ऐसा नहीं कहती कि मेरी जिंदगी में दखलअंदाजी करने वाले आप कोई नहीं हैं। भले ही कानून आपके लिए बने हुए हो कि 18 वर्ष के बाद में आपके लिए कोई दखल अंदाजी नहीं करेगा, आप अपना निर्णय ले सकती हैं। लेकिन वह कानून आपकी सुरक्षा के लिए होते हैं। उन कानूनों से आपकी जिंदगी नहीं चल सकती। जिंदगी चलेगी जब हम माता-पिता के बात मानकर के माता-पिता को ही आगे रखकर के माता-पिता को सम्मान देते हुए, हम अपना आगे का जीवन, अपना आगे का वर उसका निर्णय

करें। तभी इस जीवन में सुख और शांति आ सकती है और जो महिलाएँ इस तरह से विवाहित हो करके अपना जीवन जीती हैं, वे आज भी सुख शांति पूर्वक जी रही हैं और जिन्होंने कुछ भी अपने तरह से कार्य किए हैं वह लोग आज भी दुःखी हैं, आगे भी दुःखी रहेंगे। यह ध्यान रखना भारतीय संस्कृति में माता-पिता को अधिकार होता है कि वह अपनी बेटी के लिए उचित वर का चयन करें और वह वर का चयन करने के लिए बेटी को भी स्वतंत्र छोड़ा जाता है। कैसे छोड़ा जाता है? आप देखिए इस कथानक से आपको ज्ञात होगा।

उसी समय का जिक्र है, म्लेच्छों का सरदार।
आया दक्षिण देश से, लेकर सैन्य अपार॥
नगर उजाड़े बहुत से, मिथिलापुर में आन।
जनक राय को युद्ध का, दे दीना ऐलान॥

राजा जनक की सहायता के लिए राम लक्ष्मण का मलेच्छों से युद्ध करना

क्या होता है? जहाँ राजा जनक राज्य करते हैं, उसी मिथिलापुरी में जो विजयार्ध पर्वत है और भरत क्षेत्र है उन दोनों के बीच में अनेक म्लेच्छ राजाओं के राज्य भी रहते हैं और वे म्लेच्छ राजा, उन राजा जनक के राज्य में आकर के अनेक तरह का आतंक मचाने लग जाते हैं। जो लोग धर्म कर रहे होते हैं, उन्हें हर तरह से परेशान करते हैं। हर तरह से वह अपना आतंक वहाँ पर फैलाते हैं। लोगों के साथ में लूटपाट करते हैं, दुर्व्यवहार करते हैं। जिस तरह से कोई निम्न लोग आचरण करते हैं वैसा ही वह म्लेच्छ राजा उन आर्य पुरुषों के बीच में घुस करके उनके धर्म-कर्म की व्यवस्था को सब नष्ट-भ्रष्ट करने लगे और उस समय जनक के राज्य पर उन्होंने युद्ध का ऐलान भी कर दिया कि अगर आप में हिम्मत है तो हमसे आकर के लड़ लो। किन्होंने? म्लेच्छ राजाओं ने। अब देखो! आगे क्या होता है?

तब अवधपुरी से मदद हेतु, बुलवाएँ राम जनकजी ने।
लक्ष्मण भ्राता संग सैन्य दिये, भेजे तुरंत दशरथ जी ने॥
श्री जनक राय ने युद्ध मध्य, में मात करारी खाई है।
लेकिन लक्ष्मण के बाणों से, राक्षस की मति घबराई है॥
श्रीराम का धनु टंकार सुना, सब कांप-कांप कर भाग गये।
कर विजय प्राप्त दोनों भाई, श्री जनक राव के चरण गहे॥

क्या होता है? देखो! दो अलग-अलग प्रांतों के राजा हैं और उनके परिवारों में आपस में संबंध कैसे बनते हैं? एक तरफ राजा जनक है, एक तरफ राजा दशरथ है। राजा जनक और दशरथ दोनों मित्र हैं। जब राजा जनक के ऊपर यह आपत्ति आई कि म्लेच्छों के यह सरदार उनके लिए challenge देने लग गए कि युद्ध कर लो। तब उनके लिए लगा कि उन्हें अब सहयोग की जरूरत है तब उन्होंने राजा दशरथ के पास में अपने मंत्रियों को भेज करके उनसे सहयोग मांगा और उस समय पर राजा दशरथ उनका सहयोग करने के लिए स्वयं युद्ध करने के लिए तत्पर हो गए। वह चलने लगे और उस समय पर उन्होंने अपने बड़े पुत्र श्री राम के लिए राज्य देने के लिए घोषणा कर दी कि कल रामचन्द्र जी का राजतिलक करूँगा और मैं स्वयं युद्ध करने के लिए जाऊँगा। यहाँ का राजभार राजा श्री राम संभालेंगे। ऐसा विचार जब राम जी को पता पड़ा तो उन्होंने अपने पिताजी से कहा कि यह आप क्या कर रहे हैं? राजा दशरथ कहते हैं इन दुष्ट लोगों ने आकर के राजा जनक के देश में उत्पात मचा रखा है। इनको विनष्ट करने के लिए, इनका शमन करने के लिए मुझे युद्ध करने के लिए जाना है। उस समय पर श्री राम कहते हैं- मेरे जैसे पुत्र होते हुए अगर आप पिता को युद्ध करने के लिए जाना पड़े तो फिर मेरे पुत्र होने का औचित्य क्या रहा? अगर दुष्टों से लड़ने के लिए जिन्हें आप बड़े राजा कह रहे हैं, वे सब तुच्छ लोग हैं, निम्न लोग हैं तो उनसे लड़ने के लिए आपको जाने की जरूरत नहीं है। उनके लिए शेर को जाने की जरूरत नहीं है। सिंह का बच्चा ही उनके लिए पर्याप्त है। आप मुझे आज्ञा दीजिए मैं उनसे लड़ने जाऊँगा। यह बात जब उन्होंने दशरथ जी से कही तो श्रीराम की बात को दशरथ जी ने सुना और माना और उन्हें

लगा कि बेटा योग्य तो हो गया है लेकिन अभी तक इसने कभी युद्ध नहीं किए। यह युद्ध में जाएगा कुछ अनहोनी न हो जाए। वह उनको बार-बार वह समझाते हैं- बेटा सामान्य राजाओं से युद्ध करना अलग है और दुष्ट राजाओं से युद्ध करना अलग बात होती है। यह दुष्ट न जाने किस तरह की दुष्टताएँ दिखाएँ? किस तरह की चालबाजियाँ करें? यह अभी तुम्हारे लिए ज्ञान में हो न हो, कहीं हमारे लिए अनहोनी न हो जाए मुझे डर लगता है और ऐसे दुष्टों के लिए तो युद्ध करना हमारे लिए ही अच्छा लगेगा। लेकिन श्री राम ने कहा, नहीं! आपके लिए युद्ध करने की जरूरत नहीं है, युद्ध करने में हम समर्थ हैं, हमारा भाई समर्थ है और एक बार आप हमें आज्ञा दे कि हम इन दुष्टों का संहार करके आए। जब उनके confidence को राजा दशरथ ने देख लिया, बार-बार हर तरह से उन्होंने भांप लिया तब जाकर के राजा दशरथ ने श्रीराम को आदेश दिया और श्री राम लक्ष्मण जी के साथ उन जनक के राज्य में पहुँचे। वहाँ जाकर के जब देखा तो उस समय पर उन जनक जी को और उनके भाई का नाम था कनक, उन कनक राजा को भी उन म्लेच्छ राजाओं ने उनके सरदारों ने घेर लिया था और उनको छुड़ाने के लिए लक्ष्मण जी ने जब अपने बाण चलाए तो वह सारे राजा तहस-नहस हुए। वे सारे राजा इधर-उधर भागे और फिर जाकर के रामचंद्र जी ने भी उन सरदारों से युद्ध किया और युद्ध करने के बाद में जब वह सारी सेना इधर-उधर, तितर-बितर हो गई और राजा जनक के लिए यह विश्वास दिला दिया गया कि यह म्लेच्छों की सेना अब कभी भी आँख उठा करके आपके राज्य में नहीं देखेगी। इतना उनको दूर तक भगा दिया गया। तब जाकर के वह दोनों राम और लक्ष्मण राजा जनक के पास पहुँचते हैं। उनकी रक्षा भी की है लेकिन अपने से बड़े हैं, पिता तुल्य हैं तो उनके चरणों में नमस्कार भी करते हैं। बड़ों का सम्मान करते हैं और बड़ों का सम्मान करके जो आशीष मिलता है, जो उनका वरदान मिलता है, जो उनसे कृपा मिलती है, उसके माध्यम से उनका सौभाग्य बढ़ता है। देखो! क्या होता है?

राजा जनक के मन में राम और सीता के विवाह का विचार

आशीष दीनी बहुत सी, हर्षित हुए अपार।
पुत्री सिया वर योग्य हैं, रामचंद्र सुकुमार॥
देनी कीनी राम को, जोड़ी बनी महान।
राम लखन ने अवध को, शीघ्र हि किया प्रयाण॥

उस समय पर राजा जनक ने विचार किया इन पुत्रों ने, राजा दशरथ ने, मेरे ऊपर बहुत उपकार किया है। मेरे देशवासियों को बचाया, मुझे बचाया। इस उपकार का बदला प्रति उपकार के रूप में कैसे चुकाया जाए? वह विचार करते रहे कैसे इनका प्रति उपकार किया जाए? क्या इनको दिया जाए? तब राजा जनक के मन में विचार आता है- ये योग्य राजकुमार हैं, सुकुमार हैं, रूपवान हैं, शूरवीर हैं और हमारी कन्या वर योग्य हो गई है, बड़ी हो गई है तो उन्होंने अपने मन में विचार किया कि यह कन्या, इस सीता का विवाह राम के साथ किया जाएगा और इस तरह का उन्होंने विचार कर लिया। दशरथ जी के पास भी संदेश पहुँचा दिया लेकिन अभी विवाह हुआ नहीं, अभी यह विचार हुआ है। सुन रहे हो आप लोग? क्या सुन रहे हो? कैसे विचार किए जाते हैं? जब यह विचार आगे बढ़ता है तो बीच में क्या हो जाता है? क्योंकि '**श्रेयांसि बहु विघ्नानि**' अच्छे कार्य में अनेक विघ्न आते हैं और जब भी इस तरह के विघ्न आते हैं तो उन विघ्नों के माध्यम से ही उन महापुरुषों के धैर्य की पराक्रम की परीक्षा होती है और इस तरह के विघ्नों को जीत लेने के बाद ही उनका शौर्य प्रकट होता है तब जाकर के जगत में उनकी जय जयकार होती है। इसलिए विघ्नों से कभी डरना नहीं चाहिए। जब भी आपके जीवन में विघ्न आते हैं, इन महापुरुषों के जीवन में भी देखो कि विघ्न आते हैं और दोनों राजा जनक और राजा दशरथ चाहते हैं। हाँ! अच्छा है तुम्हारी बेटी का मेरे बेटे से विवाह हो जाए। तुम्हारे बेटे का मेरी बेटी से विवाह हो जाए लेकिन उस विवाह के बीच में भी बहुत कुछ परीक्षा देना अभी शेष है। वह क्या होता है? यहाँ पर आपके लिए बताया जा रहा है। अनेक तरह के शास्त्रों में नाम मिलते हैं और उन नामों के माध्यम से आप लोग ऐसा नहीं समझ लेना कि यह नाम हमारे

यहाँ पर या हमारी किसी दूसरी रामायण में उन नामों का कोई व्यक्ति है तो यह वही व्यक्ति है। कई बार ऐसा होता है, एक नाम के कई पात्र सामने आते हैं और उस नाम का हम ऐसा अर्थ न ले लें कि हमारे यहाँ पर इस नाम के माध्यम से तो बहुत कुछ अलग कहा जाता है। आपके यहाँ पर इस नाम के माध्यम से कुछ अलग कहा जा रहा है।

नारद जी का सीता को देखने जाना

आप यह विचार करें जो आपके यहाँ पर नारद ऋषि हैं वे अलग हैं और यहाँ पर जो यह नारद का वर्णन किया जा रहा है वे नारद अलग हैं। इन दोनों को अगर हम अलग-अलग मान करके चलेंगे तो हमारे लिए यह समझ में आएगा कि उस समय पर भी अनेक पात्र हुआ करते थे और उन पात्रों का एक अलग तरह का एक कथानक हमारे सामने आ रहा है। जो प्रचलित रामायण है, जिसे वाल्मीकि रामायण के माध्यम से सुना जाता है उनमें इस तरह का कथानक नहीं उपलब्ध होता है। यहाँ पर अब देखते हैं कि बीच में एक नारद मुनि का वर्णन आ रहा है। यह नारद मुनि वह नहीं है जिन्हें आप जिस तरह से नारद मुनि समझते हैं। यहाँ के ये पात्र अलग हैं यह बात अपने दिमाग में रखना।

नारद मुनि कलह-प्रिय, उनका सुनो बयान।
राम गुणों पर मुग्ध हो, आये अवध महान॥
सुन सीता संबंध को, सोचे बारंबार।
क्या जाने कैसी लली है वह जनक दुलारि।

यह बात नारद के पास में पहुँचती है कि यह पता नहीं यह कौन सी सीता है, कैसी है? जिसका संबंध राम से होने वाला है और ऐसी बातें बहुत जल्दी हवा की तरह फैलती हैं। नहीं समझे? मंगनी होने से पहले भी अगर किसी की बात भी चलना शुरू हो जाए कोई आपस में विचार भी करना शुरू कर दे तो यह बातें हवा से भी तीव्र गति से फैलती हैं और ऐसी बात यह अभी कुछ हुआ नहीं लेकिन आपस में राजा जनक और दशरथ ने विचार किया ही था कि यह बात नारद जी के पास में पहुँची और फिर उस समय पर देखो! क्या होता है? उस सीता को देखने पहुँचते हैं, हमने अभी

तक सीता को देखा ही नहीं। जिन रामचंद्र जी से सीता का विवाह होना है, वह सीता लाड़ली कैसी है? वह सीता लली कैसी है? उसको देखने के लिए वह वहाँ पहुँचते हैं।

जाके देखूँ सिया की मैं सुघराई।
जिसको वर ने जाहिं श्री रघुराई॥
श्री राम बड़े गुणवान और बलधारी।
यह देखूँ जाकर, योग्य भी है सुकुमारी॥
चल दिए गगन मग, फौरन वीणाधारी।
चुपके से पहुँचे सीता महल मंझारी।
सीता दर्पण के पास तभी थी आई।
नारद छवि देखी भूल गई चतुराई॥
था जटा जूट कोपीन सुशोभित वाना।
नहीं देवर्षि को सीता ने पहिचाना॥
भय खाकर फौरन माता के ढिग आई।
कह 'हाय' गिरी सीता को मूर्छा आई॥
घिर गये अचानक मुनि महलों में आई।
कठिनाई से उन अपनी जान बचाई॥

क्या हुआ? कुछ समझ आ रहा है?

मर्यादा पुरूष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम॥
मर्यादा पुरूष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
दशरथ जिनके जनक कहाय, कौशल्या नंदन कहलाए।
इक्ष्वाकु वंशज की शान, क्षत्रिय वर्णी जगत महान॥
मर्यादा पुरूष श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम।
मर्यादा पुरूष श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम॥

महल में सीता का भयभीत होना और नारद जी का अपमान होना

क्या होता है? कथानक आगे बढ़ता है। नारद जी सीता के महल में पहुँचते हैं और सीता नारद को जानती नहीं। इनका काम होता है, कहीं भी अचानक से घुस जाना और जब वह उनके महल में घुस गए तो वह डर गई। यह जटा-जूट धारी थे। पहले इसने कभी उनको देखा नहीं था और वह डर करके अपनी माँ के पास दौड़कर गई और जब तक वह दौड़कर गई माँ के पास जाकर के, इतनी घबरा गई कि वह मूर्छित हो गई और उसकी मूर्छा को देखकर के सभी महल के जो बड़े-बड़े सामंत थे, योद्धा थे वे आ गए कि किसने इसको डरा दिया और देखा तो उन नारद जी को उन सामंतों ने पकड़ लिया। वह अपने अलग तरह की विद्याएँ अपने पास में रखते थे। जैसे तैसे उन्होंने अपनी विद्या का प्रयोग किया और वहाँ से अपनी जान बचाकर के भाग निकले, उड़ गए, ऊपर एकदम से पहाड़ पर चढ़ गए और अपनी जान बचाकर के जब वह भाग गए तो उनके मन में अब विचार आया कि देखो! सीता ने मेरा अपमान कर दिया। बस उनके मन में जब विचार आ गया कि सीता के कारण से मुझे आज मुँह की खानी पड़ी। मुँह की खानी बोलते हो न! आज मुझे अपमानित होना पड़ा। आज मुझे अपनी जान बचाकर भागना पड़ा। ऐसा विचार आते ही उनके मन के अन्दर फिर एक अलग तरीके का भाव उत्पन्न होता है कि मैं इसका बदला अवश्य लूँगा। फिर वे वह क्या करते हैं?

नारद जी द्वारा अपमान का बदला लेने का विचार आता है

बदला लेने का तभी, नारद किया विचार।
सीता जी के रूप का, लीना चित्र उतार॥

क्या किया? जैसा उसका रूप था उसका एक चित्र बनाया। चित्रपट! एक अच्छा drawing करके उन्होंने चित्र बनाया। अब उनका काम क्या है? इनका काम है आपस में लड़ाने का, भिड़ाने का, कोई काम बन रहा हो तो बनने नहीं देने का। राम और सीता का विवाह कैसे हो सकता है जब तक

मैं हूँ। अब यह बात उनके अब मन में आ गई और उनका अपमान हो ही चुका था तो अब उन्होंने सोच लिया कि किसी ऐसे समर्थ राजा के पास इस चित्र को ले जाना है, जिसको देखकर के वह मोहित हो जाए और सीता को उठा ले जाए, सीता का हरण हो जाए या सीता उसको चाहने लग जाए। वह सीता को चाहने लग जाए और राम का संबंध सीता से न होने पाए। इस तरह का वह विचार करके वह रूप जो उन्होंने बनाया था चित्र के रूप में, उसको ले जा करके वह देखो कहाँ ले जाते हैं?

Facebook, Instagram, Mobile Game whats'up का use करते समय ध्यान रखें

ले जाकर के वह रूप पटल, भामंडल को दिखलाया है।
लखते ही मोहित हुआ, और तन मन की सुधि विसराया है॥
कुछ देर बाद सुधि आने पर, नारद से हाल पूछते हैं।
वह सिया छवि वर्णन करके, सब समाचार बतलाते हैं॥

कहाँ ले गए उस चित्र को? विद्याधरों का राजा वह चंद्रगति विद्याधर का छोटा सा बालक अब बहुत बड़ा हो गया था क्योंकि सीता जितनी बड़ी हो गई उतना ही बड़ा वह भामण्डल हो गया। लेकिन न सीता ने कभी भामण्डल को देखा, न भामण्डल ने कभी सीता को देखा। उस समय पर वह भामण्डल जब उस चित्र को देखता है, उस छवि को देखता है तो उस समय पर वह उसके रूप-सौंदर्य को देख करके इतना मोहित इतना मुग्ध हो जाता है कि उसे उसके अलावा और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। सुनो

इधर! यह facebook, Instagram, यह dating apps, आज भले ही चल रहे हैं लेकिन इस तरह की चीजें पहले भी चला करती थी। किसी भी चित्र को देखकर के किसी पर मोहित हो जाना और सब सुध-बुध भूल जाना, यह काम पहले भी होता था। पहले इस तरह के चित्र चला करते थे आज सब चित्र आपके दिमाग में आने से पहले आपके mobile में आ जाते हैं, आप उसमें से select करते हैं। किससे हमें अपनी relationship बनाना है? किससे हमें dating करना है? किससे हमें

अपना संबंध बनाने के लिए अपना पूरा profile उसके लिए match करके उसके सामने रखना है। ये सब चीजें आज जो चल रही हैं, जिसके कारण से यह पुत्र-पुत्रियों के एक तरह से शील बिगड़ रहे हैं, ये इनके जो व्रत बिगड़ रहे हैं, इनका जो धर्म बिगड़ रहा है। यह सब आप यह ध्यान में रखकर के चले कि यह सब बिगड़ने के लिए हमने खुद अपने लिए इन mobiles को तैयार किया है और आज mobile में जितनी ज्यादा सुविधाएँ हैं, उतनी ही बेटे-बेटियों के लिए दुविधाएँ बन चुकी हैं। जो बेटे-बेटियाँ इस तरह से इन mobiles पर अपना time waste करते हैं, waste ही कहना पड़ेगा। जो time waste करते हैं और उसके माध्यम से अपने दिमाग में अनेक तरह की फितूरियाँ फिर लाते हैं। धीरे-धीरे कभी-कभी तो ऐसा भी देखने में आता है लोग खतरों से खेलते हैं। यह सब खतरे हैं लेकिन खतरों से खेलने का मन सबका चलता है। अगर कहा जाए कि लक्ष्मण रेखा है, इससे आगे पैर नहीं रखना तो आपका मन मचल आएगा। रख के देखूँ तो क्या होता है? समझ आ रहा है? इसी तरह से यह facebook, यह Instagram, यह तरह-तरह के dating apps जिनके माध्यम से आपके लिए खतरा उत्पन्न होता है, आप फिर भी उसमें कभी न कभी उसमें खेलने का मन बनाते हैं। मैंने यहाँ तक देखा कि शादीशुदा महिलाओं के भी मन इस तरह के खेल करने में मन लग जाते हैं। बता रहा हूँ आपको! अपने पास सब तरह के case आते हैं। शादीशुदा महिलाओं के लिए भी अरे महाराज! मैं तो ऐसे ही खेल-खेल में थोड़ा सा देख रही थी, खेल-खेल में उससे बात करने लग गई। जब किसी दूसरे number पर बात होने लगी, उसके पति को पता पड़ा तो पति को गुस्सा तो आएगा ही। अब पति को गुस्सा आएगा तो पति पत्नी को डांटेगा। अब डांट उसको सहन नहीं होती है। हमारे पास आती है, महाराज! देखो! यह मुझको डांटते हैं। क्यों डांटते हैं भाई? जब गलत काम करोगी तो कौन नहीं डांटेगा। अगर पति ही पत्नी के लिए नहीं कहेगा तो फिर कौन कहेगा? तब जब उसको कहा गया कि तुम्हें ऐसा खेल भी खेलने की क्या जरूरत है? तब वह मानी और तब उसने उस number को block किया, उसके बाद उसने बातचीत करना बंद

किया। लेकिन फिर भी जिससे contact बन जाता है, वह कहीं न कहीं से number उसके पास में घुमा-घुमा करके आता है। यह बहुत बड़ी एक दिक्कत बन जाती है। एक बार आपका किसी भी unknown Person से किसी भी तरह का एक बार chatting होने लगती है, contact होने लग जाता है। किसी भी तरह के अगर आपने एक बार खेल-खेल में भी promise कर लिए तो समझ लेना अब जिंदगी आपके लिए खिलवाड़ बन सकती है। जिंदगी आपके लिए खतरे का खेल बन सकती है। इसी तरह के खतरे के खेलों में अनेक बेटियाँ, अनेक बहुएँ उलझती चली जाती हैं। मन करता है कि बस! थोड़ी सी लक्ष्मण रेखा लांघ कर देखूँ तो होता क्या है? थोड़ा सा खोल कर देखो तो सब लोग इसमें अपना time लगाते हैं, सब लोग enjoy करते हैं थोड़ा सा हम भी करके देखें और ऐसा करते-करते देखते-देखते ही वह उस चंगुल में फंस जाते हैं और जिसके परिणाम आपके सामने आते हैं। आए दिन आपके सामने इस तरह की news आती है कि उस लड़की को किसी लड़के ने अपने स्थान पर बुला करके उसका murder कर दिया, उसको मार दिया, उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए उसका कत्ल कर दिया। क्यों कर दिया? क्योंकि इस तरह से लड़कों के पास भी लड़कियों की कमी नहीं है और लड़कियों के पास भी लड़कों की कमी नहीं है। खेल दोनों तरह से चल रहा है। दोनों तरफ से चल रहा है और दोनों तरफ से घटनाएँ सुनने में आती हैं। लड़कियाँ भी लड़कों का murder कर रही हैं और लड़के भी लड़कियों का murder कर रहे हैं। क्यों कर रहे हैं? जिसको जैसा समझ में आ जाए। जब लड़कियों के लिए लड़कों को लगता है कि यह मुझे ज्यादा परेशान कर रही है या लड़की को यह लगता है कि यह किसी और से भी बातचीत करता है तो उसे वह चीज सहन नहीं होती। उसके संबंध कई से हैं और वह समझती है कि यह केवल मेरे लिए ही है और जब उसे पता पड़ता है कि यह संबंध कईयों से बनाए हुए है तो फिर वह उससे कुछ पूछताछ करती है, उसकी जानकारी लेती है। जब लड़के को यह पता पड़ जाता है कि यह मेरी जिंदगी में इस तरह से जांच-पड़ताल कर रही है तो वह उसको अपनी जिंदगी से हटाने के

लिए बड़े-बड़े निर्णय ले लेता है और उसी के परिणाम निकलते हैं कि लड़कियों की कम उम्र में अचानक से उनके murder होते हैं, उनके कत्ल होते हैं। फिर बाद में पुलिस उसका किसी भी तरह से तहकीकात करती है। लेकिन जो काम हो गया, जान जिसकी चली गई वह तो चली गई। यह खेल ऐसे चल रहे हैं। जिन खेलों से अगर हम अपने बेटे-बेटियों को नहीं बचा पाए तो यह खेल उन बेटे बेटियों के जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। जो घटनाएँ हमारे सामने आ रही हैं वह तो इक्का-दुक्का नाम की आ रही है। बाकी ऐसी कितनी घटनाएँ हैं जो घटनाएँ हमारे सामने आती ही नहीं है और कई बार वह घटनाएँ छोटे रूप में आकर के, छोटी news के रूप में आकर के चली जाती है। हम उन पर कभी गौर नहीं करते लेकिन कोई कोई news जब highlight हो जाती है तब हम उस पर थोड़ा सा गौर फरमाते हैं। हम समझें कि आज दुनिया के अन्दर सबसे ज्यादा बेटे-बेटियों के लिए खतरों का खेल इन mobile game, mobile apps के माध्यम से चल रहा है और इसी के माध्यम से यह बड़ी-बड़ी घटनाएँ होती हैं। जब बेटियाँ अपना निर्णय खुद लेने के लिए तैयार हो जाती हैं और माता-पिता के लिए भी कह देते हैं कि हमने सोच लिया है, हमें क्या करना है? आपको हमारे बारे में सोचने की जरूरत नहीं है। इस तरह का विचार जब आता है तब लगता है कि यह बेटे बेटियों के चरित्र बिल्कुल बिगड़ चुके हैं। इनके लिए माता-पिता, गुरुओं के लिए कोई सम्मान नहीं है। ऐसे बेटे-बेटियों को संस्कारित करने के लिए आप इन चरित्रों को पढ़ें। इन कथानकों को सुनें जिसके माध्यम से आपको यह समझ में आये कि दुनिया में हम जो कर रहे हैं, वह केवल हम ही नहीं कर रहे हैं। दुनिया में ऐसे पहले भी होता आया है और कितनी बार ऐसी चीजें गलत हो जाती हैं। देखो! सामने क्या हो रहा है? भामण्डल सीता का कौन है? चित्र दिखाया गया किसको? लेकिन उसने कभी जीवन में अपनी बहन को देखा नहीं। उसका नाम भी उसे पता नहीं क्योंकि जन्म लेते ही उसका हरण हो गया। आज उसके सामने वह स्त्री दिखाई दे रही है तो वह उसके रूप में मोहित होकर के, कितना मोहित हो जाता है कि वह सोचता है कि इसको हम अपना करके

ही अब अपना जीवन आगे का जी पाएँगे, नहीं तो मेरा जीवन मरण को प्राप्त हो जाएगा। इस तरह का उसके अन्दर भाव आता है। देखो! क्या होता है?

विधाधर चन्द्रगति का राजा जनक के साथ छल करना

चंद्रगति ने जब सुना, भामंडल बेहाल।
जनक बुलाने को तभी, चली भूप एक चाल॥
एक विद्याधर को तभी, अश्व धराया रूप।
छल करके लाओ अभी, तुम मिथिलापुर भूप॥

वह चंद्रगति का पुत्र था। कौन? बोलो तो! चंद्रगति का ही पुत्र था। अरे! पालन तो उसी ने किया था। चंद्रगति को भी पता नहीं था यह पुत्र किसका है? क्योंकि उसने भी देव के माध्यम से उसे बीच में ले लिया था। वह जब चंद्रगति को पता पड़ा कि मेरा बेटा, मेरा भामण्डल किसी रूप को देख करके बेहाल हो गया है। बेहाल जानते हो? क्या होता है बेहाल? अब उसके हाल अच्छे नहीं है। मेरी ओर न अब अच्छे ढंग से देखता है, न मुझसे बात करता है, न मेरे पास बैठना चाहता है, न मेरे साथ में भोजन करना चाहता है। क्या हो रहा है? यह सब बेहाल होते हैं। समझ आ रहा है? यह भी एक बुखार होता है, ज्वर होता है। जब चढ़ता है, आसानी से उतरता नहीं है, इंजेक्शनों से नहीं उतरता। यह बुखार जब चढ़ता है तब आदमी के लिए ऐसी बेचैनियाँ होती हैं जिसके माध्यम से उसे रात में भी नींद नहीं आती। अगर नींद आ गई तो वही-वही दिखाई देती है और अगर नींद खुल गई तो भी वही-वही दिखाई देती है। ऐसा जब बेहाल हो जाता है तो उसका कोई भी निवारण नहीं होता, जब तक कि उसका दिमाग कोई ठंडा करने वाला न हो। कौन करे ठंडा? फ्रिज का पानी पीने से ठंडा होगा नहीं, कोई soft drink पीने से भी ठंडा होगा नहीं। वह दिमाग ठंडा कैसे होगा? जब तक उसको कोई reality न समझाए, जब तक उसके साथ कोई अच्छे ढंग से, मित्र के रूप में व्यवहार करके उसे उसके अन्दर की बात को ढंग से न बता पाए तब तक उसका दिमाग ठंडा होने का नाम नहीं

लेता। देखो! इस बेहाल भामंडल को देखकर के जब चंद्रगति ने देखा तो उसने सोचा कि यह सीता कौन है? यह मिथिला कुल की राजा जनक की बेटी है। इसको अपने भामण्डल के लिए लाना है क्योंकि भामण्डल उनका एक इकलौता बेटा है और वह भी अपने इकलौते बेटे के लिए सोचता है कि अगर इसने किसी को चाहा है तो मैं अपने बेटे के लिए इसके लिए पूर्ति करूँ। वह क्या करता है? एक चाल चलता है। पहले राजा जनक को यहाँ तक लेकर के लाया जाए। कैसे लाया जाए? राजा जनक तो कहाँ रहते हैं? भरत क्षेत्र में रहते हैं, मिथिलापुरी में रहते हैं और यह कहाँ पहुँचे? यह विजयार्ध पर्वत की श्रेणियों पर जहाँ विद्याधर राजा रहते हैं। वहाँ एक यह रथनुपुर के राजा, यह भामण्डल, यह वहाँ रहते हैं। अब वहाँ पर उन राजा जनक को लाना, उसके लिए एक चाल चली गई। वह चाल क्या है? आपके सामने एक छोटी सी पंक्तियों के रूप में आ रही है-

गगन गामी अश्व उड़ कर, जनक नगरी में आया है
न ऐसा अश्व देखा है, शोर नगरी में छाया है॥
पकड़ने को सभी दौड़े, सभी ने मात खाई है।
चले राजा जनक भी, धुन सवारी की समाई है॥
चढ़े राजा जभी उस पर, उड़ा वह अश्व पल भर में।
देश विद्याधरों के आनकर आराम पाया है॥

क्या हुआ? उस चंद्रगति ने एक विद्याधर को वहाँ पहुँचाया, जहाँ यह मिथिला पुरी में राजा जनक राज्य करते थे। उसने वहाँ पर एक अश्व का, बहुत सुंदर घोड़े का रूप बनाया क्योंकि यह विद्याओं के बल से सब रूप बनाना जानते हैं। एक अच्छे घोड़े का रूप बनाया जिसे देखकर के पूरी नगरी में शोर छा गया कि एक सुंदर घोड़ा आया है। जिसका रूप-सौंदर्य, जिसकी चाल, जिसकी थिरकन देखने के लिए पूरी नगरी उमड़ पड़ी और वह घोड़ा चलते-चलते राजमहल तक आ गया और वहाँ राजमहल पर आने के बाद जब राजा जनक ने शोर सुना तो उनका मन हुआ कि मैं भी इस घोड़े को देखूँ और देखा तो उन्होंने सोचा कि घोड़े को देखना क्या है,

इस घोड़े पर मैं ही सवारी करता हूँ। वह उस घोड़े पर सवारी करने के लिए उस पर बैठ गए और जैसे ही वह उस पर बैठे तो विद्याधर ने उस घोड़े सहित राजा जनक को ले जाकर के वहाँ रथनुपुर में चंद्रगति विद्याधर के पास पहुँचा दिया और जब वहाँ जाकर के जनक देखते हैं कि मैं कहाँ आ गया?

राजा जनक ने जिनालय में पूजा की और विधाधर चन्द्र गति से संवाद

दोहा-

देश निराला देख कर, जनक हुए हैरान।
श्री मंदिर में जायकर, पूजे श्री भगवान॥

उन विद्याधरों के यहाँ पर भी जिनालय बने रहते हैं, मंदिर बने रहते हैं। वह जब वहाँ उस वन में पहुँच गए और वहाँ पर उन्हें एक जिनमंदिर मिला। उस जिनमंदिर में जाकर के वह बैठ गए। तब तक उस विद्याधर ने, उस अश्व रूप में जो विद्याधर बना था उसने जाकर के वह समाचार चंद्रगति को दिया और जब चंद्रगति उनके पास में मिलने के लिए आते हैं तो देखो क्या होता है?

इतने में चंद्रगति आये, श्री जनक राव को साथ लिया।
अपने महलों में लाकर के, सन्मान सहित ठहराय दिया॥
फिर समय पाय कर कहन लगे, तुम पुत्री सीता सुकुमारी।
को पुत्र से मम परणा दीजे, जोड़ी ये बनेगी अति प्यारी।
तब कही जनक ने सुनो राव, ऐसा तो नहीं हो सकता है।
श्रीराम से यह सम्बन्ध हुआ, कोई भी तोड़ न सकता है॥
चन्द्रगति कहने लगे, हम विद्याधर जान।
हमसे यह सम्बन्ध कर, पाओगे सन्मान॥
रखे कौन गुण राम में, भूमि गोचरी जान।
हम चलते आकाश में, विद्या बल की शान॥
मर्यादा पुरुष श्रीराम है, सिद्ध प्रभु बलराम॥

जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम, है सिद्ध प्रभु बलराम॥

क्या हुआ? वह चंद्रगति जब राजा जनक से मिलता है तो कहता है कि आप अपनी बेटी का विवाह हमारे पुत्र भामण्डल से कर दो बहुत अच्छा सम्बन्ध बनेगा। मैं विद्याधरों का राजा हूँ और तुम भले ही जमीन पर रहने वाले हो लेकिन आपके लिए यह एक अवसर मिल रहा है कि आप हम नभचरों से, आकाश में उड़ने वाले विद्याधरों से अपना संबंध बना सकते हो। उस समय पर वह राजा जनक कहते हैं कि यह सम्बन्ध तो केवल रामचंद्र जी के साथ ही बनेगा क्योंकि हमने मन में विचार कर लिया है कि मैं अपनी बेटी को केवल श्रीराम के लिए दूँगा। तब वह कहता है कि अगर यह सम्बन्ध हमसे बना लोगे तो बहुत सम्मान मिलेगा। उन भूमि गोचरियों से सम्बन्ध बना करके आपको क्या मिलेगा? समझ रहे हो? जो आकाश में उड़ते हैं वह जमीन पर चलने वालों को इसी नजर से देखते हैं। वह विद्याधर उन श्रीराम के लिए कहते हैं कि इस तरह से आपका उनसे सम्बन्ध बन भी जाएगा तो कोई बहुत बड़ी बात नहीं होगी। हमसे सम्बन्ध बनाओ। हम चलते आकाश में विद्या बल की शान और इस तरह से जब उनसे यह विचार रखा गया तो उस समय पर यह बात को सुनकर के वह राजा जनक को गुस्सा आ गया। क्यों आ गया? क्योंकि उन्होंने अपने अहंकार में, चंद्रगति ने अपने अहंकार में इन भूमिगोचरियों का अपमान कर दिया। श्रीराम का भी अपमान किया और स्वयं सारे भूमिगोचरियों राजाओं का अपमान कर दिया और उस समय पर वह अपने मन में जब क्रोध से भर जाते हैं तो आगे क्या होता है? यह बात आपको आज तो सुनने को नहीं मिल पाएगी। अब आपके लिए यह बात कल देखने को, सुनने को मिलेगी कि आगे वह राजा जनक उस चंद्रगति के लिए क्या उत्तर देते हैं? कैसे वह वहाँ से बचकर के निकल कर आते हैं? फिर राम और सीता का विवाह भी होगा। होगा कि नहीं होगा? होगा, होगा, होगा। भले ही बीच में कितने ही विद्याधर आ जाएँ, भले ही बीच में कितने ही चंद्रगति और भामण्डल आ जाएँ लेकिन राम का विवाह तो सीता से ही होगा। हमें उस विवाह को भी देखना है कि कैसे होता है? यह प्रसंग आपके सामने

यहीं से एक कथानक शुरू होता है, बीच में शुरुआत में जो आपके लिए चार राजा, चार प्रकार की जो रानियाँ और उनके चार पुत्रों का कोई वर्णन इसमें विशेष रूप से इसलिए नहीं किया कि आपको संक्षेप से, यह कहानी जल्दी बढ़ते-बढ़ते दिखाई दे और जल्दी यह कहानी पूर्ण हो। इसके लिए यह जल्दी की तो जाएगी लेकिन यह जल्दी कितनी हो पाएगी यह आप लोगों के और हमारे ऊपर निर्भर करेगा कि इस कथानक को कितने दिनों में पूरा करना होगा। लेकिन अगर आपका उत्साह बना रहेगा तो यह जरूर है इस कथानक को बरेला में ही पूरा करके जाऊँगा। बोलिए शांतिनाथ भगवान की जय।

राजकुमारी सीता के स्वयंवर का महोत्सव

वैदिक परंपरा और श्रमण परंपरा

यह भगवान श्रीराम का निर्मल चरित्र आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। जिस कथा को हम पढ़ रहे हैं, आप लोग सुन रहे हैं, वह कथा जैन तीर्थंकरों के द्वारा बताई हुई, जैन आचार्यों के द्वारा बताई हुई गाथाओं के अनुसार आपको सुनाई जा रही है। यद्यपि भगवान श्री राम के विषय में रामायण के रूप में अनेक तरह की कथाएँ प्रचलित हैं, देश में हैं, विदेश में हैं लेकिन मुख्य रूप से अगर आप भारतीय इतिहास की ओर दृष्टिपात करेंगे तो आपको ज्ञात होगा कि इस धरती पर हमेशा से दो धाराएँ चली हैं। एक वैदिक परंपरा कहलाती है और एक श्रमण परंपरा कहलाती है। **वैदिक परंपरा** जो वेदों को प्रमुख रूप से मानती है और **श्रमण परंपरा** जो श्रमणों को, दिगंबर रूप को और जैन तीर्थंकरों को, जिनेंद्र भगवान को विशेष रूप से मानती है। ये दोनों ही परंपराएँ इतिहास के पन्नों पर अंकित हैं और इन दोनों ही परंपराओं का इतिहास अनादि है, सनातन है। जिस तरह से हम वाल्मीकि रामायण के माध्यम से वैदिक परंपरा के अनुसार भगवान श्रीराम का चरित्र सुनते हैं, सबने सुना है, आपने भी सुना होगा, हमने भी सुना है, पढ़ा भी होगा और टी. वी. सीरियलों के माध्यम से देखा भी होगा। ठीक इसी तरह से एक और परंपरा जो हमेशा समानांतर रूप में चलती आई है, जो श्रमण परंपरा कहलाती है, जैन परंपरा कहलाती है। यह परंपरा चौबीस तीर्थंकरों को भगवान के रूप में स्वीकार करती है और इससे पहले भी अनेक-अनेक भगवान हो चुके हैं यह भी स्वीकार करती है।

भगवान ऋषभदेव के प्रथम तीर्थंकर होने का उल्लेख सभी वेदों, पुराणों में मिलता है

इस श्रमण परंपरा का, जैन परंपरा का उल्लेख उनके तीर्थंकरों के उल्लेख से ज्ञात होता है कि सभी वेदों में, पुराणों में भगवान ऋषभदेव जो प्रथम तीर्थंकर हुए उनका उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण में भगवान ऋषभदेव, उनके पुत्र भरत, माँ मरूदेवी का वर्णन वैसा ही मिलता है, जैसा जैन आगम के अन्दर मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि जैन परंपरा अपने आप में एक सनातन परंपरा रही है और इस सनातन परंपरा को जिस तरह से हम वैदिक परंपरा को सनातन परंपरा कहते हैं, उसी के parallel यह परंपरा हमेशा से चली है। कितनी ही पुरानी सभ्यताएँ हो, चाहे वह हड़प्पा की सभ्यताएँ हो, मोहनजोदड़ो की सभ्यताएँ हो, सिंधु घाटी की सभ्यताएँ हो, इतिहास में हर सभ्यता में जिस तरह से वैदिक संस्कृति के अनेक शिलालेख, उल्लेख उत्खनन में प्राप्त होते हैं, इसी तरह से जैन मूर्तियाँ, जैन अवयव, जैन ++++मुद्राएँ, अनेक शिलालेख प्राचीनता के रूप में इन सब संस्कृतियों में, सभ्यताओं में उपलब्ध होते हैं। इसलिए हर उदार मना व्यक्ति को इस भारतीय संस्कृति का अगर समूचा अध्ययन करना है, तो उसे वैदिक परंपरा के साथ-साथ श्रमण परंपरा का भी बहुत अच्छे ढंग से अध्ययन करना आवश्यक है। यह परंपरा अन्य संप्रदायों की तरह अर्वाचीन, तात्कालिक नहीं है। जैसे बौद्ध है, सिख है, अन्य-अन्य इत्यादि हैं। इनका एक उद्भव काल हमारे सामने है और यह सब ईसा के कुछ पहले या कुछ बाद के हैं। लेकिन भगवान ऋषभदेव जो प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं, उन तीर्थंकरों के बाद में तेईस तीर्थंकर और हुए, चौबीस तीर्थंकरों की यह जो परंपरा है, यह परंपरा इस श्रमण धर्म को या जैन धर्म को बहुत प्राचीन सिद्ध करती है और जब इसी परंपरा के अनुसार हम इन महापुरुषों का वर्णन सुनते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि भगवान ऋषभदेव तो पहले तीर्थंकर थे। उनके बहुत समय बाद दूसरे तीर्थंकर हुए, उनके बहुत समय बाद तीसरे तीर्थंकर हुए और वह बहुत समय असंख्यात वर्षों का काल तक बीतता है।

राम, लक्ष्मण भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी के काल में हुए है

उसके बाद में जब यह बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ भगवान हुए, उन मुनिसुव्रतनाथ भगवान के तीर्थ का जब काल चल रहा होता है, तो उस काल में यह राजा दशरथ और उनके यह पुत्र श्री राम, लक्ष्मण आदि का यह जो चरित्र चित्रण हमारे सामने आता है, यह कथानक सामने आता है, यह उस समय का है। उसके बाद और भी तीर्थंकर, बीसवें तीर्थंकर के बाद में इक्कीसवें तीर्थंकर हुए नमिनाथ भगवान, फिर उसके बाद में नेमिनाथ भगवान बाईसवें तीर्थंकर हुए, उसके बाद में पार्श्वनाथ भगवान तेईसवें तीर्थंकर हुए और उसके बाद चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हुए, जो ईसा से ५२७ वर्ष पहले उनका काल माना जाता है। इसके बाद में जो यह परंपरा चल रही है जो हमारे सामने है। इस पूरी परंपरा को यदि हम ध्यान में रखें तो हमें ज्ञात होता है कि इन तीर्थंकरों का काल बहुत असंख्यात वर्षों पुराना काल है और इस प्राचीनता को अगर हम ध्यान में रखते हैं तो भगवान मुनिसुव्रतनाथ के तीर्थ में हुए यह श्री राम, श्री हनुमान, इत्यादि इन सब का चरित्र चित्रण हमारे पुराणों में मिलता है और उदारमना व्यक्ति को हमेशा अपना हृदय इतना खुला रखना चाहिए, अपना मन मस्तिष्क इतना खुला रखना चाहिए कि ज्ञान की बातें हमें सबसे ग्रहण करने का भाव आना चाहिए। हमारे मन में आग्रह नहीं होना चाहिए। अनाग्रह पूर्वक अगर हम सम्यग्ज्ञान की बातें सुनेंगे तो हमारा मन जरूर पवित्र होगा। भगवान की कथा वही है, कुछ कथानक हो सकता है कहीं उपलब्ध न हो, जो जैन दर्शन में उपलब्ध हो लेकिन हमें उन पर भी चिंतन मनन करना चाहिए। हम यह नहीं कह रहे कि आपको मेरी हर बात को मान लेना चाहिए या मेरी हर बात को आप को स्वीकार कर लेना चाहिए लेकिन इतना जरूर कहना चाहूँगा कि हर किसी उदारमना व्यक्ति को एक दूसरे की बातों को सुनना जरूर चाहिए। अगर हम सुनने की भावना रखेंगे तो हम कभी समझ पाएँगे, विचार कर पाएँगे कि आखिर इन तथ्यों से हमारे भगवान की छवि में कोई अन्तर नहीं पड़ता। मानो कि जैसे कल आपसे कहा था राजा दशरथ की चार रानियाँ थी। हमने सुना है कि राजा

दशरथ की तीन रानियाँ थी लेकिन कल आपको बताया गया राजा दशरथ की चार रानियाँ थी। हमें इन तथ्यों से क्या फर्क पड़ता है? आखिर चार पुत्र तो हमारे सामने हैं ही हैं। श्री राम हैं, लक्ष्मण हैं, भरत हैं, शत्रुघ्न हैं और उनका जीवन चरित्र हमारे सामने वैसा ही आ रहा है। कथाएँ कैसे आगे बढ़ रही हैं? हमें एक नए दृष्टिकोण से अपने भगवान के प्रति अगर हमारी श्रद्धा रहती है, हमारा विश्वास रहता है, तो उनके अनेक अनेक पहलुओं को जानने की हमारे अन्दर जिज्ञासा अवश्य होनी चाहिए और इसी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए यह जैन रामायण आपके सामने आ रही है।

विधाधर राजा चन्द्र गति अपनी विधाओं और शक्तियों का वर्णन करते हैं

जब कल उस कथानक में आपसे कहा कि वह मिथिला पुरी के राजा जनक अपनी पुत्री सीता का विवाह श्रीराम से करने का अपना मन बना लिए थे लेकिन चंद्रगति का पुत्र जो भामंडल, वह उस स्त्री का, उस पुत्री का चित्र देख करके जब मोहित हो गया तो अपने पुत्र को बेहाल देख करके उस चंद्रगति राजा ने राजा जनक को अपने यहाँ बुला लिया। कैसे बुलाया? वह कल आपको बताया था। ध्यान है कि भूल गए? उन्होंने एक विद्याधर को भेजा, उसने घोड़े का रूप बनाया, बहुत सुंदर घोड़ा, सफेद रंग का घोड़ा, अनेक तरह की कलाओं को दिखाने वाला घोड़ा और उस घोड़े को देख करके राजा जनक का मन उस पर सवारी करने को हुआ और जैसे ही वह सवारी करके उस पर बैठे, उस घोड़े ने उड़ करके तुरंत उन्हें विजयार्ध पर्वत पर पहुँचा दिया। उन विजयार्ध पर्वत पर जब वह विद्याधरों के यहाँ पहुँच गए, वहाँ पर भी जिनालय बने होते हैं। उन जिनालयों में उन्होंने दर्शन किए तब तक राजा चंद्रगति आ जाते हैं और वह आपस में बैठकर के बात करते हैं। राजा चंद्रगति कहते हैं कि मैं अपने पुत्र का विवाह आपकी पुत्री से करना चाहता हूँ। जब राजा जनक ने कहा कि नहीं! मैंने उस पुत्री का विवाह करने का मन तो श्री राम के साथ बना लिया है, यह संबंध नहीं हो सकता है। चूँकि वह विद्याधर अपने आप को बहुत बड़ा मानते हैं तो वह

विद्याधर कहने लगा कि आपको हमारा अपमान करना अच्छी बात नहीं। आप समझ नहीं पा रहे हैं कि हम क्या लोग हैं? हम क्या चीज हैं? हम कितने बड़े लोग हैं? हम आकाश में उड़ने वाले, विद्याओं को धारण करने वाले, महा शक्तियों को धारण करने वाले, अनेक तरह की विक्रियाओं को करने वाले, हम बड़े समर्थ लोग होते हैं और हमने अगर अपने पुत्र की खातिर आपको यहाँ बुलाया है, तो आपको यह बहुमान होना चाहिए था, आपको यह लगना चाहिए था कि हमें इतना बड़ा संबंध करने को मिल रहा है। आपको इसकी स्वीकारता देनी चाहिए थी लेकिन आपने ऐसा नहीं करा। यह जब चंद्रगति ने जनक से कहा और जनक ने चंद्रगति की बात को नहीं माना तो फिर थोड़ा सा गुस्सा चंद्रगति को भी आया और थोड़ा गुस्सा फिर बाद में जनक को भी आया। जब चंद्रगति को गुस्सा आया तो वह कहता है- **'शिशोर्विषफले प्रीतिः निःस्वस्य बदरादिषु। ध्वांक्षस्य पादपे शुष्के स्वभावः खलु दुस्त्मज्ञः॥'**वह चंद्रगति कहता है- आपका यह इन्कार करना ऐसा ही लगता है कि जैसे किसी बच्चे की विष फल में प्रीति हो जाए। बच्चा जानकार नहीं होता है, उसके सामने विष फल अगर अच्छा दिख रहा है, लाल रंग का दिख रहा है, तो वह उसे खाने लग जाता है। चंद्रगति कहता है कि आपकी यह प्रीति उन भूमि गोचरी, उन लोगों में जो हो रही है, वह ऐसी प्रतीत होती है जैसे किसी निर्धन व्यक्ति के लिए बेर खाने में प्रतीति अच्छी लगती है। बेर खाने में उसकी प्रीति होती है। फल तो बहुत सारे होते हैं लेकिन छोटे-छोटे बेर खा करके ही निर्धन व्यक्ति अपने आपको बड़ा मानता है। ऐसे ही आप जो है, उन भूमि गोचरी तुच्छ लोगों के साथ में संबंध रखने को तैयार हुए और हमने आपको बुलाया है, आप हमारे संबंधों को स्वीकार नहीं कर रहे हो। आपकी यह प्रीति ऐसी लग रही है, जैसे कौवा होता है, उसकी सूखे वृक्ष की प्रति प्रीति होती है। **'ध्वांक्षस्य पादपे शुष्के'** सूखा वृक्ष होता है, उसे उस पर बैठ करके ही अच्छा लगता है लेकिन सूखे वृक्ष का कोई महत्व नहीं होता है, कौआ उसी पर बैठता है। **'सुभावे खलु दुष्ट जय'** ऐसा लग रहा है कि आपका स्वभाव भी इन्हीं लोगों की तरह है, जो आप अपने स्वभाव में

बदलाव नहीं चाह रहे हैं, आप हम से अपना संबंध बनाना नहीं चाह रहे।

राजा जनक का विद्याधर चन्द्र गति को प्रत्युत्तर

जब चंद्रगति ने जनक से यह कहा और श्री राम के प्रति उस चंद्रगति विद्याधर का जब attitude देखा तो उस समय पर राजा जनक को भी थोड़ा सा गुस्सा आ गया। क्योंकि उन्होंने उन श्री राम की सामर्थ्य पहले देख रखी थी। जब वह आपत्ति में पड़े थे तब उन्हीं श्री राम और लक्ष्मण ने उनको आ करके बचाया था। बहुत बड़े म्लेच्छों के सरदारों से और म्लेच्छों के समूह से उनको उबारा था। वह उनकी शक्ति को जानते थे और उनके मन में विश्वास था कि नहीं! श्रीराम से बढ़कर के कोई भी यहाँ पर पुण्यवान, कुलवान, रूपवान, योद्धा, शूरवीर नहीं है और ऐसा विचार उनके मन के अन्दर चलता है। उसी विचार के कारण से वह राजा जनक चंद्रगति से कुछ कहते हैं और वह क्या कहते हैं? आपके सामने आगे काव्य के माध्यम से आ रहा है-

मर्यादा पुरुष श्री राम, है सिद्ध प्रभु बलराम।
जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम॥
बात यह सुन जनक, क्रोध में भर गए।
थे जो कहने नहीं, वह वचन कह गए॥
पक्षी उड़ते बहुत, से हैं आकाश में।
फर्क क्या उनमें तुम में, बताओ जरा?
तीर्थंकर व बलभद्र, चक्रेश तक।
है इसी भू पे आकर, जनम धारते॥
पूजते जिनको आकर, के अमरेश भी।
हम न झूठी प्रशंसा, करा चाहते॥
व्यर्थ श्री राम के गुण, हम न गा सकें।
यह है संबंध ऐसा, न छुड़वा सके॥

दोहा -

जनक राव के सुन वचन, हुए राव गंभीर।
शर्त रखी है एक कठिन, धार हृदय में धीर॥

क्या कह रहे हैं? राजा जनक उन चंद्रगति विद्याधर से क्या-क्या कह गए? जो वचन उन्हें नहीं कहने थे वह भी कह गए। ऐसा क्यों कहा? ऐसा

इसलिए कहा कि जो बड़े धीर-वीर राजा होते हैं, वे तुरंत क्रोधित नहीं होते हैं, कभी भी दुर्वचन नहीं बोलते हैं, किसी का अपमान नहीं करते हैं लेकिन जब कोई उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाता है और जिनको वह अपना आदर्श मानते हैं और जिनके लिए अपना विश्वास रखते हैं, उनके लिए अगर कोई बुरा कहता है, तो वीर क्षत्रिय राजा किसी भी तरह से उसको सहन नहीं कर सकते। अब क्षत्रिय सभी हैं, वह चंद्रगति विद्याधर भी कम नहीं है। राजा जनक भी क्षत्रिय है, श्री राम तो क्षत्रिय हैं ही लेकिन यह सभी महापुरुष एक दूसरे के प्रति सम्मान भी रखते हैं लेकिन अपने आदर्शों के प्रति अगर कोई बुरा कहता है तो फिर इनका स्वाभिमान जब छिड़ता है, इनके स्वाभिमान को जब कहीं आघात पहुँचता है, तो फिर यह भी पीछे नहीं रहते हैं। **राजा जनक ने कहा- अगर तुम्हें इसी बात पर बहुत गर्व है कि तुम आकाश में उड़ते हो तो आकाश में तो पक्षी भी उड़ते हैं। हमें यह बताओ कि उन पक्षियों में और तुम में क्या फर्क है?** देखो! धीर-वीर शूर को अगर छेड़ोगे तो फिर वह छोड़ेगा नहीं। उसी तरह से जब राजा जनक को छेड़ा गया और चंद्रगति ने कहा तो फिर राजा जनक ने थोड़ा सा उनके लिए भी कहा और यह कहा कि एक बात बताओ तुम्हें अपनी विद्याधर होने का इतना अभिमान है। मैं मानता हूँ, ठीक है विद्याधर हो, आकाश में उड़ते हो, विद्याएँ रखते हो लेकिन मुझे अपनी भारत भूमि का बहुत बड़ा अभिमान है, जहाँ पर बड़े-बड़े तीर्थंकर और महापुरुष जन्म लेते हैं। बताओ आज तक किसी विद्याधर श्रेणी में कोई तीर्थंकरों ने जन्म लिया हो? कोई महापुरुषों ने जन्म लिया हो? कोई चक्रवर्तियों ने जन्म लिया हो? बताओ? जब यह बात उनसे कही गई तब उन राजा जनक ने कहा देखो! मैं कभी भी झूठी प्रशंसा नहीं करता। मैं

कभी भी किसी के लिए अंधविश्वास के साथ भी नहीं चलता। मैं आपसे कह रहा हूँ श्री राम बहुत बड़े योद्धा हैं, गुणवान है, आप उनके प्रति किसी भी तरह का दुर्भाव न रखें। मैंने जिस तरह से उनके बारे में सोचा है, मेरी बेटी सीता का विवाह श्री राम से ही होगा। आप उस संबंध को छुड़वा नहीं सकते, इसके लिए आपको जो करना हो आप कर लेना।

विद्याधर चन्द्रगति राजा जनक के सामने धनुष उठाने की शर्त रखते हैं

जब चंद्रगति ने यह सुन लिया तो फिर थोड़ा सा चंद्रगति के मन में भी विचार आया कि बात को बिगाड़ना नहीं है बात को बनाना है और बात को बनाने के लिए भी कई तरीके हो सकते हैं। अगर हमारे लिए लग रहा है कि कोई भी संबंध नहीं बन रहा है, तो एकदम से क्षत्रिय राजा का हार स्वीकार कर लेना भी उसे गवारा नहीं होता। वह सीधे-सीधे हार भी स्वीकार नहीं कर सकता, इसलिए उसने एक शर्त रखी। उसने कहा राजा जनक से, मैं आपकी बात मानता हूँ और मैं आपके अनुसार ही इस बात को स्वीकार कर लूँगा कि वास्तव में वह श्री राम इतने शूर वीर हैं लेकिन उसके लिए एक परीक्षा लेनी होगी और इस परीक्षा में अगर वह उत्तीर्ण हो जाते हैं तो ठीक है और इस परीक्षा में उनके शौर्य की उनके शूर-वीरपने की, उनके पुण्य की परीक्षा की जाएगी और उसके लिए एक योजना उसने राजा जनक के सामने रखी और वह योजना क्या है? वह आपके सामने आती है।

मर्यादा पुरुष श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम॥
तुम राम की जो महिमा गाई, हमको विश्वास नहीं आता।
हम लेंगे परीक्षा थोड़ी सी, गुणगान आपका नहीं भाता॥
दो धनुष आपको देते हैं, कर लीजे स्वयंवर की तैयारी।
जो इनको आन चढ़ाएगा, वो ही परणेगा सुकुमारी॥
यदि राम से धनुष चढ़ेगा नहीं, जबरन सीता को लाएँगे।
संदेश पठाओ देशों में, हम भी तो शीघ्र ही आएँगे॥
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो
जय हो, जय हो, राम की जय हो

सुन जनक आए मिथिला पुर में, मन में संदेह हुआ भारी।
श्री राम धनुष को चढ़ा सके! बस यही चिंता थी सारी॥
वह धनुष नहीं विकराल काल, अग्नि और सर्प फुँकारते हैं।
हैं देव सहित सेवा करते, कोई पास तलक नहीं आते हैं॥

जब चंद्रगति के लिए यह विचार आया तो चंद्रगति ने जनक के सामने एक शर्त रखी कि हमारे पास में देव रक्षित दो धनुष हैं। उन धनुषों के नाम हैं- **वज्रावर्त** और **सागरावर्त।** यह दो ऐसे धनुष हैं, जिन्हें सामान्य व्यक्ति इन धनुष को कभी उठाना तो दूर इनके सामने खड़ा भी नहीं हो सकता। मैं चाहता हूँ कि अगर तुम्हारे श्रीराम इतना ही शौर्य और इतना ही पराक्रम धारण करते हैं, तो इन धनुष की डोरी चढ़ा करके इस धनुष को हाथ में लेकर, के उठा करके दिखाएँ। अगर उन्होंने ऐसा कर पाया तो इस स्वयंवर की विधि से ही मैं यह मान लूँगा कि आप अपनी सुकुमारी सीता को वह राम के लिए समर्पित कर देना और अगर ऐसा नहीं हो पाया तो मैं जबरन सीता को तुम्हारी मिथिला नगरी से उठाकर के ले जाऊँगा। यह स्वयंवर की विधि सबके समक्ष होगी, आसपास के अनेक और राजा हैं उन सब को बुलाओ और उन सब राजाओं के माध्यम से यह पराक्रम की एक परीक्षा ली जाए। जो इस धनुष को चढ़ा देगा। डोरी चढ़ा देना एक बहुत बड़ी चीज होती है, जो इस धनुष की डोरी को चढ़ा देगा, डोरी सहित कर देगा उसी के लिए स्वयंवर की विधि के माध्यम से सीता उसकी होगी।

राजकुमारी सीता के स्वयंवर के महोत्सव का आयोजन हुआ

इस तरह का विचार जब चंद्रगति ने मिथिला पुर के राजा जनक के समक्ष रखा, तो जनक ने उसकी स्वीकारता भरी। उन्होंने कहा कि मुझे बात स्वीकार है और इस बात की तैयारी करने के लिए उन्हें बीस दिन का समय दिया गया। बीस दिन के बाद में वह राजा जनक अपने ही नगर में, अपने ही राज्य में तमाम आसपास के राजाओं को खबर दे करके सबको बुलाते हैं और एक बहुत बड़ा स्वयंवर का महोत्सव होता है। उसमें वह चंद्रगति भी आता है और आसपास के अनेक विद्याधर, भूमि गोचरी राजा भी आते

हैं। वह जो दोनों प्रकार के धनुष हैं, उन धनुषों को वहाँ पर रखा जाता है और उन धनुषों को देख करके जैसे कि यहाँ लिखा है- वह धनुष नहीं है विकराल काल है, अग्नि सर्प फुँकारते हैं। जिनके मुँह से अग्नि निकलती है, जिनके पास से सर्प फुँकार करते हैं, देव रक्षित हजारों देवों से सहित हुए धनुष थे और उनके पास में पहुँचते हुए भी अनेक राजाओं की क्या दशा होती है? आगे यह कहानी कैसे आगे बढ़ती है?

जब जनकपुरी में वह मिथिला नगरी के राजा खुद अपनी पत्नी वैदेही को यह बताते हैं कि मैंने इस तरह की शर्त रख ली है तो थोड़ी देर के लिए उनकी रानी, उनकी पत्नी के लिए भी बहुत खेद होता है। यह क्या आपने कर लिया? एक तो मेरा बेटा पहले ही जन्म के समय पर ही हरण कर लिया गया था, अगर कहीं यह पुत्री भी मेरे हाथ से निकल गई तो मैं फिर अपने भाग्य को हमेशा रोती ही रहूँगी क्या? ऐसा विचार करके जब वह राजा जनक के सामने रोती है, तो उस समय पर राजा जनक उसे कहते हैं, संभालते हैं देखो प्रिये! रोने से कुछ नहीं होता। कर्म के जैसे फल होंगे हमें उसी तरह से कर्मों के फल के अनुसार नाचना पड़ता है। इन कर्मों के माध्यम से ही सारा लोक, सारा संसार नाच रहा है और वह कर्म ही सबसे बड़ा नृत्याचार है जो सबको नचाता है। हम लोग तो उसके केवल एक प्यादे हैं, जो उसके कारण से नाच रहे हैं। अगर हमारे भाग्य में पुत्री का सुख होगा, हमारे भाग्य में हमारा सम्मान होगा तो हमें मिलेगा और अगर हमारे कर्मों के फल से कुछ ऐसा ही कुछ घटित होना होगा तो वह भी हम सामने देखेंगे। हमें अपने कर्मों पर विश्वास करना चाहिए और जो अब हमने उस चंद्रगति राजा से अपना एक विश्वास प्रकट किया है, हमें वह काम तो करना ही है और ऐसे करके यह संदेश पूरी जनकपुरी में पहुँचता है। देखिए -

दोहा -

जनकपुरी में हो रहे, घर घर मंगलाचार।
जनक आगमन से हुआ, सब को हर्ष अपार॥
राजा चिंतातुर हुए, कठिन शर्त को देख।

रानी सुन व्याकुल भई, क्या विधना का लेख॥
जनकराज का कठिन प्रण, जग में शूर जो होय
प्रत्यंचा को चढ़ाएगा सो सीतापति होय।
जनकपुर उत्सव है भारी, जनकपुर उत्सव है भारी।
अपने वर का चयन करेगी सीता सुकुमारी।
जनकपुर उत्सव है भारी, जनकपुर उत्सव है भारी।
हो जनकपुरी में हो रहे घर घर मंगलाचार
जनक आगमन से हुआ सबको हर्ष अपार,
राजा जनक चिंतातुर हुए कठिन शर्त को देख ,
रानी सुन व्याकुल हुई क्या विघ्ना के लेख।
हो राम कहानी सुनो रे राम कहानी,
राम कहानी सुनो रे राम कहानी।
ओ कहत सुनत आई
कहत सुनत आई अँखियों में पानी
राम कहानी सुनो रे राम कहानी
श्री राम जय राम जय जय राम
पहले तो पुत्र गया मेरा, क्या पुत्री भी अब जाएगी।
हाँ! कौन कर्म आगे आए, होनी क्या खेल खिलाएगी॥
राजा ने स्वयंवर की ठानी, खबरें सब देश विदेश गई।
मंडप बनवाया बहुत बड़ा, जिसमें सब प्रजा समाए गई॥
रघुवंशी और चंद्रवंशी, हरि-वंशी भी सब आए हैं।
राजा ने कर सन्मान सभी का, आदर से बैठाए हैं॥
सतखने महल पर सीता थी, सखियों के मध्य विराज रही।
एक दासी सब राजाओं के, गुण रूप वंश बतलाए रही॥
इन धनुषों पर इस मंडप में, जो पहली डोर चढ़ाएगा।
हे राजकुमारी आज वही, तुमसे वर माल डलाएगा॥

अनेक देशों के महाराजा और राजाओं को स्वयंवर में आमंत्रित किया गया

सारी तैयारियाँ हो चुकी और स्वयंवर मंडप के लिए बहुत बड़ा एक मंडप बनाया गया और उसमें सब देश विदेशों के राजा बुलाए गए। उसमें सभी राजा थे, इक्ष्वाकु वंश के अन्दर अनेक वंश और चले, जो रघुवंश कहलाए, चंद्रवंश कहलाए, सोमवंश कहलाए, हरिवंश कहलाए, नाथवंश कहलाए। इन सब वंशों के राजा वहाँ पर अपने अपने सिंहासनों पर विराजमान हुए। जिन्हें अपने पुत्र का विवाह करना था वह अपने पुत्रों को साथ ले करके आए, अपने राजकुमारों को साथ ले करके आए और उस सीता की रक्षा करने के लिए चूँकि पहले से जनक को पता था कि अगर कहीं कुछ गड़बड़ हुआ तो सीता की रक्षा करना पहले जरूरी है। उस सीता को महल के ऊपर केवल देखने के लिए वहाँ पर उसको बिठाया गया और उस सीता के आसपास सात सौ कन्याओं को उसके साथ में रखा गया। सात सौ कन्याओं से घिरी हुई वह सीता जहाँ बैठी हुई थी वहाँ आसपास बड़े बड़े योद्धा, बड़े बड़े सामंत उसकी रक्षा करने के लिए नियुक्त किए गए थे। इन सब सुरक्षाओं के बीच में वह स्वयंवर की तैयारियां हुई थी और उस स्वयंवर में वह धनुष, जो दो बड़े-बड़े धनुष थे **वज्रावर्त** और **सागरावर्त** वह उनके सामने रखे गए। यह स्वयंवर की एक परंपरा होती है कि एक दासी, एक सेविका वह रानी सीता को बताती है कि यह राजकुमार कौन है? कहाँ से आए? किस देश के हैं? क्या इनके गुण हैं? क्या इनका शौर्य है? सबका biodata उसके पास में होता है और वह एक-एक करके सब से उनका परिचय कराती है और वह परिचय होता जाता है। सभी राजकुमार उस धनुष के पास तक आते हैं और सब अपने अपने शौर्य को दिखाने के लिए, देखने के लिए भी तैयार रहते हैं और उसके साथ-साथ जब इस तरह से यह कार्यक्रम चल रहा होता है, तो आप देखें कि वहाँ पर और क्या-क्या होने लगता है?-

दोहा -

खड़े हुए राजा जनक, बोले वचन गंभीर।
जो चाहे आगे बढ़े, धनुष चढ़ाए वीर॥

राजा जनक ने ऐलान किया इतने राजा यहाँ पर आए हैं, सभी अपने अपने सामर्थ्य के परीक्षा करें और जिस को आगे आना है वह आगे आए और एक-एक करके सब धनुष चढ़ाने की अपनी सामर्थ्य को दिखाएँ और जब इस तरह से वह बात सामने आती है तो देखिए क्या होता है?

धनुष चढ़ाने वीर जो आते, हार मान कर जाते।
महाप्रलय धारी धनुषों को, छूने तक नहीं पाते॥
प्राण गए तो क्या शादी, क्या सुंदर राजकुमारी।
कोई कहे ये शील पालेंगे, सदा रहे ब्रह्मचारी॥
हाय हम क्यों यहाँ आए जी, प्राण नहीं बचने पाए जी
धनुष नहीं काल हमारा।
प्राण यदि बच जाएँ भाई, ब्याह न करें दोबारा॥

वह धनुष इतने भयंकर थे कि अनेक राजा तो उसके सामने आ करके ही डर करके बैठ जाते थे और सोचते थे कि धनुष पास तक जाने के लिए अपने काल को बुलाना ठीक नहीं है क्योंकि प्राण बचेंगे तब तो राजकुमारी मिलेगी और अगर एक राजकुमारी नहीं मिली तो कोई बात नहीं दूसरी तो मिलेगी। अपने प्राण बचाना है, ऐसा सोच करके अनेक राजकुमार उठे और अपने-अपने स्थान पर बैठ गए और फिर आगे क्या होता है?

श्रीराम जी धनुष को कमल के फूल की तरह उठा लेते हैं

दोहा-

राजाओं को देखकर, विकल और बेचैन।
धनुष ओर देखन लगे, श्रीराम भर कर नैन॥
उठे धीर गति से बढ़े, आए धनुष के पास।
आदि प्रभु को सुमर के, धर हृदय विश्वास॥
वह वज्रावर्त और सागरावर्त, देवो पुनीत कहलाते हैं।
श्रीराम के आते ही दोनों, शिष्यों की तरह नम जाते हैं।
जिस समय उठाया वज्रावर्त, भूमंडल सारा काँप गया।
सारे राजाओं के मन पर, एक साँप सा मानो लोट गया॥

और इधर उठा लक्ष्मण जी ने, सागरावर्त को तान दिया।
जब बाण उठाया हाथों में, तब राजाओं का प्राण गया॥
श्री रघुकुल कोमल कमल नयन को
पहनाओ जयमाला, पहनाओ जयमाला।
मर्यादा पुरुष को वरन का अवसर
फिर नहीं आने वाला, फिर नहीं आने वाला
जब धनुष चढ़े ले वरण माल, सीता जी मण्डप में आईं।
वरमाल कंठ में पहनातीं, वह पुलक प्रेम में सकुचाई॥
जो विद्याधर वहाँ आए थे, लक्ष्मण को देख हर्षाए गए।
निज अष्टादश कन्याओं से, वो उनका ब्याह रचाए गए॥
श्री कनक राय ने निज पुत्री, श्री लोक सुंदरी सयानी का।
कर-ग्रहण भरत से करा दिया, उस रूप सुंदरी ज्ञानी का॥
शादी की वेदी सजी और, सीता का ब्याह संस्कार हुआ।
फिर सखी सहेली मिल बैठी, घर-घर में मंगलाचार हुआ।
जब हुई विदा की तैयारी, माता ने शिक्षा दीनी है।
श्री जानकी जी ने हर्ष सहित, वह सभी ग्रहण कर लीनी है।

जब रामचंद्र जी की बारी आई तो वह उस धनुष के सामने जैसे गए, वह धनुष ने फुँकार करना बंद कर दिया। उसके मुँह से जो आग निकल रही थी वह आग एकदम से ठंडी-ठंडी हवाओं में बदल गई और उन्होंने उस धनुष को ऐसे उठा लिया जैसे कोई कमल का फूल अपने हाथों से उठा लेता है और उस डोरी को उस प्रत्यंचा पर चढ़ा करके उन्होंने जब हाथ में ले करके उस पर बाण रख करके उसे तानने की कोशिश की तो अनेक तरह के गंधर्व और किन्नर देव आ करके उनकी प्रशंसा करने लग गए और उस समय पर जय जयकारों से सारा सभा मंडप गुँजने लग गया। एक धनुष वह श्रीराम ने उठा लिया जिसे वज्रावर्त कहा जाता था तो दूसरा धनुष लक्ष्मण ने उठा लिया जिसे सागरावर्त कहा जाता था और उस धनुष को जब उन्होंने उठा लिया तो अनेक विद्याधर लोग वहाँ बैठे थे। उन विद्याधर लोगों ने

लक्ष्मण के लिए भी अपनी कन्याओं को प्रदान कर दिया और अठारह कन्याओं के साथ लक्ष्मण का भी विवाह वहाँ पर संपन्न करने की तैयारी की गई थी। उसी समय पर राजा जनक के भाई राजा कनक भी थे और उनकी भी एक पुत्री थी, जिसका नाम था लोकसुंदरी और उस लोकसुंदरी का विवाह करने के लिए राजा कनक ने अपना मन बनाया तो उन्होंने तीसरे भाई भरत के लिए उन्होंने वह कन्या स्वीकार करने के लिए हामी भरी और इस तरह से उस विवाह मंडप में श्री राम सीता का, लक्ष्मण का और भरत का विवाह वहाँ पर संपन्न हुआ और सब विवाह की तैयारियाँ होने के बाद में सब तरह का मंगलाचार हुआ और उस विवाह को सब लोगों ने देखा, सराहा और जो विद्याधर लोग देश-विदेश के अनेक राजा आए थे वह किसी तरह से लज्जित हो करके अपने-अपने स्थानों को चले गए।

विदाई के समय सीता को माता-पिता की शिक्षा

जब वहाँ से विदा होने के लिए सीता की बारी आती है तो उस समय पर उस जानकी के लिए, जानकी क्यों कहा जाता है? जनक की पुत्री जानकी कहलाती है। उस जानकी सीता के लिए कुछ शिक्षा दी गई कि बेटा! दूसरे के घर में जा रही हो, क्या तुम्हें वहाँ पर करना है? वह शिक्षा आपको यहाँ पर गजल के रूप में सुनाई जाती है-

विदा हो करके अय बेटी, तुम अब ससुराल जाओगी।
मुझे आशा यही भारी, सुयश कुल का बढ़ाओगी॥
तेरी माता कौशल्या है, हुक्म उनका बजाना तुम।
पिता दशरथ जी को मानो, तभी सन्मान पाओगी॥
देवरानी और सासु को, करो आदर सहित सेवा।
इसी सेवा की मेवा से, वहाँ तुम प्रेम पाओगी॥

सीता को शिक्षा दी, किसने? सीता के माता-पिता ने। तुम जा रही हो, अब तुम्हारी माता यह विदेहा नहीं, अब तुम्हारी माता कौशल्या कहलाएगी और तुम्हारे पिता अब दशरथ जी होंगे और जिस तरह से तुमने यहाँ पर अपने माता-पिता का लाड़ प्यार पाया, वहाँ पर जा करके भी उन सास और ससुर की इस तरह से माता-पिता समझ करके सेवा करना, उनका हुक्म बजाना।

हुक्म बजाना समझते हो? जो हुजूर मेरे आका! हुक्म बजाने का मतलब जी हुजूरी करना भी होता है और जो हुक्म मेरे आका मतलब जो वहाँ पर कहा जाए उन्हें आका समझ करके उसको स्वीकार कर लेना। यह जब शिक्षा दी जाती है बेटियों को तब जाकर के वह पर-घर में भी एक इस तरह का वातावरण तैयार कर लेती है कि उन्हें कभी यह नहीं लगता कि मैं अपना एक घर छोड़ करके आई थी। उन्हें दूसरे घर में जाकर की भी उसी तरह से माता-पिता, भाई-बहन, देवरानी-जिठानी आदि सब उन्हें उसी तरह से पालने लग जाते हैं, उसी तरह से देखने लग जाते हैं। इस तरह की

यह भारतीय परंपराओं में बेटियों को शिक्षा दी जाती थी, जब बेटियाँ एक घर से दूसरे घर में विवाह करके जाती थी और इस शिक्षा का पालन करती थी। इसी कारण से बेटियाँ खुश रहती थी, सुखी रहती थी और उनकी सेवा के माध्यम से जो उन्हें प्रेम मिलता था, उसके कारण से कभी उनके मन में भाव नहीं आता था कि मैं यह घर छोड़ करके अब किसी दूसरे घर में चली जाऊँ, मैं अपने पति को छोड़ दूँ, मेरे यहाँ पर सास-ससुर मुझे परेशान कर रहे हैं, divorce की कोई कल्पना भी तब संभव नहीं थी। समझ में आ रहा है?

जहाँ आज यह वैधानिक नियम बन गया है, ऐसे इस कलिकाल में हम सोचे कि जब हमारे पास में किसी भी तरह के नियम, कानून, सुविधाएँ होती हैं तो हम लगभग कभी-कभी उन कानूनों के अनुसार ही अपने आप को चलाने लग जाते हैं। हम सोचते हैं कि यह कानून हमारे लिए बने हैं तो शायद इसीलिए बने हैं कि जब मन आए तब मैं किसी को धमकी दूँ। जब मन आए तब मैं घर छोड़ने की बात करूँ और जब मन आए तब मैं पति को भी छोड़ दूँ, पिता को भी छोड़ दूँ, इस तरह के जो यह नियम कानून आप की सुरक्षा के लिए बने थे। उन कानूनों से आज की बेटियाँ खेलने लग गई और उसी के कारण से उनका जीवन अब दुःखी बनने लग गया। सभी के लिए यह सीख यहाँ से लेनी चाहिए कि हम जिस घर में पहुँचती हैं, उन घर में पहुँचकर के वहाँ के लोगों को अपना बनाने की अगर कला बेटी के अन्दर

आ जाती है, तो यही कला सबसे बड़ी कला कहलाती है, परिवार चलाने की कला। यह कला हर माता-पिता को अपनी बेटी को सिखाना चाहिए तब जाकर के बेटियों के माध्यम से बहूएँ बन करके उनका परिवार बनता है और परिवार बनेगा तो धर्म बनेगा, धर्म बनेगा तो समाज बनेगी, समाज बनेगी तो देश बनेगा और इस तरह से देश की उन्नति में काम करने वाली बेटियाँ आगे बढ़नी चाहिए। और भी शिक्षा हैं -

करो तन मन से सेवा भी, शीघ्र भाव पार जाओगी।
है अब तो तेरे हाथों में, हमारी लाज हे सीते॥
तू खुद गुणवान है बेटी, न 'दासी' को भुलाओगी।

दोहा -

जनक राव ने सिया को, दिया दहेज अपार।
आभूषण रत्नों जड़े, दीने बेशुमार॥
हाथी घोड़े पालकी, दासी-दास हजार।
कहाँ तलक वर्णन करूँ, देखे सब नर नार॥
जनकपुरी से चल दिए, दशरथ विदा कराय।
द्रव्य लुटाया बहुत सा, अवध पुरी में आय॥

दहेज शब्द का दुरूपयोग न करे

यह दहेज देने की परंपरा प्राचीन है लेकिन आप लोग यह ध्यान रखें, दहेज का मतलब होता है- बेटी की सुख-सुविधा के लिए दूसरे घर में जब बेटी जाती है तो उसके लिए कुछ सामग्रियाँ इस तरह से प्रदान करना कि उसे कभी भी किसी चीज का अभाव महसूस न हो। यह दहेज मांगा नहीं जाता, जो आजकल हर बात ठहराई जाती है, एक agreement किया जाता है और उस agreement में अगर कहीं थोड़ी सी भी कमी हो जाती है, तो जिंदगी भर बेटी को ताने सुनने पड़ते हैं। यह दहेज दिया तो जाता था लेकिन आप यह ध्यान रखें यह दहेज पहले कभी ठहराया नहीं जाता था कि हमें इतने लाख चाहिए, इतने करोड़ चाहिए, इतनी गाड़ियाँ चाहिएँ। ऐसा कभी भी उस बेटी के पिता से उस वर के पिता कभी ठहराते

नहीं थे। किंतु बेटी का पिता जो भी अपनी बेटी के लिए चाहता था खुश हो करके, अपने भावों से, वह खुशी खुशी में जो देना चाहता था, वह देता था। चूँकि ये लोग राजा थे इसलिए बड़े-बड़े आभूषण, रत्न, हाथी, घोड़े, पालकी सब अपनी बेटी के लिए दिए और उनकी एक ही बेटी थी तो उन्होंने उस बेटी को सब तरह के मंगलाचारों से भर कर के उसे विदा किया और जब वह बेटी अपने दशरथ राजा के घर तक पहुँचती है और वहाँ पर अयोध्या में पहुँच करके जब उसका वहाँ पर जाकर के सौंदर्य देखा जाता है, वहाँ के नगर के नर-नारी उसको देखते हैं तो किस तरह से उसकी सराहना होती हैं? यह आगे पढ़ते हैं -

सब देख देख कर हर्षाते हैं, सीता सी सुंदर रानी को।
त्रैलोक सुंदरी आ पहुँची, सब देख थके पहशानी को॥
यह कथा यहाँ ही छोड़ जरा, कुछ रथनुपुर का हाल सुनो।
भामण्डल को नहीं चैन कहीं, उसके मन का अब हाल सुनो॥
जब उसने सारा हाल सुना, सीता श्री राम से ब्याही गई।
धनुषों कई विषम परीक्षा में, श्रीराम लखन की विजय रही॥
बैठा विमान में अवध पुरी को, और उड़ा बदला लेने।
ले काम मोह से भ्रष्ट बुद्धि, सीता को चला हरण करने॥

भामण्डल दुखी होकर मूर्छित हो जाते है और जाति स्मरण हो जाता है

जब यह मंगलाचार अयोध्या में होने लगता है, तो वहाँ तो अब हो ही रहा है। थोड़ी सी कथा उस ओर भी जाती है। अब उधर की देखो, जिसके लिए

यह सब हुआ था। वह भामण्डल उस स्वयंवर के मंडप में आया नहीं था क्योंकि चंद्रगति राजा ने कहा था अगर उस धनुष पर वह डोरी श्री राम नहीं चढ़ा पाए तो मैं उस सीता को हरण करके ले आऊँगा। इस कारण से चंद्रगति विद्याधर अपनी सेना के साथ तो आया लेकिन भामण्डल वहाँ नहीं पहुँचा था। जब भामण्डल को यह पता पड़ा कि जिस सीता के लिए हम दुःखी हो रहे हैं, जिस सीता के लिए हम मोह में पागल हो रहे हैं,

उस सीता का विवाह आखिरकार श्री राम के साथ हो ही गया। वह भामण्डल लज्जित होते हुए, अपने पिता के सामने उसे कुछ नहीं कहना चाहिए था, फिर भी कहने लग गया क्योंकि काम व्यथा में आदमी सब मर्यादाएँ भूल जाता है और उस समय पर उसने अपने सामने खड़े हुए विद्याधरों के समक्ष, अपने पिता के समक्ष यह बात कही कि आप बहुत बड़े-बड़े गुण गाते थे, विद्याधर हैं हम, हम बड़े-बड़े राजा हैं, हमारे पास बहुत शौर्य है, सेना है, शक्तियाँ हैं। कहाँ गई तुम्हारी शक्तियाँ? एक सीता को भी हमारे लिए लेकर के नहीं आ पाए, तुम सब कायर हो और इस तरह से वहाँ पर उस सभा में ललकारते हुए, वह भामण्डल खुद अपने लिए भाव बनाता है कि मैं खुद जाऊँगा और तुम जो सीता को ले करके नहीं आ पाए उस सीता को अब मैं लेकर के आऊँगा। सीता को लेने के लिए वह अपनी सेना के साथ में खुद उस नगर की ओर चलता है और जब वह वहाँ उस नगर की ओर पहुँचता है, तो उस नगर को देखते ही, उसे वहाँ के व्यवस्थाओं को देखते ही, वहाँ के महल को देखते ही, उस नगर की संरचना को देखते ही, वह एकदम से वहीं पर खड़ा-खड़ा कुछ और सोचने लग जाता है और सोचते-सोचते वहीं पर वह गिर पड़ता है, मूर्छित हो जाता है। क्या हो गया? जब उसने उस नगर को देखा तो उस नगर को देख कर के उसे जाति स्मरण हो गया।

पिछले जन्म का स्मरण हो आना जातिस्मरण कहलाता है

पिछले जन्म का स्मरण हो आना, यह जातिस्मरण होता है। इस पिछले जन्म के स्मरण के कारण से हमें पूर्व जन्म की घटनाएँ याद आ जाती हैं, पूर्व जन्म के स्थान याद आ जाते हैं। पूर्व जन्म में हम क्या थे? कौन हमारे संबंधी थे? यह भी याद आ जाता है और यह बात वैज्ञानिक रूप से सत्य साबित हो चुकी है। ऐसी अनेक घटनाएँ होती हैं जिन घटनाओं में बालक को अपनी शिशु अवस्था में भी बहुत कुछ याद रहता है और कभी-कभी बड़ी उम्र होने पर भी किसी घटना के, किसी प्रकार से आघात पहुँचने पर उसे पूर्व जन्म की बातें याद आ जाती हैं। ऐसा मनुष्यों में भी होता है,

पशुओं में भी होता है। इसके अनेक उदाहरण वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर रखे हैं कि पूर्व जन्म होता है और पूर्व जन्म का स्मरण भी अगले जन्म वाले जीव के लिए बना रहता है, यह आपको हमेशा ध्यान रखना है। पूर्व जन्म होगा तभी हम आत्मा को शाश्वत कह पाएँगे और समझ पाएँगे। पूर्व जन्म होगा तभी हम जन्म और मरण के संस्कारों के साथ में आगे बढ़ पाएँगे और इस जन्म में अपने संस्कारों को सुधारेंगे तभी जाकर के अगले जन्म में हमें कुछ अच्छी चीजें, अच्छे कर्मों के फल से प्राप्त होगी। इस पूर्व जन्म के जन्म-जन्मांतरों के इस संबंधों को, जन्म-मरण की प्रक्रिया को अगर व्यक्ति अपने विश्वास में ले आता है, तभी जा करके उसे धर्म करने का और धर्म का मर्म समझने का उसके अन्दर भाव आता है। अगर आपको पूर्व जन्म पर विश्वास नहीं होगा, अगले जन्म पर विश्वास नहीं होगा तो फिर आप इस जन्म के लिए क्यों दुःख उठाएँगे? इस जन्म के लिए जो आपको मिला है, जैसे भी मिला है, वैसे आपको सुख भोगने का भाव आएगा। लेकिन जब समझदार व्यक्तियों के लिए बात आती है कि नहीं! इस जन्म से पहले भी हम अनेक जन्म जिए हैं। अनेक जन्मों के संस्कार हमारी आत्मा पर पड़े हैं और उन्हीं जन्मों के संस्कार के कारण से हमारे इस जन्म में अपने आप किन्हीं लोगों से हमारा मोह होता है, किन्हीं से प्रेम होता है, किसी से द्वेष होता है। अनेक तरह के हमारे सामने अनुकूल और प्रतिकूल लोग जो सामने आकर के खड़े होते हैं, जन्म जन्मांतरों के संबंधों के कारण से होता है।

पूर्व जन्म में मुनिराज की शरण में जाकर भामण्डल का नियम ग्रहण करना

उस भामण्डल को उस नगर का चित्रण देखते ही, उसे जाति स्मरण हो आया कि इस नगर में तो मैं पिछले जन्म में यहाँ का राजा था। उसे याद आ गया कि मेरे साथ क्या हुआ था? वह सारी घटना उसके स्मरण में आ गई और स्मरण आते ही उसके अन्दर वह मूर्छा आ गई, वह एकदम से बेहोश इसलिए हो गया कि वह सारे पिछले जन्म की बात याद करके उसे अपने ऊपर बहुत लज्जा आई और वह अपने आप में बहुत दुःखी हुआ और

उस दुःख के कारण से उसको मूर्छा आई। जब उसको मूर्छा आई तो फिर उसके बाद में उसका उपचार हुआ। लोग उसको उठा करके फिर उसी विजयार्ध पर्वत पर ले करके अपनी स्थान पर ले करके आए और जब उसके लिए उपचार करने के बाद में उसे बिठाया गया, उससे पूछा गया कि तुम्हें क्या हो गया? तब उसने अपनी बात अपने पिता के सामने रखी। वह बात क्या थी? उसने कहा पिछले जन्म में मैं यही के इसी देश के, जो

यह मिथिलापुरी देश कहलाता है, इसी देश के विदर्भ नगर का मैं कुण्डल मण्डित नाम का राजा था। मैं राजा होते हुए भी आताताई के रूप में था। मैंने एक बार एक ब्राह्मण सेठ की स्त्री का हरण कर लिया और उस स्त्री का हरण करके मैं उसे अपने पास रखने लग गया। लेकिन इस देश के राजा ने मुझे पकड़ लिया और मेरे इस अन्याय की मुझे सजा दी और उस सजा के कारण से मुझे देश निकाला हुआ और मैं अकेला भटकते-भटकते, घूमते-घूमते, उस जगह पहुँच गया जहाँ पर अनेक यति, अनेक मुनि धर्म आराधना कर रहे थे और मुनियों के आश्रम में पहुँच गया। उन मुनियों के पास पहुँच करके मैंने वहाँ बैठ करके उनसे कुछ ज्ञान की बात सीखी और जब उन्होंने मुझे धर्म की बात सुनाई तो मुझे धर्म पर विश्वास हो गया। मुझे अरिहंत भगवान पर विश्वास हो गया और उस समय पर मुझसे कहा गया कि तुम्हें अपने जीवन को आगे अगर अच्छा बनाना है, उन्नत बनाना है, तो सदाचार के साथ रहना सीखो और सदाचार की शिक्षा हमें वहाँ मुनियों के आश्रम में मिली और उस समय पर हमसे अनेक तरह के व्रत संयम को लेने के लिए मुनियों ने हमें शिक्षा दी। लेकिन हम अपनी सामर्थ्य ज्यादा नहीं समझते हुए उस समय पर हमने केवल एक व्रत लिया और वह व्रत था कि मैं जीवन में कभी भी मांसाहार नहीं करूँगा। मैंने माँस का त्याग किया, जिन धर्म पर विश्वास करके मैंने उन मुनियों के समक्ष केवल एक माँस का त्याग किया। उसके त्याग के कारण से, उसी पुण्य के कारण से, मेरा जब मरण हुआ तो मर करके मैं ऐसे श्रेष्ठ मनुष्य के रूप में एक श्रेष्ठ राजा के रूप में वह रानी वैदेही के गर्भ में जन्म लिया। जिस

स्त्री के कारण से मैंने उसको अपहरण किया था उस स्त्री का भी संयोग से उसी समय पर मरण हुआ और वह स्त्री भी उसी समय पर वह सीता के जीव के रूप में उस गर्भ में उत्पन्न हुई और जिस सेठ के उस ब्राह्मणी का मैंने हरण किया था, उस सेठानी का हरण किया था, वह सेठ भी बाद में भटकता-भटकता अनेक तरह से परेशान होता होता वह किसी तरह से वह भी कुछ साधु बन गया। साधु बनने के बाद में उसने भी तपस्या की। वह देव बन गया और जब दोनों का जन्म हुआ तो उस देव ने उस पूर्व जन्म के वैर के कारण से मेरा अपहरण कर लिया और मुझे लाकर के यहाँ इस श्रेणी में, विजयार्ध की श्रेणी में यह राजा के यहाँ पर मेरा पालन हुआ और यह बात जब उसने उसको बताई तब सबको समझ में आया कि जिस भामण्डल के लिए यह विवाह होने के लिए वह राजा चंद्रगति आतुर हो रहा था, वह भामण्डल उस सीता का भाई है।

भामण्डल अपनी आत्म निन्दा करते हैं

वह उसका भाई होने के कारण से उसके लिए इतनी मूर्च्छा आ गई कि मैंने अपने जीवन में कितना बड़ा अनर्थ सोच लिया और मैंने अपने जीवन में कितना बुरा सोच लिया। ऐसा कोई उच्च कुलीन व्यक्ति भी कभी सोचता नहीं, नीच कुल का भी व्यक्ति नहीं सोचता। मैंने इतना अपने बारे में ऐसा बुरा भाव कर लिया और ऐसा बुरा भाव जब उसके आत्मनिंदा से भर गया, आत्मग्रह से भर गया तब जा करके उस समय पर जो राजा चंद्रगति इस समाचार को इस व्याख्यान को सुन रहे थे, उसके पूर्व जन्म के स्मरण को सुन रहे थे, उनके साथ देखो क्या होता है? वह विचार करते हैं कि संसार की दशा कैसी है? यह संसार की दशा का वर्णन भी यहाँ सामने आता है -

बैठा विमान में अवधपुरी को, और उड़ा बदला लेने।
ले काम मोह से भ्रष्ट बुद्धि, सीता को चला हरण करने॥
मग के विदग्धपुर से, उड़कर विमान जब वहाँ आता है।
भामण्डल ने देखा पुर को, जाति स्मरण हो आता है॥

दोहा -

पहले भव इस नगर में जो राजा था जान।

कुण्डल मण्डित नाम को, खूब गया पहचान॥
खूब गया पहचान, वह राजा मैं ही यहाँ पर रहता।
यह सीता है बहन हमारी, जान पाप क्यूँ गहता॥
फेर विमान वहीं से उल्टा, रथनुपुर को आया।
पिता चंद्रगति से आ करके, सारा हाल सुनाया॥
सुनके वैराग्य हुआ उनको, जाऊँगा दीक्षा ले वन को।
अयोध्या सब मिल आए।
मुनि संघ जो वहाँ पे ठहरा, उनको गुरू बनाए॥
उनको गुरू बनाए उनको गुरू बनाए।

राजा चन्द्रगति को वैराग्य और उनकी दीक्षा

भामण्डल के इस वृतांत को सुन करके उसके पिता राजा चंद्रगति को वैराग्य हो गया। वैराग्य होने का तात्पर्य घर, राजपाट, सब छोड़ करके, मुनियों की संगति में मुनि बन करके, ममत्व का त्याग करके, आरंभ-परिग्रह, ग्रह-राजपाट की चिंताओं को छोड़ करके वह एक साधु संन्यासी बनने के लिए उन मुनि संघ के पास पहुँच गया और उन मुनि संघ में जो श्रेष्ठ मुनि थे उनको अपना गुरू बना लिया और भामण्डल को अपना राजा बना करके उनका राजतिलक करके वह चंद्रगति राजा वहाँ से विदा हो जाता है। यह इस घटना से उसके अन्दर संसार की असारता का इस तरह का ज्ञान हो जाता है।

दोहा -

भामण्डल को तिलक कर, सौप राज का भार।
दीक्षा लीनी चंद्रगति, होती जै जै कार।
मर्यादा पुरुष श्री राम, है सिद्ध प्रभु बलराम
मर्यादा पुरुष श्री राम है सिद्ध प्रभु बलवान।
दशरथ जिनके जनक कहावे, कौशल्या नंदन जन गाए ।
इक्ष्वांकु वंश की शान, क्षत्रिय जग दया निधान॥
मर्यादा पुरुष श्री राम, श्री सिद्ध प्रभु बलराम

प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम।
गुरू कथा सुनाए, राम रतन गुण धाम की।
गुरू कथा सुनाए, राम रतन गुण धाम की।
पावन विद्या धारा है श्री राम की।
ये पावन कथा सुनो सब मिल भगवान की।
समाचार दशरथ जी सुन, सभा सहित वहाँ आते हैं।
सीता भामण्डल भाई-बहन मिलकर, मन हर्ष मनाते हैं॥
मिथिला पुर से श्री राव जनक, रानी युत कौशलपुर आए।
माँ-बाप पुत्र से मिल करके, हृदय में भारी हर्षाए॥

परिवार के मिलन से हर्ष का वातावरण बनता है

सब यह परिवार मिल जाता है, सीता भामण्डल सभी भाई बहन मिल जाते हैं। मिथिलापुर से उसी समय वह कौशलपुर अयोध्या में वह राजा जनक भी आ जाते हैं और फिर वहाँ पर एक भारी हर्ष का वातावरण तैयार हो जाता है।

एक मास अयोध्या में रहकर, भामण्डल रथनुपुर आए।
मिथलेश कनक बना, पिता श्री जनक राज को संग लाए॥
दशरथ जी को एक वृद्ध देख कर, उन्हीं दिनों वैराग्य हुआ।
क्षणभर में जग के रागों से, मन में उनके नैराश्य हुआ

भारतीय परम्परा में महापुरुष वैराग्य, संन्यास धारण करते हैं

अब यह कथा जब आगे बढ़ती है तो एक नया मोड़ लेती है। रानी सीता, श्री राम यह अपने महल में बहुत प्रेम के साथ अपने भाईयों के साथ अपने माता-पिता की सेवा करते हुए रह रहे हैं। किसी भी तरह से सीता के लिए कोई कष्ट नहीं है और वह दशरथ, वह रानी कौशल्या, अनेक और माएँ सभी आपस में बड़े प्रेम भाव के साथ में पूरे राजमहल में रह रहे हैं और सब के लिए आनंद है। लेकिन व्यक्ति धीरे-धीरे जैसे-जैसे प्रबुद्ध होता है, उसके अन्दर कहीं न कहीं आत्मकल्याण करने की जागृति बनती है और यह जागृति हमेशा भारतीय संस्कृति में पूर्व पुरुषों में देखते हुए आई है

कि हर किसी ने अपने जीवन के अंत में आत्म कल्याण करने की ठानी है। कालिदास जैसे महापुरुषों ने भी यह लिखा है कि जीवन के अंत में हमें वानप्रस्थ आश्रम का और संन्यास आश्रम का सहारा लेना चाहिए। इसी प्रकार की भारतीय संस्कृति में यह प्रथा चली आई है कि हमेशा बड़े-बड़े राजा, बड़े-बड़े महापुरुष भी, जीवन के अंत में आत्म कल्याण करने के लिए अपना गृह त्यागते हैं और अपनी आत्मा की आराधना करने के लिए अपना मन बनाते हैं। इस परंपरा को अनेक राजाओं ने निर्वाह किया है और देखेंगे कि आखिर आगे अब यह कहानी कहाँ मोड़ लेगी? यह जो विवाह हुआ है, यह विवाह तो आनंद के साथ हुआ है लेकिन इस विवाह में होने के बाद में जो सबसे बड़ा मोड़ आता है वह सब को पता है। लेकिन उसके पीछे क्या रहस्य है? यह एक बहुत बड़ा रहस्य आपको कल बताया जाएगा कि श्री राम का जो राजतिलक होना था, उस राजतिलक होने के पीछे क्या कहानी है? वह कहानी वास्तव में जो आपने सुनी है, वह भी सुन करके आप उसका स्मरण करना और जैन रामायण के अनुसार जो कल आपको एक और उस कहानी का पहलू बताया जाएगा, वह भी आपके लिए जरूर सुनना है कि कैसे श्री राम के राजतिलक की तैयारी होती है? श्री राम के उस राजतिलक में कैसे विघ्न आते हैं? विघ्न आने का कारण क्या बनता है? जो आपने सुन रखा है, उतना ही नहीं है, उसके पीछे और भी बहुत कुछ है। वह विघ्न का कारण भी कल आपके लिए सामने आएगा और यह सामने आएगा कि कैसे वह राजतिलक श्रीराम का होते-होते रुक जाता है और वह राजतिलक भरत के राजतिलक के रूप में परिवर्तित हो जाता है? यह कहानी आगे बढ़ेगी लेकिन यह कहानी अगर ऐसे ही धीरे-धीरे बढ़ेगी तो आपको कई दिन लगेंगे, यह भी आप को ध्यान में रखना है। इसलिए जैसा भी हो कहानी को हमें आनंद के साथ ही सुनना है और उस कहानी को आगे बढ़ाने के लिए कल का समय फिर आज कथानक को आगे बढ़ाएगा।

श्रीराम जी संग सीता, लक्ष्मण का भी वनगमन

भामण्डल को जाति स्मरण

श्री राम और सीता का विवाह अनेक प्रकार की कठिनाइयों से गुजरने के बाद हुआ। विवाह के उपरांत भामण्डल को पता पड़ा, अपने जाति स्मरण के माध्यम से कि जिस सीता पर मैं मुग्ध हो रहा था वह मेरी बहन है। यह विचार करते हुए उसके मन में पश्चाताप हुआ। बाद में सभी भाई-बहन मिले, माता-पिता सबके लिए हर्ष उत्पन्न हुआ। जीवन में यह हर्ष और विषाद चला करते हैं जैसे दिन और रात चला करते हैं। दीर्घ जीवन में कभी अच्छे दिन भी आते हैं और कभी बुरा तो नहीं कहूँगा, कठिन दिन भी आते हैं। क्योंकि जब कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तब मनुष्य के मन के अन्दर का धैर्य और उसके धर्म की परीक्षा होती है। जब मनुष्य अपने पुण्य के उदय से जीता है और बीच-बीच में कभी उसे किसी पाप कर्म के उदय से कुछ प्रतिकूलताएँ भी मिलती हैं तो इसीसे उसके जीवन में समझ आता है कि जीवन दोनों प्रकार के स्वाद के साथ चलता है। कभी जीवन में मीठा स्वाद भी आता है, तो कभी जीवन में कड़वा स्वाद भी आता है और यही बात हमें महापुरुषों के चरित्र से, उनके जीवन से, सुनने को भी मिलती है, सीखने को भी मिलती है। सामान्य व्यक्ति यह कल्पना करता है कि हमारे लिए हमेशा मीठा ही स्वाद आए। हमारे दिन हमेशा अच्छे ही रहें, हमारे जीवन में कभी कोई कठिनता आए ही नहीं। इस तरह की मानसिकता लेकर के व्यक्ति जीता है और अनेक महापुरुषों को अपना आदर्श भी मानता है। धर्म भी करता हैं उनके चरित्र को सुनता भी है लेकिन फिर भी यह नहीं सीख पाता कि जब यह महापुरुष भी बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को बड़ी आसानी से निकाल ले जाते हैं तो हमें भी इनके जीवन से सीखना चाहिए कि हम कठिनाई के समय में विचलित न हो। अपने विश्वास को,

अपनी आस्था को मजबूत बनाएँ और इसी के माध्यम से हमारा जीवन उन कठिनाइयों से गुजर करके फिर से हर्षमय होता है।

चार प्रकार के आश्रमों की व्यवस्था

भारतीय संस्कृति के अन्दर चार प्रकार के आश्रमों की व्यवस्था बताई जाती है। श्रमण परंपरा में भी यह व्यवस्था है और वैदिक परंपरा में भी व्यवस्था है। **आश्रम** अर्थात् जिस में रह करके हम कुछ समय तक उस संबंधित श्रम करते हो। जिसे हम **ब्रह्मचर्य आश्रम** कहते हैं, सबसे पहला आश्रम होता है। बचपन से लेकर के जब तक विवाह नहीं होता तब तक मनुष्य के लिए ब्रह्मचर्य आश्रम में रहने को कहा। इसका जाति से कोई संबंध नहीं, इसका किसी संप्रदाय से कोई संबंध नहीं, धर्म से कोई संबंध नहीं। यह मानव के विकास के चार सोपान उसकी उम्र के अपेक्षा से विभाजित किए गए हैं। ऋषि-मुनियों ने जीवन में सब कुछ देखा। संसार की व्यवस्थाओं को भी देखा, संसार के सुखों को भी देखा और उन सुखों को भी छोड़ करके उस आत्मिक सुख का भी उन्होंने आस्वादन लिया और जब उन्होंने देखा कि यह संसारी प्राणी हमेशा एक ही तरह के जीवन में उलझा रहता है, तो उसे उस से बाहर निकालने के लिए ऋषियों-मनीषियों ने इस चार प्रकार के आश्रम की व्यवस्था बनाई है।

पहला **ब्रह्मचर्य आश्रम** बचपन से लेकर के जब तक विवाह नहीं होता तब तक कभी भी अनैतिक तरीके से अपने ब्रह्मचर्य को खण्डित नहीं करना और इस तरह से ब्रह्मचर्य के साथ में अध्ययन करना, विद्या को अर्जित करना और जब समय आए तब उचित रीति से मान सम्मान के साथ में माता-पिता की आज्ञा के साथ विवाह करना। यह विवाह करने का अर्थ है- **गृहस्थाश्रम** में प्रवेश करना। यह दूसरा आश्रम कहा गया, इसे कहते हैं- **गृहस्थाश्रम।** उस गृहस्थ जीवन में हर तरह से अपना जीवन धन उपार्जन के साथ भी व्यतीत करना, अपने जीवन में अपनी भोग और उपभोग की इच्छाओं की पूर्ति भी करना और ऐसी संतति को उत्पन्न करना, जो आगे वह धर्म के मार्ग को और आगे चलाए, बढ़ाए।

इस हेतु यह गृहस्थाश्रम भी स्वीकृत किया गया और गृहस्थाश्रम के बाद में जो और आगे के दो आश्रम आते हैं उनमें फिर तीसरे नंबर पर आता है- **वानप्रस्थाश्रम।** जिसमें जब संसार में रहकर के, घर परिवार में रह करके, मनुष्य तृप्त हो जाता है और हर तरह से संसार की स्थिति को समझने लग जाता है तब उसे आत्म कल्याण की भावना आती है। वह संसार की मोह-ममता को छोड़कर के विचार करता है कि हम अगर इसी मोह के जंजाल में पड़े रहे तो हम दूसरों के दुःख-सुख में ही दुःखी-सुखी होते हुए अपने मोह को बढ़ाते हुए, भ्रम में पड़े हुए हम अपना जीवन बर्बाद कर देंगे। ऐसा विचार करके वह जीव उस गृहस्थ आश्रम से भी ऊपर उठता है और वानप्रस्थाश्रम को अपनाता है।

इन आश्रमों का वर्णन सभी तरह के भारतीय संस्कृति के जो भी जैन या हिंदू धर्म के ग्रंथ हैं सभी में मिलता हैं। चाहे आप विष्णु पुराण पढ़ना, चाहे पद्मपुराण पढ़ना, चाहे आप आदिनाथ भगवान का आदिपुराण पढ़ना, सब जगह मिलेगा आपको। वानप्रस्थाश्रम में रहने के बाद, वानप्रस्थाश्रम का मतलब है- वन में जाकर के रहना और वन में कौन रहते हैं? साधु संत वन में रहते हैं, ऋषि-मुनि वन में रहते हैं उनके निकट जाकर के रहना। उस वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करने के बाद जब जीवन का अंत समय आए तो सब कुछ छोड़कर के यानी अपने शरीर तक का भी त्याग करके संन्यास ले कर के, शरीर से भी संन्यास ले करके सल्लेखना पूर्वक, समाधि पूर्वक मरण करना। यह **संन्यास आश्रम** कहलाता है।

इन चार आश्रमों की व्यवस्था पूरी भारतीय संस्कृति में कही गई और मान्य है। सभी को इस ओर देखना भी चाहिए। लेकिन देखने में यह आता है कि संस्कृति के बढ़ावे के लिए हम गृहस्थाश्रम को महत्व दे रहे हैं। लोगों के जीवन में एक ब्रह्मचर्य आश्रम का महत्व था, वह भी कम सिखाया जाता है। अगर इसके बारे में थोड़ा सा कभी ज्यादा प्रकाश डाला गया तो स्वामी विवेकानंद ने डाला। उनके माध्यम से इस ब्रह्मचर्य की आराधना करने के लिए प्रशंसा की गई लेकिन बाद के लोगों ने इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। आज नई शिक्षा नीतियाँ बनती हैं, उनमें कहीं पर भी ब्रह्मचर्य

आश्रम का कोई उल्लेख नहीं होता। नई तरह की भारतीय संस्कृति के अनुसार सब नीतियाँ बन रही हैं। नए-नए पाठ उसमें समायोजित हो रहे हैं लेकिन भारतीय संस्कृति का जो मूल भाव है कि बच्चे को ब्रह्मचर्य का ज्ञान देना, वह ज्ञान आज किसी भी शिक्षा नीति में नहीं दिया जा रहा, कोई बात ही नहीं करता। ऐसा लगता है कि जैसे यह सब बिल्कुल बहुत पुराने जमाने की बातें हो गईं। आज इन चीजों का जैसे कोई महत्व ही न हो। लेकिन इन्हीं चीजों का महत्व नहीं समझने के कारण से हम समझ पा रहे हैं कि आज की पीढ़ियाँ जो बर्बादी के कगार पर खड़ी हैं, उसका मुख्य कारण है कि हम इन बच्चों को इस तरह की शिक्षा नहीं दे पा रहे।

वर्तमान में वानप्रस्थाश्रम, संन्यासाश्रम का महत्व

जो लोग अनेक तरह के नेतृत्व करते हैं, उन लोगों के मन में भी यह विचार रहना चाहिए कि हम हमेशा चारों प्रकार के आश्रमों की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कटिबद्ध रहें। अभी कल ही मैंने एक समाचार सुना जो आर. एस. एस. के प्रमुख मोहन भागवत जी कहलाते हैं, उन्होंने गृहस्थ आश्रम पर जोर दिया। समाचार मिला कि गृहस्थ आश्रम के माध्यम से ही धर्म और देश की उन्नति होगी। हम अन्य आश्रमों को गौण क्यों करते हैं? यह विचार सुधि जनों को करना चाहिए। समाज का नेतृत्व करने वाले यदि यह प्रमुख लोग भी पूरी व्यवस्था जो भारतीय संस्कृति की है, उसको सामने नहीं रखेंगे तो उसका नतीजा क्या निकलेगा? लोग केवल गृहस्थ आश्रम में ही संतुष्ट होंगे, गृहस्थी ही बसाएँगे, गृहस्थी में बस बस करके ही मर जाएँगे। वह अपना न आत्मकल्याण कर पाएँगे, न ब्रह्मचर्य का पालन कर पाएँगे, न कभी संन्यासाश्रम की ओर जा पाएँगे।

मैं यह नहीं कहता कि उन्हें पता नहीं होगा। उन्हें हमसे ज्यादा ज्ञान होगा, उन्होंने सब पुराण पढ़े हैं, चाहे वह विष्णु पुराण हो, चाहे शिव पुराण हो, सब पुराण पढ़े हैं और हर पुराण में इन चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है। लेकिन फिर भी हम इन चीजों की चर्चा नहीं करते। हम इन चीजों पर जोर नहीं देते। गृहस्थाश्रम के लिए तो हम बढ़ावा देते हैं लेकिन कभी भी हम वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम की ओर नहीं जाते। शायद इसी की

वजह से हम कभी भी अध्यात्म पुरुष नहीं बन पाते। मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि श्रमण संस्कृति के अन्दर जिस अध्यात्म की मुख्यता

है, वह अध्यात्म जिस तरह से श्रमण संस्कृति के अन्दर पाया जाता है जैन संस्कृति के अन्दर पाया जाता है, उस अध्यात्म को हमेशा जितने भी अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग रहे हैं चाहे वह महापुरुष पूर्व काल के हो, चाहे वह वर्तमान के हो, उन्होंने उस अध्यात्म को सराहा है और वह अध्यात्म संसार की तमाम मोह माया के जंजाल को छोड़ने से शुरू होता है। इस अध्यात्म के प्रकरण को, वानप्रस्थाश्रम, संन्यासाश्रम के प्रकरण को हमें उस तरह से नहीं दिखाया जाता जिस तरह से हमें पुराणों में लिखा हुआ मिलता है। जैन पुराणों में इन सब आश्रमों की व्यवस्था और महापुरुषों ने इन आश्रमों में भाग ले करके अपना जीवन जिया, यह बात भी उसी तरह से बताई गई है, जैसे सब जगह पर उनके पूरे चरित्र का वर्णन किया जाता है। उसी तरह से उनका पूरा चरित्र अगर देखने को मिलता है, तो हमें जैन रामायण के अनुसार देखने को मिलता हैं।

राजा दशरथ को वैराग्य

दशरथ जी, जो राम जी के पिताजी थे, उन्होंने एक मुनि महाराज से अपने पूर्व भवों को सुना। भामण्डल की कहानी को सुना। भामण्डल, सीता, राम सभी बैठकर के मुनि महाराज से अपने पूर्व जन्म के चरित्र सुनते हैं। पूर्व जन्म का वर्णन सुनते हैं और उस वर्णन को सुनने के बाद में दशरथ जी को संसार की असारता का भान होता है। क्या है संसार में? हर जन्म में हम अपने नए-नए संबंध बनाते हैं, उन्हीं संबंधों के मोह में अपना पूरा जीवन गुजारते हैं और अंततः हमारे हाथ में कुछ नहीं होता है। हमारा शरीर भी यही पड़ा रह जाता है, मेरा संस्कार केवल मोह का, हमारी आत्मा के साथ जाता है। हम अपने आत्मज्ञान का संस्कार कभी अपनी आत्मा के साथ नहीं बना पाते। यह विचार उन दशरथ जी के अन्दर आता है और इसी विचार के कारण से उनका मन बनता है कि हमने अपनी गृहस्थी का, अपने राज्य का सारा सुख भोग लिया। चार-चार रानियाँ हैं, चार-चार बेटे, सब

की बहूएँ हैं, भरा पूरा परिवार है, सबके बच्चे हो रहे हैं। सब कुछ हो रहा है, हमारा राजपाट सब चल रहा है लेकिन हम इस में कब तक लगे रहेंगे? राजगद्दी का त्याग कर पाना, यह त्याग का पाठ सीख पाना, यह बहुत बड़ी सीख होती है और यह सीख भीतर की बहुत बड़ी आत्मशक्ति के माध्यम से सामने आती है। त्याग का पाठ अगर हम इस दुनिया को नहीं सिखा पाए और इन महापुरुषों के चरित्र से अगर किसी ने त्याग करना नहीं सीखा तो बिना त्याग के इस भारतीय संस्कृति में कभी भी इसके विकास की कल्पना की ही नहीं जा सकती। राजा दशरथ विचार करते हैं कि हमने अपने जीवन में सब कुछ कर लिया और जब हमने अपने पूर्व जन्मों को भी देख लिया, मुनि महाराज से सुन लिया तो उनके मन में विचार आता है- यह सही समय है। जब हम अपने बड़े पुत्र को, जो बड़ा हो गया है, योग्य है और बड़े पुत्र को राजपाट देना यह पिता का कर्तव्य है। जिंदगी भर एक ही गद्दी पर बैठे रहना, जिंदगी भर एक ही पद को संभालते रहना और उस पद के व्यामोह के कारण से किसी को chance नहीं देना, यह जो आज देखने में आ रहा है, ऐसा पहले नहीं हुआ करता था। पहले के लोग भोग के साथ त्याग को भी उतना ही महत्व देते थे और त्याग जिनके जीवन में समाया रहता है, वह कभी अनीति, अन्याय नहीं कर पाते। वह पदों की आकांक्षाओं में अपना समय नहीं गुजारते और पदों की आकांक्षाओं में मरते नहीं है।

आध्यात्मिकता के अभाव से जीवन अधूरा

आज के लोग जिस पद पर बैठ जाते हैं, उस पद से हटने का नाम नहीं लेते। अगर उन्हें हटा भी दिया जाता है, तो उन्हें सहन नहीं होता है। चाहे भारत हो, चाहे अमेरिका हो, चाहे चीन और चाहे जापान। आप देख रहे हो, सब लोग पद के लिए लड़ते हैं, अध्यक्ष हो, प्रधानमंत्री हो, सब पद के लिए लड़ते हैं। अमेरिका की बात कहे कुछ साल पहले जब चुनाव हुआ था, ट्रंप को हटाया गया था। हटाया क्या गया? हटना पड़ा लेकिन हटने को मंजूर नहीं था उसके लिए लेकिन चुनाव हुए, दूसरा जीता, हटना पड़ेगा। मुश्किल से हटा, मानसिकता समझ में आती है कि आदमी हटना नहीं

चाहता। चीन में भी यही हाल है। उसने आगे के लिए अपनी व्यवस्था बना ली जिनपिंग ने और इस तरह की चीजों को देख करके लगता है कि कोई भी मंत्री, कोई भी संत्री जब तक अपने पदों पर काबिल होकर के बैठता है और किसी को मौका देने के लिए तैयार नहीं होता है, तो उसी से समझ में आता है कि हमारे उद्देश्य में अध्यात्मिकता कहीं से कहीं तक नहीं है। अगर व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिकता नहीं होगी उसका जीवन अधूरा रहेगा। जीवन की पूर्णता गृहस्थी का त्याग करके, पदों का त्याग करके, वानप्रस्थाश्रम को अपना करके अध्यात्म निष्ठ होने से आती है। इस पूर्णता का चित्रण अगर हमें कहीं मिलता है, तो मैं प्रशंसा के साथ नहीं कह रहा हूँ, वास्तविकता के साथ कह रहा हूँ, यह मुझे केवल जैन दर्शन में ही मिलता है क्योंकि पूर्णता का वर्णन नहीं मिलता। आपने सब तरह की रामायण देखी होंगी, कहीं दशरथ के जीवन का अंत नहीं दिखाया जाता। आपने अपने अनेक तरह के महापुरुष देखे होंगे, कहीं उनके जीवन का अंत नहीं दिखाया जाता। चाणक्य का अंत क्या हुआ? चंद्रगुप्त मौर्य का अंत क्या हुआ? किसी को नहीं पता। सिर्फ राजत्व का काल उनका दिखाया जाता हैं और उसी राज्य के काल में हम उन्हें भगवान के रूप में स्वीकार करके वहीं पर इतिश्री कर देते हैं। सभी पढ़े-लिखे लोगों को अंत तक का जीवन देखना चाहिए कि अंत तक का जीवन इन महापुरुषों का क्या रहा है? यह अंत तक का जीवन दिखाने के लिए ही यह जैन रामायण आपके सामने अब प्रस्तुत हो रही है।

दशरथ के जीवन का मोड़

दशरथ का जीवन अब एक नया मोड़ लेता है। वह विचार करते हैं कि इस संसार में हम इस परिवार के साथ, परिवार के मोह के साथ अनेक बार जिए हैं, अनेक बार परिवार हमारा बना है, अनेक बार हमने बच्चे पैदा किए हैं, अनेक बार हमने राज्य किए हैं, सब कुछ हुआ है, तृप्ति कभी नहीं हुई। तृप्ति होगी भोगों के त्याग से, ममत्व के त्याग से, राग द्वेष के त्याग से। उनके ज्ञान से, यह बात उनके मन के अन्दर जब समाहित हो गई तब उन्होंने मन बनाया हमारे बड़े पुत्र श्री राम बहुत बड़े हो गए हैं, राजपाट के

योग्य हो गए हैं। अगर हम इनको राज्य देंगे तो हम भी निवृत्त हो सकेंगे और हम अपनी आत्मा साधना कर सकेंगे और यही विचार दशरथ जी के अन्दर आता है और इसी विचार के साथ में अब यह रामायण आगे बढ़ती है। देखते हैं कि दशरथ जी के साथ साथ किस तरह का घर के अन्दर माहौल बनता है और लोगों की क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं उनके त्याग को लेकर, उनके वैराग्य को लेकर के -

अब श्रीराम का तिलक करो, दरबार बीच ऐलान किया।
हमने तो दीक्षा लेने का, निर्णय निज मन ठान लिया॥

दोहा -

रामदेव को राज्य दे, जावें दीक्षा काज।
यह संसार असार है, त्यागें इसको आज॥
गुरुवन के वासी नगर जगावन आए,
गुरुवन के वासी नगर जगावन आए।
पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र की पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र तं सुनाने आए॥
गुरुवन के वासी नगर जगावन आए,
गुरुवन के वासी नगर जगावन आए।
मानव को मानवता की कुछ याद दिलाने आए।
भूली बिसरी मर्यादा का संज्ञान कराने आए॥
गुरुवन के वासी नगर जगावन आए,
गुरुवन के वासी नगर जगावन आए॥
सुनते ही मंत्री पुरवासी, सब मिलकर हर्ष मनाते हैं।
श्रीरामचन्द्र के राजतिलक का, सब मिल भारी ठाट रचाते हैं॥
सब देश विदेशों के राजा, उपहार लिए यहाँ आने लगे।
सज गई अयोध्या दुलहन-सी, श्रीजिन की पूजा रचाने लगे॥

श्री रामचन्द्र जी के राजतिलक घोषणा से उत्सव का वातावरण

यह रामचंद्र जी के राजतिलक के लिए जब दशरथ जी ने कहा तो सारे जगत के अन्दर कहे, पूरे नगर के अन्दर कहे, देश-विदेशों के अन्दर कहे,

एक हर्ष का वातावरण छा गया। इस बात का गम नहीं हुआ कि दशरथ जी राज छोड़ रहे हैं। खुशी जनता को इस बात की हुई कि श्री राम को राज्य मिल रहा है। वह राजा बन रहे हैं, उनका राजतिलक होगा और इसी खुशी के लिए सारी जनता उनके समक्ष दौड़ी दौड़ी आती है और अनेक तरह से वहाँ पर उत्सव होते हैं। उसी उत्सव का वर्णन यहाँ पर उनके लिए उनके राजतिलक के रूप में यहाँ पर समझाया जा रहा है, किया जा रहा है-

मर्यादा पुरुष श्री राम है सिद्ध प्रभु बलराम
आदर्श बने जन जन के वसुधैव कुटुंब थे जिनके
जो भी ले इनका नाम बिगड़े बनते सब काम
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम
मर्यादा पुरुष श्री राम है सिद्ध प्रभु बलराम

चारों ओर महल के अन्दर एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि देखो! कैसी यह शुभ की घड़ी आई है? कैसी है मंगल घड़ी आई है कि अब राजतिलक स्वयं दशरथ जी अपने राज्य पद का त्याग करके और श्रीराम के लिए यह राजतिलक की तैयारियाँ कर रहे हैं और कल यह राजतिलक होगा। इस राजतिलक की तैयारियाँ किस तरह से झूम कर के चारों और आनन्द के सुख के वातावरण के साथ हो रही हैं? यह आगे के मंगल गीत से -

ओ देखो री सखी,
आई शुभ की घड़ी, छायी कैसी अजब बहार जी।
आज हमारी नागरिया।
देखो री सखी, आई शुभ की घड़ी,
छायी कैसी अजब बहार जी,
आज हमारी नागरिया।

सभी अपने दोनों हाथों को खोलकर प्रभु राम के भक्ति करेंगे। बहुत बड़ा भजन है यह, पढो! पूरा करो।

श्री राम के राजतिलक की, देखो धूम मची है भारी।
राजा बनेंगे युवराज हमारे, नाचो दे दे तारी ओ नाचो दे दे तारी।
सब मिल गाऐं सखीरी हर्षाये, रे झूम उठे नर नारी
कर में लेकर के अब बाँसुरिया, अजी देखो री सखी
आई शुभ की घड़ी छाई कैसी अजब बहार जी।
आज हमारी नागरिया

श्री रामचंद्र जी और सीता जी का श्रृंगार

श्री राम के राजतिलक की खुशी हो रही है कि नहीं हो रही? हो रही है! हाँ! तो हर्षित होकर के पूरा करो।

सीता का श्रृंगार बनाओ, माथे बिन्दिया लगाओ।
मुतियन मांग भरो अब सजनी, हाथों में मेहंदी रचाओ॥
सखी री हाथों में मेहंदी रचाओ।
कैसी छवि है भली, जैसे साँचे में ढली॥
सब सखियां मोहित आज री, देख सिया की सूरतिया।
देखो री सखी आई शुभ की घड़ी,
छाई कैसी अजब बहार जी, आज हमारे नागरिया॥
राम प्रभु दरबार पधारे, देखे परजा सारी।
जैसे इन्द्र आए पृथ्वी पर, शोभा है अति भारी॥
सखी री, शोभा है अति भारी,
माथे मुकुट सजे, रवि बिम्ब लजे।
सब मोहित सुर नर आज री, देख राम की मूरतिया॥
देखो री सखी आई शुभ की घड़ी,
छाई कैसी अजब बहार जी आज हमारे नगरिया॥

श्री राम को भी सजाया जा रहा है, सीता का भी श्रृंगार किया जा रहा है, मेहंदी लगाई जा रही है, अच्छे-अच्छे आभूषण पहनाए जा रहे हैं और श्री राम जी को भी दरबार में बुलाया जा रहा है। वह पधार रहे हैं, आप लोग आनंदित रहे।

रत्न माल गल बीच बिराजे, कानन कुंडल भारी।

कांधे धनुष, कर में भुज बन्धन, नीलाम्बर के धारी॥
सखी री नीलाम्बर के धारी..
हर्षित हैं सभी, होवे तिलक अभी।
'दासी' को भी खुशी अपार जी, देख राम की सूरतिया॥
देखो री सखी, आई शुभ की घड़ी
छाई कैसी अजब बहार जी, आज हमारी नागरिया॥

भरत जी को भी वैराग्य

रत्नों की माला धारण किए हुए, बड़े-बड़े भारी-भारी कुण्डल कानों में पहने हुए, कंधे पर धनुष चढ़ाए हुए नील वस्त्रों को धारण किए हुए जब वह श्री राम राज दरबार में पधारते हैं और उनके लिए हर कोई बधाइयाँ देता है,

मंगल गान चल रहे होते हैं, उसी बीच में दशरथ जी के वैराग्य को देखकर के उनके पुत्र जो भरत थे, उनके मन में भी वैराग्य का भाव उत्पन्न होता है। दशरथ जी के वैराग्य भाव से प्रेरित होकर के भरत जी के मन में पहले से ही वैराग्य भाव था, जिसे कहा जाता है- घर में रहकर के बैरागी। घर में रहकर के बैरागी जिस तरह से यह भरत जी थे वैसे ऋषभदेव के पुत्र भरत भी नहीं थे। जिस तरह से यह राम के भाई भरत जी इनका घर में राजपाट संभालने में कोई मन नहीं लगता था। इनके मन में हमेशा गृह जंजाल को छोड़ करके और वन में आत्म ध्यान करने का भाव इनके अन्दर रहता था और जब दशरथ जी को इन्होंने इस तरह से वैराग्य भावों से ओतप्रोत देखा तो भरत के मन में भी विचार आता है कि हम भी पिता के साथ में गृह त्याग करके वन को जाएँगे और अपनी आत्मा के आनन्द में, चैतन्य के आनन्द में, लीन रहेंगे। इस संसार की विषय वासनाओं से अपने संस्कारों को मिटायेंगे। ऐसा विचार जब आता है तब देखो! माहौल में कैसा खलल पडता है?

दशरथ जी के जब हुए, बन जाने के भाव।
उदासीन हो भरत भी, ले मन दीक्षा चाव॥
रानी कैकई सोचती, अब क्या करूँ उपाय।

पति चले दीक्षा धरन, और पुत्र भी जाय॥

राजा दशरथ और भरत के वैराग्य से रानी कैकई को दुःख

कैकई के पुत्र भरत जी थे, सब को ज्ञात है? अब कैकई के मन में विचार आता है कि मेरे पति भी गृह छोड़ कर के जा रहे हैं और मेरा पुत्र भी उतावले दिखा रहा है कि वह भी गृह त्याग करके जाएगा। अब मैं किसके सहारे रहूँगी, किसके लिए जिऊँगी? यह विचार कैकई के मन में आता है कि अब मेरे लिए जीने के लिए कुछ भी नहीं और इस पुत्र के सहारे मैं जीती लेकिन यह पुत्र भी गृह त्याग करके जा रहा है। ऐसा विचार जब कैकई निरंतर करती है, तो उसके मन में विचार आता है कि मैं कुछ न कुछ उपाय जरूर करूँगी। मैं इस तरह से अनाथ हो करके जीवन नहीं जिऊँगी। वह मन में विचार करते-करते सोचती है कि एक बार एक युद्ध हुआ था और उस युद्ध में यह कैकई युद्ध कला में निष्णात थी। दशरथ के साथ किसी ने युद्ध किया था और यह दशरथ की सारथी बनी थी। सारथी समझते हो? जैसे अर्जुन के सारथी श्री कृष्ण थे, ऐसे सारथी बनकर के इसने युद्ध लड़ा था। युद्ध के मैदान में रथ को घुमाया था और अपनी कलाओं से इसने उस समय पर दशरथ जी को युद्ध जिताया था। तब से दशरथ जी इस पर बहुत प्रसन्न थे और दशरथ जी ने कह रखा था इससे, बता तेरे लिए क्या वरदान दूँ? तेरे को क्या दूँ? तुझे क्या चाहिए? उसने कह रखा था जब मैं समय पर माँगूंगी तब मुझे दे देना, अभी मुझे कोई जरूरत नहीं है। यह वरदान दशरथ जी ने उस कैकई को दे दिया था और उसी वरदान की उस कैकई को याद आती है और उस वरदान को मन में विचार करके वह दशरथ जी के लिए क्या मांगती है? उनके समक्ष, उनसे क्या निवेदन करती है? यह विचार सामने आता है-

बस उसी समय कुछ सोच, समझकर दशरथ जी को बुलवाया।
वरदान दिया था राजा ने, उसकी बाबत कुछ बतलाया॥
है याद हमें राजा बोले, तो माँग लो जो इच्छा आए।
हमको भी हर्ष हुआ भारी, इस ऋण से भी मुक्ति पाऐं॥

राजा दशरथ और रानी कैकई का संवाद

जब दशरथ जी ने कहा कि मुझे याद है कि मैंने तुम्हें वरदान दिया था। मैं क्षत्रिय पुरुष हूँ, वचन दिया था, उस वचन का निर्वाह करूँगा। तुम माँगो तुम्हें क्या माँगना हैं? तब रानी कैकई उनसे सबसे पहले तो यह कहती है कि आप मुझे छोड़ करके वन में जाने की क्यों आपने ठान ली? पहले तो आप मुझे यह बताओ? मेरा क्या कसूर है? मैंने आपको कौन से दुःख दिए हैं? आप मुझे छोड़ कर के वन में क्यों जा रहे हो? उसे इससे मतलब नहीं है कि वह पूरा राज छोड़ कर के वन में जा रहे हैं। उसे इससे मतलब है कि आप मेरे पति हैं तो आप मुझे छोड़ के वन में क्यों जा रहे हो और उसका यह कहना बाजीब है। वह दशरथ से कहती है कि आप पहले यह बताएँ कि आपने इतना कठिन व्रत धारण करने का मन क्यों बना लिया? आप जानते हो आप महलों में पले हुए हो, राजकुमारों की तरह पूरा जीवन व्यतीत किया है। जिस व्रत को लेकर के तुम वन में जाने की चेष्टा कर रहे हो, उन व्रतों का पालना कितना कठिन है? सर्दी, गर्मी, बरसात, बिना कपड़ों के सहन करना। एक बार भी भोजन मिल जाए, वह भी बहुत बड़ी बात है। उस एक बार भोजन करके पूरा चौबीस घंटे जीना। अनेक तरह के जंगलों में होने वाले पशु पक्षियों के उपसर्गों को सहना, किसी भी प्रकार की वहाँ पर कोई सुविधाएँ नहीं होती और ऐसी दीक्षा लेने के लिए आपका मन बना है। इतना कठोर व्रत आपने क्यों लिया? आप हमारे प्रति इतनी कठोर क्यों हो रहे हैं? कैकेयी दशरथ जी से पहले यह निवेदन कर रही है-

दोहा -

सुनो राव प्राणन पति, हो गया कौन कसूर।
हमें छोड़ कर जा रहे, आप वनों में दूर॥
कहत सुनत आए अंखियों में पानी।
राम कहानी सुनो रे राम कहानी॥
श्री राम जय राम जय जय राम।

श्री राम जय राम जय जय राम॥
आप वनों में दूर जा रहे, हम कैसे धीरज धारें।
आप रहो स्वामी कुछ दिन, हम तन, मन सब ही वारें॥
जाय आपके संग भरत भी, क्या विधना ने चाही।
उसके लिए मैं राज मांगती, तड़पूं जल बिन माही॥
सुन लो गुरूवर की अब ये जबानी।
राम कहानी सुनो रे, राम कहानी॥
श्री राम जय राम जय जय राम॥

कैकई ने उस समय पर यह नहीं कहा था कि रामचंद्र जी को वनवास हो जाए। आप ध्यान रखना! जैन रामायण में किस तरह से प्रस्तुति हो रही है? इसे सभी सुधि जन अच्छे ढंग से विचार करके इस प्रसंग को समझें। कैकई का मतलब सिर्फ इतना था कि मेरा बेटा छोड़ करके जा रहा है, मेरा पति छोड़ कर के जा रहा है, मैं अनाथ हो करके नहीं रह सकती। तब जाकर के कैकई ने कहा- दशरथ जी! स्वामी! आपको पता हैं कि आपने मुझे एक वचन दिया था और आज जब आप जा रहे हैं तो मैं आपसे जाने से पहले उस वचन का निर्वाह करना चाहती हूँ। उस वचन को मांगना चाहती हूँ, जो आपने मुझे दिया था और यह कहा था, तू जब चाहे वह मांग लेना। इस तरह से आपने जो वचन दिया था, आज उसका समय है क्योंकि आपने तो ठान ही ली है कि आपको घर छोड़ कर के जाना है। लेकिन मेरे पुत्र भरत ने भी ठान रखी है कि वह भी घर छोड़ कर जा रहा है। मुझे उसके बिना जीना नहीं हो सकेगा इसलिए मैं चाहती हूँ कि अगर वह भरत घर में रहेगा तो मैं जी पाऊँगी और उसके लिए मैं यह चाहती हूँ कि यह राजपाट, यह राज तिलक मेरे बेटे भरत के लिए किया जाए और इस राज्य का राजभार, राजनेता, राजा मेरे पुत्र भरत को बनाया जाए।

यह बात कैकई ने जब दशरथ से कही तो दशरथ जी ने बिना किसी नूनच किए हुए, चूँकि उन्होंने वचन दिया था और उस वचन का निर्वाह करने के लिए कहा, मुझे तेरा यह वचन मंजूर है और उस वचन को मंजूर करके

उन्होंने विचार किया कि जब मैं यहाँ से चला जाऊँगा और राजपाट भारत के लिए दे करके जाऊँगा, तैयारी श्री राम की चल रही थी तो लोग क्या कहेंगे? उन्होंने श्री राम को बुलाया और श्री राम को बुलाने के बाद वह श्रीराम से कुछ अपनी बात कहते हैं। वह बात कहाँ तक पहुँचती है?

राज उसको मिल जाए जी, न फिर वो वन में जाए जी।
फंसे जब राजकाज में।
तो कुछ दिन घर में रह जाए, यह मांगती आज मैं॥
राव कहें रानी सुनो, दिया भरत को राज।
वचन तुम्हारा पूर्ण हो, अब तो सुधरे काज॥
अब तो सुधरे काज तुम्हारे, हो गई है मनमानी।
कोई राज करे मैंने तो दीक्षा की है ठानी॥
अभी बुलाओ श्री राम को यह संदेश सुनाऊँ।
राजा भरत को दे करके अभी मैं वन की सुरत लगाऊँ।
अभी मैं वन को जाऊँ, अभी मैं वन को जाऊँ॥

जब दशरथ जी ने श्रीराम को बुलाया और बुला करके उनसे कहा कि देखो! मैंने एक वचन दिया था तुम्हारी माँ कैकई के लिए और उस वचन को निभाने का मेरा आज समय आया है। उसने आज वचन मांगा है। यह राजपाट मैं अब भरत को सौंप करके जाऊँगा ऐसा उसने वचन मांगा है और अगर मैं इस वचन का निर्वाह नहीं करूँगा तो दुनिया में मेरी बहुत अपकीर्ति होगी। वह रानी कैकई पुत्र शोक में मरण को प्राप्त हो जाएगी और यदि मैं उसको वरदान नहीं दूँगा तो वह आज ही दीक्षा ले लेगा। उस भरत को रोकने के लिए, कैकई को अपने प्राण बचाने के लिए, मुझे यह निर्णय बदलना पड़ रहा है और मैं यह राज भरत के लिए देना चाहता हूँ। यह बात दशरथ जी ने श्री राम के लिए समझाई, कही और यह कहा -

यदि वर मैं दूंगा नहीं, दीक्षा लेगा भ्रात
पुत्र शोक में माँ मरे, अपकीर्ति सौगात।

श्री रामचंद्र जी द्वारा पिता दशरथ के वचन की रक्षा

उस समय पर राजा दशरथ श्रीराम से कहते हैं- मैं मान रहा हूँ, मैं जान रहा

हूँ कि यह मर्यादा नहीं है कि बड़े पुत्र के रहते हुए छोटे पुत्र को राज्य दिया जाए। लेकिन मेरे वचनों की रक्षा करना, यह अब तुम्हारा कार्य हैं। दशरथ जी कहते हैं-

मर्यादा भी यह नहीं तुम समक्ष रघुराय।
अग्रज सूत रहते हुए अनुज राज वन जाय॥
तेजस्वी क्षत्रिय पुरुष, तुम लक्ष्मण संग होय।
कहाँ रहोगे ,क्या कहूँ चिंता से मन रोय॥

उस समय पर दशरथ जी रोने लग गए। यद्यपि वह घर बार छोड़कर के जाने वाले थे लेकिन फिर भी उनका वह त्याग उनकी खुशी, खुशी नहीं हो पाया और उनके मन में विचार आया कि देखो! बड़े पुत्र के लिए राज की तैयारियाँ होते-होते यह विघ्न आ गया। अब यह पुत्र कहाँ रहेगा? क्योंकि राज देने का मतलब है, जहाँ पर छोटा बेटा राज करेगा, उसके राज्य में बड़ा बेटा तो रह नहीं सकता। जितनी जमीन जहाँ तक यह धरती फैली हुई है, जहाँ तक हमारा राजपाट है, उस राजपाट के अन्दर, उस राज्य के अन्दर, यह बड़ा पुत्र श्री राम रह नहीं पाएगा। अपने आप indirectly उनके लिए कह दिया गया कि बड़े पुत्र के लिए कह दिया गया कि तुम्हें कोई ऐसी जगह ढूँढनी पड़ेगी जो इस राज्य की सीमा से बाहर हो। बेटा तुम कहाँ रहोगे? कैसे रहोगे? यह मैं नहीं कह सकता लेकिन यह निर्णय जो रातों रात बदल गया है और इस निर्णय को बदलने से जो तुमको दुःख हो रहा है, हमको दुःख हो रहा है, दुनिया को दुःख हो रहा है, वह मैं समझ रहा हूँ। लेकिन यह निर्णय हमें अपने वचनों की रक्षा करने के लिए लेना है और मैं मानता हूँ कि तुम इस निर्णय में किसी भी तरह से असफल नहीं होंगे और इसका विरोध नहीं करोगे।

उन श्रीराम ने जब यह वचन सुने तो वह पिता के चरणों में गिर पड़े। नमस्कार करके, प्रणाम करके कहने लगे, वह पुत्र ही क्या जो पिता की और पिता के यश की रक्षा न कर पाए? मैं अगर आपका पुत्र हूँ तो मैं आपके इस सत्य वचन की रक्षा करूँगा और जैसा आप कह रहे हो मैं वैसा ही करूँगा, एक रत्ती भर भी उसमें कम नहीं होगा आप बिल्कुल निश्चिंत रहें।

'पुनाति त्रायते चायं पितरं येन शोकतः एतत्पुत्रस्य पुत्रत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः' श्री राम कहते हैं, पुत्र की परिभाषा यही है। जो पिता की रक्षा करे, पिता को पवित्र करें और जिसके कारण से पिता के लिए कभी शोक उत्पन्न न हो, पुत्र उसी का नाम है। आज मुझे अपने उस पुत्रत्व का वहन करने का आपने एक मौका दिया है। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि मैं आपके वचनों की रक्षा करूँगा और इस राजपाट को भरत को दे करके आपके वचनों की रक्षा करने के लिए, मैं इस जमीन से, इस धरती से, इस वसुंधरा से इतनी दूर चला जाऊँगा जहाँ पर यह भरत की सीमा, भरत के राजपाट की कोई सीमा नहीं लगेगी। यह विचार जब राम जी ने दशरथ जी को दिया तो उस समय पर दशरथ जी मोह से अश्रुपात भी करने लगे। उनके मन के अन्दर व्याकुलता भी बढ़ने लगी और सारा जो एक माहौल प्रसन्नता का था, वह सारा का सारा माहौल एकदम से बदल जाता है और कहा जाता है-

जो होनी होकर रहती हैं यही जिनवाणी कहती है।
देव भी हार गए हैं।
वे ही उतरे भवसागर से, जो मन मार गए हैं॥
वे ही उतरे भवसागर से, जो मन मार गए हैं॥
बुलाकर राम को दशरथ ने सारा हाल बतलाया।
राज होगा भरत को ही यह सब कर्मों की ही माया॥
समय बीता बहुत मैंने, दिया था एक वचन बेटा।
तुम्हारी मात कैकेई को, तुम्हारा भाग्य था हेठा॥
धरोहर था धरा उसने, नहीं उस वक्त कुछ मांगा।
कर्म ने आज जो चाहा, भरत को राज है मांगा॥
अजब उलझन पड़ी मुझको, राज के तुम हो अधिकारी।
वचन पूरा करूँ 'दासी' पड़े ना झूठ का साया॥

दोहा -

श्रीराम ने सुन लिया, दशरथ जी से हाल।
कहन लगे हम जायँगे, दक्षिण दिश फिलहाल॥

और वह दक्षिण दिशा की ओर जाने का अपना मन बना लेते हैं। सारा राजपाट जहाँ भरत की सीमा तक चलता है, उसके आगे विंध्याचल की ओर उनका जाने का मन बनता है और उस समय पर यह सामने बात आती है, श्रीराम के माध्यम से ....

हे पिता! न कुछ अफसोस करो, हम हर्ष सहित बन जायेंगे।
यदि रहे यहाँ पर, भाई भरत फिर राज नहीं कर पाएँगे॥
हे पिता हमें कुछ कष्ट नहीं, हम आपकी आज्ञा पालेंगे।
नहीं झूठ वचन रघुवंशी का, सो आप भी कैसे टालेंगे॥
अब हर्ष सहित लघुभ्राता को, बस राजतिलक प्रभु कर दीजे।
वचनों के बन्धन में बंधे इसलिए नहीं इन्कार किया।
यदि मैं यहाँ पर रह जाए भाई का राज जमेगा नहीं।
मेरे होते लघुभ्राता को राजा कोई भी गिनेगा नहीं॥
सब माता इनकी शरण रहे और आप जाय दीक्षा लीजे।
इतना कहकर चल दिये राम, दशरथ को मूर्छा आई है।
हा कौन उदय ऐसा आया, बन जाए श्री रघुराई हैं॥
श्रीराम गए कौशल्या पर, जाते ही शीश झुकाया है।
जो बातें पुत्र पिता में हुई, सारा ही हाल सुनाया है॥
सुनकर के माता तड़प उठी, गिर गई मूर्छा आई है।
श्रीराम ने माता सचेत करी, बेटे से यों बतलाई है॥
बेशक ले राज भरत बेटा, मुझ को कोई वह गैर नहीं।
पर तुम कैसे वन जाओगे, मेरे प्राणों की फिर खैर नहीं॥
जीवित मुर्दे से बदतर हो, तुम बिन कैसे रह पाऊँगी।
वन जाओ या नगरों में रहो, मैं संग तुम्हारे जाऊँगी॥
हे राम तुम्हारे बिन मुझ को, इक पलको आता चैन नहीं।
तुम बिन क्या प्राण रहे मेरे, दुःख बतलाते को बैन नहीं॥
सन्तोष करूँ कैसे बेटा, क्या इसी लिए ही पाला है।
अपराध किया क्या विधना का, हा इस विपदा में डाला है॥
ओ राम कहे माता मेरी, हृदय में धारो धीर।

दुख-सुख में समता गहें, सम्यक धारी वीर॥
मुझ को कोई संताप नहीं, मैं दक्षिण दिश को जाऊँगा।
स्थान वहाँ रहने को बना, फिर आपको लेने आऊँगा॥
यदि अब बन जाओ माता, तो बहुत ही दुःख उठाओगी।
कंटक मय राहों पर, कैसे तुम पांव-पियादे जाओगी॥
सौगंध तुम्हारे चरणों की, यह वादा करके जाता हूँ।
तुम को अवश्य बुलाऊंगा, पर अब तो नहीं ले जाता हूँ॥
माता समझाई बार बार फिर पास जानकी के आये।
हे प्रिये ! विदा करिए अब तो हम कुछ दिन को वन में जाये।

वह श्री राम पहले माँ कौशल्या के पास गए और यह विचार, यह समाचार जब उसके समक्ष रखा तो वह माँ विह्वल होने लगी, रोने लगी कि मैं भी तुम्हारे साथ वन को चलूँगी। बड़ी मुश्किल से रामजी ने उनको माँ को समझाया कि मैं जहाँ जा रहा हूँ, वहाँ से मैं लौट करके आऊँगा और अब जब तक वहाँ पर कुछ अच्छा बन जाएगा तब मैं तुमको भी वहाँ ले चलूँगा। लेकिन अभी तुम्हें वहाँ वन में ले जाकर के मैं अनर्थ नहीं करना चाहता। क्योंकि तुमको इतना कष्ट नहीं देना चाहता। आपको यहीं पर रूकना है, यहीं पर रहना है और इस तरह से अपनी माँ को समझा करके वह सीते के पास पहुँचते हैं और उसको भी यह समाचार देते हैं।

श्री राम जी से सीता और लक्ष्मण जी का निवेदन

स्तब्ध हुई श्री जानकी, सुना शब्द वनवास।
रंग में भंग क्यों हो गया, तिलक न आया रास॥
तिलक ना आया रास प्रभु जी, हाल बताओ सारा।
कौन खता पर वन को जाओ, हृदय है दुःखी हमारा॥
आप यदि वन को जाओगे, संग में मैं भी जाऊँगी।
बिना आपके दर्शन प्रभु जी, नहीं मैं भोजन पाऊँगी॥

सीता ने राम जी से कहा यदि आप वन को जा रहे हैं तो मैं भी आपके साथ ही रहूँगी, आपके साथ ही वन में जाऊँगी और आपके दर्शन के बिना तो मैं कभी भोजन भी नहीं करूँगी। इस तरह का विचार उस सीता ने राम के

समक्ष रखा और कहा -

करूँगी सेवा तुम्हारी जी, प्रार्थना यही हमारी जी।
चरणों में शरण दीजिए।
दया करो स्वामी मुझको भी, संग में अपने लीजिए॥
बातें सुनकर सिया की, सोच श्री रघुवीर।
सीता से कहने लगे, धरो हृदय में धीर॥
माता कैकेई को एक वचन, किसी समय पिता ने दिना था।
सो आज पिता से मांग लिया, जो वचन धरोहा कीना था॥
श्री भरत भ्रात को राजतिलक हो, पिता ने स्वीकार किया।
अपना आशीर्वाद कौशल्या ने
वचनों के बंधन में बंधे इसलिए नहीं इनकार किया॥
यदि मैं यहाँ पर रह जाऊँ प्रिये, भाई का राज जमेगा नहीं।
मेरे होते लघु भ्राता को, राजा कोई भी गिनेगा नहीं॥

सीता के कहने पर श्री राम ने सीता को समझाया कि यह अपने पिता का वचन निर्वाह करने के लिए मुझे प्रतिज्ञा करनी पड़ी और पिता ने मुझे आज्ञा दी है अगर मैं यहाँ पर रहूँगा तो भरत अपना राजपाट जमा नहीं पाएगा और भरत को कोई भी राजा यहाँ पर स्वीकार करेगा नहीं। इसलिए भरत के साथ रहने में मेरे लिए किसी भी तरह से उचित नहीं होगा। मेरा भरत से कोई वैर नहीं। मैं खुद भरत के लिए वह राजतिलक करके जाऊँगा और स्वयं इस राज्य की सीमा से दूर इसलिए जाऊँगा क्योंकि यह राज्य जो भरत का है, उस राज्य में मैं उसका बड़ा भ्रात होने के नाते यहाँ पर रुक नहीं सकता, यहाँ पर रह नहीं सकता और यह विचार सीता से कह करके वह सीता को भी अपने साथ में लेने का, उसको साथ में चलने के लिए उसका मन बन जाता है और फिर यही एक उपाय उनके समक्ष रह जाता है। जिसका वह वर्णन करते हैं-

यदि यह है तो ठीक है, ये ही एक उपाय।
लेकिन संग मैं चलूं, रहूँ एक पल नाय॥
राम देव कहने लगे, सुनो प्रिये जी बात।

आज्ञा लाओ मात से, तभी चलो मम साथ॥

देखो! श्रीराम ने मन तो बना लिया कि हाँ! सीता तुम मेरे साथ चल सकती हो। लेकिन उन्होंने पहले सीते से कहा कि तुम पहले माँ से जा करके निवेदन करो, माँ से पहले आज्ञा लाओ। माँ की आज्ञा यदि होगी तो मैं तुम्हें वन में ले जाऊँगा। इस तरह से सीते के लिए कहा तो उस समय पर ....

प्रिये धीरज धरो मन में, मात के पास अब जाओ।
यदि आज्ञा मिले तुमको, तो फिर तैयार हो जाओ॥
चली सीता सास के पास, और चरणों में जा बैठी।
न मुख से बोले आता है, ह्दय कहता हैं कह जाओ॥
मात आज्ञा मुझे दिजे, कि मैं भी बन में संग जाऊँ।
दिखायेंगे कर्म क्या क्या इन्हें आगे भी आजमाओ॥
नहीं सेवा बनी कुछ आप की, यह दुःख है भारी।
कृपा 'दासी' पे अब करना, दयालु आप कहलाओ॥
सुनकर सीता के वचन, माता हुई उदास।
क्या तुम भी अब जाओगी, कौन रहे मेरे पास॥
अच्छा बेटी जाओ तुम भी, कुछ चिन्ता मेरी नहीं करना।
हँसते रोते कट जाएगी, तुम सेवा स्वामी की करना॥
आज्ञा पाकर जानकी उठी, चरणों में मस्तक नाया है।
आँखों से नीर हुआ जारी, दोनों ने रुदन मचाया है॥

और इस तरह से सीता जब जाने को तैयार हो गई राम जी के साथ में तो जब लक्ष्मण जी थे उन्होंने जब समाचार सुना तो जरा देखिए उनके साथ भी क्या हाल होता है?

उधर लक्ष्मण ने सुना, राम चले बनवास।
शीघ्र पास आए तभी, होते बहुत उदास॥
ये पिता ने क्या अन्याय किया, जो राजा भरत को दिना है।
हकदार फिरे मारा मारा, बन बन में योही छबि छीना हैं॥
क्या हम में है वीरत्व नहीं, जो राज नहीं ले पाऐंगे।
है कौन खाता बनवास दिया, श्रीराम न बन को जाएँगे॥

और लक्ष्मण को अपने स्वभाव के अनुसार उस समय पर भी क्रोध आता है। लक्ष्मण का स्वभाव बहुत जल्दी गर्म होने का है और वह उस समय पर जैसे ही सुनते हैं तो उन्हें गुस्सा आता हैं कि पिता ने यह क्या निर्णय ले लिया? जो राज्य का हकदार है, वह वन-वन में मारा मारा फिरे और जो योग्य नहीं है, छोटा भाई है, उसे राज्य का राजा बना दिया जाए? क्या मैं युद्ध करके इस राज्य को छीन लूँ? इस तरह से उनके मन में विचार आता है और जैसे ही उनके मन में क्रोध आता है, तो वह क्रोध तभी तक उनके पास रहता है, जब तक वह श्रीराम के सामने तक नहीं पहुँचते। उनकी दवा श्रीराम है और उन को ठंडा करने का अगर कोई उपाय है, तो बस! उनके बड़े भाई हैं। तब राम उनको समझाते हैं-

राम कहे समझाय कर, करो न कुछ अफसोस।
खता किसी की भी नहीं, सब कर्मों का दोष॥
तब यही लछमन ने कहा, संग चलूँगा नाथ।
आप बिना जीवन मेरा, ज्यों दीपक बिन बाती॥
इतना कहकर श्री लखन, गये मात के पास।
राम संग बन जान की, की उसने अरदास॥

श्रीराम जी संग सीता, लक्ष्मण का भी वनगमन

वे लक्ष्मण जी अपनी माँ सुमित्रा से आज्ञा लेने के लिए जाते हैं कि अगर ऐसी बात है, तो आपके बिना मेरा जीवन नहीं है। मैं आपके साथ रहूँगा और वह अपनी माँ को भी त्यागने के लिए उद्यत हो गए और श्रीराम का साथ देने के लिए वह अपना मन बनाते हैं और इसकी आज्ञा करने के लेने के लिए हुए माँ सुमित्रा के पास पहुँचते हैं।

बोली मात सुमित्रा मात तभी, मैं भी यह कहने वाली थी।
वह इकले बन को ना जावे, मैं तुम्हें भेजने वाली थी॥
जाओ बेटा श्री राम सिया, की थी सेवा तन मन से करना।
यदि क्रोध भी उनको आए कभी, तो मैल नहीं मन में रखना॥
आज्ञा लेकर कौशल्या जी, के राजभवन में आए हैं।

चलने को दोनों भाइयों ने, हाथों में धनुष उठाए हैं॥
आशीर्वाद कौशल्या ने, हिचकी भर भर के देना हैं।
आगे हैं राम पीछे लक्ष्मण, और बीच सिया को लीना है।
इन्द्राणी सम बनको जाती, नीचे को द्रष्टि लगाई है।
माता के अंतिम चरण छुए, नैनों में नीर भर लाई है॥
माताओं पिताजी से मिलकर, फिर भरत जी को समझाया है।
कुछ दिन में वापस आ जाएँ तुम धैर्य धरो बतलाया है॥
जिस समय अयोध्या से निकले, लाखों नर-नारी संग में थे।
समझाते सब को बार-बार वह संघ नहीं छोड़ जाते थे॥

धीरे-धीरे समझाते हुए वह अपने भाई भरत को भी समझाया उन्होंने, वह भरत भी उस समय पर रोने लगे और भरत जी कहने लगे कि मैं यह राजपाट करने के लिए तैयार नहीं हूँ। मुझे तो यह राजपाट छोड़ करके वन में जाना था, यह मेरी माता कैकई ने मेरे साथ क्या कर दिया? दशरथ के समझाने पर, राम जी के समझाने पर, भरत जी बड़ी मुश्किल से माने और उन भरत जी के लिए राम ने कहा कि तुम धैर्य धारण करो, अभी तुम्हारी उम्र वन में जाने की नहीं है। अभी गृह त्याग करने की उम्र नहीं है, तुम अभी बहुत कोमलांग हो, तुम्हारा शरीर बहुत कोमल है और अभी तुम्हारे लिए इस राज्य में रह करके इस राज्य का निर्वाह करने का उत्तरदायित्व जो तुम्हें पिता ने दिया है, मैं भी दे रहा हूँ, इसी का निर्वाह करो। तुम मेरे से दूर नहीं हो, ऐसा उनको समझा करके वह सारे नर-नारियों को छोड़ते हुए आगे बढ़ जाते हैं।

श्री रामचंद्र जी के वनवास से प्रजा में व्याकुलता

चैत्यालय उद्यान में, वहीं किया विश्राम।
रात में सोते छोड़ कर, सब को चल दिए राम॥

वह जब घर से बाहर निकले तो घर के बाहर महल में बहुत बड़ा उद्यान था। महल को cross करते-करते वहाँ आगे एक जिन चैत्यालय बना हुआ था। उन्होंने सोचा कि यह लोग हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए वह उस रात उसी चैत्यालय में रुक गए और चैत्यालय में जब सब लोग उन्हीं

के आसपास रुक गए, सब लोग सो गए तब यह मध्य रात्रि में तीनों लोग राम, लक्ष्मण और सीता मध्य रात्रि में सब को सोता छोड़ कर के वह उस चैत्यालय से आगे निकल जाते हैं और अपनी उस नगर की सीमाओं से आगे निकलने की पूरी तैयारी करके आगे डग रखते हुए चलते चले जाते हैं।

सीता राम लखन के संग में, धीरे-धीरे जाती है।
पवन समान चले दोनों, पर कुछ नही पार बसाती है॥
सीता राम लखन के संग में, धीरे-धीरे जाती है।
पवन समान चले दोनों, पर कुछ नही पार बसाती है॥
प्रजा सब पीछे ही आई, सोते छोड़ चले आए।
धन्यवाद सीता का कीना, इसके कारण मिल पाए॥
चलते-चलते एक अगम नदी, जल का पार न पाया है।
उतरे राम लखन जल में, सीता का हाथ थमाया है॥
जिस समय नदी में उतरे हैं, पानी का वेग कम होता है।
है पुन्य प्रबल इनका साथी, जो जल भी मारग देता है॥
सब नर-नारी पुकार उठे, हमको भी संग में ले लीजे।
राम कहे जाओ भाई, मन भरत की सेवा में दीजे॥
कुछ ने दिया संसार त्याग, कुछ ब्रह्मचारी बन पाए हैं॥

उस जिनालय से निकलने के बाद में चलते, चलते, चलते, चलते वह सुबह हो गई और सुबह भी चलते चलते वह और आगे निकल गए। जैसे-जैसे लोगों को पता पड़ा कि श्री राम रात्रि में ही निकल गए हैं, लोग उनके पीछे पीछे दौड़े और बहुत से लोग उनके साथ में फिर हो गए और वे राज्य की सीमाओं से नगर की सीमाओं से बाहर निकलते गए। वहाँ तक पहुँचे जहाँ तक एक नदी मिलती है और उस नदी का बहाव तीव्र था। उस नदी के पार जाने के लिए राम, लक्ष्मण और सीता सभी उद्यत हुए तो उस समय पर राम जी ने सभी लोगों से कहा, अब इस नदी के पार उस ओर आप लोग नहीं जा पाओगे, आप लोग यहीं पर रुको। यह नदी इसीलिए हमारे बीच में आई है कि अब आपको यहीं पर ठहरना है, यही पर रुकना है। उस नदी

का बहाव तेज था लेकिन जैसे ही वह रामजी उस नदी में उतरे, उनके पुण्य के कारण से उस पानी का वेग भी कम हो जाता है और वह राम सीता का हाथ थमाते हुए, लक्ष्मण जी को साथ लेते हुए उस नदी के उस पार रह जाते हैं और जितने भी प्रजाजन उनके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे, वे सब नदी के इस ओर रह जाते हैं। तब जाकर के वह राम जी अकेले उधर वन की ओर निकल जाते हैं।

माता कैकई और भरत- श्री रामचंद्र जी से क्षमायाचना।

इधर कौशल्या, सुमित्रा दुखत, रात दिन रोय।
भरत देख व्याकुल हुए, केकई धीरज खोय॥

अब कैकई को भी दुःख होता है और कैकई को भी यह आभास होता है कि यह मैंने अपना वचन मांग करके बहुत गलत किया। पुत्र के व्यामोह में आकर के मैंने सारी प्रजा को दुःखी बना दिया, पूरे घर को एक तरह से मिटा दिया और सबके लिए हमने दुःख दे दिया। ऐसा उसके कैकई के मन में विचार आता है, तो वह केकई कहती है, अपने बेटा भरत से -

कैकेई कहती अय बेटा भरत, श्री राम को वापस ले आओ।
मैं भी आती हूँ पीछे ही, दोनों माताओं को ले जाओ॥
सुनते ही चल दिए भरत वनों को, प्रजा सारी संग चली।
माताएं भी सब हर्ष सहित, पीछे जाती लगती हैं भली॥
उस नदी में आकर तरह-तरह के बेड़े बांध बनाए हैं।
उन पर होकर के संग सहित, श्री भरत पार हो पाए हैं॥
जो मिले उसी से पूछते हैं, श्रीराम किधर को पधारे हैं।
सब राह बताते जाते थे, सब ही के राम दुलारे हैं॥
जब दूर से देखा तीनों को, तो भरत धैर्य को खो बैठे।
जाकर गिरे चरणों में, और रोते रोते यूँ कह बैठे॥
या तो मैं भी बन में रहूँ, या संग तुम्हें ले जाऊँगा।
नहीं चैन एक पलको है मुझे, तुम्हें छोड़ कहाँ सुख पाऊँगा॥
इतने में माताएँ आई, सब मिलकर रुदन मचाने लगी।

मैं पापिन बड़ी अभागिन हूँ, कैकेई ऐसे पछताने लगी॥
अब वापस राम चलो घर को, नहीं तुम बिन शोभा राज की है।
अब क्षमा करो मुझको बेटा, अब चिन्ता तुम्हें ताज की है॥
श्रीराम ने उठकर कैकेई के, चरणों में मस्तक नाया है।
हे माता क्षमा मांग के क्यों, बेटे को पाप लगाया है॥
मैं तो चरणों का सेवक हूँ, बालक पर कृपा करो माता।
वचनों की रक्षा करनी है, आदेश पिता का है माता॥
वहाँ राज पिता ने दिया, यहां मैं भी तिलक कर देता हूँ।
अब राज करो कुछ दिन भाई, यह आज्ञा तुमको देता हूँ॥
कुछ अवधि बीते आऊँगा, यह सत्य वचन मानो भ्राता।
सेवा तन मन से कर लीजे, तुम पै छोड़ी तीनों माता॥
ऐसे समझाकर भरत और, माताओं को वापस कीना।
वह दुखित हृदय लेकर आए, और राज भरत ने आ लीना॥
पर हृदय राज में लगता नहीं, तन मन वैराग्य समाया रहे।
किस दिन दीक्षा धरण मैं करूँ, बस ये ही ध्यान लगाय रहे॥
जिस दिन वापस दोनों भाई, हां अवधपुरी में आएंगे।
यह अटल प्रतिज्ञा हैं मेरी, हम शीघ्र ही वन को जाएंगे॥
यह कथा यहाँ ही छोड़कर अब श्रीराम का हाल सुनाना है।
वन विहार का हिस्सा दूसरा, 'दासी' को लिखकर गाना है॥

उस नदी के पार जाने के लिए भरत को उस नदी में बांध बनाना पड़ा। वहाँ से व्यापार हो करके जब उस वनों में जाकर के उन तीनों को देखा और वहाँ पर जाने के बाद में उन राम जी को वापस मनाने के लिए कैकई ने उनसे क्षमा मांगी तो श्री राम कहते हैं कि तुम मेरी माँ हो। माँ होकर के बेटे से क्षमा मांग करके मुझ पर पाप नहीं लगाओ और मैंने यह जो कार्य किया है, अपने पिता के वचनों की रक्षा करने के लिए किया है। मैं स्वयं इन

भरत के लिए राजतिलक करता हूँ और उन्होंने वहीं पर उनके लिए राजतिलक किया और कहा मैं कुछ दिनों बाद फिर वापस आऊँगा।

जैन रामायण के अनुसार श्रीराम जी को वनवास नही हुआ

यह एक बात विशेष रुप से ध्यान रखने की है कि यहाँ कोई ऐसा चौदह वर्ष का उनके लिए वनवास नहीं दिया गया। वह श्रीराम खुद अपनी इच्छा से वन में गए, पिता के वचनों की रक्षा करने के लिए वन में गए। कैकई ने उनसे यह नहीं कहा कि तुम्हें बारह वर्ष के लिए वन में जाना है। कैकई ने तो केवल अपने पुत्र के लिए राज्य मांगा और जब पुत्र के लिए राज्य मांग लिया तो यह घटना अपने आप घट ही गई। क्योंकि पुत्र के राज्य में बड़ा भाई रह नहीं सकता था। इसलिए वह बड़े भाइयों को श्री राम और लक्ष्मण दोनों बड़े थे, उनको जाना पड़ा और इस कारण से वह वन की ओर गए और वन की ओर जाते हुए भी उन्हें वहाँ पर इतने वर्ष लग गए यह अलग बात है लेकिन कैकई ने जैन रामायण के अनुसार उन्हें चौदह वर्ष का कोई वनवास नहीं मांगा। यह भी आप लोगों को एक विशेष बात ध्यान रखनी है कि कैकई ने राम का वनवास नहीं मांगा था, कैकई ने केवल अपने भारत के लिए, पुत्र के लिए राज्य मांगा था और उसी राज्य के लिए उन्हें वन जाना पड़ा, यह बात अलग है। यह बात सभी के दिमाग में रहे तो आप इस जैन रामायण को एक और अच्छी दृष्टि से देख सकते हो और विचार कर सकते हो कि हाँ! यह बात काफी उचित लगती है। लगती है कि नहीं लगती है? जब उन भरत को भेजा गया वापस तब उन भरत जी ने कहा कि मैं आपकी बात मान कर के वापस तो जा रहा हूँ लेकिन मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करके जाता हूँ, जिस दिन आप वापस लौट कर के आएँगे, उसी दिन में वन को प्रस्थान कर जाऊँगा। मेरे तो अंग-अंग में वैराग्य समाया है, मुझे इस राजपाट से कोई लेना-देना नहीं है लेकिन मुझे आपकी आज्ञा मानकर के, माँ की आज्ञा मानकर के यहाँ पर राजपाट करना पड़ेगा। ऐसे व्यथित भावों से उन भरत ने वह राज्य स्वीकार किया। आप देखें यहाँ हर एक पात्र अपनी अपनी मर्यादा में है और हर एक पात्र अपनी-अपनी मजबूरी में भी है। हर पात्र के सामने यह भाव है कि नहीं! राम को वन में नहीं जाना

चाहिए लेकिन कर्मों की कहानी बड़ी बलवान होती है और बड़ी विचित्र होती है। यही वह कर्म होते हैं जिनके कारण से होनी अनहोनी हो जाती है और अनहोनी भी होनी हो जाती है। इसीलिए इस भाव को ध्यान में रखकर के यह कहना पड़ता है-

बनते बनते बात बिगड़ जाती हैं क्यों,
जलते-जलते बाती बुझ जाती हैं क्यों॥
होना था अभिषेक सुबह सिंहासन पर,
बैठा था निश्चिंत खुशी में सारा घर॥
मेरा पति कल राजा होगा देखूंगी,
उनके राजमुकुट को लख सुधि खो दूंगी॥
पति के पीछे सीता बन जाती हैं क्यों,
बनते बनते बात बिगड़ जाती हैं क्यों॥
बनते बनते बात बिगड़ जाती हैं क्यों,
जलते जलते बाती बुझ जाती हैं क्यों।

आप सभी को इस क्यों का उत्तर ध्यान में रखना है कि कई बार हमारे जीवन में भी अनेक बातें बनते-बनते बिगड़ जाती है और जब जब आपको यह बनती बात बिगड़ में याद आए, आप श्री राम को अपने सामने लाना। हो सकता है, आपकी बात बहुत देर के लिए न बिगड़े और बनते-बनते सुधर जाए। ऐसे श्रीराम के आदर्शों पर चलने के लिए हमें अपने कर्म और कर्म फल पर भी विश्वास करना होगा और हर जीव अच्छे कर्मों का उपार्जन करें। तभी वह श्रीराम का सच्चा भक्त बने। ऐसी भावनाओं के साथ में यह प्रसंग यहीं पर समाप्त होता है। आगे वन का प्रसंग आपके लिए कल आएगा तब तक के लिए बोलिए भगवान श्रीराम सिद्ध प्रभु की जय।

श्री राम को वनवास दिया गया या खुद स्वीकारा

श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि

यह श्री राम चरित्र का वर्णन पिछले तीन दिनों से आप लोग सुन रहे है। श्री राम का वनवास में गमन हुआ, जिनके लिए मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि दी जाती है। यह उपाधि उन्हें इसी तरह के कार्यों से मिली जो कार्य उन्होंने किए। मर्यादा पुरुष होने का तात्पर्य होता है कि वह जीव जो समाज की, धर्म की और हर तरह की सभ्यता की मर्यादाओं में रहता है, वह मर्यादा पुरुष कहलाता है। जब हम किसी भी तरह से किसी के प्रति समर्पित होते हैं तो हमें कुछ बलिदान भी करना पड़ता है। समर्पण हमेशा sacrifice करना सिखाता है और यह उपदेश उन्होंने अपनी जीवन चर्या से सबको दिया कि एक पुत्र को पिता की बात रखना, पिता की बात को मानना और पिता का वचन निभाने के लिए सर्वस्व त्याग भी करना पड़े तो उस पथ को स्वीकार करना, यही हमारे जीवन की मर्यादा का सबसे बड़ा सोपान है। यह उपदेश उन्होंने देश के उन सभी नागरिकों को दिया कि पिता के वचन को निभाने के लिए, पिता की बात कभी गिरने न पाए, कुल की कभी भी अपकीर्ति न हो और इस तरह से जो पुत्र अपने अन्दर इन बातों का ख्याल रख कर के अपने जीवन का निर्वाह करता है, वह पुरुष वह पुत्र मर्यादित आचरण करने वाला मर्यादित पुरुष कहलाएगा। यह मर्यादा में रहने की जो सीख हमें मिली, यह श्रीराम से मिली। उनके पिता दशरथ ने अपने वचन का निर्वाह किया।

राजा दशरथ, मुनि महाराज के पास जाकर दीक्षा ग्रहण करते हैं

इधर जब राम का गमन हुआ तो घर के सभी उनकी रानियाँ, सभी बेटे और भी बन्धु जन, सब दशरथ से कहने लगे यह आपने कैसे राम को जाने

दिया? राम अगर बाहर चले भी गए हैं, आप अगर जाओगे तो उन्हें लौटा के भी ला सकते हो। दशरथ के मन में वैराग्य भाव उत्पन्न हो चुका था। वह राज गृह त्याग करके जाने वाले थे लेकिन बीच में उन्हें यह दृश्य भी देखना पड़ा और उसी के फलस्वरूप उन्होंने मन में विचार किया कि इस संसार में अपने-अपने कर्मों से हर कोई सुख और दुःख प्राप्त करता है। कर्म के फल से ही अच्छे कार्यों में व्यवधान भी आते हैं और कर्म के फल से ही बिगड़े हुए कार्य भी बन जाते हैं। यह सब कर्मों का फल यह जीव भोगता है। हम किसी के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। हमने जो अपने मन में उद्देश्य बनाया था, जो विचार किया था कि मैं आत्म कल्याण का मार्ग चुनूँ। अब मैं उसी उद्देश्य की ओर जाता हूँ और यह दुनिया के प्रपंचों में मुझे नहीं पड़ना था। यह लोग फिर वही बात कह रहे हैं। मेरा मोह बढ़ाने के लिए कह रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मेरे पुत्र अगर पुण्यवान हैं तो उन्हें कहीं पर भी कोई भी दुःख नहीं होगा। घर में पुनः लाना, फिर से वही बात दोहराना यह मुझे उचित नहीं लगता और दशरथ जी ने सब के कहने पर भी ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाया। उनके कदम जिस उद्देश्य के साथ आगे बढ़े थे, उसी उद्देश्य के साथ उन्होंने गृह त्याग कर दिया और वन में जाकर के सर्वभूतहित मुनि महाराज के पास में जा करके उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर ली। यह दीक्षा लेने का कार्य निर्ग्रन्थ मुनियों के समीप जाकर के आत्म-साधना करने का कार्य पुरातन काल से चला आ रहा है। यह परम्पराएँ जो निरन्तर आत्म कल्याण की परम्पराएँ बनी हुई हैं यह पुरातन काल से चली आ रही हैं और इन्हीं परम्पराओं के कारण से मनुष्य का जीवन उन्नत बनता चला जाता है।

कैकई के मन में श्रीराम के प्रति दुर्भाव नहीं थे

श्रीराम इधर वन की ओर चले गए। जब हम कैकेयी के चरित्र को देखते हैं तो कैकई का चरित्र भी कहीं से कहीं तक कुरूप नहीं है। कोई भी अनुचित नहीं है। जिस तरह से हम देखते हैं कि लोग कैकई का नाम लेते ही मजाक उड़ाने लगते हैं। कैकई कहते ही उसकी एक तरह से

विडम्बना सामने आ जाती है कि उसने बहुत गलत किया और कैकई कहते हुए एक सौतेली माँ का या किसी दुष्ट माँ का चित्र सामने आ जाता है। किन्तु जब हम जैन रामायण के हिसाब से देखते हैं तो कैकेयी के मन में राम के प्रति कोई दुर्भाव नहीं है। हमने आपसे कहा है- हमें हर तरह से राम को देखना है, हर पहलू से हमें श्रीराम को समझना है और जो भी पहलू हमारे सामने आते हैं उन पहलुओं पर विचार करना है कि यह भी पहलू कितना अच्छा हो सकता है। अगर हमारे विचार में वह चीज अच्छी लगे तो हम ग्रहण करें। नहीं लगे तो न भी करें कोई बात नहीं लेकिन हमें हर दृष्टि से श्री राम की महानता को सुनना जरूर चाहिए। जब कैकेयी ने अपने मन में सिर्फ इतना ही विचार किया था कि मेरे पुत्र भरत का अगर वन में गमन हो जाएगा, वह भी दीक्षा ले लेगा तो फिर मेरा क्या होगा? इसी हेतु उसने दशरथ जी से प्रार्थना की थी, अपना वर माँगा था और उसने वर में केवल एक ही बात माँगी थी कि मेरे पुत्र को राज सिंहासन दे दो, राजतिलक मेरे पुत्र का कर दो। जब दशरथ जी ने उसको वचन दे दिया, राजतिलक करने की हाँ भर दी तो यह स्वाभाविक था कि दशरथ जी ने स्वयं श्री राम से कहा कि यह मर्यादा नहीं बनती कि बड़े पुत्र के रहते हुए छोटा पुत्र राज करे और छोटे पुत्र के राज्य में बड़ा पुत्र उसके अधीन होकर के रहे, यह मर्यादा नहीं बनती। एक दूसरी मर्यादा तब श्री राम की हमारे सामने देखने को आती है। उन्होंने अपने पिता से कुछ बुरा भला नहीं कहा, न अपनी माँ कौशल्या से कुछ कहा, न माँ कैकई से कुछ कहा। उनके हृदय में माँ कैकेयी के प्रति भी उतना ही प्रेम है जितना कौशल्या के प्रति है और कैकेयी का भी राम के प्रति कोई भी दुर्भाव किंचित भी नहीं है। लेकिन उसी कैकेयी यह पता नहीं था कि मेरे इस एक प्रकार का वचन लेने पर राम के लिए वन गमन करना पड़ेगा और वह करना उन्हें मर्यादा का पालन करने के लिए उचित था। इसलिए उन्होंने उस मर्यादा का पालन करने के लिए भी यह कदम उठाया। उन्होंने सीता और लक्ष्मण के साथ में वन गमन का एक मन बनाया। यह इसलिए था कि मेरे रहते हुए यह भरत राज्य का पालन नहीं कर पाएगा, कोई इसको राजा नहीं मान पाएगा और यह भी राज्य को

अनुशासन में नहीं रख पाएगा। इसलिए मेरा यहाँ से जाना उचित है। इसी प्रकार का विचार करके वह वहाँ से निकल गए। यह उनका दूसरा मर्यादित आचरण था जिसने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम की और गरिमा को बढ़ाने के लिए उत्प्रेरित किया। यही मर्यादित आचरण उनका बना रहा, वह आगे बढ़ते रहे, चलते रहे। वह सीता के साथ, लक्ष्मण के साथ गमन कर रहे हैं। कैकेयी एक बार फिर उनसे मिलने के लिए गई थी। नदी पार होने के बाद भी वह भरत जी फिर से उनके लिए गए थे, उनको वापस लाने के लिए लेकिन तब भी उन्होंने कहा कि जो मैंने पिता को वचन दिया है वह वचन निभाऊँगा। आप बिल्कुल चिन्ता न करो, लौट कर के आऊँगा लेकिन यह नहीं कहा कि कितने वर्ष में लौट कर के आऊँगा।

श्री राम ने वनवास स्वयं स्वीकार किया था

यह कथन जैन रामायण के अन्दर नहीं मिलता कि उन्हें वनवास हुआ। वनवास होना अलग बात है और वनवास स्वीकार कर लेना अलग बात है। अगर आप देखो तो हमें श्री राम की यह गरिमा और अधिक दिखाई देती है जब उन्होंने स्वयं अपने भाव से उस वनवास को स्वीकार कर लिया। एक स्वाभिमानी व्यक्ति अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए एक बहुत बड़ी वसुधा का त्याग कर सकता है। पृथ्वी का राजा होने पर भी हुए उस राजत्व का त्याग कर सकता है, यही अपने स्वाभिमान की रक्षा करने का सबसे बड़ा उपक्रम है। कोई उन्हें वनवास भेजे और वह स्वयं वनवास जाएँ, इन दोनों में कौन सी बात उचित लग सकती है, अच्छी लग सकती है, यह आप विचार कर सकते हैं। दोनों attitude आपके सामने हैं। दोनों तरह की अवधारणाएँ आपके सामने हैं। लेकिन हमें पता होना चाहिए कि हाँ! यह भी एक विचार है, यह भी एक अवधारणा है। जब इस तरह से देखते हैं कि उन्होंने अपने मन से खुद वन गमन का भाव बनाया और वह वनगमन करने का भाव इसलिए उचित था क्योंकि वह छोटे भाई के अधीन होकर के रह नहीं सकते थे। बड़ा भाई छोटे भाई की राज्य में उनके अधीन होकर के कैसे रह सकता है? यह उनका अपना स्वाभिमान था और उस स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए उन्होंने वहाँ से उस राज्य की सीमाओं से

पार जाने का निर्णय कर लिया। यह दूसरी एक बहुत बड़ी विशेषता हमें जैन रामायण के माध्यम से समझ में आती है। कैकेयी ने उनके लिए वनवास नहीं माँगा, चौदह वर्ष का उन्होंने वनवास की कोई सीमा नहीं माँगी। वह वनवास उन्होंने खुद स्वीकार किया। कैकेयी ने केवल अपने भरत पुत्र के लिए राजगद्दी माँगी और उसके तहत ही सब कुछ अपने आप हो गया। जब वर्णन आगे बढ़ता है तब राम, लक्ष्मण, सीता सब कुछ अपने जीवन को समर्पित करते हुए, एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव के साथ में आगे बढ़ते हैं। श्री राम का यह कथानक जब आगे बढ़ता है, तो हम उस कथानक को अब सुनते हैं कि वन में भी कुछ घटित होता है। वह वन में भी जाते हैं तो वहाँ पर भी उन्हें कुछ मिलता है। महापुरुषों के लिए वन-भवन सब बराबर होते हैं। वन में जाकर के उनका जीवन कैसा चलता है इस बात का चित्रण भी हम आगे करेंगे। थोड़ा पहले हम गुण कीर्तन करते हैं

मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम,
मर्यादा पुरुष श्रीराम ,हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
आदर्श बने जन जन के, वसुदेव कुटुम्ब थे जिनके
जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम,
प्रभु श्री राम,प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम,
मर्यादा पुरुष श्री राम, है सिद्ध प्रभु बलराम।
दशरथ जिनके जनक कहाये, कौशल्या नन्दन जन गाये।
इक्ष्वाकु वंश की शान, क्षत्रिय जग दया निधान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम,
मर्यादा पुरुष श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
जो स्वार्थ मोह को तज के, उपकार लोक का करके।
अपवाद का रखते ध्यान, पाते खुद में सम्मान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम, है सिद्ध प्रभु बलराम,

हर प्राणी जिनको गाता, न जाति भेद मन लाता,
सीता के स्वामी प्राण, हनुमान के जो अभिमान।
प्रभु श्री राम, मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
पितु वचन निभाने खातिर, तज के राजा सुख आखिर।
वन वन करते विश्राम, अन्याय अनीति न काम।
प्रभु श्री राम,प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम,प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
पशु पक्षी तक मोहित होते, लख सुन्दरता बलवीरों की।
वीरों का देश है मनमोहन, और आन शान गम्भीरों की।
वे रूप सुन्दरी सीता, को वन बीच तपस्विनी देखती है,
यह नागकुँवरि या यक्षकुँवरि, इन्द्राणी है! यह सोचती हैं।

राम लक्ष्मण संग सीता के वनगमन पर लोगों के विचार

सभी लोग जब सीता को देखते हैं, पुरुष श्री राम को रास्ते में देखते हैं तो अनेक लोग यह विचार करते हैं कि यह सुन्दरी सीता कोई बीच में इन दोनों के चलते हुए कोई तपस्विनी है या कोई नाग कुमार की कन्या है या कोई यक्ष कुमार की कोई कन्या है या यह स्वयं शचि इन्द्राणी है। इतनी सुन्दर वह सीता लगती है और उसके विषय में अनेक-अनेक लोग मन से विचार करते हैं।

आ सीता से पूछती, वनवासिन सब नारि।
कौन कहाँ से आ रही, हे सुन्दरि सुकुमारी।
तुम कौन हो देवी सुन्दरि, राजकुमारी,
तुम कौन हो देवी सुन्दरि, राजकुमारी।
चन्द्रमुखी मृदु कोकिल बैनी, गजगामिनी मतवारी!
नैन कमल, नख शिखयुत, सुन्दर, क्या हो सुरपति नारी।
स्वर्ण वर्ण और नीलवर्ण यह बलशाली धनुर्धारी।
दोनों कौन तुम्हारे संग में,
दोनों कौन तुम्हारे संग में वीर वेष के धारी।
सिया रहें कहीं मौन, कहीं उत्तर दे जाती हैं।

प्रेम भरे आग्रह को उनके, टाल न पाती हैं।
हे मम नाम जानकी, राजा जनक दुलारी हूँ।
स्वर्ण-वर्ण सुन्दर मन, मोहन, इनकी नारी हूँ।
ये अवधेश्वर पिता वचन, प्रतिपालक, वन आये।
संग श्री लखनलाल लघु, भ्राता सेवक वन आये॥
नीलकमल सम वर्ण ये, नारायण अवतारी हैं।
सिया रहें कहीं मौन, कहीं उत्तर दे जाती हैं।

जब रास्ते में अनेक वन में विचरण करने वाली स्त्रियाँ पुरुष उनसे पूछते हैं कि तुम कौन हो? कभी-कभी तो सीधा बोल पड़ती है और कभी-कभी मौन रह जाती है।

श्री राम का मूल नाम पद्म था और स्वर्ण वर्ण था

आपको यह ज्ञान में रहे कि श्री राम का जो शरीर है, उनके शरीर का जो वर्ण है, रंग है वह स्वर्ण वर्ण का है और श्री लक्ष्मण का जो वर्ण है उनके शरीर का जो रंग है, वह नीलवर्ण का है। एक बात और आपके ज्ञान में रहे कि श्रीराम का मूल नाम पद्म था। जब बचपन में उनका नाम रखा गया था, तब उनका जन्म के समय पर नामकरण किया गया था तो उनका नाम श्री पदमराज, पद्म उनका नाम था। लक्ष्मण का नाम लक्ष्मण ही था और उन्हीं पद्म का दूसरा नाम बल रखा गया था। क्योंकि बलराम महापुरुषों के लिए दी जाने वाली एक बहुत बड़ी उपाधि होती है। महापुरुष अपने पूर्व जन्म के पुण्य से इस उपाधि को प्राप्त करते हैं। बलराम उनकी यह एक उपाधि थी और उनका अन्तिम जो नाम था राम, बलराम के साथ लगने वाला जो राम नाम, यह इतना famous हो गया कि कभी-कभी उपाधियाँ ही छोटे से नाम के साथ में प्रसिद्ध हो जाती हैं और उनका मूल नाम जो श्री पद्म था वह लोग थोड़ा-थोड़ा विस्मृत कर गए लेकिन इतिहास विज्ञ लोग जानते हैं कि उनका मुख्य नाम श्री पद्म था। यह नीलवर्ण के लक्ष्मण जी, स्वर्ण वर्ण के श्री राम और बीच में वह सुन्दर राजकुमारी सीता, यह तीनों वन में विचरण करते हुए जहाँ-जहाँ भी जाते हैं, वहाँ इनका आदर

होता है और होगा भी क्यों नहीं क्योंकि पूर्व जन्म का पुण्य जब साथ में होता है, तो हमें वन में भी भवन की तरह आनन्द मिलता है और वन में भी हमारे लिए सब तरह का सुख मिलता है।

श्री राम ने बताया कि जब हम कुछ छोड़ते हैं तो बहुत कुछ पाते हैं

जीवन में लोग कुछ भी छोड़ना नहीं चाहते, त्याग नहीं करना चाहते। श्रीराम ने हमें यह बताया कि अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए, अपने पिता के वचनों की रक्षा करने के लिए भी हमें बहुत बड़ा बलिदान देना पड़ता है, त्याग करना पड़ता है और जब हम कुछ छोड़ते हैं तभी हम बहुत कुछ पाते हैं। life is nothing when we get everything. जीवन तब कुछ नहीं होता है जब हम सब कुछ पा लेते हैं। Life is everything when we miss something. Life सब कुछ बन जाती है जब हम कुछ miss करते हैं, जब हम कुछ छोड़ते हैं। यही हमें वह मर्यादा पुरुषोत्तम सिखा रहे हैं कि जीवन में अगर कुछ छूटता है, कुछ हमें छोड़ना पड़ता है, कुछ हमारे जीवन में अभाव होता है, उससे भी हमारा जीवन बनता है, बिगड़ता नहीं है, मिटता नहीं है, हमें अपने जीवन को बनाए रखने के लिए उस जीवन को कैसे जीना है? यह आगे बताया जा रहा है।

जहाँ भी जाते हैं यह तीनों, वहाँ पर ही आदर होता है।
कोई कुटी बनाकर रखता है, कोई मीठे फल चुन लाता है।
कोई कहे राम अभी यहीं रहो, आगे वन भीम भयंकर है।
है चित्रकूट नामक पर्वत पशुओं का भी रहता डर है
कहत सुनत आए अंखियों में पानी।
राम कहानी, सुनो रे राम कहानी,
राम कहानी, सुनो रे राम कहानी।
श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम,जय जय राम।
श्री राम जय राम, जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम।
इतना बीहड़, दिनधोली भी, रहता है वहां पर अंधकार।

सीता ही सुकुमारी ले कर है, उसे लाँघना दुर्निवार॥
हे स्वामी आगे मत जाओ, नहीं कष्ट अनेकों पाएँगे,
कहते समझा कर राम उन्हें, टिक एक जगह न पाएंगे।
वन, वनवासी, वन घूम-घूम, आगे दक्षिण पर जाना है।
पुरुषार्थ भरोसे हैं हम तो, क्या कष्टों से घबराना है॥
सुन लो सुन लो अब गुरुवर की जुबानी।
राम कहानी सुनो रे राम कहानी, राम कहानी सुनो रे राम कहानी
नहीं सुनी रघुवीर नहीं भरा बन जाए,
बोलो राम प्रभु की जय बोलो राम प्रभु की जय राम जी

अपने पुरुषार्थ के भरोसे भयंकर वन मे भी चलते जा रहे हैं

चलते चलते वह एक चित्रकूट पर्वत के पास पहुँचे और उस पर्वत के चारों ओर बहुत भयंकर वातावरण है। चारों ओर व्याघ्र, सिंह पशुओं की चीत्कारें, उनकी आवाजें आती हैं। अनेक पर्वतों की गुफाओं में अजगर सो रहे होते हैं, उनकी साँसो की आवाजें गूँजती हैं। चारों ओर बड़े-बड़े हाथी वृक्षों को तहस-नहस करते हुए दिखाई देते हैं। पूरे जंगल का वातावरण वह देख कर के भी वहाँ पर घबराते नहीं और अगर किसी ने उनको रोकना भी चाहा कि आप इस जंगल से न गुजरे यहाँ से न जाएँ तो भी वह रुके नहीं क्योंकि उन्होंने कहा कि मुझे एक जगह नहीं टिकना, मुझे आगे निकल कर जाना है और मुझे दक्षिणपथ और जाना है। मैं तो अपने पुरुषार्थ के भरोसे चल रहा हूँ। मुझे कष्टों से कभी भी कोई डर नहीं होता। ऐसा विचार करके वह निरन्तर बढ़ते चले जा रहे हैं और वह मालव देश की तरफ पहुँचते हैं। जो उज्जैनी नगरी की तरफ पहुँचते हैं, मालव देश में और वहाँ पर कुछ दिनों पहुँचने से पहले वह और बीच में विश्राम कर चुके हैं।

एक बहुत बडे उद्यान में उन्होंने साढ़े चार माह बिताये

इस जंगल से गुजरते-गुजरते उन्हें एक बहुत बड़ा उद्यान मिला और उस उद्यान में उन्होंने बहुत समय बिताया। उस उद्यान में पहुँचने के बाद में वह बिल्कुल ऐसे खुश हैं जैसे मानो उनके जीवन में कुछ हुआ ही नहीं। राम,

लक्ष्मण, सीता तीनों लोग आपस में खूब वार्तालाप करते हैं, खूब अच्छे-अच्छे मधुर गान गाते हैं। अच्छी-अच्छी चीजें उनके सामने एक दूसरे लोग ला करके देते हैं, वन के खूब फल-फूल खाते हैं और हर तरह से वे प्रसन्न रह करके कहीं से कहीं तक उनके मुख पर ऐसी मिलानता नहीं, उनके नेत्रों में कहीं पर कोई ऐसा संकोच नहीं कि हमें कुछ दुःख है, यह हमको छोड़ कर के आए। उस पर्वत के बाद में जो उन्हें एक बहुत बड़ा उद्यान मिला, उस उद्यान में उन्होंने लगभग साढ़े चार महीने व्यतीत किए। उस उद्यान में वह इतने प्रसन्न रहे कि वन के अनेक लोग उनके पास में आकर के बैठते-खेलते उनसे वार्तालाप करते और वे सब के साथ में तरह-तरह की चर्चा करते हुए वहीं पर अपना कुछ समय उन्होंने बड़े आनन्द के साथ व्यतीत किया। आप सोचें उनका यह चरित्र बता रहा है कि अगर हमारे जीवन में कभी कोई चीजें छूट जाती हैं हमसे, कोई वियोग हो जाते हैं, कोई हमारे जीवन में अभाव आ जाते हैं, किन्हीं का असमय में हमारे सम्बन्धियों का मरण भी हो जाता है, किसी भी तरह का अगर हमें कभी कोई दुःख मिलता है तो उस दुःख की गठरी को सिर पर लादे फिरना नहीं है। अगर आप श्रीराम के सच्चे भक्त हैं और श्री राम को अपना आदर्श मानते हैं तो दुःख के समय में आपको वह दुःख याद नहीं करना है। इनसे सीखना है, उस चित्रकूट पर्वत को पार करने के बाद में अगले साढ़े चार महीने तक एक बहुत बड़ी निकुंज में वास किये और वहाँ पर उन्हें किसी भी प्रकार का कभी कोई दुःख महसूस नहीं हुआ। वह पूर्ण आनन्द के साथ पाँचों इन्द्रियों के जो भी अच्छे-अच्छे विषय उनको वहाँ मिलते रहे। उनका मन वहाँ प्रफुल्लित रहा और एक-दूसरे ने कभी भी यह विचार नहीं किया कि घर में क्या हो रहा होगा?

श्री राम का चरित्र हमें वर्तमान में जीना सिखाता है

हमारे लिए इतना दुःख हो रहा है, वह वहाँ पर राज महल में बैठे होंगे। कौन किस तरह से वहाँ पर चिन्ता कर रहा होगा? कुछ नहीं! वर्तमान में जीना सीखो और वह वर्तमान में जीना उनका वह चरित्र हमें सिखाता है। पिछले अतीत की कोई यादें नहीं, सब अपने-अपने पुण्य से जी रहे हैं। जिनका

जितना सहयोग हमें मिला था मिल गया। आगे हमारा जीवन हमारा है और हम अपने आप को आनन्दित रखते हुए जीवन जिये। ऐसा वह चरित्र उनका हमें सिखाता है कि हम कभी भी दुःख में दुःखी न हो और हम अगर कभी भी अपने जीवन में इस तरह के वियोग भी प्राप्त करें तो हम उन वियोगों से अपनी यादों को इतना ज्यादा परेशान न कर ले। अपने मन को इतना परेशान न कर लें कि हम वर्तमान का सुख भोगना ही भूल जाएँ। जहाँ है, जैसे हैं, वहीं पर आनन्दित रहना। पूरी प्रकृति उनके साथ है। क्या

वन? क्या भवन? जिनके हृदय में धैर्य होता है और जिनका मन हमेशा positive होता है, उन्हें कभी भी किसी के प्रति कोई नकारात्मक विचार नहीं आते और जब किसी के प्रति कोई नकारात्मक विचार नहीं है, तो हमें कभी किसी के साथ में बिछड़ जाने का भी कभी दुःख नहीं हो सकता। यही बात श्रीराम ने मानो उस जंगल में मन की प्रसन्नता के माध्यम से इस संसार को बताई कि जैसे कि उनके जीवन में कुछ हुआ ही नहीं। कोई खेद-खिन्नता किसी के मन में नहीं, न सीता किसी को ताने दे रही है कि तुम्हारे कारण से हमें वन में आना पड़ा। नहीं समझे! यह भी तो दे सकती थी। हम तो तुमसे विवाह एक राजकुमार के रूप में किये थे। तुम राजा थे अयोध्या के, इसलिए विवाह किए थे और यहाँ आ कर के हमें वन-वन भटकना पड़ रहा है। ये ताने नहीं दिए कभी सीता ने, इस तरह के वचन बोलना भी पति का अपमान करना है। यह सीता से सीखो, जितने मर्यादा में रहने वाले श्रीराम थे, उससे ज्यादा मर्यादा में रहने वाली सीता थी और वह सीता ने कभी भी मन के अन्दर कोई खेद-खिन्नता नहीं लाई। मैं पैदल चल रही हूँ कि मैं थक रही हूँ, कि मुझ से चला नहीं जा रहा कि मुझसे बैठा नहीं जा रहा कि मुझसे यह खाया नहीं जा रहा। मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा, कोई नखरे नहीं। जैसे नई नई बहूएँ घर में दिखाया करती हैं । कोई नखरे नहीं, किसी के लिए भी यह मन में विचार नहीं आता कि मेरे कारण से किसी को दुःख न हो जाए, इसलिए कोई भी किसी भी तरह का न कोई comments करता और न कभी किसी तरह की कोई

अभाव की बात करता क्योंकि तीनों साथ हैं। अगर एक कुछ कहेगा, एक के मन में भी विचार आएगा तो दूसरे के मन में भी आएगा और यह विचार कहाँ से शुरू होते हैं? जब हम एक के लिए कुछ कहेंगे तो दूसरा भी कहना शुरु करेगा, तीनों इतने समझदार हैं।

सच्चा प्रेम क्या होता है?

एक दूसरे के प्रति प्रेम से इतने परिपूर्ण हैं, इसी का नाम सच्चा प्रेम होता है। जब हम किसी भी तरह के दुःख में हो तो भी हमारा जिन से प्रेम है, उनके प्रति हमारा कभी भी अविश्वास न आए और हम उनके प्रेम को कभी भी उलाहने में न बदलें। यही सच्चा प्रेम कहलाता है। यह सच्चा प्रेम राम सीता और लक्ष्मण के माध्यम से सिखाया जा रहा है। भाई-भाई में कैसा प्रेम होता है? पति-पत्नी में कैसा प्रेम होता है? और यह प्रेम अगर केवल जमीन-जायदाद, धन-वैभव के माध्यम से मिलता तो यह प्रेम कभी भी अमर नहीं हो सकता। राम, लक्ष्मण और सीता का जो आपस में प्रेम है, आपस में जो सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध में किसी को भी किसी से कोई शिकायत नहीं है। यही सबसे बड़ी प्रेम की निशानी होती है। जीवन में कभी शिकायत नहीं करना। पति अगर कुछ कह देता है तो यह सीता को पहले ही सिखाया गया था, बेटा! मन में मलान नहीं लाना, लौट कर के जवाब नहीं देना। आजकल के बेटे-बेटियों को सिखाया जा सकता है क्या? कि जब तुम से कोई बड़ा कुछ बोले, अगर कभी कुछ कह भी दे तो लौट कर के जवाब नहीं देना। यह सीखे हुये थे, ये लोग। गुरुकुल में पढ़े थे, लक्ष्मण भी, राम भी सब अच्छे गुरुओं से अध्ययन किए थे। इसलिए इनके जीवन में कभी एक दूसरे के प्रति शिकायत नहीं थी। ऐसी शिक्षा के संस्कार इन्हें दिए गए थे। न कभी MBA किए, न कोई CA किए, न कोई IIT किए लेकिन दुनिया का life management अगर सीखना है, तो इन श्री राम, लक्ष्मण और सीता से सीखना। इन्होंने सिखाया हमें जीवन कैसे जिया जाता है? जीवन प्रबन्धन की क्या शैलियाँ होती हैं? ये चीजें अगर हमारी संस्कार में हो, हमारी सीख में हो तो फिर हमें दुनिया की कोई शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं। हर शिक्षा अपने आप

आती है, अगर हमारे अन्दर अच्छा संस्कार हो। सबसे बड़ी चीज है घर के अन्दर विवाद होता है, लड़ाईयाँ होती है, पति पत्नी के बीच में झगड़े होते हैं। सिर्फ इस बात से एक कुछ कहता है तो दूसरा उसको जवाब देता है। अगर एक ने कभी कुछ कह भी दिया और दूसरा उसको सुन ले और सुनने के बाद में उसके मनोभावों को देख करके यह सोचे कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा? उसका वह समाधान करने के लिए उन्हें बड़े प्रेम से उसका समाधान दे तो वह लड़ाई आगे न बढ़े। लेकिन जब एक बार, दो बार, चार बार महाराज कब तक सुनूँ? आखिर कहना ही पड़ता है। जिस दिन आपने लौट कर के जवाब दिया, बात से बात बढ़ी मतलब आग से आग बढ़ी और जब वह आग बढ़ती है, तो फिर घर परिवार को जलाने लग जाती है। यह चरित्रों के माध्यम से हमें सीखना है कि अभावों में रह कर के भी एक बड़ी राजकुमारी, वह चाहती तो अपने पिता से कह सकती थी, यह जब तक वन से लौट कर के आ रहे हैं तब तक हम जनक जी के घर में रहेंगे, अपने पिता के घर में रहेंगे। भामण्डल जैसा भाई वह उसको वापस ले जाता तू कहाँ जा रही है वन में? चल जब तक लौटकर आएँगे तब तक तेरे को अपने घर में रहना है। चल! तुझे अपने घर में रख लेंगे, जब तक लौट कर आएँगे तब तू आ जाना है, बाद में आ जाना अयोध्या। नहीं किया, ऐसा ज्ञान नहीं था क्या वह भामण्डल के पास में है या जनक के पास में।

आजकल विवाह तो होता है पर निर्वाह नही होता

आजकल के भाई और आजकल के पिता होते हैं, तुरन्त कोई एक फोन आता है बेटी का कहीं घर से, परिवार से, अरे! तेरे को ऐसा बोला उन्होंने, चल वापिस चल घर पर, तुरन्त उसे घर पर ले आते हैं। हमें सिखाना चाहिए कि घर परिवार कैसे चलाए जाते हैं? घर-परिवार कैसे बनाए जाते हैं? मैं मानता हूँ अगर कहीं पर कोई ज्यादा कष्ट हो, किसी के लिए बेवजह परेशान किया जा रहा हो तब इस तरह के कदम उठाना वाजिब होता है। लेकिन हर छोटी-छोटी बात पर किसी भी तरह से बेटी को घर ले आना और बेटी का घर जाने का बार-बार धमकी देना यह उचित नहीं होता और इसी कारण से आज विवाह तो होते हैं लेकिन निर्वाह नहीं होते। यह बहुत

बड़ी चीज है। विवाह का निर्वाह तभी होता है जब बेटे-बेटियों को इस तरह के उचित संस्कार मिले हो और यह उचित संस्कार अगर हम राम, लक्ष्मण और सीता, भरत इनके जीवन से अगर हम यह उचित संस्कार ले पाएँगे तो यह रामायण आज भी हमारे जीवन में पवित्रता उत्पन्न करती रहेगी। आज भी हमारे मनों में एक मेल, एक सद्भावना का एक वातावरण उत्पन्न करती रहेगी।

राजा वज्रकर्ण का मुनि से केवल निर्ग्रन्थ देव, गुरू को नमस्कार करने का प्रण लेना

राम, लक्ष्मण, सीता तीनों वन में हैं। चलते-चलते जब थक जाते हैं, कहीं भोजन पान नहीं मिला। तो राम ने लक्ष्मण से कहा भाई! जरा देखो कि कहीं कोई नगर दिखाई दे रहा है। लक्ष्मण एक वृक्ष के ऊपर चढ़कर देखते हैं, तो एक उजड़े नगर से दरिद्री सा मनुष्य आता दिखा। पास में आने पर राम के पास ले गए। उससे पूछा तुम कौन हो? उसने नगर के उजड़ने का कारण बताया। यहाँ **एक सिंहोदर राजा** और मित्र **राजा वज्रकर्ण** रहता था। एक बार वज्रकर्ण ने एक दिगम्बर मुनि को देखा। राजा वज्रकर्ण ने पूछा यहाँ अकेले जंगल में बैठे हुए क्या आप हित करोगे? न तो तुम्हारे पास कुछ पहनने को है, न कुछ ओढ़ने को है, न कुछ तुम्हारे पास में कोई धन सम्पत्ति है, खाने-पीने का भी कोई ठिकाना नहीं है, आत्महित करने चले हो। ऐसा उस वज्रकर्ण ने उन निर्ग्रन्थ मुनि को देख करके कहा क्योंकि वह उनके बारे में कुछ जानता नहीं था। जब मुनि महाराज ने उसकी बात सुनी तो उन्होंने कहा कि आत्महित करने के लिए हमें कोई धनसम्पदा की जरूरत नहीं है। आत्महित करने के लिए हमें अपने भीतर बैठे हुए परमात्मा का ध्यान करने की जरूरत है। काहे का परमात्मा? कैसा आत्महित? जब वह कहने लगा तो मुनि महाराज ने कहा कि हित जब भी होगा हिंसा से दूर होने पर ही होगा। हित जब भी होगा यह राज पाठ की विडम्बनाओ को त्याग करने से ही होगा। अगर यह करने से हित नहीं होता है, तो क्या तुम जो कर रहे हो उससे हित होगा। तुम जो अनेक वनचर जीवों को मारते हो,

तुम जो अनेक हिंसाएँ करते हो क्या इससे कोई आत्महित होगा। इससे तो नरक में जाकर के पड़ोगे, इससे तो तुम्हारे लिए अगले जन्म में बहुत दुःख मिलेगा। वज्रकर्ण ने मुनिराज के उपदेश से निर्ग्रन्थ गुरू को आदर्श माना। निर्ग्रन्थ देव, गुरू के अलावा किसी को भी नमस्कार नहीं करने का प्रण लिया। वह राजा सिंहोदर की सभा में जाता तो एक मुद्रिका पहनकर जाता। उस मुद्रिका में जिन भगवान की मूर्ति उसने जड़वा रखी थी। वह राजा को नमस्कार करते समय जिनमूर्ति को नमस्कार करता था। किसी ने यह रहस्य राजा सिंहोदर से कह दिया। सिंहोदर को उससे बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ और उस क्रोध के कारण से वह उस वज्रकर्ण को मारने के लिए अपने पास बुलाने लगा। जब वज्रकर्ण को बुलाया गया तो वज्रकर्ण तो अपने मृदु स्वभाव के कारण से उसके पास आ ही रहा था लेकिन रास्ते में उसे किसी व्यक्ति ने रोक दिया और कहा कि तुम अभी वहाँ नहीं जाना वह सिंहोदर सब तुम्हें मारने की तैयारी किए हुए। जब वह वहाँ जाने से अपने आप को रोकने लगा तो इतने में ही वह देखता है कि सिंहोदर की सेना उसकी ओर दौड़ी आ रही है। वह उल्टा फिर अपने नगर की ओर जाता है और वहाँ जाकर के वह अपने स्थानों में छुप जाता है। इधर वह सिंहोदर की सेना, सिंहोदर राजा स्वयं आता है और उस नगर की कुछ गलियाँ, बनावटे या वहाँ के कुछ ऐसे गुप्त स्थान जिसमें उसकी सेना का प्रवेश करना कठिन था, इस कारण से जब उसे लगा कि यहाँ पर यह सेना रहेगी तो हमारी सेना को नुकसान पहुँचेगा। उसने वहाँ पर अपनी सेना को वापस बुला लिया और उस पूरे नगर में आग लगा दी। उस आग के कारण से वहाँ पर बहुत सारी जनता इधर उधर भाग गई, मकान जल गए और अनेक तरह का नुकसान हुआ। लेकिन वज्रकर्ण राजा उसके बाद से फिर कभी सिंहोदर के पास नहीं गया। वह अपने ही महल में उस गोपुर द्वार के ऊपर एक अच्छा स्थान बना करके वहीं रुका करता था, वही रहा करता था। पूरा नगर उजड़ गया था। सारे इधर उधर चले गए थे। जब यह बात सामने आई और इस कथा को उस व्यक्ति ने उन श्रीराम के लिए समझाया, उन्हें सुनाया और उसके साथ-साथ लक्ष्मण ने भी सुना तो श्रीराम ने उसको बड़े

आदर के साथ में, उसे अपने स्थान पर जाने दिया और इधर लक्ष्मण से कहा कि जाओ कुछ पहले भोजन लेकर के आओ, पास के किसी स्थान से कुछ खाने-पीने की सामग्री लेकर के आओ। उस समय पर लक्ष्मण खाने-पीने की सामग्री भी लेने जाते हैं और इसी तरह की यह घटना जब आगे बढ़ती है, तो उस समय पर यह सन्देश सामने आता है कि जहाँ जाकर के वह भोजन लेने गए थे, वह स्थान पर पहुँच करके उन्हें पता पड़ा कि यहाँ ऊपर गोपुर द्वार के ऊपर कोई बैठा है। वह वज्रकर्ण राजा था।

लक्ष्मण जी का वज्रकर्ण के पास पहुँचना

उसके पास में उसके और बड़े सेवक भी थे और सेवकों ने उन लक्ष्मण जी को वज्रकर्ण के पास पहुँचा दिया और उससे पूछा कि तुम यहाँ क्यों आ रहे हो? कहाँ जा रहे हो? लक्ष्मण जी ने कहा कि मैं भोजन के लिए आया हूँ और मुझे कहीं से भोजन ग्रहण करना है, तो उस वज्रकर्ण राजा ने उनको भोजन दिया और कहा यहीं पर बैठकर के भोजन कर लो। लक्ष्मण जी ने कहा कि नहीं! यहाँ बैठकर के मैं भोजन नहीं कर सकता क्योंकि मेरे भाई और मेरी माँ समान भाभी वहीं पर बैठी हुई हैं। यहाँ से दूर जंगल में मैं उन्हीं के पास पहले भोजन लेकर जाऊँगा। पहले वह भोजन करेंगे उसके बाद में मैं भोजन करूँगा। ऐसा जब उसने वज्रकर्ण से कहा तो वज्रकर्ण ने अपना बहुत सारा भोजन दिया और कहा यह भोजन हमारे लिए बन करके आया है, बहुत अच्छा भोजन है, आप इसे लेकर के जाओ। वह बहुत सारा भोजन लक्ष्मण जी ले करके रामचन्द्र जी के पास गए और बड़ा अच्छा भोजन था। रामचन्द्र जी ने जब इस भोजन को किया तो बड़े प्रसन्न हुए। इतने अच्छे-अच्छे मिष्ठान, चावल अच्छा-अच्छा दूध-दही सब कुछ उसने उनके लिए प्रदान कर दिया था और जब उसके उस आतिथ्य को उन्होंने स्वीकार करके उससे पूछा कि भोजन तुम कहाँ से लाए? उन्होंने कहा यह उसी वज्रकर्ण राजा के पास से भोजन लाए। जिसकी बात अभी यहाँ आकर करके किसी एक व्यक्ति ने आपको बताई थी। उनके मन में आया कि वास्तव में कोई संयमी, व्रतधारी अच्छा पुरुष ही इतना बड़ा आतिथ्य सत्कार कर सकता है और उसके आतिथ्य सत्कार से प्रसन्न होकर के श्री राम ने लक्ष्मण के

लिए कहा देखो! अगर वह कष्ट में है और उसको राजा ने किसी भी तरह से बन्दी या किसी भी तरह के कष्ट में उसको रख रखा है, तो उस से उस को मुक्त कराने का हमारा कर्तव्य बनता है क्योंकि हमने उसका भोजन कर लिया है।

वज्रकर्ण के आतिथ्य का फल राम और लक्ष्मण ने कैसे दिया?

उस आतिथ्य सत्कार का हमें प्रतिफल उसको इसी रूप में देना चाहिए और यह विचार करके उन्होंने लक्ष्मण को आज्ञा दी। लक्ष्मण जी श्रीराम का

भाव समझ गए, उन्होंने कहा तुम अपनी तरह से देख लेना, क्या करना है? लक्ष्मण जी समझ गए कि अब क्या करना है? लक्ष्मण जी सीधे कहाँ पहुँचते हैं? वह राजा सिंहोदर के पास पहुँचते हैं और सिंहोदर राजा के पास में पहुँच करके उस राजा से कहते हैं कि आप यहाँ पर राज्य कर रहे हैं लेकिन इस राज्यों का असली हकदार तो राजा भरत है। राजा भरत ने मुझे भेजा है। क्या बोला उन्होंने? राजा भरत ने एक दूत के रूप में मुझे भेजा है और कहा है कि सिंहोदर राजा को मेरे पास लेकर के आओ। यह बहुत ही दुष्ट राजा है यानि जा करके उससे लड़ने की उन्होंने तैयारी कर ली और वह सिंहोदर राजा के राज दरबार में बैठकर के ही उस को चुनौती देने लग गए। चारों और अनेक योद्धा खड़े हैं, राजा सिंहोदर को गुस्सा आया और गुस्सा आते ही उन्होंने कहा कि इस दुष्ट दूत को पकड़ लो। जब दूत इतना दुष्ट है, तो राजा कितना दुष्ट होगा और उस दूत को पकड़ने के लिए उन्होंने अपने योद्धाओं को लगाया और लक्ष्मण ने अकेले ही उन सभी योद्धाओं को परास्त करते हुए उस राजा सिंहोदर के पूरे महल में एक तरह से तहलका मचा दिया। जब और दूसरे योद्धा उनके पास में आने लगे तो उन्होंने जैसे भीम अपना कोई भी सामान सामने नहीं देखते, कोई अस्त्र शस्त्र सामने ही देखते तो उन्होंने खम्भा उखाड़ लिया ऐसी लक्ष्मण जी ने खम्भा उखाड़ लिया और सारे योद्धाओं को इधर-उधर भगा दिया। यह देखकर के राजा सिंहोदर जब किसी भी तरह से अपनी रक्षा नहीं कर पाया तो राजा सिंहोदर को पकड़ कर के लक्ष्मण श्री राम के पास में उन्हें ले गए।

जब सिंहोदर उनके पास में पहुँचा तो उन्होंने कहा कि तुमने वज्रकर्ण को क्यों परेशान किया? उसने सब बताया। तब उन्होंने कहा कि वज्रकर्ण एक अच्छा राजा है और वह अगर अरिहंतों का ध्यान करता है, उन पर विश्वास रखता है, निर्ग्रन्थ मुनियों को मानता है, तो तुम्हें इससे क्या आपत्ति है? उसको वैसा करने दो लेकिन उसे किसी भी तरह का बन्धन अगर स्वीकार नहीं है उसने अगर एक मुनि महाराज से नियम लिया है तो उसके नियम का निर्वाह करना भी एक अच्छे राजा का कार्य होता है। ऐसा समझा कर के सिंहोदर के द्वारा वज्रकर्ण को मुक्त कराया। इधर राम की सबसे बड़ी लोकप्रियता का यह कारण बना। वह सब के प्रति सद्भाव रखने वाले, समन्वय की दृष्टि रखने वाले हर तरह के लोगों के धर्म की वृद्धि का भाव रखने वाले धार्मिक पुरुष के रूप में, उन्हें उस तरह से देखा गया कि वह हमेशा अगर कोई अच्छा आचरण करने वाला है और धर्मात्मा व्यक्ति है तो उसके ऊपर किसी भी तरह का कष्ट नहीं आना चाहिए। इस बात को ध्यान में रख कर के उन्होंने उन वज्रकर्ण राजा को मुक्त कराया और जब वह वज्रकर्ण राजा सिंहोदर कि इस तरह की बन्दिशों से मुक्त हो गया तब वह वज्रकर्ण राजा उनके पास में आ करके उनका अनुचर बन गया। हमेशा उनके पास रह कर के वह श्री राम भगवान की भक्ति करने में तत्पर हो गया।

वन में रहकर भी महापुरुष महान कार्य करते हैं

उसने आगे चलने का मार्ग भी सुझाया और अनेक तरह से उनका सहयोग और सहायता करके उनका बड़ा उपकार भी स्वीकार किया। आप समझ सकते हैं, वन में रह कर के भी महापुरुष अनेक तरह के बड़े-बड़े काम कर लेते हैं। कोई जरूरी नहीं है कि जब राजा बन करके जाए तभी किसी का हित किया जा सकता है, तभी हम किसी के लिए कुछ अच्छा कर सकते हैं। एक अच्छे राजा को तो वैसे भी प्रजा की तरह घूमना पड़ता है तब वह प्रजा का हित कर पाता है। अगर आपने कभी सुना हो तो राजा भोज, नाम सुना है कभी! राजा भोज भी एक ऐसे ही राजा थे जो हमेशा प्रजा के भेष में एक सामान्य व्यक्ति के भेष में प्रजा के पास जाते थे, बैठते थे, मिलते

थे और उनकी समस्याओं को समझ करके उनकी समस्याओं का निदान करते थे। ऐसे ही श्रीराम के लिए एक अवसर मिल गया। राज गद्दी पर बैठे-बैठे उनकी ख्याति इतनी नहीं होती, जितनी ख्याति उनका वन गमन जाने पर हुई और वन गमन में जाने पर जो उन्होंने कष्ट सहन किया इसी कष्ट ने उनकी आत्मा को परमात्मा के रूप में सबके सामने रख दिया। **यह कष्ट सहन करने की शिक्षा भी उन्होंने हमें दी और अपने जीवन चरित्र से उन्होंने सिखाया, किसी भी परिस्थिति में भयभीत नहीं होना, धैर्य रखना, धर्मात्मा पुरुषों के प्रति हमेशा सद्भाव रखना, प्रजा की रक्षा करने के लिए हमें हमेशा कटिबद्ध रहना, इस तरह से वह सर्वत्र एक समभाव का संदेश देते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे हैं।** वहाँ आगे बढ़ते हुए उस जंगल में उन्हें और भी कुछ मिलता है जो कुछ आप जानते हो, वह कल आपको बताया जाएगा कि उन्हें और भी उस जंगल में किस तरह से ऐसे लोग मिलते हैं, जिनका उन्होंने कल्याण किया। जिनको उन्होंने अनेक तरह के बन्धनों से मुक्ति दिलाई, जिनके माध्यम से उनके उन्होंने कष्ट दूर किए और इस तरह के उन्होंने अनेक तरह के लोकोपकारी कार्य किए। उनके लिए वह वनवास भी अपने आप में एक विजय यात्रा थी। जो वह विजय यात्रा करते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे थे और वह दक्षिण दिशा की ओर जाने की ओर उन्मुख थे। क्योंकि उत्तर भारत में जितना भरत का राज्य फैला हुआ था उन सीमाओं से आगे निकलना चाहते थे। कहाँ तक पहुँचे? कैसे उनके जीवन में वह घटना घटी जो सबके समक्ष आई है, उस वन में और कौन-कौन से विशिष्ट लोग उनको मिलते हैं? इस बात की जानकारी आपको अब कल दी जाएगी, आज का समय आज पूरा हो गया है। जैसे भी हुआ आपके मन में उन श्री राम की कथा सुनने का इतना साहस इतना धैर्य और इतनी रुचि तो रही कि अनेक तरह की व्यवधान होते हुए भी आपने अपनी कुर्सी नहीं छोड़ी, यह बहुत अच्छी बात है।

श्री राम, सीता, लक्ष्मण का दण्डक वन की ओर गमन

वनवास मे राम, लक्ष्मण द्वारा जीवों का उपकार।

वनवास में श्री राम लक्ष्मण और सीता तीनों अनेक-अनेक तरह से वन में भ्रमण करते हुए वन के अनेक जीवों का उपकार भी कर रहे हैं। रास्ते में अनेक नगर मिलते हैं, राजा मिलते हैं। जो राजा किसी दूसरे के लिए दुःख दिए हैं, अत्याचार किए हैं उनके उन अत्याचारों का भी निवारण करते हुए वह राम-लक्ष्मण आगे बढ़ते जा रहे हैं। कल आपको सिंहोदर और वज्रकर्ण का एक प्रसंग सुनाया था। इसी के आगे उन्होंने और भी जो म्लेच्छ राजा होते हैं उनके दुर्व्यवहार के कारण से बन्धन में पड़े हुए ऐसे अनेक जीवों को मुक्त कराते हुए वह आगे बढ़ते चले जाते हैं और आगे बढ़ते हुए एक जगह पर पहुँचते हैं तो जहाँ कोई उनको समझ पाता है तो उन्हें सम्मान देता है और अगर कोई नहीं समझ पाता है तो उनका अपमान भी कर देता है। वह अपमान उसकी नादानी का परिणाम होता है और ऐसा ही एक प्रसंग घटित हुआ। चलते, चलते, चलते, चलते वह जब वह थक गए तो एक कुटिया में किसी के घर के पास में बैठ गए। उस घर का मालिक उस समय पर वहाँ नहीं था। उसकी पत्नी ने उसको वहाँ बैठा लिया। राम-लक्ष्मण को वहाँ बैठा देख कर के जब वह उस घर का मालिक जिसका नाम कपिल था, वह वहाँ आया और उसने देखा कि यह किसी को भी घर में बैठा लिया इसने तो उसको वह डाँटने लगा। यह देख कर के वह तीनों वहाँ से उठ गए और पास में दूर जाकर के चलते-चलते एक वृक्ष के नीचे बैठ गए और फिर उस वृक्ष के नीचे बैठा देख कर के जो वहाँ का वन का यक्ष था, उस यक्ष ने उनको देखा कि यह कोई बहुत बड़े इन्द्र, नागेन्द्र की तरह दिखाई देने वाले महापुरुष लग रहे हैं और ये यहाँ एक वृक्ष की छाँव में बैठे हैं। उस यक्ष ने उनके रूप को देख करके, उनके सौन्दर्य को देख

करके, उनके महापुरुष के लक्षणों को देखकर के प्रसन्न होकर के वहाँ पर एक नगरी बसा दी। उस नगरी में सब तरह के वन्य प्राणी, मनुष्य सब कोई वहाँ पर रहने लगे, इस तरह से देवों के द्वारा नगरी बसाई गई। जब वह कपिल नाम का वह व्यक्ति जब वहाँ से गुजरा और उसने देखा कि पहले तो यहाँ कुछ भी नहीं था, उजाड़ था यह यहाँ पर इतनी सुन्दर नगरी कहाँ से आ गई? वह उस नगरी में घुसा, देखा तो उसे पता पड़ा कि जिनको हमने अपने घर के बाहर से हटाया था उन्हीं के पुण्य प्रभाव के कारण से नगरी यहाँ पर बसी है। वह आश्चर्यचकित हो गया और अपने कृत्य का पश्चाताप करने लगा, वह उनके पास आने से भी डरने लगा। लेकिन जब श्रीराम को किसी ने बताया कि वह कपिल नाम का व्यक्ति आपके पास आना चाहता है लेकिन वह बहुत डर रहा है तो उसे बुलाया गया। जब उसे बुलाया तो वह उनके चरणों में प्रणाम करके अपने पश्चाताप के माध्यम से अपने कृत्य की क्षमा माँगने लगा। श्री राम दयालु हृदय के थे। उन्हें पता था कि यह इसकी बहुत बड़ी नादानी है और उन्होंने उसको बड़े प्यार से उठाकर के समझाया और कहा कि ऐसी गलतियाँ हो जाती हैं, यह तुम्हारी गलती नही है। यह कर्म के उदय में ऐसा हो जाता है और उसे समझा करके उसे खूब सारा धन दिया। उससे कहा कि तुम्हें यहाँ से जो कुछ भी चाहिए भरपूर ले जाओ और सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करो। लेकिन उस व्यक्ति के मन में आया कि हमने इतने बड़े महापुरुष का अपमान किया है। इससे हमारे लिए जो पाप का बन्ध हुआ है यह पाप का बन्ध कैसे कटेगा? उसके मन में यह विचार आता है कि मैं अब घर नहीं जाऊँगा, अपने पाप का पश्चाताप करने के लिए मैं दिगम्बर साधु बन कर के अपने पापों का प्रक्षालन करूँगा। और वह घर न जाकर के दिगम्बर मुनि के पास में जाकर के दीक्षा ले लेता है और अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए तपस्या करने लग जाता है।

लक्ष्मण और वनमाला के विवाह प्रसंग।

अनेक तरह के कथानक उन श्रीराम के उस जंगल से गुजरते हुए सामने आते हैं और उन कथानकों के माध्यम से यह जानने में आता है कि उनके

पुण्य के प्रभाव के कारण से वहाँ पर नगर भी बसते हैं। उन नगरों में वह विश्राम भी करते हैं लेकिन वह कहीं पर भी रुकते नही हैं और आगे

बढ़ते चले जाते हैं। चलते, चलते उन्हें एक विजयनगर मिलता है और वहाँ का राजा पृथ्वीधर था। उस पृथ्वीधर की रानी इन्द्राणी कहलाती थी और उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम था वनमाला। उस वनमाला का विवाह लक्ष्मण से होना निश्चित उसके पिता ने किया था और स्वयं वनमाला ने भी यह विचार किया था कि मैं अपना विवाह करूँगी तो लक्ष्मण से ही करूँगी। लेकिन जब यह सुनने में आया कि इनको वनवास हो गया है, तो उसके पिता सब जगह उन राम को, लक्ष्मण को ढूँढवाते रहे, पूछते रहे कि ये कहाँ हैं? लेकिन उनका कोई पता नहीं चला। वह वनमाला भी जब दुःखी हो गई तो उसके पिता उसका विवाह कहीं और करने की इच्छा से उसके लिए तैयारी करने लगे लेकिन वह वनमाला ने मन में विचार किया था कि मेरा विवाह केवल और केवल लक्ष्मण के साथ ही होगा। संयोग की बात कि वह राम, लक्ष्मण और सीता जब भ्रमण करते हुए वहाँ विजयनगर के पास पहुँच गए तो वहाँ पर राम और सीता रात्रि के समय शयन कर रहे हैं और लक्ष्मण जी पहरा दे रहे हैं। पहरा देते हुए उनके लिए दिखाई दिया कि कहीं से कोई पदचाप की आवाज आ रही है, कोई आ रहा है, जंगल की ओर, सुगन्धी आ रही है। इस तरह की वह कुछ आहट देख करके उनके मन के अन्दर एक कुतूहल उत्पन्न हुआ कि चलो चलें देखे तो क्या हो रहा है?

लक्ष्मण और वनमाला का वार्तालाप।

कौन आ रहा है? रात्रि के समय पर किसी का इस तरह से आना किसी विशेष घटना के साथ ही हो सकता है। उन्होंने देखा एक स्त्री उधर जंगल की ओर आ रही है और वह एक वृक्ष के पास में खड़ी होकर के कुछ वृक्ष से कह रही है और लक्ष्मण उसको दूर से सुन रहे हैं। पहरा दे रहे थे लेकिन लक्ष्मण के अन्दर कुतूहल उत्पन्न हुआ कि देखे तो यह कौन है? क्या है? कहाँ से आई है? क्या करने जा रही है? और उसका पीछा करते-करते

वह उसके पास तक दूर-दूर से उसको देख रहे हैं। उसके निकट पहुँच करके भी वह वृक्ष के पीछे छुपे-छुपे उसको देख रहे हैं कि यह क्या करना चाह रही है? और वह एक वृक्ष के पास खड़ी होकर के वहाँ बोलती है- हे वृक्ष! मेरा मन तो लक्ष्मण के साथ विवाह करने का था लेकिन मेरे पिता ने बहुत प्रयास करने के बाद भी लक्ष्मण को ढूँढ नहीं पाया। मेरे पिता मेरा विवाह कहीं और कराना चाहते हैं। मैं विवाह नहीं करना चाहती इसलिए मैं अपना जीवन समाप्त करना चाहती हूँ और ऐसा कहकर के वह वहाँ पर एक फाँसी का फन्दा लटका कर के उसके लिए उस फाँसी पर झूलने को तैयार हो गई। उसी समय पर लक्ष्मण ने उसको लपक कर पकड़ा और उसको बचाया और उससे पूछा कि तू यह क्या कर रही है? कहती है कि मैं लक्ष्मण को ढूँढ रही थी तो लक्ष्मण कहता है कि वह लक्ष्मण मैं ही हूँ। वह लक्ष्मण उस कन्या को लेकर के जब तक राम के पास आते हैं तब तक राम देखते हैं कि लक्ष्मण कहाँ गया? उसको ढूँढते हुए उसकी आवाज लगाते हैं तो आवाज लगाते हैं, वह लक्ष्मण उनके पास तक पहुँचते हैं और इतने में उस राजकुमारी के अनेक सखियाँ, अनेक सिपाही लोग में ढूँढते-ढूँढते तब तक उसके पास में आ गए और जब सबको पता पड़ा कि जिस लक्ष्मण के लिए राजा पृथ्वीधर ने सोच रखा था अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए, वह लक्ष्मण नगर के निकट ही विराजमान हैं और ऐसी खबर जब पृथ्वीधर राजा को मिली तो बड़े गाजे-बाजे के साथ में वह महोत्सव मनाते हुए उनके पास आया और उनको अच्छे रथ पर बैठा करके अपनी नगरी में ले गया। वहाँ पर जाकर के अपनी वनमाला का विवाह उन लक्ष्मण से रचाया।

सुख-दुःख सब स्वयं के कर्मों का फल है।

इस तरह के अनेक प्रसंग जो उस वनवास के दौरान हो रहे हैं, यह हमें यह बताते हैं कि जब व्यक्ति के खुद का पुण्य होता है तो उसे किसी भी जगह पर कोई भी तरह की आपदाएँ नहीं होती हैं। पुण्य आत्मा पुरुष को हर जगह पर सुख मिलता है, हर जगह पर लाभ मिलते हैं और इस तरह का लाभ अर्जित करने के लिए व्यक्ति को हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि हम पुण्य भावों को, शुभ भावों को, अपने अन्दर उत्पन्न करके उस पुण्य का

अर्जन करे जिसके माध्यम से सारे काम बनते हैं। वन भी व्यक्ति के लिए भवन की तरह बन सकते हैं और उन वनों में भी एक राजाओं के माध्यम से उनके सम्मान हो रहे हैं। कहीं बड़े-बड़े यक्ष नाग नागेन्द्र उनके लिए नगर बना करके, रचना करके उनके लिए रहने का स्थान दे रहे हैं तो कहीं राजा लोग उन्हें अपने राजमहल में ले जाते हैं और हर तरह से उनकी वही राजसी खातिरदारी हो रही है जैसे वह एक राजा के रूप में उनकी अयोध्या में हुआ करती थी। यह सब पुण्य के प्रताप से होता रहता है और यही बताने के लिए यह मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र आपके सामने है कि हम कभी भी अपने जीवन में अगर किसी भी कारण से दुःख पाते हैं तो यही सोचें कि यह हमारे अपने कर्मों का फल है और अगर हम सुख पाए तो भी यही सोचें कि यह हमारे अपने कर्मों के फल से हमको सुख मिल रहा है। अगर हमारे कर्म में और कर्म के फल में यह सामर्थ्य होगी तो हम किसी भी स्थान पर रहकर के सुखी रह सकेंगे और यही बात हमें उन रामचन्द्र जी के जीवन चरित्र से प्राप्त होती है। ऐसा वह जीवन चरित्र जिनका चल रहा है वह आगे बढ़ते चले जा रहे हैं और हम उसी कथानक को आगे बढ़ाते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम
आदर्श बने जग जन के, वसुधैव कुटुम्ब थे जिनके,
जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम,
श्री राम प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्रीराम
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम
दशरथ जिनके जनक कहाय, कौशल्या नन्दन जन गाए।
हैं इक्ष्वाकु वंश की शान, क्षत्रिय जग दया निधान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
जो स्वार्थ, मोह को तज के, उपकार लोक का करके
अपवाद का रखते ध्यान, पाते खुद में सम्मान,
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम

हर प्राणी जिनको गाता, न जातिभेद मन लाता।
सीता के स्वामी प्राण, हनुमान के जो अभिमान
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
पितु वचन निभाने खातिर, तज के राजा सुख आखिर।
वन वन करते विश्राम, अन्याय अनीति न काम
प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम,प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम
मर्यादा पुरुष श्रीराम है,है सिद्ध प्रभु बलराम।

कालकन्या- जितपद्मा से मिलन

दक्षिणा पथ की ओर जाते-जाते उन्हें रास्ते में एक **क्षेमान्जलि नगरी** मिलती है और उस क्षेमान्जलि नगरी के पास जब वे पहुँचते हैं तो वहाँ पहुँचने पर उन्हें कुछ लोगों से बात सुनाई पड़ती है। लोग पूछते हैं- आपस में यह कौन हैं? कहाँ से आए हैं? बड़ा इनका मनमोहन अतिशय रूप दिखाई दे रहा है। ऐसा लगता है कि कोई देवता ही नगर में आकर के प्रवेश कर रहे हो लेकिन उसी समय पर उनके लिए और भी बात सुनाई पड़ती है कि यहाँ पर रहने वाली राजा की जो कन्या है, वह कन्या न जाने कितने लोगों के प्राण लेगी? ऐसा वह काल कन्या की बात उन्हें वहाँ पर सुनाई पड़ती है। काल कन्या समझते हो? जिसने कुछ ऐसी प्रतिज्ञा कर रखी है जिसके कारण से कितने लोगों के प्राण चले जाएँगे तब जाकर के वह कन्या उसे प्राप्त होगी। वह राजा की जितपद्मा नाम की एक काल कन्या है। काल कन्या के नाम से उसकी चर्चा चल रही है। काल कन्या का मतलब न जाने कितने लोगों के लिए वह काल बनकर के आई है। वह कन्या ने एक प्रतिज्ञा ले रखी है कि वह तो किसी पुरुष की ओर नहीं देखेगी। देवों को भी वह देखना नहीं चाहती कोई देव पुरुष भी उसके सामने आ जाए तो वह उसको भी देखने की इच्छा नहीं करती। राजा ने मन बना रखा है कि मैं अपनी कन्या का विवाह उसी से करूँगा जो मेरी शक्ति के आघात को सहन कर पाएगा। राजा के पास कुछ शक्तियाँ हैं। शक्तियाँ

जानते हो? विद्या की कुछ शक्तियाँ होती हैं जो फेंकी जाती हैं तो आदमी मर जाता है, मूर्छित हो जाता है। जैसे एक बार स्वयं लक्ष्मण को भी शक्ति लगी थी, उसी तरह की कुछ शक्तियाँ वह राजा के पास में हैं। राजा इस तरह से जब विचार करते हैं कि जब भी कभी मैं इस तरह का कोई योद्धा अपने सामने देख लूँगा, कोई पुण्यवान पुरुष अपने सामने देख लूँगा, जो मेरी शक्ति को सहन कर ले उसी से ही मैं अपनी जितपद्मा कन्या का विवाह करूँगा। यह बात लक्ष्मण के कानों में पड़ती है और लक्ष्मण को इस सब बातें सुनकर के उनका जो बल है, वह अपने आप में उनके शरीर में एक अलग तरह की थिरहन होने लग जाती है। इस तरह की कौतुहलों से खेलने का उन्हें बहुत अच्छा अवसर वनवास मिल गया है। वैसे तो वह घर में रहते तो शान्त रहते लेकिन अब यहाँ पर उन्हें वन में हर तरह से जितने भी प्रकार के उनके सामने उपद्रव आते हैं, उन सब उपद्रवों से जीतने का, उन सब उपद्रवों से भिड़ने का उनके अन्दर एक अदम्य साहस होता है।

लक्ष्मण उन शक्तियों का पता लेने के लिए बेधड़क राजा के महल में प्रवेश कर जाते हैं

वह सोचते हैं, कौन सी कन्या? कौन सा राजा? किसकी बात कर रहे हो? कहाँ है वह राजा? कहाँ है वह कन्या? कहाँ रहता है? कहाँ उसका महल है? ऐसा कहते-कहते वह उस राजा के महल में प्रवेश कर जाते हैं बेधड़क, कोई रास्ते में रोके तो एक हाथ इधर मारा, एक हाथ उधर मारा। वह बेधड़क राजा के महल में प्रवेश कर गए और सीधे राजा से जाकर टकरा गए। कहने लगे क्या यह नगर के अन्दर उधम मचा रखा है, तू कितना दुष्ट है? तेरे पास कितनी शक्तियाँ हैं मेरे ऊपर फेंक, सीधा जाकर के उससे बोलने लग गए और वह राजा के समक्ष जाकर के जब उन्होंने इस तरीके का एक तरह से मतलब कहना चाहिए, अनादर का भाव राजा के समक्ष किया तो राजा को गुस्सा आ गया। गुस्सा आया तो उसने अपनी शक्ति उनके ऊपर फेंकने से पहले बोला तू क्यों यहाँ मरने आया है? कहाँ से आया? कुछ अपना नाम पता तो बता। वह लक्ष्मण कहते हैं- तुझे नाम-पता लेने से क्या जरूरत है? तेरे पास कौन सी शक्तियाँ हैं? वह शक्तियाँ

मेरे पास फेंक। वह राजा एक शक्ति को फेकता है तो वह एक शक्ति को अपने एक हाथ से पकड़ लेते हैं, फिर दूसरी शक्ति फेकता है उसे दूसरे हाथ से पकड़ लेते हैं। तीसरी शक्ति फेंकता है उसे अपनी बगल की काँख से दबा लेते हैं। चौथी शक्ति को अपने दूसरी काँख से दबा लेते हैं और उस राजा के पास मात्र 5 शक्तियाँ थी। वह राजा अन्तिम अपनी पाँचवी शक्ति फेंकता है तो उसे अपने मुँह में दबा लेते हैं और यह पाँचों शक्तियों से जब वह राजा खाली हो जाता है तो वह कन्या दूर से खड़ी-खड़ी देख रही होती है उसी समय पर वह कन्या का मन उस लक्ष्मण पर आ जाता है। उसी समय पर उन शक्तियों के ग्रहण करने के कारण से अनेक गन्धर्व देवता, नाग देवता, किन्नर देवता वहाँ पर आकर के उनकी प्रशंसा करने लग जाते हैं। वहाँ पर मधुर गायन होने लग जाते हैं, पुष्पों की वर्षा होने लग जाती है और उस जितपद्मा से लक्ष्मण के विवाह की तैयारियाँ होने लग जाती हैं। यह महापुरुषों की बातें हैं। जिनके पास में कई-कई रानियाँ हुआ करती थी और बड़े-बड़े राजा जिन्हें अपनी बेटियाँ देने के लिए तत्पर हुआ करते थे वह राजा जिनके लिए सोचा करते थे, वह राजा सोचते हैं कि इनका वनवास हमारे पुण्य से इसलिए हुआ कि ये खुद हमारे पास चल कर के आ रहे हैं और इस तरह का वह जितपद्मा के साथ में जब विवाह हुआ तो उस समय पर वहाँ पर उन्होंने कुछ दिन वहाँ पर रुके और उसके बाद में वे वहाँ से आगे बढ़े।

राम, लक्ष्मण द्वारा भरत-शत्रुघ्न की रक्षा

अनेक तरह के इस तरह के प्रसंग विवाह के उनके समक्ष आए और लक्ष्मण ने जब भी विवाह किया, अपने भाई राम को आगे रखकर के सीता से अनुमति लेकर के उन्होंने विवाह किया। राम ने किसी विवाह में मना नहीं किया। उनके विवाह कराते गए, वह आगे बढ़ते गए उसी बीच में जब वह वनमाला का प्रसंग आया था तो वहाँ पर एक और बड़ा अच्छा प्रसंग आता है। भरत, शत्रुघ्न यह दोनों राजा अयोध्या में राज्य कर रहे हैं और अभी यह लोग उनकी सीमा से बाहर नहीं निकले हैं। चल रहे हैं, आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। जो विजय नगरी का नाम आपको बताया था, जहाँ

के राजा का नाम वह पृथ्वीधर राजा था, उसी समय पर उन पृथ्वीधर राजा ने जब अपनी वनमाला का विवाह इन लक्ष्मण जी से किया यह वार्ता चल रही थी, उसी समय पर एक दूत आता है। वह दूत एक समाचार ले करके आता है। समाचार में लिखा था राजा अतिवीर ने आपको बुलाया है और अगर आप नहीं आ सकते हैं तो आप अपने पुत्रों को और कुछ सेनाओं को हमारे लिए भेजें हम भरत पर चढ़ाई करने जा रहे हैं। यह समाचार जो दूत ने उन्हें ला करके दिया था, उसी समय पर उन राम लक्ष्मण ने भी यह समाचार सुन लिया। दूत को बुला करके पूछा कि ऐसा क्यों? पता पड़ा शत्रुघ्न ने अतिवीर एक जो राजा था, उसकी सेना पर चढ़ाई की और अन्धेरे में बिना बताए हुए उसकी सेना को बहुत सारे सिपाहियों को मारा। यह लड़कपन में शत्रुघ्न ने काम किया और उसके कारण से वह अतिवीर राजा क्रोधित हो गया और वह भरत पर अपना साम्राज्य जमाने के लिए या भरत पर अपनी चढ़ाई करने के लिए वह अयोध्या में जाने की तैयारी कर रहा है। यह बात जब रामचन्द्र जी को ढंग से पता पड़ी, उन्होंने दूत के माध्यम से पूरा समाचार सुना-समझा तो उन्हें लगा कि वास्तव में यह अतिवीर राजा बहुत प्रचण्ड राजा है और जो शत्रुघ्न ने गलती की है, भरत अगर उससे लड़ना भी चाहेगा तो इसको जीत नहीं पाएगा! अब वे मन में विचार करते हैं, क्या किया जाए? यह बात लक्ष्मण को भी मालूम है और सीता को भी मालूम हो गई। सीता ने भी सुन लिया कि यह अतिवीर राजा उनके ऊपर आक्रमण करने जा रहा है। वह विचार करते हैं कि भरत स्वयं भी सेना लेकर के लड़ने के लिए आ रहा है। यह भी सेना लेकर के लड़ने के लिए जा रहा है। अब इन दोनों के बीच में भरत इनसे जीत नहीं पाएगा, वह समझ रहे हैं लेकिन इस अतिवीर राजा को नियन्त्रित करना है। कैसे करें? उन्होंने वही पृथ्वीधर राजा के साथ में एक योजना बनाई और वह अतिवीर राजा के नगर की ओर चले।

भरत की रक्षा के लिए नर्तकी का वेश बनाया राम और लक्ष्मण ने

कुछ उस राजा के अपने बन्धुओं को साथ में लेकर के, पुत्रों को साथ में लेकर के कुछ सेना के साथ में वह आगे चले और वहाँ पर जाकर के

जिस नगर में वह अतिवीर राजा रहता था। वहाँ पर उस नगर के बाहर एक मन्दिर में रुक कर के, सीता को तो एक गणिनी आर्यिका माँ के पास में छोड़ दिया और लक्ष्मण को साथ लेकर के और कुछ जो उस राजा के अपने आदमी लेकर के आए थे, वहाँ से लेकर के वह एक नर्तकी का भेष बनाकर के उस राजा के पास पहुँचते हैं। नर्तकी समझते हो? नृत्य करने वाली नृत्यांगना। राम जी, लक्ष्मण जी सब इस तरह का एक नृत्यांगना का भेष बनाते हैं कि कोई उन्हें देखकर के समझ भी नहीं पा रहा है कि यह पुरुष हैं। उन्होंने नर्तकी का भेष बनाकर के उस राजा के महल के अन्दर तक जाने की उन्होंने पूरी जुगत लगा ली और वह राजा के महल के अन्दर तक पहुँच गए। राजा भी उस नर्तकी के नृत्य को देखने में आकर्षित हो गया और जब वह आकर्षित हो गया तो उसी समय पर नर्तकी ने उस राजा के गिरेबान को पकड़ कर के उसको उसी समय पर कहा कि तू जिस भरत के ऊपर आक्रमण करने जा रहा है, तू अपने काल को बुलाने जा रहा है। भूलकर भी उसके ऊपर आक्रमण करने मत जाना। उसका सम्मान करना अगर तूने ऐसा कुछ कृत्य किया तो तेरी मृत्यु निश्चित है। यह धमकी जब एक नर्तकी ने दी तो वहाँ पर बड़े-बड़े जो योद्धा बैठे थे, सब वहाँ पर लड़ने लग गए और लड़ते हुए उन नर्तकियों ने ही उन सब योद्धाओं को हरा दिया। राजा को जब अपने बस में कर लिया तो उस समय पर वहाँ के मन्त्रियों ने कहा, राजन! जब भरत की भेजी हुई नर्तकियाँ इतनी शक्तिमान हैं तो राजा कितना शक्तिमान होगा? इसलिए अपने को ही स्वीकार कर लेना चाहिए कि वहाँ पर अपने को नहीं जाना। इस तरह से किसी को पता नहीं पड़ा। उन्होंने नर्तकियों का भेष बना करके उस राजा को अपने लिए समर्पित करवा लिया। इधर भरत के साथ उनका युद्ध होना था। भरत भी उधर से चढ़ाई करने के लिए अपनी सेना के साथ आ चुका था, बहुत दूर तक किसी को पता नहीं था कि यह कौन है? इस तरह से वह नर्तकी का भेष बनाकर के वे वहाँ से हट गए और राजा भरत को जब पता पड़ा कि अब वह अतिवीर इधर नहीं आ रहा है तो उसी समय पर उस अतिवीर ने अपने अपमान को समझ कर कि ऐसे राज्य से मुझे क्या मतलब जिसके

कारण से मुझे अपमान भोगना पड़ता है।

राजा अतिवीर को वैराग्य और मुनि दीक्षा

पहले के राजा तुरन्त संसार से विरक्त हो जाया करते थे और वह संसार से विरक्त हो गया। उसने अपने मन में विचार किया मुझे ऐसा राज नहीं करना। मुझे इस तरह के अस्थिर संसार में किसी भी तरह का मोह करके अपमानित नहीं होना। इस तरह का विचार करके उसने मन में विचार किया अब मैं अपने कर्म कलंक को धोने के लिए, अपनी आत्मा को पवित्र बनाने के लिए, मैं वन में जाकर के दीक्षा ग्रहण करता हूँ। वह अतिवीर राजा भी वन में जाकर के मुनि महाराज बन करके दिगम्बर रूप को धारण करके वह मुनि महाराज बन गया। भरत आ रहे थे, देखो! कितनी अच्छी घटना है, आपको बता रहा हूँ। भरत को पता नहीं कि यह क्या हो गया और नर्तकीयों ने सब काम कर दिया। अब यह समाचार भरत के पास पहुँचा कि कोई नर्तकियाँ उस राजा को इतना धमका गई कि इसके कारण से वह राजा आक्रमण करने नहीं आया और वह उल्टा मुनि दीक्षा ले लिया। शत्रुघ्न तो अपने बाल स्वभाव के कारण से हँसने लगा। देखा! वह मुझ से जीत नहीं सकता था, इसलिए पहले से ही उसने अपना रास्ता बदल लिया। लेकिन भरत जी समझदार थे उन्होंने कहा भाई! हँसने की जरूरत नहीं है। अपने को थोड़ा समझने की जरूरत है और यह भी समझने की जरूरत है कि अगर कोई नृत्यकियाँ, स्त्रियाँ आ करके उसे किसी शक्ति का परिचय करा करके गई हैं तो हो सकता है वे कोई देवियाँ हो, जिन्होंने अपनी रक्षा की हो। लेकिन सबसे बड़ी बात वह अब मुनि महाराज बन गए हैं तो हमें उन्हें देखने के लिए जाना चाहिए। भरत अपनी सेना के साथ में उन अतिवीर मुनि महाराज को ढूँढ कर के देखते हुए उनके पास पहुँचे और उनको जाकर के वहाँ प्रणाम किया। उनकी पूजा की और मुनि महाराज की पूजा करने के बाद में वापस अपने नगर लौट आए। इधर वे नर्तकियों का भी उसी नगर में वास था लेकिन किसी को पता नहीं है, ये कौन हैं? वे अपने फिर उस नगर के बाहर मन्दिर में जाकर के छुप करके बैठ गए इधर भरत आए उन अतिवीर को नमस्कार कर के चले गए उन्हें पता नहीं और

इसके बाद में वह जब अतिवीर का जो पुत्र था उनके लिए राजभार दिया गया और उनकी जो पुत्रियाँ थी उनका विवाह लक्ष्मण के साथ हुआ। इस तरह से यह अनेक प्रकार के विवाह लक्ष्मण के पूरे वनवास के दौरान होते रहे और यह हर विवाह करने के बाद में अपने साथ किसी को ले करके नहीं चले। विवाह किया, कुछ दिन रूके, वहीं पर अपनी राजसी ठाठ बाट के साथ में जमाई बन जाते हैं तो जमाई बनकर के वहीं पर अपनी खातिरदारी स्वीकार की। फिर वही उसको समझाया, चाहे वह वनमाला हो, चाहे जितपद्मा सबको समझाया। अभी मेरा वनवास का समय चल रहा है। जब मैं कहीं आगे चल कर के अपना उचित स्थान बना लूँगा या वापस लौट कर के अयोध्या जाऊँगा तब मैं सबको लेते हुए जाऊँगा। आप बिल्कुल चिन्ता मत करो और उनको वहीं पर रोक करके वह आगे बढ़ जाते हैं।

मुनिराज देशभूषण, कुलभूषण का उपसर्ग दूर हुआ

इस तरह से वनवास में भी उनका पूरा का पूरा समय अच्छी बहादुरी के साथ, उनके वीरता के कार्यों के साथ चल रहा है और इस तरह से वह चलते, चलते, चलते, चलते एक दण्डक वन की सीमा के पास में पहुँच जाते हैं। कहाँ पहुँचते हैं? जहाँ पर एक वंशस्थल नाम की उन्हें एक पहले नगरी मिलती है। वहाँ पहुँचने से पहले भी एक उन्हें वंशस्थल नाम की नगरी मिलती है और यह नगरी बड़ी ऐतिहासिक नगरी है। आगे जो यह चित्रण आ रहा है। यह बड़ा ऐतिहासिक चित्रण आ रहा है। जो आपके लिए यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है। पेज नम्बर 49 पर यह वंशस्थल नगरी का चित्रण पढ़ते हैं।

मर्यादा पुरुष श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम
कुछ दिन बीते, चलते-चलते वंशस्थल नगरी आते है।
वहाँ देखा नगर छोड़ करके, सब नागर भागे जाते हैं।
राम कहे कहाँ जा रहे नगरी से सब वीर,
क्या भय यहाँ बना रहा कहो जरा धर-धीर।

उस वंशस्थल नगरी के जितने भी नागरिक जन हैं, वे सब शाम के समय पर भाग जाते हैं। इधर-उधर दूसरे गाँव में चले जाते हैं और यह दृश्य देखने को

मिला तो उन्होंने पूछा कि यहाँ के लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं?

क्या पूछे महाराज तीन दिन हो गए बहुत सताए हैं।
वंश गिरी पर न जाने, क्या दुख के बादल छाए हैं।
होती हैं आवाज भयंकर, धरा काँप रह जाती है।
बाल वृद्ध सारी जनता, वैसे कोई सो नहीं पाती है।
इसलिए साँझ को नगरी से, सब पांच कोस ऊपर जाते हैं।
होते प्रभात भय मिट जाए, सब मिल वापस आ जाते हैं।
सीता बोली चलिए स्वामी, हम सब भी इनके साथ चले।
समय अनुकूल करने से काम, सब दुख के बादल जाए टले।
तब हँस बोले दोनों भाई, हमको तो नहीं आना-जाना।
तुम जाओ इनके साथ, सुबह जब यह आवे तब आ जाना।
है हमें मिटाना वह खटका, जो त्रास नगर को देता है।
है कौन शत्रु इस नगरी का, जो प्राण सभी के लेता है।
यह कह करके चल दिए दोनों गिरि की ओर।
सिया भी चली साथ में, लिए पति कर का जोर।
चढ़ गए शिखर पर क्या देखें, मुनिराज तपस्या करते हैं।
कुलभूषण देशभूषण नामक, जा नमस्कार यह करते हैं।
इतने में मुनियों के पहले, भव का वह शत्रु आता है।
इस भव में जो था हुआ देव, आकर उपसर्ग रचाता है।
कुछ कुटिल भयंकर सर्प आन, मुनियों के तन से लिपट रहे।
श्री राम और लखन परिश्रम से, उन्हें तन से करे दूर कर रहे।
फिर राम लखन दोनों ने मिल, वीणा पर मृदु संगीत रचा।
गुणगान करा चौबीसी का सीता ने नृत्य में भाव रचा।

पूर्व भव का शत्रु आकर उपसर्ग करता है

उस **वंशस्थल पर्वत** पर दो मुनि महाराज तपस्या कर रहे हैं। जिनके नाम हैं- **कुलभूषण** और **देशभूषण।** यह इतिहास प्रसिद्ध घटना है और यह वंशस्थल गिरि आज भी प्रसिद्ध है, महाराष्ट्र के अन्दर है। यह स्थान जहाँ पर

यह मुनि महाराज के लिए उपसर्ग हो रहा है यह उनके पूर्व भव का कोई बैरी है, जो देव बन गया और शाम होते ही वह देव उपसर्ग करना प्रारम्भ करता है। रात भर उनके ऊपर उपसर्ग करता है और वह मुनि महाराज ज्यों के त्यों अडिग अपनी तपस्या में, अपने ध्यान में लीन बने रहते हैं, उन्हें विचलित नहीं कर पा रहा है, 3 दिन हो गए। 3 दिन से जनता सारी की सारी रात में सो नहीं पाती। इतना उपद्रव, इतनी डरावनी आवाजें आती हैं, इसके कारण से पूरा गाँव, वहाँ के आसपास की जितनी भी बस्तियाँ हैं, सब 5 कोस, 4 कोस दूर जाकर के बस जाते हैं और सुबह हो करके सब वापस आते हैं। इस तरह का वृतान्त जब राम और लक्ष्मण को ज्ञात हुआ तो सीता तो कहने लगी आप भी यहाँ से चलो उसी गाँव की ओर जहाँ पर यह लोग चल रहे हैं। लेकिन ये राम और लक्ष्मण कहाँ मानने वाले? इन्होंने मन में विचार किया कि अगर किसी भी गाँव के अन्दर कोई उपद्रव हो रहा है, कोई आतातायी उन्हें सता रहा है तो हम देखें तो यह क्यों कर रहा है? क्योंकि यह वीर बहादुर लोग थे, क्षत्रिय पुरुष थे। इन्हें किसी प्रकार के बल की इनके पास में कमी नहीं थी और यह मानो कि दुनिया की रक्षा करने के लिए पूरे संसार को त्राण देने के लिए उनका रक्षक बनकर ही मानो यह संसार में आए हो इसलिए जहाँ कहीं पर भी कोई उपद्रव होता था यह स्वयं उपद्रव में जाकर के देखने की कोशिश करते थे और उपद्रव को मिटाते थे। उन्होंने देखा गाँव के सारे लोग इधर-उधर भाग गए, सीता भी डर रही थी। राम सीता को बीच में रखकर के लक्ष्मण पीछे चल रहे हैं और तीनों लोग उस पर्वत पर आगे बढ़े। ऊपर जा करके देखा मुनि महाराज तपस्या कर रहे हैं, ध्यान मग्न हैं। शाम का समय जैसे-जैसे हो रहा है उनके पास में बड़े-बड़े भयंकर सर्प उनके पैरों में आकर के लिपट रहे हैं। ऐसी बिच्छू जिन्हें कभी देखा नहीं गया, इतने बड़े-बड़े जिनकी पूँछें, ऐसे बड़े-बड़े बिच्छू देखकर के सीता एकदम से चिल्लाई, डर गई तो राम ने उससे कहा डरो मत! वह अपने धनुष बाण से उन सर्प, बिच्छुओं को अलग कर देते हैं और अलग करने के बाद में उन मुनि महाराज के चरणों का गंधोदक लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं और वहाँ पर नृत्य और संगीत के माध्यम से 24 तीर्थंकरों की

स्तुति करते हैं। इसके बाद में जैसे-जैसे रात होती चली जाती है वैसे वैसे वह उपद्रव बढ़ता चला जाता है। भयंकर आवाजें आने लग जाती हैं।

दोनों मुनिराजों पर भयंकर उपद्रव

रात्रि के समय पर घोर वहाँ पर राक्षसों के, पिशाचियों के दृश्य से देखने को मिलने लग जाते हैं। नरमुण्ड की आकृतियाँ मुँह से आग निकाली हुई ज्वालाएँ निकल रही हैं। ऐसी भयंकर आकृतियों को बनाए हुए अनेक वहाँ पर स्त्रियाँ आ कर के वहाँ पर नाचने लग जाती हैं और पूरे अन्धकार के वातावरण में तरह-तरह के पत्थर गिर रहे हैं। तरह-तरह से वहाँ पर मेघों की गर्जना हो रही है। जितने भी तरह से वहाँ पर उन्हें परेशान किया जा सकता था, ज्योतिषी देव वह उन दोनों मुनि महाराजाओं को वहाँ पर परेशान कर रहा है। उनके ऊपर उपद्रव कर रहा है लेकिन मुनि महाराज कभी किसी उपद्रव का प्रतिकार नहीं करते। वह 3 दिन से वह लगातार कर रहा था। आज चौथे दिन इस उपद्रव को वह राम लक्ष्मण भी देख रहे हैं। जिस स्थिति में वे खड़े हैं, उस स्थिति में सहसा राम भी उस समय पर डर गए और उन्होंने सीता को उन मुनि महाराज के चरणों में बैठा दिया और स्वयं राम और लक्ष्मण दोनों युद्ध करने के लिए पूरे उस अंधकार में उन देवों से युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वह वृतान्त आपके सामने आगे आता है।

इतने में एक आवाज भयंकर, भेद पहाड़ को निकली है।
भूकम्प हुआ, पृथ्वी डोली, व्यन्तरों की हा हा सुन ली है॥
आकाश से खून की बूंद पडें, कभी हाथ कटे आ जाते हैं।
सिर पैर अलग गिरते देखे, सीता को चक्कर आते हैं।
भय मान राम से लिपट गई, वो मीठे शब्द सुनाते हैं।
हे प्रिय! मुनि चरणों में रहो, हम उसको मार भगाते हैं।
राम लक्ष्मण ने उस समय ली ने धनुष चढ़ाए,
माया नाशक बाण कुछ, चहुँ दिश दिए चलाए॥
बाणों की शक्ति के आगे, मिट गई असुर की सब माया।
हो शक्तिहीन, निज खैर मना, उनके सम्मुख से भाग गया।

उपसर्ग मिटा, लग शुक्ल ध्यान, मुनियों को केवल ज्ञान हुआ।
आ स्वर्ग लोक से देवो ने, तब गंध कुटी निर्माण किया॥
मिलकर के नरेशयुत सभी प्रजा, श्रीराम के यश गुण गाते है।
वन में ही मण्डप छा उनको, सिंहासन पर पधराते हैं।
पहले भव के मुनियों के पिता, इस भव गरुड़ेन्द्र कहाते थे।
यह कृत्य देख राम का देख, मगन हो उन्हे वचन दे जाते थे।
जो इच्छा हो वह अब मांगे, या पड़े भीड़ तब स्मरण करें।
निजलोक से आकर के रघुपति, उस समय तुम्हारी मदद करें॥
उधर गये गरुड़ेन्द्र, और इधर इन्हें तैयार।
गमन हेतु लख कर सभी, कहन लगे नर-नारि॥

कुलभूषण देशभूषण मुनिराज को केवलज्ञान की प्राप्ति

जब वह उपद्रव रात्रि में हो रहा था और राम-लक्ष्मण ने उस उपद्रव को दूर करने के लिए बाणों से, धनुष से युद्ध किया और देवों के माध्यम से उधर से भी वह युद्ध हुआ। और राम-लक्ष्मण की शक्ति को देखकर के वे देव लोग भी कमजोर पड़ गए और वे उपद्रव जब उन्होंने रोक दिया तो उसी समय पर उन दोनों मुनि महाराज के आत्मध्यान के बल से उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई और वह सर्वज्ञ भगवान के रूप में केवलज्ञानी के रूप में अपनी आत्मा को परिपूर्ण कर लिए। हर आत्मा के अन्दर ज्ञान है और उस ज्ञान की परिपूर्णता का नाम केवलज्ञान कहलाता है। केवलज्ञान होने का नाम ही है कि वह आत्मा अब शरीर से मुक्त हो गया, परमात्मा बन गया। यह परमात्मा बनने का मार्ग अनादि काल से चला आ रहा है। हम हमेशा परमात्मा का ध्यान उसको दूसरा आत्मा मान करके करते हैं। लेकिन जब कोई भी साधु कोई भी मुनि महाराज कोई भी जीवात्मा जब उस परमात्मा का ध्यान स्वयं अपनी आत्मा में करता है और अपनी आत्मा को परमात्मा की भावना से भाषित करके अपनी आत्मा में परमात्मा के प्रति अद्वैत भाव स्थापित कर लेता है तो उसकी आत्मा में वह केवलज्ञान उत्पन्न हो जाता है। वह आत्मा खुद भी परमात्मा बन जाता है। इसलिए हर

आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। हर आत्मा परमात्मा बनता है। हर आत्मा तपस्या करने के माध्यम से परमात्मा तत्त्व को अपने अन्दर से उद्घाटित कर लेता है। यह सिद्धान्त अगर हम ध्यान में रखेंगे तो ही हम अपनी आत्मा का ध्यान करने का भाव कर पाएँगे। लोग अपने अन्दर कभी भी परमात्मा का ध्यान करते हैं तो दूसरे ही परमात्मा का ध्यान करते हैं। अपनी आत्मा का ध्यान परमात्मा के साथ जोड़ करके नहीं करते क्योंकि उन्हें पता होता है, हम परमात्मा कभी बन नहीं सकते परमात्मा तो एक ही है। कोई भी आत्मा यहाँ पर अधूरा नही है।

हम ईश्वर के अंश है या वंश है !

लोग समझते हैं कि हम किसी ईश्वर के अंश हैं लेकिन अगर आप यह रामचरित्र सुन रहे हैं, आज आपने देशभूषण-कुलभूषण मुनि महाराज का केवलज्ञान देखा, उन्हें परमात्मा बनने बनते देखा तो आपके मन में यह विचार आ जाना चाहिए कि हम कोई ईश्वर के अंश रहकर के अधूरे नही है। हम ईश्वर के अंश होंगे तो अधूरे रहेंगे। हमें यह मानना चाहिए कि हम ईश्वर के वंश हैं और जब हम यह मानेंगे कि हम ईश्वर के वंश हैं तो हम ईश्वर जैसा ही काम करेंगे जो काम ईश्वर ने किया है। इतना सा अन्तर है। समझने की कोशिश करें। हम ईश्वर के अंश हैं कि हम ईश्वर के वंश हैं। हम परमात्मा के अंश हैं कि हम परमात्मा के वंश हैं। बोलो! अगर हम परमात्मा के अंश मानते रहेंगे अपने आप को तो हम कभी पूर्ण नहीं बन पाएँगे। अंश कभी पूर्ण नहीं होता और अंश दुनिया में कभी भी अगर अंश, अंश, अंश, अंश हर कोई रहेगा तो वह अंश कभी अपने अस्तित्व को दूसरों से पृथक कभी महसूस नहीं कर सकेगा। लेकिन हर अंश यहाँ पर अपने आपको अपनी entity को अपनी identity को अपने से पृथक महसूस करता है। दूसरे से पृथक महसूस करता है। हर व्यक्ति को खुद अपनी आत्मा का पूरा अनुभव होता है, आभास होता है, मैं हूँ! अगर हम किसी का अंश होते हैं तो हमारी डोर किसी से जुड़ी होती है तो किसी दूसरे के लिए भी जब वह अंश है, हम भी अंश हैं तो एक को दुःख होगा तो हमारे लिए भी दुःख होगा लेकिन ऐसा होता नहीं है। अपने सुख-दुःख का मैं

भोक्ता हूँ। अपने सुख-दुःख का आप भोक्ता हो, दुनिया का हर जीव अपने सुख-दुःख का भोक्ता है। हर आत्मा अपने आप में परिपूर्ण है। हर आत्मा अपना स्वतन्त्र है और हर आत्मा के अन्दर वही परमात्म तत्त्व छिपा हुआ है जो परमात्मा के अन्दर होता है। उनके अन्दर जिस तरह से वह प्रकट हो जाता है ऐसे ही हर आत्मा को अपने परमात्म तत्त्व को प्रकट करने की कोशिश करनी चाहिए, तपस्या का मतलब यही होता है। अंश मान करके जब तक हम चलेंगे तब तक हम कभी भी अपने आप को परिपूर्ण महसूस नहीं कर पाएँगे। हम परिपूर्ण हैं कि अधूरे हैं। आत्मा कभी भी कटती नहीं,

आत्मा के कभी भी भेद नहीं होते, यह गीता में भी लिखा हुआ है, भगवत गीता में **'नैनं छिंदंति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः'।** आत्मा कटती नहीं, आत्मा आग से जलती नहीं, आत्मा कभी पानी में गलती नहीं। हर आत्मा अपने आप में स्वतन्त्र होती है। फिर आत्मा अंश रूप में कैसे हो सकती है? परमात्मा की एक आत्मा के अगर सब अंश होंगे तो एक जाल सा बिछ गया और उस जाल का अगर connection सबके साथ मिला हुआ है, तो एक अगर मरता है तो दूसरा भी मरना चाहिए। एक को दुःख होता है तो दूसरे को भी होना चाहिए लेकिन अब महसूस करते हैं सब के सुख-दुःख अपने-अपने अलग-अलग हैं।

आत्मा भगवान बनने के लिए स्वतन्त्र है

हम अपने अन्दर की आत्मा को उस परमात्मा का वंश महसूस करेंगे, उसका वंशज महसूस करेंगे तो हमारे अन्दर यही शक्ति प्रकट होगी। इसी शक्ति को प्रकट करने के लिए श्रमण बना जाता है, दिगम्बर मुनि बना जाता है। और इस तरह की तपस्या करने के बाद ही अपनी आत्मशक्ति को जब परिपूर्ण प्रकट कर लिया जाता है, तो उसी को कहते हैं- भगवत सत्ता की प्राप्ति हो जाना, भगवान बन जाना और हर आत्मा भगवान बनने के लिए यहाँ स्वतन्त्र है। किसी भी जाति का इसमें कोई बन्दिश नहीं है। किसी भी सम्प्रदाय का इसमें कोई बन्दिश नहीं। बस! आप अहिंसक होकर के आत्म ध्यान करो। दूसरे जीवों की रक्षा करते हुए अपनी आत्मा

का ध्यान करो और अपने परमात्मा का अपनी आत्मा में इस तरह से ध्यान करो कि आपकी आत्मा भी परमात्मा बन जाए। कोई परमात्मा आपकी आत्मा को परमात्मा बनने से रोकता नहीं है। लेकिन अगर आप अपने आप को परमात्मा का अंश मानेंगे तो आप कभी परमात्मा नहीं बन पाएँगे क्योंकि आपके सामने परमात्मा एक है अन्य कोई परमात्मा नहीं बन सकता। जब एक परमात्मा होगा अन्य कोई परमात्मा नहीं बन सकता तो फिर किसी भी आत्मा की संसार से मुक्ति नहीं हो सकती। आप अपने अस्तित्व को कभी महसूस नहीं कर सकते क्योंकि आप का अस्तित्व पूरा नहीं है, यह आपके दिमाग में यह आपकी धारणा में बैठा हुआ है। इसलिए हर व्यक्ति को अपने स्व अनुभव से विचार करना है, मैं जितना शरीर के अन्दर समाया हुआ हूँ, वही मैं हूँ और मेरा यह अस्तित्व कहीं से कहीं तक अधूरा नहीं है। मैं पूर्ण हूँ और अपनी उस पूर्णता को प्राप्त करने के लिए अगर मैं संकल्पित होता हूँ तो एक न एक दिन मैं जरूर पूर्ण ज्ञानी बन सकता हूँ। एक न एक दिन में जरूर भगवत सत्ता को प्राप्त कर सकता हूँ। ये आदमी के अन्दर अगर संकल्प आए तो यही इंसान देवता नहीं भगवान बन जाए।

इंसान से भगवान बनने की कला जैन रामायण के माध्यम से आपको बताई जा रही है।

इंसान को भगवान बनने की जो कला सिखाई जाती है वही कला यह जैन रामायण के माध्यम से आपको बताई जा रही है। स्वयं हम देख रहे हैं, अनेक-अनेक जीव बीच में मुनि दीक्षा लेते हैं। यह श्रीराम ने जहाँ पर इस उपसर्ग को दूर किया। उस उपसर्ग को दूर करने के बाद में जब केवल ज्ञान की पूजा करने के लिए अनेक देव लोग आते हैं। श्रीराम के उपकार को गाते हैं और वह गरुणेन्द्र प्रसन्न हो करके उनसे कहता है- आपने यह बहुत बड़ा उपकार किया जो आपने इस उपसर्ग को दूर किया। इन मुनि महाराजो की रक्षा करके आप ने इनके शुक्लध्यान में सहयोगी बने और आप के कारण से इन को केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई। इस तरह का जब उनका गुणगान करते हैं तो वह गरुणेन्द्र प्रसन्न होकर के कहते हैं- आप कोई भी

वरदान माँग लो। आपको इस वन में कहीं पर किसी भी चीज की कोई आवश्यकता हो, कोई विद्या, कोई शक्तियाँ तो वह कहते हैं, मुझे अभी किसी चीज की कोई जरूरत नहीं है। जब जरूरत होगी तब तुम्हें याद कर लेंगे उस समय पर मदद कर देना।और ऐसा कह कर के वह उस गरुणेन्द्र की भी उस विद्या का किसी भी तरह से स्वीकार नहीं करते क्योंकि वह स्वयं में परिपूर्ण हैं। वह इसी तरह से अपनी यात्रा को आगे बढ़ाते चले जाते हैं, उनको देख कर के वहाँ के जो गाँव के लोग थे, तलहटी पर रहने वाले लोग थे, नगरवासी थे सब कहते हैं ये कुछ दिन और यहाँ रुक जाएँ, ये कुछ दिन और यहाँ रुक जाएँ लेकिन वह ऐसे गमन कर रहे हैं जैसे मुनि महाराज गमन करते चले जाते हैं। वह राम की चर्या एक दिगम्बर मुनि की चर्या की तरह चल रही है। कहीं पर कुछ दिन रुकते हैं, कहीं रुक जाते हैं, कहीं से चले जाते हैं। विहार उनका चलता रहता है और उनका वह पूरा का पूरा आचरण एक मुनि धर्म का आचरण चलता है। ऐसे वे राम भगवान व वे मुनि महाराज की रक्षा करते हुए, उनका दर्शन करते हुए ,उनकी पूजन करते हुए आगे बढ़ते हैं और देखिए आगे एक और अच्छा प्रसंग आता है।

हे राम यहाँ कुछ दिन रहिए, सहवास आपका सुखकर हो।
तब राम कहे दण्डक वन में, जाना हम को निश्चय कर हो।
कर पिता वचन परमाण, आज हम भरत राज्य से दूर चले।
दडंक वन सीमा से बाहर, इसलिए उधर की ओर चले।
उस अटवी में स्थान देख, निज-वास स्थान बनावेगें।
हम सिया सहित वहाँ टिककर के, माता को वही बुलावेगें।

श्री राम, सीता, लक्ष्मण का दण्डक वन की ओर गमन।

उन्होंने मन में विचार कर रखा है कि मैं दण्डक वन में पहुँचूँगा। यह दण्डक वन इतिहास प्रसिद्ध वन है। दक्षिण भारत के अन्दर आज भी इनके उल्लेख मिलते हैं। वंशस्थल नगरी यह महाराष्ट्र में कुंथलगिरी के रूप में आज भी प्रसिद्ध है। वहाँ जा कर के आप देखना देशभूषण और कुलभूषण मुनि महाराज का जहाँ से यह उपसर्ग हुआ, उनका मोक्ष भी वहीं

से हुआ है। जहाँ से उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हुआ और उनकी वह मोक्ष स्थली वहाँ मानी जाती है। यह इतिहास प्रसिद्ध चीजें हैं और इसी ओर वह बढ़ते चले जा रहे हैं। दण्डक वन की ओर जा करके उनके मन में आता है कि जब हम दण्डक वन में पहुँच जाएँगे मतलब महाराष्ट्र की भी सीमा से आगे निकल जाएँगे तब जाकर के हम भरत की सीमा से बाहर निकलेंगे। और वह वहाँ जा कर के हम एक बढ़िया महल बनाएँगे, कुटी बनाएँगे, वहाँ रुकेंगे। और वहाँ रुक कर के तब हम अपनी माँ कौशल्या से हम कह कर के आए हैं जब हम अच्छी जगह पहुँच जायेंगे तब हम तुम्हें लेने आएँगे। ऐसा विचार वह सब रास्ते में जो भी मिलते हैं, उनसे कहते जाते हैं- मुझे अभी यहाँ नहीं रुकना। कहाँ रुकना? दण्डक वन में जाकर के रुकना है। इस तरह का वह विचार सब को बताते जाते हैं और इसी बीच में कुछ और भी घटना वहाँ पर घटने लग जाती है।

पुण्य के उदय से वन में भी सब व्यवस्थाएँ बन जाती है।

दण्डक वन में पहुँचकर के कुछ अनूठा होता है। पढ़ते हैं -

यह कह कर के चल दिए, तीनों भव्य स्वरूप।
दण्डक वन में आन कर, रच ली कुटी अनूप।
कुटिया आंगन क्यारियां बना, सीता ने पौधे रोप दिये।
केतकी जुटी चम्पा बेला, पा समय, खिले मृदु गंध लिये।
आया बसंत नव पुष्प गंध से, महक उठा सारा जंगल।
कुछ पालित हिरण लेकर कुलांच, करते थे जंगल में मंगल।
मादक मौसम के वशीभूत हो, राम के मन नव भाव आया।
फूलो से सिय का कर सिंगार, निज संग झुले पर झुलवाया।
आमोद-प्रमोद में इसी तरह, जीवन के कुछ दिन बीत गए।
तीनों अवतारी होकर भी, जग की माया में विरम गये॥
एक दिवस की बात है, करी रसोई त्यार।
आगत पारण हेतु थे, तीनों ठाढ़े द्वार॥

देखिए वह दण्डक वन है उस दण्डक वन में पहुँच करके उन्होंने अब मन बनाया कि यहाँ पर कुछ अच्छा स्थान बनाकर के यहाँ पर कुछ दिन रुकेंगे

और वहाँ पर उन्होंने अपनी एक कुटिया बनाई। चारों ओर अच्छी-अच्छी फुलवारियाँ लगाई। केतकी के, जूही के, चम्पा के, बेला के, चमेली के सब तरह के फूलों से सुगन्धित उन्होंने बढ़िया सुन्दर कुटिया बनाई और आसपास वृक्षों से सुशोभित अपना स्थान बनाया।और वहीं पर जहाँ जंगल में बहुत सारे हिरण वगैरह आ करके भी, खरगोश आ करके भी, वहाँ पर उनके साथ में खेलते थे। ऐसे स्थान में बड़े आमोद-प्रमोद के साथ में फूलों से खेलते हुए, फुलवारियों से खेलते हुए, झूलों में झूलते हुए अपना आनन्द भाव के साथ में उन्होंने वहाँ पर बहुत समय व्यतीत किया। सुन रहे हो? रो तो नहीं रहे? रोना नहीं है। राम को वनवास हो गया, राम को वनवास हो गया, सीता क्या करेगी? कैसे चलेगी? कैसी रहेगी? कैसे उसको ये कष्ट सहन करने में आएँगे? यह सब रोने की बातें छोड़ो। यह देखो कि पुण्य के उदय से हर जगह पर अपने आप सब कुछ व्यवस्थाएँ बनती चली जाती हैं और यही शुभ लक्षण होते हैं। जिन शुभ लक्षणों के माध्यम से वह व्यक्ति जहाँ कहीं पर भी पहुँच जाता है। उसके लिए कभी कोई प्रतिकूलता नहीं रहती है। समझ में आ रहा है? महापुरुषो के शरीर पर ये शुभ लक्षण जन्म से ही होते हैं।

एक दोहा आता है-

तिल भँवरे लसुन मसा, बसे दाहिने अंग,
लक्ष्मी साथ न छोड़िए चाहे बसो वनवंश।

भले ही आप वन में जाकर के रह जाओ लेकिन लक्ष्मी आपका साथ नहीं छोड़ेगी क्योंकि आपके शरीर में महापुरुषों के पुण्य के लक्षण हैं।

अपने पुण्य पर विश्वास करना सीखो

अपने पुण्य पर विश्वास करना सीखो। राम लक्ष्मण का यह जीवन चरित्र हमें क्या सिखा रहा है? कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हर व्यक्ति अपने पाप-पुण्य के फल से सुख-दुःख प्राप्त करता है। जीवन-मरण सब पाप-पुण्य के फल से चलता है। इसी corona में अनेक-अनेक वृद्ध भी बच कर के निकल गए और इसी corona में अनेक नई उम्र के बच्चे भी गुजर गए। क्यों? corona आपने भी तो face किया। आपके सामने corona

नहीं आया। क्यों नहीं आपके ऊपर corona का attack हुआ? आपके लिए कुछ पुण्य बल था और उसी पुण्य बल के कारण से आपको यह राम कथा सुननी थी। इसी मनुष्य जन्म में इसलिए कोई भी corona आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाया, यह अपना पुण्य है। जो व्यक्ति सदाचारी हो करके, भगवान की भक्ति करते हुए आत्मविश्वास को बढ़ाते हुए गुजरता है, उसके पुण्य से उसका जीवन चलता है। आप देखते हो अनेक लोग नई-नई उम्र के अपने सामने से गुजर गए। कई वृद्धों को corona हुए, वे उससे face करके निकल गए, सामने आ गए, बचा लिए अपने जीवन को और कई अच्छे नए खून के लोग जिनका बल अच्छा था, जिनका शरीर बलिष्ठ दिखाई देता था ऐसे लोग एक झटके में निकल गए, गुजर गए इस संसार से। क्यों? किसी को कोई बचाने वाला नहीं, किसी को कोई मारने वाला नहीं। सुन रहे हो? हाँ! लेकिन आप लोग हमेशा मारने वाला है भगवान!, बचाने वाला है भगवान! आप सोचो हम हर चीज को भगवान के ऊपर क्यों डाल देते हैं ?

जब हम अपने कर्मों का फल स्वयं अर्जित करने के लिए तैयार हुए हैं तो हमें अपने कर्मों के फल पर विश्वास करना चाहिए। कोई भी भगवान क्या किसी को मार सकता है? अगर हम यह मानते हैं कि हम भगवान की सन्तति हैं, भगवान ने हमें पैदा किया है तो क्या भगवान अपनी सन्तति को मारेगा? फिर हम क्यों बोलते हैं? मारने वाला है भगवान, बचाने वाला है भगवान। थोड़ा विचार किया करो। मैं मना नहीं कर रहा हूँ आप भगवान को भगवान मानो लेकिन किस रूप में मानो? भगवान कभी किसी को मारता नहीं। भगवान कभी किसी को बचाता नहीं। हर व्यक्ति भगवान की भक्ति करके अपने पुण्य कर्म से अपने आप को बचाता है। और अगर भगवान का वह बैरी बन जाता है, भगवान को नहीं मानता है तो उसी पाप कर्म के बन्ध के कारण से वह अपने आप को मिटाता है, नाश करता है। यह कहानी है! यही कहानी श्रीराम सिखा रहे हैं, यही कहानी देशभूषण कुलभूषण महाराज की आपके सामने आई है और इसी कहानी

से आपके अन्दर यह विश्वास बनना चाहिए कि सब कुछ कर्म के कारण से होता है। अपने किए हुए कर्म, अपनी आत्मा से बन्ध करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारे साथ में रहते हैं और इन्हीं कर्मों के फल से हमें जन्म-जन्मान्तरों में अनेक तरह के सुख-दुःख, अनुकूल-प्रतिकूल वातावरण मिला करते हैं। समझ में आ रहा है कि नही आ रहा है? क्या विश्वास करना है? सारे संसार के अन्दर क्या चल रहा है? सिर्फ अपने-अपने कर्म का हर कोई व्यक्ति फल भोग रहा है। सारा विश्व कर्म के अनुसार चल रहा है।

हम अपने कर्मों के हाथ की कठपुतली हैं

लेकिन हम हर बात को ईश्वर के ऊपर डाल देते हैं। **'काहे को तूने दुनिया बनाई'** ईश्वर ने दुनिया बनाई! यह सब काम ईश्वर के हैं, यह आपके मन के अन्दर एक प्रश्न आना चाहिए। ईश्वर सर्व-समर्थ होता है, दुनिया बनाने का पाप वह अपने ऊपर क्यों लेगा? अगर दुनिया बनाई तो दुनिया में इतने पाप हो रहे हैं, इस पाप का फल किसको मिलेगा? बताओ अच्छा? कोई भी चीज कोई बनाता है तो उसका फल उसी को मिलेगा न। आज दुनिया में मान लो लाखों कत्लखाने खुले हैं, कितने लाखों पशु हर समय कट रहे हैं, मर रहे हैं। यह भगवान की बनाई हुई दुनिया में, भगवान के बनाए हुए इन लोगों के अन्दर इस तरह से जब यह पाप आ रहे हैं और यह जीव कट रहे हैं, हत्या हो रही है तो इस सब का पाप किसको लगेगा? बताओ? जो बनाने वाला होगा उसी को लगना चाहिए। अगर नहीं है, तो फिर यह दुःख भगवान ने उनको क्यों दे दिए? और भगवान ने ऐसे जीव क्यों पैदा कर दिए जिनको कटना पड़ रहा है, मरना पड़ रहा है। मैं पूछता हूँ गाय बनाई, भैंस बनाई किसने बनाई? चलो! तुम बोलते हो भगवान ने बनाई। चलो! मैं भी मान लेता हूँ, भगवान ने बनाई। अब उनको काटा जा रहा है, मारा जा रहा है। क्या भगवान अपनी बनाई हुई चीजों से स्वयं दुखी होगा? क्या भगवान की बनाई हुई चीजों को कोई मारेगा, काटेगा तो भगवान उसको दण्ड देगा? अरे भाई! जो कसाई है उसको भी तो भगवान ने बनाया होगा न। नही समझ में आ रहा है, आप लोग विचार करते हो कि नहीं कि ठण्ड में बिल्कुल कान बाँध कर बैठते हो। कसाई कोई दूसरे लोक से आ गया

क्या? मारने वाला भी इंसान ही है, बचाने वाला भी इंसान ही है। वह भी इंसान भगवान का ही अगर बना हुआ है तो भगवान ने ही कसाईयों को बनाया यूँ कहना पड़ेगा न। भगवान ने ही जानवरों को बनाया यह भी कहना पड़ेगा। भगवान ने ही रक्षकों को बनाया यह कहना पड़ेगा तो फिर भगवान ने क्या किया? भगवान फिर संसार में आ कर के फिर किसी को क्यों बचाएगा और किसी को क्यों मारेगा?

कोई अपनी सन्तति को नुकसान क्यों पहुँचायेगा

अगर सब भगवान का ही कृत्य है तो फिर भगवान उस कसाई को ही बुलाएगा। कसाई को ही फिर वह भगवान कहीं कोई सजा देगा कि नरक में पहुँचा देगा यह भगवान का काम कैसे रह जाएगा? अपनी सन्तति खुद भगवान ने भी अगर मान लो गलत बना दी तो यह गलती तो फिर भगवान की कहलाएगी। अगर समझदारी से बनाई तो ऐसी सन्तति क्यों बनाई? अपनी ऐसी परम्परा क्यों बनाई जिसमें कसाई पैदा कर दिए? मारने वाले लोग, हिंसक लोग तैयार कर दिए। यह किसने कर दिए? अगर यह भगवान ने कर दिए तो यह भगवान की गलती कहलाई। आप क्यों उसका पश्चाताप कर रहे हो। विचार करो दिमाग खोल करके कान खोल कर के। अगर अपने दिमाग से अन्धविश्वास को छोड़ करके, आप सब कुछ सोचने की, समझने की कोशिश करेंगे तो आपका भ्रम दूर होगा। आपको समझ में आएगा कि हमारी यह बहुत बड़ी कमजोरी होती है, हम हर चीज को भगवान के ऊपर डाल देते हैं। जो चीज हमें दिखाई नहीं देती है, वह हर चीज हम भगवान के ऊपर छोड़ देते हैं लेकिन हर चीज हमारे भीतर से चलती है। हम जैसे भाव करते हैं, हम जैसे विचार करते हैं, हम जैसा कृत्य करते हैं, उसी के अनुसार हमें सुख-दुःख मिलता है। हमें उसका फल भोगना होता है। इसमें भगवान कोई कुछ नहीं करता। आपने देखा होगा कितने लोग कितना हिंसक कार्य करते हैं और जब वह पकड़े जाते हैं किसी भी तरह से भगवान से अपनी रक्षा माँगते हो। क्या उन्हें कभी छोड़ा जा सकता है ? वह अगर उनका पाप कर्म है तो उसे उनका फल भोगना पड़ेगा और अगर उनका पुण्य कर्म उनके साथ आएगा तो उनकी रक्षा होगी। यह

depend करता है उस व्यक्ति के पाप और पुण्य पर, भगवान कभी बीच में आकर के किसी के लिए बचाए, बिगाड़े, बनाए तो यह काम भगवान का कैसे हो सकता है कि भगवान ही कसाईयों को पैदा करे। भगवान ही अच्छे लोगों को पैदा करे और फिर भगवान ही कसाईयों को मारने के लिए कोई रूप धर कर के आए और भगवान ही फिर उनको मारे तो यह भगवान का काम मारने का और काटने का अगर होगा तो फिर भगवान में और सामान्य आदमी में क्या अन्तर रह जाएगा? यह मैं आपके अन्दर एक विचार डाल रहा हूँ। इस विचार से अगर आप अपने मन मस्तिष्क को समझा पाए, इस रहस्य को समझ पाए तो आपके जीवन में एक बहुत बड़ा सवेरा होगा, एक बहुत बड़ी जागृति होगी। इसी जागृति से आपको श्री राम के वह दर्शन होंगे जो दर्शन आपको कभी भगवान की भक्ति करने से नहीं हो सकते, वह आपको इस जागृति के माध्यम से श्री राम के दर्शन होंगे। अपने मन के अन्दर यह विश्वास बनाओ मैं भगवान का अंश नहीं हूँ, मैं अधूरा नहीं हूँ। मैं किसी का टुकड़ा नहीं हूँ, मैं जो भी हूँ अपने आप में पूर्ण हूँ। यह विश्वास पहले एक अपने मन के अन्दर बनाओ फिर देखो आप को कैसे भगवान की शक्ति, भगवान का विश्वास आपका कैसे बढ़ता चला जाता है। और यही बात यहाँ सामने आ रही है। अपने आनन्द में आप तभी रह सकते हो जब आप अपने आप को परिपूर्ण समझोगे। हम किसी की देन नहीं हैं, हम किसी के हाथ की कठपुतली नहीं हैं। हम किसी भगवान के भी हाथ की कठपुतली नहीं हैं। हम अपने ही कर्मों के कारण से अपने कठपुतली खुद बने हुए हैं। हर व्यक्ति स्वयं का कर्ता है, स्वयं का भोक्ता है, स्वयं का स्वामी है। किसी दूसरे के ऊपर कुछ भी डालना यह हमारी कमजोरी है और कमजोरी को अगर हम दूर कर लेते हैं तो हमारे अन्दर वह शक्ति प्रकट होने में देर नहीं लगती जो शक्ति कुलभूषण देशभूषण मुनि महाराज के अन्दर प्रकट हुई। इसी शक्ति के परिणाम से आज राम लक्ष्मण जो इस पुण्य का फल भोग रहे हैं। जगह-जगह जाकर के यह अपनी शक्ति के माध्यम से उस पुण्य का ही कार्य देख रहे हैं कि ऐसा उन्हें आज पुण्य का वह जीवन मिला है, जिसके माध्यम से वे कहीं भी चले जाएँ, उन्हें

सफलता ही सफलता मिलती है। लेकिन सब के दिन एक समान नहीं होते हैं। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आता है। इसी तरह से इधर यह योजना बना रहे हैं। हम बहुत अच्छे स्थान पर आ गए, हमारी यात्रा पूरी हो गई। मन में भाव बना रहे हैं कि हम अब क्या करेंगे? अपनी माँ को बुला करके लाएँगे और अब हम पुनः अपने राज्य की ओर जाने से पहले यहीं पर सब को ले करके आएँगे और यहीं पर अपना कुछ जीवन व्यतीत करेंगे। उसके बाद में फिर हम वापस अयोध्या जाएँगे, सब को बीच में से लेकर के जाएँगे। इस तरह से ये अपना मन बना रहे हैं, योजना बना रहे हैं और हर जगह पर इन्हें धर्म लाभ मिल रहा है। क्या मिल रहा है? देखो! मुनि महाराज का दर्शन होना, सबसे बड़ा धर्म लाभ है।

शबरी श्रमणी थी।

एक शबरी की कथा आती है बाल्मीकि रामायण के अन्दर और वह शबरी कई दिनों से इन्तजार करती है कि हमारे घर में श्रीराम आएँगे। हमारे लिए दर्शन होंगे। लेकिन जब उस बाल्मीकि रामायण के अन्दर की वह शबरी को अगर हम ढंग से देखें तो वह शबरी को वहाँ पर श्रमणी लिखा गया है। क्या लिखा है? श्रमणी! श्रमणी जानते हो श्रमण मुनि महाराज कहलाते हैं और श्रमणी क्षुल्लिका, आर्यिका इनको श्रमणी कहा जाता है। वह शबरी एक भील जाति की स्त्री है और वह भी धर्म को धारण करने वाली धर्मचारिणी है। मैं आपके लिए बाल्मीकि रामायण के उस बालकाण्ड के श्लोक को पढ़ रहा हूँ।

'स चास्य कथयामास शबरी धर्मचारिणी।
श्रमणां धर्मनिपुणामभिगगच्छत्ति राघवम्॥"

अर्थात् वह शबरी धर्मचारिणी है और वह श्रमणा कहला रही है। एक जगह उसको श्रमणा लिखा है, एक जगह उसको श्रमणी लिखी है। धर्मचारिणी है, धर्म में निपुण है माने वह धर्म करना जानती है और उनके निकट वह राघव आते हैं। राघव माने श्री राम जी आते हैं। यह बालकाण्ड में लिखा हुआ है बाल्मीकि रामायण के अन्दर। एक अरण्यकाण्ड है, बाल्मीकि रामायण के

अन्दर वहाँ लिखा हुआ है-

'तामुवाच ततो रामः श्रमणी धर्मसंस्थिताम्।'

एक जगह उसी अरण्यकाण्ड के 74वें सर्ग में सातवें नम्बर के श्लोक में और एक 73वें सर्ग के 26 नम्बर के श्लोक में लिखा है।

'श्रमणी शबरी नामे काकुत्स्य चिरजीविनी॥'

यानि वहाँ पर उस शबरी को श्रमणी माना गया है। श्रमणी होती है- क्षुल्लिका। क्योंकि ये जो भी भील हो, आदिवासी हो, ये लोग भी धर्म धारण करते हैं और यह लोग भी धर्म धारण करके धर्मचारी बन जाते हैं। इनके लिए भी वही पूज्यता मिलती है जो पूज्यता सब लोगों के लिए मिलती है। इस प्रसंग को लेकर के कई विद्वानों ने इस बात को कहा है कि यह शबरी क्षुल्लिका थी। राम जी शबरी के पास आए, शबरी को उन्होंने आहार दिया क्योंकि जो क्षुल्लिका होगी, आर्यिका होगी उसको दूसरे लोग आहार देंगे और आहार देने के बाद में जो आहार शेष रह जाता है, उस आहार को वह जो देने वाला वह दाता होता है वह ग्रहण करता है, वह खाता है। यह भी एक विचार है! विरोध करने के लिए नही है, समझने के लिए है, चर्चा करने के लिए है। दिमाग खुला रखेंगे, अनेकान्तवाद से हर दृष्टि को देखेंगे, शास्त्रों को भी सामने रखकर के अगर हम बात करेंगे तो हम अनाग्रह पूर्वक अगर हम किसी भी विचार को सामने रखेंगे तो हमारे सामने नई नई चीजें आ सकती हैं। एक विद्वान ने शबरी को क्षुल्लिका माना है। वह जैन क्षुल्लिका थी क्योंकि श्रमण शब्द जैन समुदाय का शब्द है। श्रमण और श्रमणी यह हमेशा मुनि महाराज और आर्यिकाओं के लिए, क्षुल्लिकाओं के लिए ही प्रयोग किया जाता है। इस शब्द का और कोई अर्थ दुनिया के किसी शब्दकोश में नहीं होता। स्वयं वाल्मीकि रामायण से उस समय पर मुनि महाराज का होना सिद्ध होता है। मुनि शब्द भी कई बार वहाँ बाल्मीकि रामायण में आता है और वह श्रमणीय शब्द भी आया है शबरी के लिए तो इससे एक भाव यह भी निकलता है। क्या निकलता है? कि ऐसा भी सम्भव हो रामजी ने शबरी को आहार दिया हो और आहार देने के बाद में जो बचा हुआ आहार हो वह रामजी ने खाया हो।

ऐसा उन्होंने भक्ति उन्होंने उस क्षुल्लिका की हो क्योंकि वह साध्वी हैं और साधु साध्वियों की भक्ति हमेशा हर कोई महापुरुष किया करते हैं और उन्होंने इस भक्ति को इस तरह से किया हो। लेकिन बाद में यह बात इस तरह से प्रचलित हो गई हो। शबरी तपस्या कर रही थी, राम के आगमन का इन्तजार कर रही थी और वह झूठे बेर अपने पास में रखे रहती थी और राम जी ने जब आ करके उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर के वे बेर खा लिए तो उसका जो अभिशाप था वह दूर हो गया। उसकी भक्ति का फल उसको मिल गया यह भी लोक में प्रचलित है। समझ आ रहा है? यह बात दोनों तरह से समझने योग्य है, आपके सामने में हमेशा कोई भी बात आग्रह के साथ नहीं रखता।

शबरी की प्रचलित कथा पर भजन

मैं आपसे हमेशा इसलिए कहता हूँ आप खुले दिमाग से मेरी बात सुने। किसी भी तरह की बात है उसको आप विचार करें और विचार करके अपने को जो समझ में आए वह आप अपनाएँ। किसी भी तरह का कोई आग्रह नहीं, मैं भी अपने मन में कोई आग्रह नहीं रखता इसलिए मैंने एक भजन बनाया था तो उसमें शबरी को ऐसे रूप में प्रस्तुत किया जैसे लोक में उसकी चर्चा है। वे लाइनें भी सुना देता हूँ, प्रासंगिक हैं क्योंकि शबरी का प्रसंग आया है।

श्रद्धा की आँखों से देखो, पत्थर में भगवान दिखे हैं।
गुरु दर्शन में भगवती मूर्ति, हमको तो श्रीराम दिखे हैं।
बाट जोहते बीती उमरिया, नैना सूखे टूटी कमरिया,
कुटिया में वो जब आएँगे, मीठे बेर उन्हे भाएँगे।
बाट जोहते बीती उमरिया, नैना सूखे टूटी कमरिया,
कुटिया में वो जब आएँगे, मीठे बेर उन्हें भाएँगे।
पूर्ण हुई जब कठिन परीक्षा, तब शबरी को राम दिखे हैं।
श्रद्धा की आँखों से देखो, पत्थर में भगवान दिखे हैं।
गुरु दर्शन में भगवत मूर्ति हमको तो श्री राम दिखे हैं।

और यह प्रसंग जब और आगे बढ़ता है तो कल आपके लिए वह भूमिका बनेगी। सीता का हरण होने से पहले क्या कुछ होता है ? यह आपको जैन रामायण के अनुसार कल आप को वास्तविक रूप में सुनाया जाएगा, बताया जाएगा कि सीता के हरण होने की कहानी कहाँ से शुरू होती है? क्योंकि वह उसी दण्डक वन में हैं और वह उसी दण्डक वन में क्या प्रसंग घटित होते हैं? कल कुछ उन प्रसंगों के साथ में वह बात आपके सामने आएगी, सुनना न भूलें तब तक के लिए महावीर भगवान की जय और यह ओं अर्हं नमः के साथ इस सभा का विसर्जन करें।

रावण का सीता को देख मोहित होना

श्रीराम,लक्ष्मण और सीता वन में कुटिया बनाकर रहते हैं

श्री राम चरित्र कीर्तन के माध्यम से श्री राम की कथा निरंतर चल रही है और यह कथा करते करते वंशस्थ पुर के राजा के समीप उनकी खातिरदारी में उनका बहुत समय बीतता है। उसके बाद में वह अपना मन जो पहले से बनाए थे कि हमें दक्षिणापथ की ओर जाना है, वह दक्षिण की यात्रा अपनी और आगे बढ़ाने के लिए मन में विचार किए और वे वहाँ तक जाना चाहते हैं, जहाँ पर भरत की कोई आज्ञा नहीं चलती है। उस दक्षिणा पथ की ओर जब जाने के लिए उद्यत होते हैं तो रास्ते में उन्हें एक दण्डकवन मिलता है और वह दण्डकवन ही वह जगह है, जो दक्षिणापथ का एक तरह से अंतिम किनारा है। वहाँ पर भरत की आज्ञा नहीं चलती, कोई बस्ती नहीं, कोई राजा नहीं, ऐसे उस स्थान पर पहुँचने के लिए वह उद्यत हैं और वह पहुँचते-पहुँचते रास्ते में उस दण्डकवन में पहले उन्हें एक **कर्णरवा नदी** मिलती है। उस कर्णरवा नदी के पास में उसके तटों पर वह कुछ दिन के लिए विश्राम करते हैं। वहाँ पर वह आमोद प्रमोद के साथ कुछ दिन व्यतीत करते हैं। वहीं पर अपनी कुटियाँ बना करके लक्ष्मण ने अनेक तरह के वहाँ पर बर्तन आदि तैयार किए और उन बर्तनों के माध्यम से वहीं पर खुद वहीं के धान्य का, वहीं के फल, फूलों का भोजन आदि बनाना और आप सोच भी नहीं सकते कि उस समय पर वह सब चीजें जो जीवनोपयोगी होती हैं, खाने-पीने की योग्य होती हैं, वह सब उन वनों में सहज मिला करते हैं। अच्छी-अच्छी गायों के दूध, उन दुधों से बनने वाले सब तरह के मिष्ठान्न, वह सब कुछ वहाँ बनाने की सुविधाएँ रहती हैं। क्योंकि फलों-फूलों, जंगलों के माध्यम से सब कुछ उपलब्ध होता है और सब कुछ वहाँ पर होते हुए उनका समय बीत रहा है।

वन में ऋद्धिधारी मुनिराज के दर्शन

वनों में, जंगलों में मुनि राजाओं का आवागमन भी हुआ करता है। कभी भी मुनि राजाओं का आवागमन रुका नहीं। किसी भी तरह के जंगल हो, एकांत स्थान हो, वहाँ पर मुनि महाराज का हमेशा कहीं न कहीं आवास रहता है और उनकी ध्यान साधना के योग्य जहाँ स्थान होता है वह वहाँ पर हमेशा रुका करते हैं। कोई भी काल रहा हो चतुर्थ काल में तो और अधिक मात्रा में धर्म का प्रभाव था और उसी चतुर्थ काल में यह श्री राम और लक्ष्मण की यह वनवास की यात्रा चल रही है और उसी यात्रा के दौरान वह जहाँ पर अपनी कुटी बना करके बहुत अच्छी तरह से प्रतिदिन धर्मध्यान के साथ में अपना आमोद-प्रमोद के साथ में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

उसी दौरान उनके लिए एक वहाँ पर दृश्य दिखाई देता है। एक दिन जब वह भोजन सामग्री तैयार हो चुकी थी और भोजन सामग्री तैयार होने के बाद में उनके लिए दो मुनि महाराज आकाश से गमन करते हुए दिखाई देते हैं। वे मुनि महाराज चारण ऋद्धिधारी मुनि महाराज होते हैं और यह चारण ऋद्धिधारी मुनि महाराज हमेशा आकाश से गमन किया करते हैं। दो युगल मुनिराज के उन्हें दर्शन होते हैं। जब उन्हें दर्शन होते हैं तो बड़े प्रेम भाव से, आनंद भाव से वह भक्ति भाव से भर जाते हैं और सीते से कहते हैं- देख! सीते देख! बाहर निकल कर आ, कुटी से बाहर आ और उसे बुला करके दिखाते हैं कि देखो! दो मुनि महाराज जा रहे हैं। सीता तुरंत उनसे कहती है कि यह मुनि महाराज न जाने कब से तपस्या कर रहे हैं? इनके शरीर को देखकर के लग रहा है कि यह बहुत दिनों से तपस्या करते हुए इसी तरह से गुजरते होंगे। आज हमारा मन हो रहा है कि इनको अपनी कुटी में बुलाया जाए, इनका पडगाहन किया जाए, प्रतिग्रहण किया जाए और इन्हें नवधा भक्तिपूर्वक इनके लिए आहार दान करने का हमारा मन बन रहा है। इनके लिए आहार दान दिया जाए। ऐसा विचार सीता का आता है तो राम तुरंत तैयार होते हैं और सीता के साथ राम खड़े हो करके मुनि महाराज को आकाश मार्ग से तुरंत बुलाने लग जाते हैं और उनके बुलाने की एक विधि होती है।

मुनिराज 24 घंटे में एक बार ही भोजन-पानी लेते है

वह विधि यही होती है कि अगर किसी ने अपने घर में शुद्ध भोजन बनाया है, अपने लिए वह शुद्ध आहार-पानी तैयार किया है, तो उसी में से वह कुछ भोजन, कुछ आहार वह मुनि महाराज के लिए देने को जब मन बना लेता है, तो वह उनको भक्तिपूर्वक बुला करके, उन्हें अपने घर में स्थान दे करके, उन्हें बिठा करके, उनका पूजन आदि करके, पाद प्रक्षालन करके और फिर उनके लिए जब आहार दान प्रदान किया जाता है, तो वह मुनि महाराज खड़े हो करके, बिना किसी बर्तन के, बिना किसी चम्मच के, गिलास के कि बिना किसी कटोरी के, अपने हाथों में वह भोजन करते हैं। जो उनके हाथों में रख दिया जाता है वह मौन पूर्वक उस भोजन को ले लेते हैं। मुनि महाराज चाहे पंचम काल में हो, चाहे चतुर्थ काल में हो, हमेशा उनका भोजन दिन में एक बार ही होता है। रात्रि में उनका भोजन कभी नहीं होता। दिन में ही एक बार भोजन के समय पर ही उनका पानी पीने का समय होता है, उसी समय पर वह भोजन के साथ ही पानी पीते हैं। भोजन होने के उपरांत फिर वह चाहे कितनी गर्मी हो, चाहे कितना ही कोई भी उनके लिए दुविधाएँ हो, विहार आदि का श्रम हो, किसी भी तरह से वह दोबारा न पानी पीते हैं, न भोजन करते हैं। अगले दिन फिर उनके लिए जब चर्या का समय होता है, भोजन करने का समय होता है, तो वह भोजन करते हैं। यह विधि हमेशा चली आ रही है। ऋषभदेव तीर्थंकर के धर्म तीर्थ के प्रवर्तन के साथ में जब मुनि धर्म का प्रभाव बना तो यह विधि बनी और तब से वह अनेक तीर्थंकरों के तीर्थों में इसी तरह से वे ऋषि मुनि तपस्या करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करके चले जाते हैं।

पडगाहन विधि और शुद्ध प्रासुक आहार दान

जिन्हें हम श्रमण कहते हैं, मुनि महाराज कहते हैं, ऐसे यह श्रमण कभी भी अपना कोई मठ नहीं बनाते। इनके कभी कोई अपने स्थान नहीं होते और यह हर समाज में, हर गांव में, हर नगर में भ्रमण करते हुए सबके लिए धर्म लाभ देते हुए इसी तरह से अपना विहार करते रहते हैं। यह जो परंपरा हम

चतुर्थ काल में देखते थे, आज भी वही परंपरा भगवान महावीर स्वामी के तीर्थ काल में आज भी इस पंचम काल में हमें दिखाई देती है। इसी परंपरा के माध्यम से वह श्रमण धर्म निरंतर प्रगति पर चलता रहता है और इसी के माध्यम से हर एक जन समुदाय को उसका लाभ मिलता है। यह बात अलग है आज मुनि महाराज को देखकर के लोग यह समझते हैं कि यह जैनों के मुनि महाराज हैं। यह विचार जो लोगों में आता है, वह उनके अपने संकोच के कारण से आता है। मुनि महाराज जब अपना घर परिवार छोड़ दिए तो वह किसी घर परिवार के नहीं होते। वह उन्हीं के होते हैं जो उनकी भक्ति करता है, वे उनके हो जाते हैं। अनेक लोगों को इस तरह का संकोच होता है वह संकोच आप इस श्रीराम के दृष्टांत उसे दूर कर सकते हो। जब श्री राम स्वयं सीता के साथ में मुनि महाराज को देखते हैं तो वह उनको बुलाने के लिए निवेदन करते हैं।

बुलाने के लिए निवेदन कोई विशिष्ट निवेदन नहीं होता सीधा-साधा निवेदन होता है- '**अत्र अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ**' इसका मतलब क्या होता है? यहीं यहीं यहीं पर रुक जाइए रुक जाइए, रुक जाइए अगर आपको संस्कृत नहीं भी बोलना आती है, तो आप हिंदी में भी बोलेंगे तो भी महाराज रुक जाएँगे। आपके लिए यह भक्ति का भाव होना चाहिए कि हम मुनि महाराज को रोक ले और अपने घर पर रोकने के बाद में हमारे घर में शुद्ध भोजन हो, हमारी शरीर शुद्धि हो, हमने अपने मन शुद्धि के साथ में शुद्ध भोजन का निर्माण किया हो, जिस भोजन में किसी भी जीव राशि का कोई हनन न हुआ हो। जो भोजन मर्यादित हो और मर्यादा के अनुसार ही वह भोजन बनाया गया हो, जो भोजन छने हुए जल का हो। जल छानने के बाद में जो उसमें जीव छन करके आ जाते हैं, उनका भी उस जल में पुनः विसर्जन किया गया हो। ऐसे शुद्ध जल से और हर मौसम की मर्यादा के अनुसार जो आटे की, मसाले की, जो मर्यादाएँ होती है उस मर्यादा के अनुसार अगर वह भोजन किसी भी श्रावक के घर में हो और वह श्रावक अगर मुनि को भक्तिभाव पूर्वक इस तरह से उन्हें बुलाता है, रोकता है कि,

हे स्वामी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ। मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि, आहार जल शुद्ध है, मेरे घर में प्रवेश कीजिए। मेरे घर में आहार जल शुद्ध है, आज आहार ले करके आज मुझे धन्य कीजिए। कोई भी व्यक्ति उन मुनि महाराज का पडगाहन कर सकता है।

पूर्णतया शुद्धि हो तो जैन ही नही जन-जन आहार दान दे सकते है

यह संकोच है दूसरे लोगों का जो मुनि महाराज को अपने घर में नहीं बुलाते हैं। केवल जैन लोगों ने यह अधिकार ले रखा है; लेकिन यह अधिकार केवल जैन लोगों का नहीं है, यह अधिकार सभी लोगों का है। अगर श्रीराम मुनि महाराज को बुला सकते हैं तो श्री राम के भक्त भी मुनि महाराज को अपने घर में बुला सकते हैं। बस! विचार इतना ही होना चाहिए पूर्णतया शुद्धि का भाव। क्षेत्र शुद्धि हो, जहाँ हम मुनि महाराज को बिठाएँ वह घर हमारा शुद्ध हो, वहाँ कभी कोई मांसाहार न किया गया हो। जिन बर्तनों से भोजन बनाया गया हो, वे बर्तन भी शुद्ध हो। कभी उनमें कोई अभक्ष वस्तुएँ, मांसाहार आदि का कभी कोई वहाँ पर प्रयोग न किया गया हो। ऐसे अनेक लोग मिलते हैं, जिनके आचरण शुद्ध होते हैं और हमने ऐसे भी अनेक लोग देखे हैं, ऐसे अनेक समाज देखी हैं, वह महेश्वरी समाज होती है। एक बार में मनासा में रुका था, एम. पी. के अन्दर एक जगह है और वहाँ पर ऐसे महेश्वरी समाज के लोग थे, जो रात्री में भोजन तक नहीं करते थे, रात्री में पानी भी नहीं पीते थे। इस तरह से सदाचरण का पालन करने वाले शुद्ध लोग कई जगह मिलते हैं। ब्राह्मण जाति में भी अच्छे लोग होते हैं, जो कभी मांस नहीं खाते, शाकाहारी होते हैं। हमेशा जिनका शुद्ध आचरण होता है। ऐसे अनेक लोग होते हैं जिनके घरों में कभी भी इस तरह का, कोई भी, गंदा खानपान नहीं होता। ऐसे घरों में हमेशा मुनि महाराज का आवागमन हो सकता है। अगर वह लोग संघ को छोड़ करके अपने मन में यह भाव बनाते हैं कि हम भी मुनि महाराज की भक्ति करें और हम भी मुनि महाराज को अपने घर में बुला करके कैसे शुद्ध आहार बनता है? अगर वह उसकी गवेषणा करें तो उनके लिए भी यह लाभ मिलने में कोई दुर्लभता नहीं है। यह छूट सबके लिए है और होनी भी चाहिए।

जब स्वयं इस तरह का शुद्ध आहार पानी वह सीता बनाई और मुनि महाराज को उन्होंने देखा तो उनके मन में भक्ति का भाव आया, वह मुनि महाराज कई दिनों के उपवास के साथ में भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने जब उनको इस तरह से बुलाया, हे स्वामी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ तो वह स्वामी वहीं पर रुक जाते हैं और रुक करके फिर उनकी आहार चर्या किस तरह से होती है और उस दौरान क्या कुछ घटित होता है, यह हम यह श्री राम की कथा से आगे सुनते हैं-

एक दिवस की बात है, करी रसोई तैयार।
आगत पारण हेतु थे, तीनों ठाड़े द्वार॥
उसी समय चारण मुनि, गुप्ति सुगुप्ति नाम।
दण्डकवन में आ गए हर्षित हो गए राम॥

मुनिराज की नवधा भक्ति कैसे करे?

वह जो दो मुनि महाराज थे उनके नाम थे गुप्ति और सुगुप्ति। ये गुप्ति मुनि महाराज और सुगुप्ति मुनि महाराज जब उस दंडक वन में आए तो राम ने सीता के साथ में हर्षित हो करके उन्हें अपने कुटी के निकट बुलाया और उस समय पर जो सुन्दर भाव उनके अन्दर आते हैं,

कहा सीता ने अब स्वामी, भाग्य सुंदर हमारे हैं।
जो ऋद्धिधारी दो मुनिवर, आज वन में पधारे हैं॥
बड़ी नवधाभक्ति से, उन्हें आहार देते हैं।
देव आकाश में से देख, कर जयकार करते हैं॥

उस समय पर नवधाभक्ति के माध्यम से उन्हें आहार दान कराया गया और यह नवधाभक्ति एक तरफ से हमने हिंदू संप्रदाय में भी, समाज में भी इस नवधाभक्ति को सुना है। नवधाभक्ति वहाँ पर भी होती है लेकिन वह नवधाभक्ति का तरीका या प्रकार कुछ अलग हो सकता है। उसके भेद कुछ अलग हैं, वे भक्ति के ही अनेक रूप हैं। लेकिन जो मुनि महाराज के लिए नवधाभक्ति है, यह नवधा भक्ति का मतलब होता है कि जैसे जब उनका प्रतिग्रहण कर लिया, प्रतिग्रहण करना एक भक्ति हो गई

जब हमने उनको भाव पूर्वक उन्हें रोक लिया। 'अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ' ऐसा कह करके जब हमने उनको रोक लिया और रोकने के बाद में उनकी तीन परिक्रमा लगा करके उन्हें विनय पूर्वक अपने घर की ओर, अपने घर के आंगन की ओर उन्हें ले गए, यह एक भक्ति हो जाती है। फिर जब उन्हें अपने घर के आंगन में, रसोई में, उचित स्थान पर जब उन्हें बैठाया जाता है, तो उन्हें एक पाटे पर, लकड़ी के आसन पर, उन्हें विराजमान करने के लिए उन्हें वहाँ पर एक निवेदन किया जाता है। वह निवेदन करने के बाद में वह मुनि महाराज वहाँ बैठ जाते हैं। फिर उसके बाद में उनके चरणों का प्रक्षालन किया जाता है, जल डाल करके गंधोदक लिया जाता है यह दूसरी भक्ति हो जाती है।

फिर उसके बाद में नमोस्तु करके, उनके लिए अष्ट द्रव्य से पूजन किया जाता है। जैसी बने वैसी पूजन हो जाती है, उनके गुणों की आराधना की जाती है ताकि श्रावक के मन में भाव आता है कि हमारे लिए आज यह दिवस धन्य है कि हम भक्ति पूर्वक हे भगवन्! आप को आहार दे रहे हैं। ऐसा नहीं कि आप को आहार की इतनी जरूरत थी कि आपके लिए हम आहार दे रहे हैं तो हम बहुत बड़े हो गए। श्रावक अपने मन में भक्ति भावना से उस विनम्रता से अपने आप को बहुत लघु महसूस करते हुए और उनके गुणों की पूजा वंदन करते हुए एक भक्ति और कर लेता है, जिसे अष्टद्रव्य से पूजा कही जाती है। ऐसी शुद्ध द्रव्य से पूजा करने के बाद पुनः वह नमोस्तु करता है, यह एक भक्ति और हो जाती है। फिर उसके बाद में वह अपने मन से उनके लिए विश्वास दिलाता है कि जो यहाँ पर आप भोजन करेंगे, हम आपको जो भोजन देंगे वह मैंने मन से, वचन से, काय से शुद्ध हो करके बनाया है। स्नान आदि से निवृत्त होकर के, शुद्ध वस्त्रों से, जिन वस्त्रों को किसी ने छुआ न हो, ऐसे शुद्ध वस्त्रों से उस भोजन को बनाया गया है और शुद्ध वस्त्रों से ही वह भोजन दिया जाता है। जिन शुद्ध वस्त्रों को पहनने के बाद में कोई भी शरीर की क्रियाएँ किसी भी तरह की न की गई हो, ऐसी वह पूर्ण शुद्धि के साथ में वह भोजन कराने के लिए जब वह श्रावक उद्यत हो जाता है, तो वह मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि,

आहार जल शुद्ध है, ये चार शुद्धियाँ और उनके लिए बोल करके उनके लिए विश्वास दिला देता है। इस तरह से यह नवधाभक्ति माने नौ प्रकार की भक्तियाँ होने पर वह मुनि महाराज उस श्रावक से आश्वस्त हो करके आहार ग्रहण कर लेते हैं।

पहले हर घर में शुद्ध भोजन और छना हुआ जल होता था

वह श्रावक जानता है कि शुद्ध भोजन कैसे होता है? शुद्ध पानी का चयन कैसे किया जाता है? यह उसे ज्ञात होता है और इसी तरह का शुद्ध भोजन पान वनों में, जंगलों में हमेशा मिला करता है। ग्रामीण जीवन जब तक रहता था, हर घर घर में शुद्ध भोजन पान रहता था। क्योंकि हर दिन शुद्ध आटा बनना है, रोजाना का आटा बनना है, रोजाना मसाले बनने हैं, रोजाना सब कुछ ओखली में कूटना है। पहले से packet बंद कोई चीज है, यह जो बाजार का system चला है, कभी भी अगर पुराने लोग यहाँ बैठे हो तो आज से बीस साल, तीस साल पहले कभी आटा, नमक, मसाले कभी कोई लोग घर में पैकटों के माध्यम से खरीद करके कभी नहीं लाते थे। आटा वगैरह ये सब चीजें घर में बना करती थी। धीरे-धीरे चक्कियाँ आई तो चक्कियों से बन करके आने लगा। तब भी वह बहुत सारी मात्रा में आ करके घर में रखा जाने लगा। लेकिन शुद्ध तरीका वही था जब प्रतिदिन आटा बना करता था। प्रतिदिन सुबह-सुबह दादी माँ चक्की पीस करके वह आटा निकालती है, रोजाना ओखली से खलबत्ते से मसाले बनते थे तो यह शुद्ध भोजन प्रतिदिन होता था।

नलों की व्यवस्थाएँ नहीं थी, यह नलों की व्यवस्था शहरों की व्यवस्थाएँ हैं। पहले सब जगह कुएँ होते थे, बावड़ियाँ होती थी, नदियाँ होती थी, स्वच्छ जल के झरने होते थे तो स्वच्छ जल उस पानी को निकाल करके उसको छाना जाता था। छने हुए उस बिलछानी को पुनः उसी में, जो उसमें जीव रह जाते हैं छन्ने में, वह उसी पानी में विसर्जित कर दिए जाते हैं ताकि

उनका वध न हो। ऐसी शुद्ध दृष्टि से जल छाना जाता था। मनुस्मृति में भी लिखा है **'वस्त्रपूतं पिबेत् जलं'** यह मनुस्मृति के वाक्य हैं। **'दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं पिबेत् जलं'** सभी व्यक्तियों को देख करके चलना चाहिए। **'दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं'** अपने चरण अपने पाद देख करके रखना। **'वस्त्रपूतं पिबेत् जलं'** जल को हमेशा वस्त्र से छान करके जल को पीना। यह सब पहले भारतीय सभ्यता में सबके लिए होता था। इसमें जाति का, संप्रदाय का, कोई भेद नहीं होता था। हर व्यक्ति छान करके पानी पीता था, कोई भी रात्रि में भोजन नहीं करता था, यह भारत की एक सभ्यता हुआ करती थी, यह पहचान हुआ करती थी। पुराने जमाने में जब बहुत सारे चीनी यात्री ह्वेनसांग जैसे लोग यहाँ पर आए तो उन्होंने देखा कि यहाँ पर रात्रि होने से पहले हर घर में खाने पीने के सब काम बंद हो जाते हैं। सब बर्तन धो-धा करके शांति से अपना संध्या करने बैठ जाते हैं। यह पहले एक बहुत अच्छी पद्धति चला करती थी। यह सब लोगों को पता होगा। **'वस्त्रपूतं पिबेत् जलं'** हमेशा जल को छानकर के पीना चाहिए। यह कोई धर्म नहीं है, किसी धर्म की पहचान नहीं है, यह मनुष्य के लिए शुद्ध जल पीने की आदत होना, यह उसकी अपनी एक सभ्यता है। इसी सभ्यता के तहत वह शुद्ध जल अगर पीता है, तो कहा जाता है **'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन** और **जैसा पीवे पानी वैसी होवे वाणी'** तो यह शुद्ध जल, शुद्ध भोजन, शुद्ध शरीर के साथ में जब निर्मित किया जाता है, तो उसके माध्यम से वह पूर्ण शुद्धि के साथ में मुनि महाराज के लिए आहार कोई भी दे सकता था और दे सकता है। पहले मुनि महाराज किसी के भी घर में स्वयं चले जाते थे और जो उनके लिए यह नवधाभक्ति करना जानता था, इस तरह से उन्हें पडगाहन आदि करना जानता था, उन्हें रोकना जानता था, उनके घर पर वह मुनि महाराज भोजन करते थे, यह प्रथा थी, यह परंपरा थी। आज यह परंपरा धीरे-धीरे संकुचित हो करके कुछ जैन लोगों तक ही सीमित रह गई है और जैनों में भी कुछ ही लोग जानते हैं, बाकी तो सब देखा-देखी किया करते हैं।

आहार दान के समय कुटिया के बाहर पंचाश्चर्य हुए

इस तरह की इस परंपरा के साथ में उन श्रीराम ने उस चतुर्थ काल में हजारों वर्ष पहले मुनि महाराज के लिए आहार दिया और उस आहार देने के बाद में जब उन्होंने आहार दे लिया, मुनि महाराज को वहाँ पर उन्होंने अपनी कुटी के बाहर थोड़ा विराजमान कर लिया। उनके चरणों में बैठ गए और धर्म सुनने के लिए उन से निवेदन किया। उसी समय पर वहाँ पर अनेक

प्रकार से वहाँ पंच आश्चर्य होने लग जाते हैं। पंचाश्चर्य जानते हैं? जिस आहार की देव लोग भी प्रशंसा करते हैं कि आज यह आहार बहुत अच्छे पात्र को, बहुत अच्छे दाता ने दिया है, तो देव लोग आकाश से दुंदुभी बाजे बजा करके और उस समय पर वह दुंदुभी गायन करके, बाजे बजा करके, चारों ओर वह शोर मचा करके, उस आहार की अनुमोदना करते हैं, कि यह आहार बहुत अच्छा दिया गया। 'धन्य दाता, धन्य पात्र, धन्य दाता, धन्य पात्र' यह पंचाश्चर्य में पहला आश्चर्य कहलाता है, दुंदुभी बजने लग जाती है, बाजे बजने लग जाते हैं।

दूसरा घ्राण इन्द्रिय को तृप्त करने वाली बहुत अच्छी सुगंधित वायु देवों के माध्यम से बहने लग जाती है, दूसरा आश्चर्य होता है। **तीसरा** आश्चर्य होता है कि वहाँ पर धन्य-धन्य की वाणी सुनने को मिलने लग जाती है। धन्य! धन्य! धन्य! हे राजा! हे श्रावक! तुम धन्य हो, जो तुमने ऐसे मुनि महाराज के लिए आहार दान दिया। उसकी प्रशंसा करने के लिए देव लोग सामने आकर के खड़े हो जाते हैं और यह सब कुछ वहाँ उस दण्डकवन में होने लगा। इसी के साथ में पुष्पों की वर्षा होती है, पाँच रंग के पुष्प वहाँ पर देव लोग बरसाने लग जाते हैं, यह **चौथा** आश्चर्य होता है। **पाँचवाँ** आश्चर्य होता है कि वहाँ पर रत्नों की वर्षा होती है। जहाँ पर ऐसे मुनि महाराज को ऐसे श्रावक लोग आहार कराते हैं। न श्रावक को पता कि मुनि महाराज कहाँ है और न मुनि महाराज को पता कि यहाँ कोई श्रावक हो सकता है और ऐसी जब कोई अचानक से घटना घटित हो जाती है, तो देव लोग भी प्रसन्न होकर के पंचाश्चर्य करते हैं और ऐसे पंचाश्चर्य वहाँ होने लग जाते हैं।

उन्हीं का वर्णन आगे इस रूप में यहाँ पर है।

रत्न और पुष्प वृष्टि, साथ पंचाश्चर्य होते हैं।
वहीं एक गिद्ध बैठे वृक्ष, पर यह दृश्य लखते हैं॥
मुनि दर्शन से परभव, याद सारे आ गए उसको।
इस भव पापों का फल, रौरव दिक्खा सामने उसको॥
मिटाने पाप अपनी आ गिरा मुनियों के चरणों में।
हुआ सुंदर स्वरूप ऐसा, कहाँ तक हाल वरणूँ मैं॥
पैर पर वैडूर्य मणि सम, चोंच हो गई लाल मूंगे सी।
चमकले स्वर्ण की वह पंख लगते बहुत प्यारे हैं॥
कहा सीता ने ऐ स्वामी भाग्य सुंदर हमारे हैं॥

मुनिराज के चरणों के गंधोदक का प्रभाव अतिशयकारी होता है।

उसी समय पर एक और घटना घटित होती है, इधर मुनि महाराज का आहार होता है, मुनि महाराज बैठे होते हैं। जब आहार दिया जाता है उससे पहले पाद प्रक्षालन किया जाता है और पाद प्रक्षालन का वह जो जल है, वह कुटी के बाहर रखा रहता है। वहीं एक वृक्ष के ऊपर एक गिद्ध पक्षी आ करके वहाँ पर बैठ जाता है। वह गिद्ध पक्षी वह सारा-सारा दृश्य देखता है कि यहाँ क्या हो रहा है? जब दुंदुभि बाजे बढ़ते हैं, तरह-तरह के वहाँ पर आवाजे होती हैं, सारे पक्षी इधर उधर भाग जाते हैं लेकिन गृद्ध पक्षी नहीं भागता। उसे देख कर के सीता के मन में थोड़ा सा क्रोध भी आता है, आकुलता भी होती है और वह कहती है कि देखो! यह कितना ढीठ पक्षी है कि सारे पक्षी इधर-उधर चले गए, भाग गए, यह अभी तक यहीं बैठा है। वह बैठा-बैठा देख ही रहा था कि जहाँ पर मुनि महाराज का गंधोदक रखा हुआ था, उनके चरण धूलाने के बाद में जो जल बचा हुआ जहाँ पर रखा था जिस थाली में, वह गिद्ध उसी समय पर आ करके उस थाली में बैठ जाता है और उनके उस गंधोदक से अपने पूरे शरीर को नहला लेता है। उसी में वह अपने पंख इधर-उधर करके वह पूरे शरीर को उससे अपना स्नान करा लेता है और ऐसा देखते-देखते उसी समय पर उसके पापों का ऐसा प्रक्षालन होता है कि उसका जो रूप कुरूप था, वह एकदम से उस गंधोदक

के प्रभाव के कारण से उसका सुंदर रूप बन जाता है। इतना सुंदर रूप बन जाता है कि उसके जो पैर है, वह वैडूर्य मणि की मतलब नील-नील मणियों की आभा वाले चमकीले उसके पैर बन जाते हैं। उसके पैरों के पंजों की जो उँगलियाँ होती है, वह सब लाल-लाल एकदम से मूंगा मणि की बन जाती है। उसकी चोंच है वह मूंगा मणि जैसी दिखने लग जाती है। उसका पूरा शरीर स्वर्ण की कांति के समान बढ़िया सुंदर दिखने लग जाता है और ऐसा देख कर के वहाँ राम-सीता यह सभी आश्चर्य में पड़ जाते हैं।

मुनिराज गिद्ध पक्षी के पूर्व भव सबको बताते है।

मुनि महाराज वहाँ बैठे ही थे, एकदम से मुनि महाराज के समक्ष भी यह सब दृश्य देखने को आया तो उस समय पर वह सब निवेदन करके मुनि महाराज से पूछते हैं कि यह कौन पक्षी है? इसके लिए ऐसा भाव कैसे बन गया? इसका यह एकदम से काया का रूप, कुरूप से सुरूप कैसे हो गया?

मुनि महाराज उसके कुछ पिछले जन्म की कहानी बताते हैं। बताते हैं कि जिस वन में आप रुके हो, यह दण्डकवन कहलाता है और इसी दण्डकवन का एक दण्डक नाम का एक राजा हुआ करता था। उसी राजा के नाम पर यह वन बना था। यह आज वन है, कभी यह बहुत बड़ी नगरी हुआ करती थी। बहुत बड़ा अच्छा सुंदर शहर हुआ करता था। दण्डक राजा ने कभी कोई ऐसा कृत्य कर दिया कि उसने कभी आवेश में आकर के अनेक साधुओं को उसने विनाश करा दिया। उसने अनेक साधुओं की हत्या करा दी और उसी के पाप के कारण से एक साधु को वह सब देख कर के क्रोध आया और उसके क्रोध के कारण से पूरा का पूरा वन जल गया। यह जो गिद्ध आज यहाँ पर आ करके अपने मन में बैठा बैठा रो रहा है, पश्चाताप कर रहा है और पश्चाताप करने का कारण यह है कि इसे आज मेरे दर्शन होने पर यानी मुनि महाराज को देखने पर इसे अपने पूर्व भव की याद आ गई और इसलिए आज यह सोच रहा है कि मैं कितना नीच था? पूर्व भव में मैंने कितने पाप किए? उस पापों का पक्षालन करने के लिए आज यह गंधोदक में अपने आप को नहला रहा है। उसे याद आ गया है कि यही वह

दण्डक राजा था जो इस दण्डकवन में पहले एक दण्डक राजा के रूप में रहा करता था और इसी राजा ने बहुत सारे मुनि महाराज का वध किया था। जिसके पाप के कारण से यह तिर्यंच योनि में आज यह भटक रहा है और यह गिद्ध बन करके आज सामने आया है। अब इसके पाप के प्रक्षालन का समय आया है।

गिद्ध पक्षी ने मुनिराज से व्रत नियम ग्रहण किए।

यह उन्होंने उसके पूर्व जन्म की कथा उसको जब सुनाई और ऐसा उसका रूप बनते हुए देखा तो सीता के मन में, राम के मन में ऐसे उस गिद्ध के प्रति दया के भाव आ गए, कोमलता के भाव आ गए। वह उस गिद्ध के साथ में अपना इस तरह का भाव करने लगे कि मुनि महाराज ने उनसे कहा कि इस गिद्ध को तुम छोड़ना नहीं। इसे अपने ही पास में रखना क्योंकि उन मुनि महाराज ने उस गिद्ध के लिए उपदेश दे करके उसे मांसाहार का त्याग करा दिया। गिद्ध ने सदाचार को धारण कर लिया। रात्रि में भोजन का त्याग कर दिया। वह गिद्ध बिल्कुल श्रीराम के समक्ष रह करके यह मुंडी हिला करके अपना निवेदन करके और जैसा-जैसा मुनि महाराज बताते जा रहे थे, उसको स्वीकार करके उसने अपने अश्रु जल से बता दिया कि मैं भीतर से प्रायश्चित को धारण करते हुए, हे मुनिराज! जैसा आप बता रहे हैं वैसा ही व्रत का पालन करूँगा। वैसा करने के लिए वह जब कटिबद्ध हो गया। मुनि महाराज ने उसके भावों को समझ लिए तो उन्होंने श्री राम से कहा इसे अपने पास में रखना। नहीं तो दूसरे जंगली जीव इसका वध कर देंगे क्योंकि इसने संकल्प लिया है यह अब किसी की हिंसा नहीं करेगा। यह अब किसी को मारेगा नहीं, यह माँस नहीं खाएगा। ऐसा संकल्प इसके मन में आ गया है और इसी कारण से वह गिद्ध, वह पक्षी उनके पास में रहने लग जाता है। सीता उसके साथ खेलने लग जाती है और वह पक्षी भी उन तीनों के बीच में एक चौथा ऐसा सदस्य बन जाता है, जो मानो उनके परिवार का ही हो गया हो। ऐसा धीरे-धीरे उसे प्रेम मिलने लग जाता है।

राम देखते रह गए काय बदलती जाय।
तीनों को आश्चर्य है, प्रभु महिमा नहीं पाए॥

राम कहे पक्षी तेरी, शुभ गति हो गई आज।
इस भव में ही सब तेरे, पूर्ण हो गए काज॥
मुनि चरणों से सब दूर करें, वह नहीं हटाए हटता था।
आंखों से नीर बहा कर वह, चरणों में शीश रगड़ता था॥
मानो निज पापों का प्रायश्चित, यों करके प्राण छोड़ देगा।
और भाव तपस्या से मानो, स्वर्गीय सुखों को पा लेगा॥
यह देख हाल श्री मुनियों ने, उसको जिन धर्मोपदेश दिया।
उस ज्ञानी पक्षी ने जिसको, निज शीश हिला स्वीकार किया॥
फिर पंचशील व्रत आदि दिए, और सीता जी को समझाया।
सम्यक दृष्टि यह जीव हुआ, इस पर रखनी अपनी छाया॥
यह कह करके चल दिए, नभ मग श्री मुनिराज।
जनक नंदिनी निज कुटी पक्षी को ले आय॥
बड़े प्रेम से रख दिया, उसका नाम जटायु।
तीनों को इमि प्रिय लगे, जिमि प्रिय लगती आयु॥
श्री राम लक्ष्मण ने मिलकर, एक रथ सुंदर निर्माण किया।
शय्या आसन सब का प्रबन्ध, गज से घोड़ों का काम लिया॥
दण्डकवन के रमणीक स्थल, उस रथ से देखे चारों ने।
जायें, माताओं को लायें, घेरा था इन्हीं विचारों ने।
लक्ष्मण से करने लगे प्रकट, इतने में आ बरसात लगी॥
तब मन में निश्चय किया, शरद में बुलवाएंगे मात सभी।
आ गई शरद ऋतु धीरे से, चंद्र की चंद्रिका छिटक उठी।
इस ऋतु में वन विहार कर ले, यह लक्ष्मण के मन बात उठी॥

श्रीराम ने पक्षी का नाम जटायु रखा

यह पक्षी जो गृद्ध पक्षी है, वह इतना सुंदर लगने लगा है, उसकी जटाएँ चमकीली हो गई थी। इसलिए श्रीराम ने उसका नाम जटायु पक्षी रखा था। यह जटायु पक्षी जिसका वर्णन सभी रामायणों में आता है। यहाँ यह जटायु पक्षी इस रूप में वहाँ पर आराम से रह रहा है। पहले यह गिद्ध

था, मांसाहारी था, अब यह पाँच शील व्रतों को धारण करने वाला बिल्कुल सदाचारी बन गया, सम्यग्दृष्टि बन गया। ऐसा यह जीव, यह पक्षी, उनके घर का एक सदस्य की तरह रहने लगा। जब-जब सीता उसे बुलाती थी वे उनके पास आ जाता था, सीता उसके साथ खेलती थी। वह अगर कोई भी गाना गाती थी, नाचता था, इस तरह से यह पक्षी उनके साथ रम गया था। ऐसे पक्षी के साथ में वहाँ पर रहते हुए जब श्रीराम के मन में विचार आया कि देखो! अब हमने अपना यहाँ पर अच्छा निवास स्थान बना लिया है। सब कुछ उनके आसपास घोड़े, हाथी, सब कुछ उन्हें जंगलों में ही मिल गया और अब उनके मन में आया अब हम अपनी माँ कौशल्या को यहीं बुला करके लाए। जो हम कह करके आए थे कि जब हम अपने स्थान पर पहुँच जाएँगे तब हम तुम को बुलाने आएँगे। मन में विचार करते-करते फिर राम जी के मन में आया कि अभी रुक जाते हैं, वर्षा काल का समय है आवागमन में दुविधा होगी। जब यह वर्षा काल चला जाएगा तब उसके बाद में शरद ऋतु का समय आएगा, जब सब जगह स्वच्छ वातावरण हो जाता है तब बुला करके लाएँगे। ऐसा विचार करके उन्होंने पूरा चातुर्मास का समय वही निकाला और उसके बाद में जब वह शरद ऋतु का समय आता है, वन में विहार करते हैं। लक्ष्मण जी के लिए इधर-उधर घूमने का मन बहुत होता है और वह कभी-कभी जैसे ही मौका पाते हैं कि उन्हें समय मिलता है कि अब हम निश्चिंत हैं, राम और सीता की थोड़ी सी देखभाल किए बिना भी हम इधर उधर घूम सकते हैं तो वह लक्ष्मण जी इधर उधर घूमने निकल जाते हैं और इसी स्थिति में वहाँ पर एक बहुत बड़ी घटना घटती है।

सीता हरण की पृष्ठ भूमि कैसे तैयार होती है?

जो घटना आगे एक किस रूप में सामने आती है, यह उसकी पृष्ठभूमि है। सीता हरण जो होता है उसकी बहुत बड़ी पृष्ठभूमि है और उस पृष्ठभूमि को हर एक बंधु को अच्छे ढंग से सुनना भी है, पढ़ना भी है, समझना भी हैं कि क्यों सीता का हरण हुआ और वह सीता के हरण के पीछे कौन सी कहानी थी? वह कहानी अब आपके सामने आती है-

गुरू कथा सुनाए राम रतन गुण धाम की,
गुरू कथा सुनाए राम रतन गुण धाम की।
है पद्मपुराण में पुण्य कथा श्री राम की,
है पद्मपुराण में पुण्य कथा श्री राम की।

अब वह श्री राम वहाँ पहुँचते हैं, यह वर्णन **कर्णरवा नदी** के पास का है। इस कर्णरवा नदी के उस पार जाने का उनका मन बन चुका था और उस पार जाने कि उन्हें इतनी ललक थी कि उनके शरीर में रोमांच उत्पन्न हो जाते थे कि हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ भूमिगोचरियों का प्रवेश बंद हो जाता है। जहाँ उनका पहुँचना कठिन हो जाता है, जहाँ भरत की आज्ञा नहीं चलती है। हम उस दण्डक वन के भी उस अंतिम छोर पर चलें और वहाँ पहुँचने के लिए वह बिल्कुल समुद्र के किनारे पर पहुँच जाते हैं। जो समुद्र का किनारा उस दण्डकवन का आखरी किनारा होता है और वहाँ के बाद में विजयार्ध और विद्याधरों के वहाँ पर नगरों के राजाओं का आवागमन होता है। ऐसे उस दण्डक वन के अंत में एक क्रौंचरवा नदी पड़ती है और जो समुद्र के उत्तर तट के बीच में है। वह जो स्थान है, वंशस्थल पर्वत का स्थान कहलाता है और वहाँ पर बांसों की बहुत बड़ी बड़ी झाड़ियाँ होती हैं। उन झाड़ियों में एक **शम्बूक** नाम का व्यक्ति वहाँ पर कुछ विद्या सिद्ध करने के लिए बैठा होता है। उसकी बात अब आपके सामने आगे आती है। क्या कर रहा होता है?

रावण तीन खंड का अधिपति और राक्षस वंश का राजा

लक्ष्मण जी राम जी की आज्ञा लेकर गए इधर-उधर घूमने निकलते हैं और उन्हें क्या दिखाई देता है? यह सब आगे आप पढ़ेंगे।

आज्ञा लेकर भ्रात से, लखन घूमने जाय।
वन में थोड़ी दूर पर, अजब सुगंधी आय॥
अचरज भर के मन में लक्ष्मण, जब तक सुगंधी की खोज करे।
श्रोताओं सुनो ध्यान करके, उस गंध का सारा हाले कहें॥
दक्षिण दिश में सागर के मध्य, लंका अनूप रजधानी थी।

प्रति नारायण रावण राजा, की चले जहाँ मनमानी थी॥
अठदश सहस्त्र रानियों मध्य जीवन की मौज उड़ाता था।
था तीन खंड का वह राजा, राक्षस वंशी कहलाता था॥
रावण से छोटे कुंभकर्ण और सबसे लघु विभीषण थे।
थे पूर्व कर्म के उदय, भाग्य से तीनों ही तेजस्वी थे॥
रावण पंडित विद्वान बड़ा, जिन शासन के पालनहारा।
विद्याएँ बहुत थी सिद्ध उसे और न्याय नीति जानन हारा॥
थे इंद्रजीत और मेघनाथ, दो पुत्र बड़े ही बलधारी।
और चंद्रनखा सुंदर भगिनी जो, खरदूषण की वर नारी॥
पाताल लंक में चंद्रनखा, संग खरदूषण सुखराज करें।
दोनों आँखों से दो कुमार, शम्बूक और सुन्दर भाग मेरे॥

अब यहाँ पर यह रावण का चित्रण आया है, film में जब तक नायक के साथ में खलनायक का दृश्य न हो तो film का आनंद बढ़ता नहीं है लेकिन आप पहले से जानते हैं कि film में क्या होने वाला है? कभी-कभी देखी हुई फिल्म को भी बार-बार देखने में भी एक रोमांच आता है और आनंद बढ़ता है। यह रावण का यहाँ पर छोटा सा वर्णन किया, सबसे बड़ी बात यह जानने की है कि रावण राक्षस वंश का बहुत बड़ा राजा था, तीन खंड का अधिपति। यह बहुत बड़ी भूमियों का स्वामी था और यह राक्षस वंश का राजा इसलिए कहलाता था क्योंकि यह जीवों की रक्षा करना, प्रजा की रक्षा करना, इसका काम था। आप इसको राक्षस के रूप में न ले। **राक्षस** शब्द संस्कृत साहित्य के अनुसार रक्षा करने के अर्थ से बनता है। जो रक्षा करने वाला होता है- उसे राक्षस कहते हैं। **जैसे रघु का राघव बनता है, मनु का मानव बनता है,** ऐसे **'रक्षस्'** शब्द से राक्षस शब्द बनता है। यह राक्षस वंश का था, जिसके वंश में इसके दादा, इसके पूर्वज, हमेशा प्रजा की रक्षा करने के लिए तत्पर रहते थे।

रावण की बहन का नाम चन्द्रनखा था

ऐसे यह राक्षस वंश का एक बहुत बड़ा राजा था और **इसकी जो बहन थी**

जिसका नाम था चंद्रनखा। जिसका नाम आप लोगों ने क्या सुन रखा है? **शूर्पणखा**, कोई बात नहीं नाम उसका नख के साथ ही जुड़ा है। नख उसके नख मतलब नाखून उसके सूर्य के समान है, चंद्रमा के समान है, यह चंद्रनखा की स्थिति है।

वन में शम्भुक सूर्यहास खड्ग विधा की सिद्धि कर रहा है

वह चंद्रनखा का विवाह किससे हुआ है? खरदूषण से, सब को ज्ञात है। उन्हीं चंद्रनखा और खरदूषण से उनके दो पुत्र उत्पन्न हुए। एक का नाम था शम्बूक और एक का नाम था सुंदर। ये दो पुत्र उनके हुए और चूँकि ये विद्याधरों के राजा थे, सब को विद्याएँ सिद्ध करने की होती हैं तो इसमें जो शम्बूक नाम का यह जो पुत्र था, यह पुत्र अपनी विद्या सिद्ध करना चाहता था। एक सूर्यहास खड्ग होती है, **सूर्यहास खड्ग!** क्या नाम है? खड्ग मतलब तलवार। यह देवताओं के द्वारा प्रदान की जाती है। इस तलवार को सिद्ध करना मतलब हजारों देवताओं को अपने हाथ में रख लेना। ऐसी इस सूर्यहास खड्ग को सिद्ध करने के लिए लक्ष्मण का उस स्थान पर जाना हुआ, जहाँ पर यह शंभुक उस सूर्यहास खड्ग को सिद्ध करने के लिए बैठा हुआ था और यह सिद्धि उसने जो की थी बहुत लंबी तपस्या के साथ की थी। ध्यान रहे कि यह रावण का एक तरह से भानजा हुआ और यह उसी जंगल में वह सिद्धि कर रहा है, जहाँ पर राम, लक्ष्मण, सीता पहुँच चुके हैं। देखो! व्यक्ति कहीं न कहीं अपने कर्म का मारा ही होता है। हम चले जा रहे हैं, कहीं से कहीं तक पहुँच रहे हैं, यह समझ कर चलना कि कर्म हमें वहाँ तक ले जा रहा है। कौन ले जा रहा है? **'कर्म प्रधान विश्व करि राखा जो जस करहिं सो तस फल चाखा'** यह हमेशा वाक्य याद रखना। यह विश्व कर्म प्रधान है। हर व्यक्ति के अपने-अपने कर्म किसी किसी स्थान पर जाकर के फलेंगे, वह कर्म उसे वहाँ तक ले जाएँगे और उन कर्मों के माध्यम से उसकी किस तरह से अपने आप से यहाँ पर संयोजना हो जाती है, यह आपको यहाँ पर बहुत अच्छे ढंग से समझने को मिलेगा।

खड्ग सूर्यहास सिद्ध करने कुमर शम्भुक वन आया।
बैठा बांसों के बीड़े में, नहीं कुछ मन में भय लाया॥

वर्ष बारह किया साधन, हुई खड्ग सिद्धि थी भारी।
चार दिन हो गए लेकिन, उठा लेने न बलधारी॥
सिद्धी पश्चात् जो साधक, सात दिन तक नहीं लेवे।
तो साधक का वधिक हो खड्ग, नियोगों में यही आवे॥
खड्ग की ही सुगंधी थी, दिव्य महकार वो सारी।
खोजते आन लक्ष्मण ने, खड्ग वह ले लिया भारी॥

शम्भुक ने बारह वर्ष तक सूर्यहास खड़ग प्राप्त करने के लिए साधना की।

देखो! कोई बारह वर्ष से साधना कर रहा है, कितने वर्ष से? बारह वर्ष से उसने साधना की। कहाँ बैठकर के साधना करता है? बांसों के बीड़े में, बांसों के बीच में स्थान बना करके वहाँ पर बिल्कुल एकांत में कोई भी न आ पाए ऐसी वह शम्बूक बारह वर्षों से साधना कर रहा है। सूर्यहास खड्ग रूपी उस विद्या की सिद्धि करने के लिए और उस साधना के साथ में उसके अनेक नियम है। वह एक ही अन्न का भोजन लेता है, ब्रह्मचर्य का पालन कर रहा है। हर तरह के सदाचार के नियमों को निभाते हुए, पूरी संयम के साथ में, एकाग्रता के साथ में उसने वह सिद्धि की और उसके बारह वर्ष पूरे हो चुके। बारह वर्ष पूरे होने के बाद में वह सूर्यहास खड्ग उसके सामने आ गया। उन्हीं बांस के झुंडों में लटकने लग गया लेकिन उस सिद्धि के उपरांत एक नियम था कि जो सिद्धि होने के बाद भी यह सात दिन तक यह खड्ग जो नहीं उठाएगा तभी वह उस साधक के काम में आएगा। अगर उसने सात दिन धैर्य नहीं रखा और बीच में ही उस खड्ग को उठा लिया तो वह उसी के द्वारा उसकी मृत्यु हो जाएगी। विद्या सिद्धि के अनेक नियम होते हैं। बारह वर्ष उसके पूरे हो चुके थे। सूर्यहास खड्ग उसे सिद्ध हो चुका था। वह उस बांस के झुंड में लटक रहा था। उसका तेज सूर्य की ह्रास करने वाला, सूर्यह्रास मतलब सूर्य का भी प्रकाश जिसके सामने मंदा पड़ जाए और उसी तलवार से वह सुगंधी महक रही थी, जो सुगंधी लक्ष्मण के नाक तक पहुँची। जब लक्ष्मण वहाँ घूमने निकले तो वह घूमते-घूमते उस सुगंधी के आकृष्ट से वहाँ पर पहुँचे कि यह सुगंधी कहाँ से आ रही है?

वह कौतूहल उनके अन्दर हुआ और वह वहाँ तक पहुँचे, जहाँ वह तलवार लटक रही थी। भीतर बांस के उस बीड़े में कौन बैठा है, उन्हें पता नहीं था। बाहर वह तलवार लटक रही थी, सूर्य के समान तेजस्वी तलवार थी और उस शम्भुक के लिए जो समय था, वह समय केवल सात दिन में से उसके लिए तीन दिन और बचे थे चार दिन उसको हो गए थे।

पूर्व पुण्य से लक्ष्मण का सौभाग्य जाग गया

देखो! पुण्य किसे कहते हैं? भाग्य किसे कहते हैं? अर्जित कोई करता है, भोगता कोई है। ऐसा भी होता है कि नहीं होता? कमाता कोई है, खाता कोई है। विद्या सिद्धि कोई कर रहा है और विद्या किस को मिलने वाली है? यह दृश्य आपके सामने आ रहा है। इसे कहते हैं- कर्मों का फल। आदमी बारह-बारह वर्ष से जो अर्जित करता है, साधना करके जो कमाता है, उसे

पुण्यवान व्यक्ति एक झटके में आकर के ले लेता है। लक्ष्मण घूमते घूमते वहाँ आते हैं। उस शम्बूक के लिए बारह वर्षों से उसकी माँ जिसका नाम चंद्रनखा है, वह चंद्रनखा उसके लिए भोजन ले करके आती थी। केवल सात दिन में भी अब उसके मन में इतना धैर्य नहीं रह रहा था, वह रोजाना नाचती थी, खरदूषण के पास जा करके कहती थी, देखो! मेरे बेटे को विद्या सिद्ध हो गई। तलवार सामने दिख रही है, बस तीन दिन और बचे हैं, बस दो दिन और बचे हैं। ऐसा विचार करते हुए उसके मन में बहुत हर्ष उत्पन्न हो रहा था और वह प्रतिदिन भोजन ले करके आती थी और उसको वहीं पर उसी स्थान पर भोजन करा करके देख करके चली जाती थी। इस तरह से यह कार्य बारह वर्ष से चल रहा था। सुन रहे हो? बोलो तो क्या समझ में आ रहा है?

यह बहुत बड़ी घटना है, आप सोचो! जंगल में भी सौभाग्य मिल रहा है, अनेक-अनेक चीजों का, अनेक-अनेक तरह की विद्याओं का, यह सब पूर्व पुण्य के उदय से प्राप्त होता चला जाता है। वह सौभाग्य कभी-कभी किसी विशिष्ट घटना का कारण भी बन जाता है। जब वह सुगंधी को सुँघते-सुँघते लक्ष्मण जी वहाँ आते हैं तो उन्होंने जैसे ही वह तलवार देखी, वह तो

अपनी धुन में थे ही, उन्होंने तलवार देखी तो उन्होंने तलवार, उन्हें न किसी से पूछना, न किसी को देखना, न कुछ समझना, उन्होंने वह तलवार वहाँ से अपने हाथ में उठा ली और तलवार को देख रहे हैं। बहुत चमकदार है, बहुत मजबूत है, बहुत पैनी है और उसको आजमाने के लिए उन्होंने उसी बांस के बेड़े में उस तलवार को चला दिया। क्या हुआ? वह शम्बूक उसी के अन्दर बैठा था, उसके दो टुकड़े वहीं पर हो गए।

खड्ग लिया जब हाथ में, मन में उठा विचार।
इस बीड़े पर चला कर, देखें इस की धार॥
देखे इसकी धार कि कैसी, सिफ्त का है यह स्वामी।
देव हजारों सेवा में हैं, खड़े खड्ग के नामी॥
इधर चलाया कटा शीश, शम्बूक बांस का बीड़ा।
कौन मरा निर्दोष सोच, यह व्यापी मन में पीड़ा॥

शम्भुक की मृत्यु से राम और लक्ष्मण बहुत दुःखी होते है।

उस समय पर जब वह उसका खून उस तलवार में लग गया, वह उसका धड़ एकदम से कट कर गिर पड़ा। एक तरफ तो यह दृश्य है और दूसरी तरफ हजारों देवता वहाँ पर आ करके जय-जयकार करने लगे और लक्ष्मण के समक्ष आकर के हाथ जोड़ करके खड़े हो गए। मैं आपकी दासता स्वीकार करता हूँ, आप मेरे स्वामी हैं। जब भी आप मुझे जो आज्ञा देंगे मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। हजारों देवता उनके चरणों में आकर के नतमस्तक हो गए। जो देवताओं के माध्यम से वह खड्ग सिद्ध हो करके उस शंभुक के हाथ में आना था, वह खड्ग सिद्ध हो करके लक्ष्मण के हाथ में आ गया और लक्ष्मण उन सब खड्गो के साथ में उन देवताओं का भी राजा बन गया। इधर एक बहुत बड़ा खून हो गया और वह नादानी में हो गया, अनजाने में हो गया। लक्ष्मण ने जानबूझ करके उसको मारा नहीं था। वह तो उन्होंने उस तलवार की धार देखने के लिए उस पर चलाया और जब वह चल गया तो एक बहुत बड़ा अनर्थ हो गया और फिर उस अनर्थ के बाद देखो क्या होता है?

लिये मन भारी लौटे जी, राम तब लखन संबोधे जी।

जब सारा हाल सुनाया
सुन संबोधन राम खड्ग, को लक्ष्मण शीश लगाया॥

उस समय पर बहुत देर हो चुकी थी, राम परेशान हो रहे थे कि लक्ष्मण कहाँ चला गया है? बहुत देर से दिखाई नहीं दे रहा है? राम जी ने सीता से कहा कि लक्ष्मण कहाँ गया? कितनी देर से नहीं आया? सीता ने देखा इधर-उधर, नहीं दिखाई दिया। उन्होंने जटायु पक्षी से पूछा, वह जटायु जब तक देखने के लिए तैयार होता है तब तक सीता भी इधर-उधर देख रही होती और उसे दिखाई देता है कि बहुत चमकता हुआ कुछ हाथ में वह ले करके लक्ष्मण सामने आ रहा है। वह राम से कहती है कि देखो! देखो! वह आ रहा है और जब उसके हाथ में वह तलवार देखते हैं तो वह कहते हैं यह क्या आ गया? यह क्या करके ले के आया? यह कहाँ से तुझे तलवार मिल गई? तब लक्ष्मण ने सारा वृत्तांत सुना दिया, जैसा कुछ जंगल में घटित हुआ, वन में घटित हुआ। उसको सुन करके श्री राम जी प्रसन्न भी हुए और उदास भी हुए। प्रसन्न इसलिए हुए कि तुमने बहुत बहादुरी का काम कर लिया कि यह तलवार तुम ले आए। सूर्यहास खड्ग तुम्हारे हाथ में आ गया लेकिन तुमने एक वध कर दिया। इस वध का पाप भी हम को भोगना पड़ेगा क्योंकि किया हुआ कर्म, किया हुआ कृत्य, इसका जो पाप है वह पाप हमारे ही माथे पड़ेगा। यह पाप हमको छोड़ेगा नहीं। जो जैसा कर्म करता है, उसे उसका फल भोगना पड़ता है। चाहे वह कितना ही बड़ा महापुरुष हो, चाहे वह कितना ही बड़ा राजा हो, चाहे वह किसी भी वंश का हो, यह कर्म किसी को छोड़ते नहीं और इस बात के कारण से कि आज एक पंचेन्द्रिय जीव का वध हो गया वह थोड़ा सा उदास थे और उसी उदासी के समय पर एक और सामने वह बात आती है।

चन्द्रनखा का राम और लक्ष्मण मोहित होकर पुत्र वियोग को भी भूल जाती है।

हर्षित तीनों हो रहे, आगे सुनो बयान।
भोजन लेकर आई थी, चंद्रनखा उस थान॥

जब तीनों उस समय पर हर्षित भी थे, मन में भारीपन भी था और उसी समय पर वह चंद्रनखा अपने बेटे शम्भूक के लिए भोजन ले करके आई थी।

बाँसों का बीड़ा कटा देख, शम्बूक मरा जब पाया है।
तब देख पुत्र की हालत को, रो रो कर रुदन मचाया है॥
हत्यारे ऊपर क्रोध बढ़ा, वह करती खोज उधर आई।
जहाँ राम लक्ष्मण सीता बैठे, तीनों पर अद्भुत छबि छाई॥
श्री राम को देख मोहित हुई, और क्रोध भी सारा नष्ट हुआ।
है काम की माया क्या विचित्र, सब पुत्र मोह भी नष्ट हुआ॥
क्वारी कन्या का रचा स्वांग, एक वृक्ष तले बैठी रोती।
सुन सीता को करुणा उपजी, आकर के पास धैर्य देती॥
श्री राम कहे क्यों रोती हो, हो कौन कहाँ से आई हो।
इकली वन में कैसे फिरती, कहाँ बाप तुम्हारा भाई हो॥

क्या होता है? देखो! परिणतियाँ जीवों की कैसी-कैसी होती हैं? वह चंद्रनखा इधर रोने लगी और रोते-रोते इधर-उधर जंगल में ढूँढने लगी कि मेरे बेटे को किसने मार दिया? मेरे बेटे को किसने काट दिया? यह वध किसने किया? उसे कोई दिखाई नहीं दिया। दूर उसे वह राम-लक्ष्मण दिखाई दिए और दूर से उनका रूप देख करके वह ऐसी मोहित हो गई राम लक्ष्मण के ऊपर कि वह अपने पुत्र का दुःख भूल गई, शोक भूल गई। वह जो रो रही थी उस रोने का उसके अन्दर वह भाव भी चला गया और वह उनके रूप को देख करके ऐसी मोहित हुई कि वह भी विद्याधरी थी, वह भी अनेक तरह से विक्रिया करके रूप बदलना जानती थी, उसने तुरंत ही एक नवयुवती का रूप बना लिया। ऐसा रूप बनाकर के एक नवकन्या का रूप बनाकर के वह एक वृक्ष के नीचे बैठ करके वहाँ पर उन्हीं के आसपास इस तरह से रोने लगी कि उनके पास तक आवाज पहुँच जाए। वह राम-लक्ष्मण की कुटी के आसपास वह वृक्ष के पास नीचे बैठकर के रोने लग गई। उसकी करुण आवाज सुनकर के सीता को दया आई, वह उनके पास पहुँची, धैर्य बनाया और श्री राम के पास में वह पहुँच करके उस घटना को

बताती है। श्री राम भी वहाँ देखने जाते हैं और श्री राम उससे सबसे पहले पूछते हैं कि तुम इतनी सुंदर रानी, इतनी सुंदर कन्या हो करके यहाँ जंगल में अकेले क्यों भटक रही हो? कौन है तुम्हारे घर के लोग? यह वहाँ पर पूछते हैं तो वह उनके लिए उत्तर देती है,

बताऊँ क्या तुम्हें साजन, निशां अपना पता अपना।
मरे माता-पिता दोनों, न कोई आसरा अपना॥
अकेलेपन से घबड़ाती बनी में, आई जाँ देने।
मुसीबत है हर तरफ छाई, सुखों के दिन हुए सपना॥
शरण हूँ आपकी अब तो, मुझे वर लीजिए स्वामी।
करूँ सेवा मैं तन मन से, नाम नित आपका जपना॥
सुने खोटे वचन उसके, तो तीनों मौन हो बैठे।
नहीं उत्तर मिला कोई चली, पति पर जो था अपना॥

क्या कहती वहाँ आ करके? मेरे माता-पिता मर चुके हैं, मैं अकेली हूँ, मेरा कोई सहारा नहीं है। मैं अकेली घबड़ाती हूँ, इस वन में आई थी। मैं मरना चाह रही हूँ लेकिन आपको देखकर मुझे सहारा मिल गया। मैं तन-मन से आपको चाहती हूँ। आप मुझे स्वीकार कर ले तो मैं अपना मरण का यह प्रण जो मैं ले करके बैठी हूँ यह छोड़ दूँगी।

श्रीराम चन्द्रनखा के खोटे भाव समझ जाते है

सुन रहे हो? देखो! यहाँ पर महापुरुषों की कुलीनता और उनका विवेक नजर आएगा। भले ही उन्हें अकेले जंगलों में कई बार वनमाला मिली, जितपद्मा मिली, सबसे उन्होंने ब्याह रचा लेकिन आज जब उनके सामने यह आई और इसके वचन सुने तो अपने आप श्रीराम के मन में भास गया कि यह कुछ खोटे वचन हैं। यह कोई कुलिन नारी नहीं है, यह गलत बोल रही है, इसके अन्दर झूठ है, यह उन्होंने भाँप लिया। क्योंकि उसकी जो हालत थी, उसका जो कहने का तरीका था और उस तरह से वह जो अपनी बात बता रही थी, वह उन श्री राम को भास गई कि यह कोई बहाना बना रही है। वह श्रीराम के किसी भी तरह से इशारे को समझ नहीं पाने के कारण से, श्रीराम का कोई भी इशारा उसके लिए नहीं मिलने के कारण

से, तीनों उस समय पर श्री राम, लक्ष्मण और सीता वहाँ से वापस लौट आते हैं। उस स्थान से हट कर के आ जाते हैं लेकिन वह जो चंद्रनखा थी वह मोहित थी राम पर भी, लक्ष्मण पर भी। वह तो यह चाह रही थी, चाहे मुझे लक्ष्मण स्वीकार कर ले, चाहे मुझे राम स्वीकार कर ले, कोई भी मुझे स्वीकार कर ले लेकिन राम ने उसकी जब बातों को सुना तो उनके मन में विचार आया कि इसके वचन खोटे हैं, इसका भाव खोटा है। यह एक कुलीन नारी की यह भाषा नहीं हो सकती है। यह कोई अच्छी नारी नहीं है, ऐसा विचार करके वहाँ से हट आए लेकिन लक्ष्मण के मन में उसके रूप को देख करके उससे मोहित होने का भाव बना रहा। भाई के सामने लक्ष्मण कुछ कह न सके, वह लौट आए लेकिन लक्ष्मण के मन में विचार आया कि भाई ने क्या किया? इतनी सुंदर नारी को जो दया के कारण से भीख माँग रही थी, सबको हम आसरा दिए फिरते हैं, उसको भी आसरा दे देते, उसको भी अपना लेते। लक्ष्मण के मन में यह विचार आया और लक्ष्मण फिर उन विचारों के साथ में उससे मोहित हुआ। बाद में समय पाकर के राम को अपनी कुटी में पहुँचा करके, उनकी थोड़ी सेवा करके, बाद में उसको ढूँढने निकला तब तक वह चंद्रनखा वहाँ से चली गई और फिर लक्ष्मण उसको ढूँढता रहा। वह उसको नहीं मिली और नहीं मिली तो निराश हो कर के फिर लक्ष्मण वापस राम के पास में आ गए।

चन्द्रनखा अपने राजमहल में पहुँच कर खरदूषण के सामने नाटक रचती है

लेकिन वह चंद्रनखा अब क्या करती है? उसका बहुत बड़ा अपमान हो गया। क्या अपमान हो गया? उसे इन दोनों ने स्वीकार नहीं किया। इस अपमान का दंश ले करके वह अपने राजमहल में पहुँचती है और वहाँ पर क्या नाटक रचती है? यह अब आपके सामने आता है -

मर्यादा पुरुष श्री राम है, सिद्ध प्रभु बलराम
जो स्वार्थ मोह को तजके, उपकार लोक का करके।
अपवाद का रखते ध्यान, पाते खुद में सम्मान।
प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम।

मर्यादा पुरुष श्री राम, है सिद्ध प्रभु बलराम

जब वह चंद्रनखा खरदूषण के पास पहुँचती है और खरदूषण उसका कुछ बेहाल देखता है, तो वह हाल देख करके क्या सोचता है?-

निज नारी का देखकर, यह वित्रस्त सा हाल।
खरदूषण कहने लगे, यह क्या प्रिये हवाल॥

उस नारी ने वहाँ जा कर के अपना वह हाल कर रखा था। खुद उसने अपने हाथ से अपने वस्त्रों को फाड़ डाले, अपने मुँह पर, अपनी छाती पर कुछ नाखून लगा लिए और जा करके इस तरह का हाल अपने पति को सुनाया कि मुझसे एक व्यक्ति ने, दोनों व्यक्तियों ने जंगल में जबरदस्ती की और जब मैं उनसे जान बचा करके जैसे-तैसे यहाँ पर आ पाई तो मैं इस हाल में आपको दिखाई दे रही हूँ। ऐसा उसने अपने पति खरदूषण के सामने यह नाटक किया और यह नाटक को देख करके वह क्रोधित होता है और फिर उसके बाद की कहानी कुछ और ही हो जाती है।

यह क्या प्रिये हवाल, जरा सब साफ-साफ बतलाओ।
किसका आया काल, नाम तुम उसका मुझे बताओ॥
बोली चंद्रनखा ले हिचकी, दो तापस सुकुमारा।
साथ में हैं एक सुंदर नारी, काम उन्हीं का सारा॥
पुत्र भी मेरा मारा जी, खड्ग हर लिया विचारा जी।
धर्म मम हरना चाहा।
दण्डकवन से भाग, शरण आ अपना शील बचाया॥

यह कहती है, खर दूषण से आ करके कि उस दण्डकवन में वह दो कुमार हैं, जिनके पास में एक नारी है और उन्हीं ने मेरा यह सारा हाल कर रखा है। उन्हीं ने मेरा पुत्र मार दिया और बाद में मैं अपना शील बचा करके जैसे-तैसे यहाँ तक आ पाई। यह वहाँ पर आ करके उसने खरदूषण से कह डाला।

खरदूषण ने जब सुना, छलिनि से यह हाल।
क्रोधाग्नि में जल उठा, आँखें हो गई लाल॥
सेनापति मंत्री बुलवाये, और युद्ध की तैयारी है।
रावण पर भेजा दूत कहा, हम चाहते मदद तुम्हारी हैं॥

और इधर सभी राजाओं सहित, खरदूषण युद्ध को जाता है।
सीता ने कहा प्रभु देखो तो, यह कौन गर्जता आता है॥
भय से व्याकुल हो गई सीया, श्री राम ने धैर्य बंधाया है।
कोई सिंह वगैरह ही वन में, यह त्रास दिखाने आया है॥
फिर शत्रु का दल देख लिया, तो समझ गई माया सारी।
शम्बूक हना और खड़ग लिया, उसके बदले की तैयारी॥
उठ गए राम बख्तर पहना, और दृष्टि धनुष पे धारी है।
लक्ष्मण बोले मेरे होते, क्यों आपने की तैयारी है॥
जाऊँगा अकेला और सभी, पे विजय प्राप्त कर आऊँगा।
यदि भीड़ पड़ी तो सिंहनाद, कर आपको मैं बुलाऊंगा॥
चल दिए लखन इतना कहकर, खरदूषण सन्मुख लाया है।
वह खरदूषण चौदह सहस्त्र, विद्या स्वामी कहलाया है॥
विद्याधर नभ के मध्य और, भूमि पर लखन अकेले थे॥
मायावी नरेशों के लाखों, ही वार इन्होंने झेले थे।
रावण सुनकर पैगाम तुरंत, ही लंका से चल देता है॥
वन बीच राम के निकट सती, सीता को देख वह लेता है।

लक्ष्मण खरदूषण और विधाधरों से अकेले ही युद्ध करते हैं

क्या होता है? जब खरदूषण को क्रोध आया तो वह अपने सभी राजाओं के साथ में गर्जना करता हुआ अपनी सेना को लेकर के उधर चलता है और दण्डकवन में जो वह सेना आते हुए दिखाई देती है, तो सीता उस समय पर डर जाती है। बहुत भयंकर वह नाद करती हुई, शब्द करती हुई, कोलाहल करती हुई, वह सेना का आगमन चारों तरफ से दिखाई देता है। वह विद्याधारों की सेना होती है, वह विद्याधर राजा होते हैं, जो आकाश में भी हल्ला करते हैं और जमीन पर भी हल्ला करते हैं। वह जमीन पर भी बहुत भारी सेना ले करके आए। आकाश में भी बड़े-बड़े योद्धा खड़े हो गए और जब यह सब देखा तो तुरंत राम और लक्ष्मण तैयार हुए और जब तैयार हुए तो लक्ष्मण ने कहा आपको वहाँ जाने की जरूरत नहीं है। आप यहीं पर

सीता को देखें, यहीं पर आप रुके इस कृत्य के लिए हम पर्याप्त हैं। लक्ष्मण अपना कवच धारण करके, उनके पास में एक विशिष्ट कवच होता है जो शत्रु के बाणों से उनकी रक्षा करता है। अपना धनुष बाण ले करके, वह सूर्यहास खड्ग ले करके, तमाम विद्याएँ उनके साथ में भी हैं लेकिन सेना नहीं है, वह अकेले हैं और वह लक्ष्मण स्वयं वहाँ चलने के लिए तैयारी करते हैं। वह जब वहाँ पर जाने लगते हैं तो वह अकेले जाते हैं। सेना बहुत भारी होती है, राम सोचते हैं यह अकेली सेना को कैसे विजय प्राप्त करेगा? फिर भी उनको लक्ष्मण पर विश्वास है और लक्ष्मण जाते-जाते राम से कहते हैं कि यदि हमें जरूरत पड़ी, यदि मुझे आवश्यक लगा तो मैं वहाँ पर लड़ते-लड़ते एक सिंहनाद करूँगा। उस सिंहनाद को सुन करके यह समझ लेना आप कि मैं आपको बुला रहा हूँ अन्यथा मैं आपको जब तक न बुलाऊँ तब तक आप सीता के पास ही रहना। इन्हें छोड़ करके अकेला मत जाना, ऐसा आपस में सब लोग विचार करके वह लक्ष्मण को जाने देते हैं और लक्ष्मण से यह बात कह कर के कि जब सिंहनाद लक्ष्मण करेगा तभी वह राम वहाँ पहुँचेंगे। यह बात राम को ज्ञात हो जाती है और राम उस समय पर उस लक्ष्मण को अकेले जाने की तैयारी करने की और अकेले जाने की उसे आज्ञा दे देते हैं।

लक्ष्मण अकेला ही खरदूषण के चौदह हजार राजा उसके साथ में हैं, चौदह हजार विद्याओं का वह स्वामी है। उन सब के बीच में वह राजा लोग जो विद्याधर थे, वह आकाश में डटे हुए हैं और लक्ष्मण अकेला धरती पर खड़ा है। उस भूमि पर अनेक मायावी नरेश, मायावी मतलब अनेक तरह की माया रचने वाले, विद्याओं के माध्यम से अनेक तरह के रूप धारण करने वाले, अनेक लाखों राजा उसके सामने हैं और उन सब के बीच में लक्ष्मण जमीन पर अकेला खड़ा हुआ उनके बाणों का प्रहार सहता है। उनसे लड़ता है और उस समय पर इधर युद्ध हो रहा होता है।

रावण का सीता को देख कर मोहित हो जाना

खरदूषण ने रावण के लिए भी वह पैगाम भेज रखा था कि आपको भी सहायता करने के लिए आना है क्योंकि खरदूषण को ज्ञात हो गया था

कि इस सूर्यहास खड्ग को हाथ में लेने वाला कोई सामान्य व्यक्ति नहीं हो सकता और यह तलवार जिसने अपने हाथ में ली है, उस से युद्ध करना भारी पड़ सकता है। इसलिए जब रावण को यह सारा समाचार पहुँचाया कि तुम्हारा भानजा एक तरह से मृत्यु को प्राप्त हो गया है। रावण उसके लिए भी देखना आना चाहता था, अपनी संवेदनाएँ खरदूषण के साथ रखने के लिए भी उसका आना जरूरी था और रावण लंका से चल करके उधर उस दण्डकवन में आता है और रावण को भी उस समय पर वहाँ आते-आते सबसे पहले वह युद्ध करने बाद में जा पाता है पहले उसको कुछ और वहाँ दिखाई दे जाता है। सामने वहाँ पर सीता बैठी होती है। राम उसके पास खड़े होते हैं और वह उस सीता के रूप को देखकर के मुग्ध होता है। सीता का रूप अनुपम था जो वर्णन में नहीं आ सकता, लख सुधि अपनी रावण भूला अब युद्ध में भी न जा सकता। वह आया था खरदूषण की सहायता करने के लिए, युद्ध में जाने के लिए लेकिन वह सीता के रूप में ऐसा मोहित हुआ कि वह वहीं का वहीं खड़ा रह गया और अपने मन में तरह-तरह से विचार करने लगा कि अगर यह सीता हमारे हाथों में नहीं आई, हमारे भुजाओं में नहीं आई तो हमारी इन भुजाओं का कोई अर्थ नहीं, कोई प्रयोजन नहीं। ऐसा वह मति का मारा वहीं के वहीं स्तब्ध हो गया और उस समय पर वह क्या विचार करता है, क्या सोचता है? यह आपको अब कल अगले episode में सुनने को मिलेगा। कैसे वह सीता के लिए क्या छल रचता है? क्या छद्म भाव से वह उस सीता का हरण करता है? यह कल आपको सुनने को मिलेगा, आज का समय पूरा हो रहा है।

कर्म उदय महापुरुषों के जीवन में भी आता है

बस! ध्यान ही रखना है कि घटनाएँ जो घटित होती हैं, वह सब कर्म के उदय से घटित होती हैं। कर्म के उदय में अपने आप वहीं पर जा करके जीव पहुँच जाता है, जहाँ पर इस तरह से कोई संयोजना बनने वाली होती है। कहाँ वह सोच रहे थे हम माँ को ले करके आएँ और कहाँ वह एकदम से बीच में यह घटना घटित हो गई कि वह शम्बुक का वध हो गया, खरदूषण की सेना सामने आ गई। माँ और सब घर वालों की याद तो दूर रखी रह

गई और वह यहाँ पर दण्डकवन में उलझ गए। इसी उलझन से उनकी उलझन अब आगे किस तरह से बढ़ती चली जाती है, हम यह देखेंगे और उनके बारे में यह भी विचार करते रहेंगे कि सभी महापुरुष बलवान होते हैं, पुण्यशाली होते हैं लेकिन कर्म किसी को भी नहीं छोड़ते हैं। **'कर्म प्रधान विश्व करि राखा जो जस करहिं सो तस फल चाखा'** वह कर्म किस को किस रूप में कहाँ पर पहुँचा दे? इसलिए हर व्यक्ति का जीवन-मरण उसके कर्म के साथ चलता है। अभी तक जो श्री राम आनंद लेते रहे, वह इस भाव से लेते रहे -

कुछ हो या ना हो, मेरा मन दुर्बल ना हो।
कुछ हो या ना हो, मेरा मन दुर्बल ना हो।
प्रेम भाव से क्षमा भाव से, समतमय मेरा स्वभाव हो।
गुणीजनों के दर्शन से, मन मंगल मंगल हो।
कुछ हो या ना हो, मेरे मन में घृणा ना हो।
कुछ हो या ना हो, मेरे मन में घृणा ना हो।

श्री राम हमेशा सबके प्रति समभाव, क्षमा का भाव, मैत्री का भाव रख करके अपना जीवन जी रहे हैं लेकिन उसके बीच में भी कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हो जाती हैं। जिसके कारण से उन्हें युद्ध भी करना पड़ता है और जब उनके सामने कोई युद्ध करने आता है तो वे युद्ध अपनी भावना से नहीं करते। सामने वाले की विरोधी हिंसा का प्रतिकार करने के लिए उन्हें वह युद्ध का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे अहिंसा को अपने सामने रखने वाले महान अहिंसक, दयालु, क्षमावान वह श्री राम का जीवन अपने मन की प्रबलता, सबलता और अपने मन की मजबूती के साथ उस वन में भी आनंद के साथ व्यतीत हुआ। लेकिन अब उनके सामने क्या घटित होने वाला है? यह हम कल से फिर आगे की कहानी समझेंगे तब तक के लिए बोलिए श्री राम भगवान की जय।

रावण द्वारा नकली सिंहनाद

लक्ष्मण और खरदूषण युद्ध

श्री राम प्रभु की यह कथा आप लोगों के समक्ष पिछले 6 दिन से चल रही है। सभी उन श्रीराम का वर्णन सुनते हुए वहाँ तक पहुंचे हैं जहाँ से कथा में एक नया मोड़ आता है। खरदूषण का उस स्थान पर आ जाना जहाँ पर लक्ष्मण जी हैं और लक्ष्मण का वहाँ चले जाना जहाँ खरदूषण की सेना पहुँच रही हैं। युद्ध करने की तैयारी से लक्ष्मण अकेले ही खरदूषण की सेना के साथ युद्ध करने के लिए उद्यत होते हैं। 14000 खरदूषण के सैनिक मित्र हैं, विद्याधर मित्र हैं जिनके साथ में वह अकेले लक्ष्मण युद्ध करने के लिए गए हैं। आप विचार कर सकते है कि जहाँ पर हजारों लोग आकाश में अपनी अपनी विद्याओं को साथ लिए हुए बाण ताने हुए अपने अपने विमानों में बैठे हुए अपनी अपनी फौज के साथ में चारों ओर खड़े हो, जमीन पर भी अनेक योद्धा रथ लिए हुए खड़े हो और वहाँ पर एक अकेला व्यक्ति उन सब से युद्ध करने का साहस करने के लिए सामने खड़ा हो वह scene कैसा होगा। हजारों विद्याधर आकाश में हैं, सामने भी हजारों सामंत सामने हैं और अकेले लक्ष्मण उन सब से युद्ध करने के लिए डटे हुए हैं और वह युद्ध चल रहा है। युद्ध कर रहे हैं इधर वह युद्ध हो रहा है। यह युद्ध ही वह युद्ध है जिसने आगे चलकर के एक बड़े युद्ध का बीजारोपण किया। इस युद्ध के कारण से ही वह आगे होने वाला महायुद्ध सामने आएगा। यह पहली मुलाकात है अलग-अलग वंश के उन लोगों की जो एक दूसरे से परिचित नहीं हैं लेकिन इनका परिचय इसी रूप में हुआ हैं। इधर इक्ष्वाकु वंशी क्षत्रिय पुरुष श्री राम और लक्ष्मण हैं और उधर विद्याधर वंश के वह राक्षस वंश में कहे जाने वाले रावण के रिश्तो में लगने वाले तमाम विद्याधर हैं जिनमें खरदूषण उनका प्रमुख रिश्ते में बहनोई कहलाता हैं। वह अपने पूरे दलबल के साथ आया। एक दूसरे को कोई नहीं जान रहा

है और मुलाकात होने का यही एक तरीका बना कि खरदूषण का पुत्र जो शम्बुक था उसकी मृत्यु उसमें कारण बनी। चंद्रनखा जब राम लक्ष्मण के पास गई अपनी इच्छा पूर्ति करने के लिए तो इसकी इच्छा पूर्ति नहीं हुई, अपमानित हुई तो उसने जाकर के खरदूषण को भड़काया और वह युद्ध करने के लिए तत्पर हो गया। यह युद्ध की भूमिका अगर हम तीर्थंकरों के तीर्थ काल की अपेक्षा से देखें तो आप सोच सकते हैं कि यह लगभग 700000 वर्ष से पहले की भूमिका है। हम 24वें तीर्थंकर वर्धमान भगवान के काल में जी रहे हैं। अगर हम तीर्थंकरों के जन्मांतर का काल देखते हैं तो उन से ढाई सौ वर्ष पहले पार्श्वनाथ भगवान हुए। उनसे भी 84000 वर्ष पहले नेमिनाथ भगवान का जन्म हुआ और उनसे भी 50000 वर्ष पहले नमिनाथ भगवान का जन्म हुआ और उससे पहले 600000 वर्ष पूर्व मुनिसुव्रत नाथ भगवान का जन्म हुआ। अगर हम इस तरह से मुनिसुव्रत नाथ भगवान के काल में इन श्री राम और लक्ष्मण जी के चरित्र को सुन रहे हैं तो पद्म पुराण के अनुसार यह लगभग 700000 वर्ष पूर्व की बात ठहरती है। इतने वर्ष पूर्व की यह बात जब उस चतुर्थ काल में जब तीर्थंकरों का काल चला करता था, उन तीर्थंकरों के काल में ऐसे महापुरुष तीर्थंकरों के अलावा और भी जन्म लिया करते थे जिन्हें बलभद्र कहते हैं, नारायण कहते हैं, चक्रवर्ती कहते हैं, अर्ध चक्रवर्ती कहते हैं। ये सब महापुरुष उन तीर्थंकरों के काल में चतुर्थ काल में जन्म लिया करते थे। उसी समय पर जब यह युद्ध की भूमिका बनी तो इस भूमिका के अनुसार वह युद्ध प्रारंभ होता है। खरदूषण वहाँ लक्ष्मण के साथ में युद्ध कर रहे होते हैं और रावण को बुलावा भेजा गया था। रावण भी उन्हीं के बुलावे के कारण से उस युद्ध में शामिल होने आया था क्योंकि रावण को भी लगा कि ऐसा कोई व्यक्ति महापुरुष ही होगा जिसने 12 वर्ष से 14 वर्ष से साधना की जाने वाली सूर्यहास खड्ग को एक झटके में अपने हाथ में ले लिया। इस तरह का विचार करें वह लक्ष्मण, रावण, खरदूषण, श्री राम इन सब की एक वहाँ पर जो संगति बैठती हैं, यह एक दूसरे को और किसी रूप में नहीं जान रहे हैं। अभी किसी ने किसी को देखा नहीं है लेकिन पहला परिचय एक दूसरे के साथ में इसी युद्ध की भूमिका के साथ शुरू होता है।

विधाधर, विजयार्ध पर्वत पर बनी नगरियों में रहते हैं।

एकान्त में दक्षिणापंथी की ओर दंडक वन में जहाँ भूमि गोचुरी मनुष्यों का आवागमन बंद हो जाता है। विद्याधरों का जहाँ पर आवागमन चलता हैं, जो विजयार्ध पर्वत की श्रेणियों पर रहने वाले व विद्याधर होते हैं, विद्याओं के माध्यम से उन विशाल वनों में पर्वतों पर घूमा करते हैं और जिनकी विजयार्ध पर्वतों पर बड़ी-बड़ी नगरियाँ बनी होती हैं। जिनके बड़े-बड़े महल होते हैं। भूमि पर भी रहते हैं आकाश में भी रहते हैं और भूमि के नीचे भी अनेक तरह के वह महल बना करके रहा करते हैं। अनेक तरह की उनके पास में विद्याओं के माध्यम से शक्तियाँ अर्जित हो जाती हैं, जिसके माध्यम से उनका जीवन चलता है। उन विधाधर मनुष्यों को अगर हम समझ पाएँगे तो हम इस युद्ध की भूमिका को समझ पाएँगे जो भूमिगोचरी और नव गोचरी यानी आकाश में उड़ने वाले और भूमि पर चलने वाले ऐसे दो तरह के लोगों के बीच में यह बहुत युद्ध की भूमिका बनी। उस युद्ध की भूमिका में मनुष्य अभी कहीं से कहीं तक दिखाई नहीं दे रहे हैं सिवाय राम और लक्ष्मण के। सारी की सारी वहाँ पर फौज जो आ रही हैं वह विधाधरों की आ रही हैं। उनका वहाँ वंश चलता हैं और उसी वंश में राक्षस वंश भी है, वानर वंश भी है। ये वंश है, जिनके अन्दर अनेक-अनेक महापुरुष उत्पन्न हुए हैं और उन वंश के लोगों का व्याख्यान भी आज आपके सामने आएगा कि कैसे, कौन से वंश के लोग जो आपस में मिले हुए रहते हैं। वह सारे विद्याधर आपस में रिश्तेदार हैं एक दूसरे के लेकिन फिर भी कैसे वह धीरे-धीरे राम के सहयोग के लिए आते हैं और कैसे उनके लिए वह राम का पक्ष लेने का भाव आता है। यह सब विचार आज हम करेंगे और यह कथा सामने आगे बढ़ेगी। पहले हम थोड़ा सा भगवान श्री राम का कीर्तन करते हैं, उनके गुणों का गान करते हैं-

मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम
हर प्राणी जिनको गाता, ना जातिभेद मन लाता।
सीता के स्वामी प्राण, हनुमान के जो अभिमान
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम ,प्रभु श्री राम प्रभु।

मर्यादा पुरुष श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
पितु वचन निभाने खातिर तज के राजा सुख आखिर,
वन वन करते विश्राम, अन्याय अनीति ना काम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।

सीताजी को देखकर रावण मोहित हो जाता है

रावण उसी समय पर युद्ध करने के लिए आता है। जा रहा था खरदूषण के पास युद्ध करने के लिए लेकर रास्ते में उसे वह राम और सीता बैठे हुए मिल जाते हैं। सीता को देखकर के उसके रूप पर वह ऐसा मोहित होता है कि वह युद्ध करने की बात भूल जाता है। जिस उद्देश्य से आया था, वह उद्देश्य उसके दिमाग से चला जाता है और उसका मन करता है कि मैं पहले इस सीता का समागम करूँ, इस सीता को प्राप्त करूँ। उसको प्राप्त करने की इच्छा से वह सोचता है कि इसके पास जो यह पुरुष बैठा है, जब तक यह रहेगा मैं इसको प्राप्त नहीं कर पाऊँगा। वह अनेक विद्याओं का धनी होता है और उसके पास में एक अवलोकनी नाम की विद्या होती है। अवलोकन का मतलब जो पीछे का भी देख सके। past में वह क्या थे? क्या गुजर रहा है? उनके साथ में यह कौन है? यह उसने एक अवलोकनी विद्या के माध्यम से जान लिया कि इन तीनों को वनवास हुआ है। यह राम हैं, यह लक्ष्मण हैं और यह वन-वन में घूमते हुए यहाँ तक आए हैं। लक्ष्मण उनके साथ में खरदूषण के लिए युद्ध करने के लिए निकल चुका है। जब लक्ष्मण युद्ध करने के लिए गए तो उस समय पर राम से कह गए थे कि जब मैं सिंहनाद करूँ तो उस सिंहनाद को सुनकर के आप आना अन्यथा आप मत आना। यहीं पर आप सीता की रक्षा में खड़े रहना। यह जंगल है, यह महावन है, यह दंडक वन है, यहाँ इसको अकेले छोड़ कर के मत जाना। यह बात उसने अपनी अवलोकनी विद्या से देख ली और यह देख करके उसने सारा दृश्य अपने विद्या के माध्यम से समझ लिया। उसने समझ लिया कि अगर राम को यहाँ से अलग किया जा सकता है, तो वह तभी हो सकता है, जब उनको सिंहनाद सुनाई पड़े।

रावण द्वारा नकली सिंहनाद किया गया

उस रावण ने अपनी विद्या के माध्यम से वहाँ पर सिंहनाद करना शुरू किया। उस सिंहनाद को सुनकर के राम को लगा कि लक्ष्मण को मेरी जरूरत है। उस सिंहनाद को सुनकर के वह राम तुरंत ही उस सीता को, अब वहाँ कोई और तो था नहीं, एक जटायु पक्षी ले दे के था तो उस जटायु पक्षी को कहकर के की इस सीता का ख्याल रखना। वह राम जी, लक्ष्मण जी की सहायता करने के लिए वहाँ से निकल पड़ते हैं। यह कथानक पद्मपुराण के अंदर आता है। अन्यत्र हमने सुना है कि रावण ने एक मायामयी मृग की रचना की थी। हम उसको भी स्वीकार करते हैं। क्योंकि घटनाएँ बीच में कुछ भी हो सकती है लेकिन मुख्य पात्र के साथ में चलने वाला जो एक कृत्य है, उनका जो चरित्र है, वह हमारे लिए मायने रखता है। वह अवलोकनी विद्या के माध्यम से रावण ने सब कुछ जानकर के वह सिंहनाद किया। यह भी हमें सुनना चाहिए और यह भी हमें ज्ञात है कि वह मायामयी हिरण उनको वह दूर तक ले गया और राम जी उस हिरण के पीछे-पीछे चले गए और तब उस रावण ने अकेली सीता को अपने बल से उसको हरण कर लिया। यह दोनों ही बातों को ध्यान में रख कर के हम इस कथानक को आगे बढ़ते हैं-

सब बातें सुन दशकन्धर ने, हा! राम-राम! पुकारा हैं।
भैया की सुन व्याकुल पुकार, श्रीराम ने वचन उचारा है।
भाई पर विपद पड़ी भारी, सीते तुम भी कुछ सुनती हो
हाँ नाथ! करुण व्याकुल पुकार, देवर की सी ही सुनती हूँ।

सीता जी का हरण

यह करुण व्याकुल पुकार सुनकर के राम जी के मन में विचार आया और वह लक्ष्मण जी की सहायता करने के लिए वहाँ जाने लगे, वहाँ पहुँच गए। जब वह राम जी वहाँ सीता जी को छोड़कर के आगे निकल गए और सीता को जब उस रावण ने अकेला देखा तो उस रावण ने अपनी विद्या से, अपने पौरुष के बल से उसे अपने विमान में जो उसका विमान था, उस विमान

में उसको बिठा लिया। इधर सीता चिल्लाने लगी वह सहायता करने के लिए लक्ष्मण को, राम को बुलाने लगी लेकिन उस की करुण पुकार को सुनने वाला वहाँ पर उस समय पर कोई नहीं था। इधर लक्ष्मण जी के पास में जब राम जी पहुँचे और राम को देखकर के लक्ष्मण जी ने कहा भाई! आप इधर क्यों आ गए? आप वहाँ सीते को अकेला छोड़कर इधर क्यों आ गए? राम जी ने कहा मैंने सिंहनाद सुना था, वह सिंहनाद तुमने किया इसलिए मैं तुम्हारी सहायता करने के लिए आया। लक्ष्मण जी ने कहा नहीं! मैंने कोई सिंहनाद नहीं किया। मैं तो इनसे अकेला ही युद्ध करने के लिए अभी डटा हुआ हूँ। जब राम ने सुना कि मेरे साथ छल हुआ है, तो वह लक्ष्मण राम को वापस भेजते हैं।

राम का सीता के विरह में दुःखी होते हुए उन्हें वनों में खोजना

राम जब तक वह वापस पहुँचते हैं तब तक वह देखते कि वहाँ पर वह सीता नहीं हैं और वह रावण उस सीता को हरण करके ले गया। रास्ते में जब वह ले जा रहा था, जब वह सीता को उठा रहा था तो जो जटायु पक्षी था, उसने भी अपनी हिम्मत से उस रावण को रोकने की कोशिश की। उसके ऊपर चोंच मारी, रोका और उस सीता को बचाने की कोशिश की लेकिन वह बेचारा तो एक छोटा सा पक्षी था। रावण ने उसके ऊपर इतनी जोर से हाथ मारा कि वह नीचे गिर पड़ा और वह लहूलुहान हो गया। जब राम जी लौट करके आते हैं तो उन्हें वह जटायु पक्षी उसी तरह के लहूलुहान अवस्था में दिखाई देता है। उसकी उस कराहट को सुन करके, उसके उस रुदन को सुन करके उन्हें लगा कि उसके ऊपर भी किसी ने आहत पहुँचाया है। वह मरणासन्न था, उन्होंने उसी समय पर उसे णमोकार मंत्र सुनाया, अरिहन्तों का ध्यान करवाया और उसे सद्गति प्राप्त करने के लिए यह मन में निर्मल विचार दिया कि मृत्यु सबकी आती है। तुम अब मृत्यु से दुःखित मत हो। तुमने जो सीता को बचाने के लिए प्रयास किया, उसका पुण्य, उसका तुम्हारे लिए जो बंधा हुआ अच्छा शुभ भाव से अर्जित हुआ कर्म है, वह तुम्हारी हमेशा रक्षा करेगा। ऐसा विचार करके उसके परिणामों को निर्मल करा करके उन्होंने णमोकार मंत्र सुना करके उस जटायु पक्षी के लिए

उस समय पर उसके प्राणान्त देखें और वह जटायु पक्षी मर कर के देव बन जाता है। इधर वह राम अब अकेले देखते हैं कि सीता कहीं पर भी दिखाई नहीं देती है और उसके विरह में अब वह इधर निराश होते हैं और निराश होते-होते इधर सोचते हैं कि वह सीता कहाँ गई? सीता कहाँ गई? चारों तरफ वह देखते हैं, बैठ करके सोचते हैं कि यह सीता को कौन ले गया? कहीं इस वन में किसी सिंह ने खा लिया, किसी व्याग ने खा लिया। किसी पक्षी ने कोई आघात पहुँचा दिया। कहीं सीता कहीं घूमने निकल गई तो कहीं चलते-चलते किसी नदी के पास पहुँच गई। वह चारों और उसे ढूँढ रहे हैं और वृक्ष से, पर्वतों से वह सिया को, सीता को ढूँढने की उस कोशिश में वह किस तरह से वे अपनी मुश्किल का सामना कर रहे हैं यह यहाँ इस रूप में आप सुन सकते हैं।

ना मिली है सिया ढूंढ सब वन लिया,
मन न माने हाय कित जा छुपी
कौन जाने तेरे भी रहने को हाय तकदीर है
आज सोई वन के वृक्षों बता दे
हो तुम ही बता मन ना माने
रुठकर क्या छुपी आज माने
ना मिली है सिया, ढूंढ सब वन लिया
मन ना माने हाय कित जा छुपी, कौन जाने।
आए माताओं को दुख देकर और आज्ञा पिताजी की लेकर।
वन में है दुख कोई हमने जाना नहीं आज जाने,
याद आते है तेरे फसाने।
कोई आकर पता तो बता दे कहाँ गई जानकी यह पता दे।
चैन आता नहीं ढूंढी सारी मही
मन ना माने, भूले अब तो कोई जो न जाने
ना मेरी है सिया ढूंढ सारा वन लिया।
मन ना माने हाय कित जा छुपी कौन जाने?

इधर वह रामजी सिया को ढूँढ रहे हैं वन, वन, पात, पात, वृक्ष, वृक्ष से

पक्षी, पक्षी से, नदी से, पत्थर से, सब से पूछ रहे हैं हर तरफ वह आवाज लगा रहे हैं और उधर वह लक्ष्मण उस खरदूषण से युद्ध कर रहे हैं।

लक्ष्मण के द्वारा विराधित विद्याधर को राजा बनाकर, वापस लौटना

खरदूषण से जब युद्ध चल रहा है उसी समय पर एक विद्याधर राजा जो खरदूषण का शत्रु था। वह देखता है कि इतनी बड़ी सेना के साथ में एक अकेला व्यक्ति डटा हुआ है तो वह विद्याधर जिसका नाम विराधित था। वह लक्ष्मण जी की सहायता करने के लिए उसी समय पर वह उनके पास पहुँचता है और कहता है कि मैं आपकी सहायता करने के लिए आया हूँ। आपकी हिम्मत आपका शौर्य देखकर के मेरे मन में भाव आया कि आप जरूर एक महापुरुष हैं जो इस तरह से इतनी बड़ी विद्याधर की राजाओं की खूंखार सेना से आप युद्ध कर रहे हैं। लक्ष्मण जी ने उसे अपने पीछे किया और कहा तुम उस खरदूषण की सेना को संभालो, मैं अभी खरदूषण को देख रहा हूँ और उन्होंने उस खरदूषण के साथ युद्ध करते-करते ऊपर आकाश में ही उसका रथ था, वैमानिक रूप में विमान के साथ में, उन्होंने ऐसा बाण चलाया कि उसका रथ टूट गया। रथ से वह खरदूषण नीचे आ गिरा और जब नीचे आ गिरा तो उन्होंने एक बाण के माध्यम से ही उस खरदूषण का समापन कर दिया। खरदूषण का जब अंत हो गया तो उस समय पर देवों के द्वारा पुष्प वृष्टि की गई। अपने आप देवों के द्वारा जय जयकार होने लग गई और वह खरदूषण की सेना को उस विराधित ने उस समय पर बंदी बना लिया और विराधित के लिए भी जब यह लगा कि इसकी सेना भी हमारे नियंत्रण में है तो लक्ष्मण जी ने उस सारी सेना को विराधित के लिए सौंप दी और विराधित को ही उसका राजा बना दिया।

युद्ध जीतकर लक्ष्मण का वापस राम के पास लौटना

इस तरह से वहाँ राजा बनाने के बाद में लक्ष्मण जी तुरंत आते हैं और इधर आ करके कुटी में देखते हैं तो न वहाँ पर राम हैं, न वहाँ पर सीता हैं, रास्ते

में देखते हैं तो जटायु पक्षी भी मरा पड़ा था और यह सब द्रश्य देख कर के वह ढूँढने निकलते हैं। कहाँ क्या हो गया? ढूँढते-ढूँढते हुए वह राम जी के पास पहुँच जाते हैं और उन्हें राम जी, शोक मग्न व्याकुल दिखाई देते हैं। उनसे पूछते हैं तो वह राम जी कहते हैं कि सीता का पता नहीं लग रहा है, वह कहाँ गई? इस दुःख के कारण से जब वह लक्ष्मण उन राम को थोड़ा ढाढस बताते हैं। उसी समय पर एक सेना के आगमन का पदचाप सुनाई पड़ता है और वहाँ से जब सेना आ रही होती है, तो राम फिर व्याकुल हो उठते है कि अब यह कौन सी सेना आ गई? लक्ष्मण कहते हैं कि यह अपने मित्र की सेना है, एक विराधित नाम का विद्याधर है जिसने मेरी युद्ध में सहायता की है। वही आपसे मिलने आ रहा है और उसी के साथ में हम उस सीता को खोजने का कुछ उपाय बनायेंगें तो वह विराधित आता है और आ करके राम के चरणों में शीश झुकाता है। वह कहता है कि मैं सीता माँ को खोजने के लिए हर संभव उपाय करूँगा। आप बिलकुल निश्चिन्त रहें। लेकिन आप जब तक यहाँ पर हैं तब तक आप सुरक्षित नहीं रह पाएंगे क्योंकि खरदूषण रावण का बहुत बड़ा रिश्तेदार है और उसका बहुत बड़ा वंश है। खरदूषण के मारे जाने पर बहुत से विद्याधर राज कुपित हो चुके हैं। वे विद्याधर राजा आपको घेरने आयेंगे। इससे पहले आपको सुरक्षित स्थान पर पहुँच कर योजना बनानी पड़ेगी। वह उसी लंक पाताल नाम का स्थान होता है, जहाँ पर विद्याधर इस खरदूषण का ही वह स्थान था जिसको मार करके, उस विराधित को उसका राजा बना दिया गया था। उसी स्थान पर जाने के लिए वह उद्यत हो जाते हैं की वही एक सुरक्षित जगह है जहाँ पर विद्याधर आसानी से नहीं पहुच पाते हैं। वह धरती के अंदर का स्थान है। उस स्थान पर ले जाने के लिए वह विराधित जब तैयार हो जाते हैं तो उस महल में उस खरदूषण का एक पुत्र जो बाकी था वह युद्ध करने के लिए आ जाता है। बाकी सारी सेना उनके under में आ चुकी थी। शम्बुक पहले मरण को प्राप्त हो ही चुका था। एक पुत्र और था तो वह पुत्र तो युद्ध करने के लिए आया लेकिन उस पुत्र के लिए वह युद्ध बहुत भारी पड़ गया क्योंकि इनकी सेना थी और यह लक्ष्मण, राम सब उससे युद्ध किए तो वह पुत्र भी

मारा गया और पूरा वह लंक पाताल नाम का जो स्थान था वह उनके लिए सुरक्षित हो गया और उसी में जाकर के वह वहाँ पर रहने लगे।

रावण का सीता को लेकर के लंकापुरी में आना

इधर जब वह रावण उस सीता को कहाँ ले गया? धीरे-धीरे चलते-चलते वह अपनी लंकापुरी में ले गया। वह लंकापुरी में ले जाने के बाद में उसने वहाँ पर एक बहुत बड़ा देवारण्य वन है, उसमें अशोक वृक्ष के नीचे उस सीता को बिठा दिया और वह सीता वहाँ पर बैठ तो गई। लेकिन रास्ते में चलते-चलते उस रावण के लिए यह ध्यान आया कि यह सीता राम का ही नाम लिए जा रही है, लक्ष्मण का ही नाम लिए जा रही है। ऐसा विचार करके वह पहले तो सीता को अपनी गोदी में बिठाए था लेकिन जब उसने देखा कि यह किसी दूसरे व्यक्ति की इच्छा कर रही है। ऐसे पर पुरुष की इच्छा करने वाली स्त्री से मेरा क्या प्रयोजन है? लेकिन अब मैं इसको छोड़ भी नहीं सकता तो उसने उस सीता को अपने ही विमान में अलग से बिठा दिया, यह सोच करके कि मेरा भी यह संकल्प है। उस रावण का भी एक व्रत था, एक संकल्प था कि जब तक कोई स्त्री उसे खुद नहीं चाहेगी, वह किसी के साथ जबरदस्ती नहीं करेगा, यह भी उसका एक संकल्प था। उस समय पर यह संकल्प उसे याद आ गया तो उसने सीता को अपने विमान में बैठा कर के उसे ला करके अपने देवारण्य नाम के वन में एक अशोक वृक्ष के नीचे बिठा दिया और यह सोच कर के कि कभी न कभी तो यह मानेगी। दुनिया में ऐसी कोई स्त्री नहीं, जो रावण को न चाहे, दशानन को न चाहे और उसकी सामर्थ्य उसका वैभव देख कर के दुनिया की हर स्त्री उसे स्वीकार करती थी। इसलिए उसके मन में था कि थोड़ा समय लगेगा, कुछ काम समय साध्य होते हैं। वह बहुत बड़ा नीति विज्ञ था। उसे पता था इसलिए इसके लिए भी समय लगेगा और यह समय आने पर जब यह मान जाएगी तब मैं इसके साथ रहूँगा। ऐसा विचार करके उसने सीता से जबरदस्ती नहीं की। उसको जब वह अपने स्थान पर वहाँ पर अपने ही लंका में ले जाकर के बिठा दिया तो उसने अपने मन में सोच लिया था।

कुछ चीजें समय साध्य होती हैं। राजा कुपित हो तो उसको मनाने में समय लगता है। सुन रहे हो? बहुत बड़ा नीति विज्ञ था, बहुत बड़ा बुद्धिमान था। वह रावण बहुत बड़ा न्याय का भी ज्ञानी था, नीति विज्ञ भी था तो वह कहता है, सोचता है अपने मन में कुपित राजा को मनाने में समय लगता है। व्यक्ति को यशः कीर्ति अर्जित करने में समय लगता है। व्यक्ति को इष्ट वस्तु की प्राप्ति करने में समय लगता है। व्यक्ति को विद्याओं की सिद्धि करने में समय लगता है। व्यक्ति को परलोक संबंधी पारलौकिक कार्य करने में समय लगता है और व्यक्ति को अपनी मनचाही स्त्री से आनंद लेने में भी, उस भार्या को मनाने में भी समय लगता है। यह उसे ज्ञात था, ऐसा सोच कर के वह उस सीता को वहाँ एकांत स्थान में बैठा देता है।

सीता ने अन्न जल का त्याग कर दिया

वहाँ पर वह सीता जब बैठ जाती है, तो यह रावण अनेक रानियों को मंदोदरी आदि उसकी 16000 रानियाँ है, वह उनके इर्द-गिर्द उसकी सेवा में लगा देता है। लेकिन सीता किसी को नहीं देखती है। उसने अपने मन में विचार कर लिया, उस स्थान पर बैठने के बाद जब तक मेरे पति का श्री राम का कोई समाचार मेरे पास तक नहीं आ जाता तब तक मेरा अन्न जल का त्याग है। उसने आहार जल का त्याग कर दिया। जब तक कोई समाचार नहीं आएगा तब तक मैं यहाँ का कुछ भी भोजन पान कुछ भी ग्रहण नहीं करूँगी और ऐसा विचार करके वह वहीं पर बिल्कुल नीची दृष्टि किए हुए बैठी रही। मन की बात मन में ही रखे रह करके वह मन ही मन सोचती रही मुझे केवल राम का नाम सुहाता है, इसके अलावा कुछ भी नहीं सुहाता और जब से रावण हर लाया है तब से उसकी आँखों में आँसू हैं। लेकिन उसके मन में धैर्य भी है कि मेरे पति राम, लक्ष्मण यह बहुत बड़े योद्धा हैं, महापुरुष हैं और यह जल्द ही मेरा पता लगा लेंगे और मुझे इनका समाचार मिलेगा। इस तरह से जब तक यह रावण उस सीता को मनाने की कोशिश करता है तो वह अनेक तरह से वह रावण धैर्य दिलाता है। उसको अपनी अनेक रानियों के माध्यम से उसे मनवाने की कोशिश करता है और उसके पास पहुँचकर के अपने वैभव का गुणगान करता है कि

देखो! यह इतनी सब रानियाँ तुम्हारी स्वामिनी बनेगी, तुम्हारी दासी बनेगी तुम इनकी स्वामिनी बनोगी। मैं तुम्हारे लिए वचन देता हूँ कि तुम अगर मुझे स्वीकार कर लेती हो तो मैं तुम्हे यहाँ की सबसे बड़ी रानी बनाऊँगा। सब प्रकार का वैभव दिखाता है लेकिन उस समय पर सीता उसके किसी भी वैभव के प्रलोभन में नहीं आती और वह नीची दृष्टि किए बोली **'सीता बैन राम दरस बिन हैं नहीं मुझ को पल भर चैन'** इस तरह से हुए सीता नीचे दृष्टि किए हुए उस रावण को बिना देखे हुए ही अपने दिन और रात गुजार रही है। सीता के लिए जब रावण ने मनाने की हर भरसक कोशिश कर ली तो फिर उसके पास में एक और युक्ति बची रह गई थी उसको डर दिखलाने की क्योंकि साम-दाम-दंड-भेद सब तरह की नीतियाँ यह राजा लोग अपनाते हैं।

रावण ने सीता को अनेक बेताली विद्याओ से डराने के बाद भी सीता का नही मानना

पहले वह मधुर वचनों से नहीं मानी, उसके वैभव से आकृष्ट नहीं हुई। हर तरह से उसने मनाने की कोशिश की, नहीं मानी तब उसने भय दिखलाने की कोशिश की। विकराल सूरतें, उसके लिए रात्रि में नृत्य करती हुई दिखलाई दी, खोपडियाँ बज रही है, डाकिनी नाच रही है। अनेक मनुष्यों के खून खप्परों से, उनके कपालों से बह रहे हैं। अनेक मुंडों की मालाएँ, लाल-लाल फुंकारती हुई चारों ओर अनेक राक्षसों के गले में पड़ी हुई उसे डरा रही है। भीषण अजगरों की सांसों की आवाजें उसके सामने आ रही है। अनेक प्रकार के बेताली आदि विद्याओं के माध्यम से उसे डराया गया, अनेक बड़े-बड़े सर्प बिच्छूओं की फुँकार उसके लिए दिलाई गई लेकिन वह सीता सब कुछ सहन करती रही। उसके लिए वह दृश्य याद आता रहा, जब श्रीराम ने कुलभूषण और देशभूषण मुनि महाराज की उस अकेले अंधेरी रात में उनकी रक्षा की थी तो उस समय पर भी ऐसा ही दृश्य था। उसी दृश्य को वह याद करते हुए अपने अन्दर साहस लेती रही कि मैंने उन केवली भगवान के चरणों की पूजा की है। जब मेरे पति इस प्रकार के कभी भी उपद्रवों से डरे नहीं तो आज मुझे भी इससे डरने की जरूरत नही

है और यह सब रावण की माया है। ऐसा सोच कर के वह धैर्य धारण करके उन किसी भी प्रकार के उपग्रहों से वह विचलित नहीं हुई। तब वह रावण परेशान होकर के शोकाकुल हो गया, चिंता में दिखाई देने लगा। मंदोदरी ने जो रावण की पत्नी थी, सबसे बड़ी महारानी थी जब उस मंदोदरी ने देखा कि रावण बहुत चिंता में दिखाई दे रहा है। क्या कारण है? वह पूछती है- पहले भी तुम्हारे कुल में अनेक वंशजों का मरण हुआ है। लेकिन कभी तुम इतने दुःखी दिखाई नहीं दिए। यह खरदूषण के मरने पर, उसके पुत्र शम्बुक के मृत्यु होने पर आपको इतना दुःख क्यों हो रहा है? तब मंदोदरी से वह रावण कहता है- मैं अपनी बात तुम्हें सच-सच बताता हूँ। मुझे दुःख खरदूषण का नहीं, शम्बुक का नहीं, मुझे तो कुछ और है और वह दुःख क्या है?

रावण द्वारा अपने नियम का पालन

तब वह उस मंदोदरी से कहता है- इस सीता को प्राप्त किए बिना मैं जीवित नहीं रह सकता। मुझे यह सीता जब तक अपनी तरफ से स्वीकार नहीं करेगी तब तक मैं इसको प्राप्त भी नहीं कर सकता क्योंकि तुम्हें पता है, मैंने अनंत वीर केवली के समक्ष व्रत लिया था। मैंने जिंदगी में कभी कोई व्रत नहीं पाला, कोई नियम नहीं पाला। केवल मेरा एक ही नियम था और वह नियम भी मैंने इसी कारण से ले लिया था कि मुझे पता था कि दुनिया की कोई स्त्री ऐसी नहीं जो रावण को न चाहे। रावण अगर उसको चाहता है, तो वह उसको जरूर प्राप्त हो जाएगी। इसी वजह से मैं उसके साथ जबरदस्ती नहीं कर रहा, वह यहाँ पर आ कर के बैठी हैं। तुम उसे मनाओ। किसी भी तरह की युक्तियों से उसे मेरे प्रति अनुकूल बनाओ और यह बात मंदोदरी बड़ी हँस करके कहती है- आप इतनी सी बात पर परेशान हो रहे हैं। एक स्त्री को मनाने के लिए कितना सी देर लगती है, कितना सा हमारे लिए कार्य करना पड़ेगा? आप निश्चिंत रहो मैं उस स्त्री को मना करके आपके पास लाती हूँ। वह मंदोदरी बड़े उत्साह के साथ में उस सीते के पास जाती है और सीता को समझाती है, तो सीता उससे उल्टा कहती है- एक कुलीन स्त्री कभी भी इस तरह की बातें नहीं करती जैसे तू कर

रही है। तुझे खुद अगर पतिव्रत निभाना नहीं आता तो किसी का पति व्रत तोड़ना यह सबसे बड़ा पाप है। एक अच्छी स्त्री, अच्छे घर की कुलीन स्त्री, सदाचारणी स्त्री कभी किसी के व्रत का खण्डन नहीं करती। मेरा व्रत है, मैं अपने मन में राम के अलावा किसी और का स्मरण भी नहीं कर सकती।

यह उसने दो टूक बात जब मंदोदरी के लिए बोली तो मंदोदरी के पास खड़ी हुई हजारों रानियों का अपमान हो गया और मंदोदरी का भी अपमान हो गया। लेकिन वह क्या कर सकती थी? वह उसके लिए उस अपमान को सहन करने के बाद भी वह उस समय पर सोचती रह गई कि इसको डिगाना कठिन है। वह रो रही थी और उस की रोने की आवाज वहाँ पर रहने वाले विभीषण के पास में उसकी आवाज गई। विभीषण एक ऐसे व्यक्ति थे, जो हमेशा नीति-न्याय में चतुर थे और बुद्धिमान थे। जब विभीषण ने देखा कि एक अबला स्त्री यहाँ रो रही है और वह अकेली है और इससे यह लंकेश्वर यहाँ पर ले कर के आए हैं। वह स्वयं उस रावण को समझाने पहुँचे लेकिन रावण ने उनकी एक न सुनी।

विभीषण द्वारा मायामयी कोट की रचना

उस समय पर विभीषण भी अपने मन में सोचते हैं कि अगर इस स्त्री के कारण से बहुत बड़ा यहाँ पर कोई युद्ध हो सकता है, तो रावण के लिए भी खतरा हो सकता है। पहले तो वह रावण को सुरक्षित रखने के बारे में सोचने लगे और उन्होंने यह सोचा कि जिस व्यक्ति ने खरदूषण को मारा है। जिस व्यक्ति ने सूर्यहास खड्ग को अपने हाथ में ले लिया है। वह व्यक्ति सामान्य नहीं होगा हमें पहले इस लंका की रक्षा करनी चाहिए और उस रावण की रक्षा करने के लिए लंका की रक्षा करने के लिए वहाँ विभीषण ने एक मायामयी कोट की रचना की। उस लंका के चारों और खाई बनाई जहाँ पर कोई दूसरा पक्षी पर न मार सके ऐसी योजनों तक खाई बनाई। उस लंका को मायामयी कोट से रचा और उसके चारों दिशाओं में सब जगह पर बड़े-बड़े योद्धा तैनात किए। वहाँ पर तपे हुए लोहे का परकोटा बनाया कि अगर कोई उस परकोटे के पास में आ जाए तो वह जल जाए।

ऐसे तपे हुए लोहे का जिससे ज्वालाएँ निकल रही हैं, लपटें निकल रही हैं, आग निकल रही है। एक योजन का वह ऊँचा परकोटा बना और जो किसी भी व्यक्ति को, पशु को, पक्षी को वहाँ पर खत्म कर डाले, ऐसी अनेक विद्याओं को वहाँ पर बिठाकर उसने पहले रावण की रक्षा की। किस ने? रावण चूँकि उनका भाई था इसलिए पहले उन्होंने अपने भाई की रक्षा की। भाई को मनाया, भाई नहीं माना लेकिन उन्हें डर था कि जिसके साथ में यह सीता थी वह व्यक्ति जरूर यहाँ तक पहुँचेगा और उनको अगर यहाँ पर पहुँचना हुआ तो यह युद्ध भी बहुत बड़ा युद्ध होगा और इस तरह से उस युद्ध की आशंका से विभीषण ने अपने भाई होने का कर्तव्य निभाया। इधर क्या होता है? यह बात अब आपके सामने धीरे से आती है। तब तक-

मर्यादा पुरुष श्रीराम हैं सिद्ध प्रभु श्रीराम।
दशरथ जिनके जनक कहाए, कौशल्या नंदन जन गाए।
इक्ष्वाकु वंश की शान, क्षत्रिय जग दया निधान।
मर्यादा पुरुष श्रीराम,हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम।

विधाधर रत्नजटी द्वारा रावण को रोकना

जब रावण सीता को ले जा रहा था तो उस बीच में एक तो **जटायु** मिला था, जिसने उनकी रक्षा करने की कोशिश की थी। एक और विद्याधर उस समय पर रक्षा करने के लिए आया था, जिसका नाम **रत्नजटी** था और वह विद्याधर भी उस रावण को रोक रहा था। रावण ने देखा कि मेरे पास में अभी सीता बैठी है, मैं इससे युद्ध लड़ूँगा तो अच्छे ढंग से युद्ध नहीं हो पाएगा और मेरी भी हानि हो सकती है। इसलिए वह उस समय पर उस से लड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ क्योंकि वह जान रहा था कि मैं भी बीच में हूँ, रास्ते में हूँ अगर मैं लड़ूँगा और उसमें ही कहीं कोई वह राम आ गए तो फिर कहीं मेरा इच्छित कार्य पूरा नहीं हो पाएगा। इसलिए उसने उस विद्याधर की विद्या को छीन लिया और उसको विद्या से रहित करके उसे ऊपर छोड़ दिया। वह धीरे-धीरे ऊपर से नीचे आते हुए

एक पर्वत पर टिक गया और वहाँ पर विद्यारहित हो करके वह ऐसा फड़फड़ाता रह गया। जैसे किसी पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह पक्षी तो रह जाता है लेकिन वह उड़ नहीं सकता, कोई काम नहीं कर सकता। इसी तरह से वह विद्याधर रह गया और वह विद्याधर रत्नजटी भी अपने इसी तरह से अपना जीवन वहाँ पर कुछ समय गुजारने लगा। वह रत्नजटी भी धीरे से आपके सामने आएगा कि वह भी किस तरह से श्रीराम की सहायता करता है। इधर हम देखते हैं कि सीता जी की जो खोज जारी रहती है, उस खोज में सबसे पहले नाम आता है।

दक्षिण दिश में था नगर, किष्किंधा विख्यात,
वानर वंशी भूप का, वहाँ चलता था राज।

जैन दर्शन के अनुसार वानर वंशी कौन हैं?

ये वानर वंश में उत्पन्न हुए कुछ राजा थे, जिन्हें हम वानर कहते हैं। वह जैन दर्शन के अनुसार वानर वंशी राजा माने जाते हैं। बड़े-बड़े सुंदर वे राजा होते हैं। जो राजा वानर वंश के बड़े-बड़े राजाओं की संतानों के रूप में सामने आए। उन राजाओं में एक जो किष्किंधा नगरी के राजा थे उनका यहाँ पर परिचय दे करके यह बात आगे बढ़ती है।

राजा बलि, शक्तिशाली, विद्याधर का वहाँ शासन था।
दशकंधर अर्धचक्री राजा, चाहे उस पर अनुशासन था।
जिनदेव को झुकता शीश भला, नरभव को कैसे झुक सकता था।
बाली दीक्षा ले चला गया और सुग्रीव राज अब करता था।

ऋद्धि धारी श्री बाली जी मुनिराज

उस दशकंधर अर्ध चक्री राजा रावण के मन में उस **किष्किंदा नगर के राजा बाली** को वश में करने का भाव आया था। बाली की यह प्रतिज्ञा थी कि मैं जिनेंद्र भगवान के अलावा किसी को नमस्कार नहीं करूँगा और इसी प्रतिज्ञा को निभाने के लिए वह बाली गृह त्याग करके, राजपाट का त्याग करके, दीक्षा ले करके वह वन को चले जाते हैं। इधर यह जो रावण था यह

रावण उस बाली के लिए जब कुछ नहीं कर पाया और उस बाली का जो राज्य था वह सुग्रीव को मिल गया था जो उनका भाई था तो उधर क्या घटना घटित होती है? इस बाली के मुनि महाराज बन जाने पर वह जो रावण है, वह एक बार यात्रा अपने विमान से घूमते हुए जा रहा था। उसने इन मुनि महाराज को देखा और मुनि महाराज को देख कर के यह जब नीचे उतर कर के आया तो उसे लगा कि यह तो बाली है। लेकिन उसका विमान जब ऊपर रुक गया था तो उसे क्रोध आ गया था कि मेरा विमान किसने रोक लिया। यह नियम होता है कि जहाँ पर ऋद्धि धारी मुनि महाराज बैठे हो, वहाँ ऊपर से विद्याधरो के विमान भी जा रहे हो तो किलित हो जाते हैं, रुक जाते हैं। जब रावण का विमान रुका, उसने ही नीचे आ करके देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गया और मन में सोचता है, उसे मन में यह विचार आता है कि इन्होंने मेरा विमान रोका। उसे मन में यह विचार नहीं आता कि ये ऋद्धि धारी मुनि महाराज हैं, इनकी शक्ति से मेरा विमान रुक गया। वह मन में यह विचार करता है कि इन्होंने अभी भी मुझसे अपना बदला लेने की ठानी है और यह मेरे को झुकाना चाहते हैं। इसलिए यह यहाँ पर आकर के मुनि महाराज बन करके तो बैठ गए मुझसे वहाँ पर तो नमस्कार नहीं किए। अब ये यहाँ पर आकर के मुझे अपनी शक्ति दिखाना चाह रहे हैं तो ऐसे अपने अहंकार को दिखाने के लिए उस रावण के अन्दर अहंकार आता है और उस कैलाश पर्वत पर वह मुनि महाराज उस समय पर विराजमान थे। रावण कैलाश पर्वत पर उतरता है और उस कैलाश पर्वत की नीची तलहटी से, इतना बलशाली था कि वह रावण उस पूरे कैलाश पर्वत को हिलाने लग जाता है, उसको डुलाने लग जाता है और उसको उठाने की कोशिश करने लग जाता है। तब इन बाली मुनि महाराज ने केवल अपने पैर का अंगूठा दबा कर के उस रावण को रुला दिया था। जब वह रोने लगा था तब उस समय पर इसकी मंदोदरी भी उनके साथ में थी। मंदोदरी ने आकर के मुनि महाराज से क्षमा मांगी। मुझे मेरे पति की भिक्षा दे दो नहीं तो मैं विधवा हो जाऊँगी। इस रावण की ऐसी हालत हो गई थी रोने लगा था। शास्त्रों में लिखा है कि इसका नाम रावण उस समय

पर ही पड़ा था जब यह बाली मुनि महाराज ने अंगूठा दबा करके इसको उसी पर्वत के नीचे दबा रखा था और यह फिर कुछ नहीं कर पा रहा था, रोने लगा था। **'रौति इति रावणः',** इस प्रकार की नियुक्ति बनती है और इसी के माध्यम से इसका नाम रावण पड़ा था। इससे पहले इसका नाम दशानन कहा जाता था।

मोह के संस्कार हटाने के लिए अध्यात्म की शरण में जाना चाहिए

मुख्य नाम इसके जन्म का क्या था? दशानन। यह नाम रावण पड़ा और इस तरह से रावण के अनेक तरह के यह रिश्तेदार हैं। रावण के अनेक तरह के संबंधी हैं और उन संबंधियों में भी यह बाली, सुग्रीव यह सब वानर वंशियों का, राक्षस वंशियों का आपस में संबंध रहा। इधर सुग्रीव के साथ में क्या होता है? जब उनको राज्य तो मिल गया लेकिन राज्य मिलने के बाद भी वह राजा बन करके सुग्रीव वहाँ रह नहीं पाए। इनका एक शत्रु विद्याधर था। जो सुग्रीव की पत्नी सुतारा पर मोहित था। आप सोच सकते हो इन सब कथानकों से कि बड़े-बड़े मनुष्य, बड़े-बड़े विद्याधर हमेशा इसी तरह के मोह से अपना जीवन नष्ट किए हैं और यह मोह की आदतें, यह राग की आदतें अनेक जन्मों के संस्कारों से बनी रहती हैं। जब तक व्यक्ति अध्यात्म की शरण में नहीं जाता, जब तक व्यक्ति सारे गृहपाठ को, राजपाट को त्याग करके अपनी आत्मा का ध्यान करने का संस्कार नहीं डालता तब तक उसके अंदर इसी तरह के यह मोह के, राग के संस्कार पड़े रहते हैं। आप देखते हो बड़े-बड़े राजा बीच में क्यों दीक्षा ले लेते हैं? अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए, दुनिया के इसी तरह के इस माया मोह के जाल से अपने को बचाने के लिए। इसी प्रकार की आत्म साधना करने के लिए यह मुनि महाराजों का बीच-बीच में जो दीक्षा लेने का प्रसंग आ जाता है, यह हमें बताता है कि यह वे समझदार विवेकी लोग होते हैं जो दुनिया की इस हालत को देखकर के यह विचार करते हैं कि इसी तरह की अज्ञानता में मेरा भी बहुत सारा जीवन निकला है, कई जन्म निकले हैं। इस तरह से यह स्त्री के व्यामोह को छोड़ पाना एक बहुत

बड़ी कठिन बात होती है और इस तरह की इस कठिनता को दूर करने के ही अध्यात्म की शरण में जाया जाता है। उस अध्यात्म की शरण में वह बाली मुनि महाराज पहुँचे।

असली सुग्रीव कौन?

इधर सुग्रीव की सुतारा जो उनकी पत्नी थी, उनके साथ में वह रहती थी लेकिन एक दूसरा विद्याधर उसको पहले से चाहता था, उस पर मोहित था। उसने क्या किया? कितने तरह के इन विद्याओं के काम होते हैं? आप इन कथानकों उसे समझ सकते। उसने अपनी विद्या से एक हूबहू सुग्रीव का रूप बनाया और वह सुतारा के पास पहुँच गया और वहाँ पर सुग्रीव भी खड़ा है। दोनों का आपस में अब सामना-सामना हो रहा है। लोग भ्रम में पड़ गए कि असली कौन और नकली कौन? एक दूसरे के लिए समझ में नहीं आ रहा कि असली कौन? वह कहता मैं असली, वह कहता है मैं असली। सुग्रीव के पुत्र भी हैं, मंत्री हैं, सबने एक उपाय सोचा। इन दोनों सुग्रीवों को सुतारा से अलग करो। जब तक असली-नकली की सही पहचान नहीं हो जाती, एक जब तक पद को प्राप्त नहीं हो जाता, नकली और असली का जब तक सही भाव समझ में नहीं आ जाता तब तक सुतारा के शील की रक्षा करने के लिए हम किसी से भी इनका समागम नहीं होने दे सकते और उन दोनों सुग्रीवों को उससे अलग कर दिया। सुतारा को अलग रख दिया, अलग स्थान पर उसको छुपा दिया। पुत्र उसकी रक्षा कर रहा है और इस तरह से यह सुग्रीव जो असली सुग्रीव है यह दुःखी हो गया कि मुझे राज्य मिला तब भी मैं राज्य का भोगी नहीं बन पाया। राज्य से भ्रष्ट हो गया, पत्नी से दूर हो गया, पुत्रों से दूर हो गया। मैं क्या करूँ? यह सुग्रीव अपनी इस समस्या को लेकर के, असली सुग्रीव अपनी समस्या को लेकर के खरदूषण के पास जा रहा था। मुझे इस आपत्ति से बचाने वाला कौन है? सबसे बड़ा राजा विद्याधरों का सबसे बड़ा माननीय राजा खरदूषण है, जिस का विद्याधरों के समाज में डंका बजता था। वह उस खरदूषण के पास जा रहा था। इधर वह जब जा रहा था रास्ते

में तो उसे रास्ते में ही समाचार मिल गया कि खरदूषण तो मारा गया है। अब वह सोचता है, खरदूषण मारा गया किसके द्वारा मारा गया? उसे समाचार मिला कोई भूमिगोचरी लोग आए, जिन्होंने खरदूषण को मार गिराया है। वह सोचता है मैं जिन की शरण में जा रहा था, वह तो खुद मारा गया लेकिन इतने बलशाली खरदूषण को मारने वाला महापुरुष कितना बड़ा होगा? मैं क्यूँ न उन्हीं की शरण में चलूँ तो वह सुग्रीव राम की शरण में पहुँचता है और वह सुग्रीव उन राम लक्ष्मण के पास वहाँ पहुँचते हैं, जहाँ पर वह एकांत में सुरक्षा के साथ में विद्यमान थे। उनकी चिंता मत कर, लक्ष्मण ने कहा तेरी दुविधा दूर करने के लिए मैं ही समर्थ हूँ। लेकिन पहले वचन दे अगर तेरी दुविधाओ को मैं कल ही दूर कर दूँ तो मुझे सीता का पता लगाने के लिए पूरा का पूरा जो भी बंदोबस्त करना है, वह तेरे द्वारा करना है और वह सुग्रीव जब तैयार हो जाता है कि अगर मुझे मेरी सुतारा मिल जाएगी, मेरा राज मिल जाएँगा तो मैं आपसे कह रहा हूँ सात दिन के अन्दर मैं आपकी सीता का पता लगा करके दूँगा। अगर नहीं लगा करके दूँ, मैं आपसे बता देता हूँ कि मैं आपके सामने अग्नि में साक्षात जल जाऊँगा । मैं आपको सात दिन के अन्दर सीता का पता लगा कर दूँगा। राम जी, लक्ष्मण जी सब आपस में सलाह करते हैं और कहते हैं पहले इसकी सहायता की जाए, इसको इस समस्या से निकाला जाए और उसको उस समस्या से निकालने के लिए वहाँ किष्कंधापुर में आते हैं। असली और नकली दोनों सुग्रीवों के बीच की वह लड़ाई देखते हैं। पहले दोनों को लड़ाते हैं पहले, सामने खड़े होकर के लड़ो। दोनों को बुलाया जाता है और नकली सुग्रीव ने असली सुग्रीव को चोट पहुँचा दी। हाथापाई होती है, वह असली सुग्रीव वहाँ पर मूर्छित होकर के गिर पडता हैं। थोड़ी देर बाद वहाँ पर उसे भान आता हैं। नकली सुग्रीव कहता है कि मैं ही यहाँ का राजा हूँ लेकिन असली सुग्रीव से जो बात हो चुकी थी वह नकली सुग्रीव को पता नहीं थी। वह नकली सुग्रीव वहाँ पर अपने स्थान पर राजा होने की घोषणा करता है लेकिन वहाँ पर अभी भी उसके मंत्री रोक देते हैं नहीं जब तक कोई निर्णय नहीं होता तब तक नहीं कह सकते कौन सुग्रीव

है? इधर असली सुग्रीव को जब चेतना आती है, वह उठ के बैठता है। राम जी से कहता है, आपके होते हुए मेरा एक क्या हाल हो गया? जब वह मुझे मारने आया, आपने उसी समय पर उसको क्यों नहीं पकड़ लिया? उसी समय पर उसको क्यों नहीं दबोच लिया? राम जी कहते हैं- हर काम को विचार के साथ किया जाता है। मैं किस को दबोचूँ पहले यह तो देख लूँ? नहीं पता पड़ता कि असली दबोचने में आ गया तो मैं पहले देख रहा था। अब मेरी समझ में आ गया कि असली यह है और नकली यह है। अब तुम चिंता मत करो और उन्होंने असली को अपने पास रोककर के लक्ष्मण को आज्ञा दी तो लक्ष्मण ने एक दांव में ही उस नकली सुग्रीव को सामने जाकर के जब उसके ऊपर प्रहार करने की कोशिश की तो उस नकली सुग्रीव की जो विद्या के कारण से वह जो आकृति रूप बना हुआ था, वह लक्ष्मण को देखते ही वह विद्या डर करके भाग गई। वह नकली सुग्रीव अपने असली रूप में जो पहले विद्याधर था उसका साहसगति विद्याधर के रूप में सामने आ करके खड़ा हो गया और सबको पता पड़ गया कि यही उसका पुराना दुश्मन है और उस को बंदी बना लिया गया और असली सुग्रीव को वहाँ का राजा बना कर उसकी सुतारा उसको प्रदान कर दी।

श्री राम और लक्ष्मण को समाचार मिलना कि सीता लंका में हैं

यहाँ से यह कहानी अब आगे बढ़ती है। फिर सुग्रीव के लिए क्या घटित होता है? सुग्रीव को राज मिल गया, अपनी सुतारा के साथ रहने लगा। अंगद आदि उसी के पुत्र थे, उन सब के साथ में वह रहने लगा। उसे अपना राज्य बहुत दिनों बाद मिला था, परेशान था, तड़प रहा था। राज्य के ही भोग में मस्त हो गया। चार, पाँच, सात दिन हो गए राम जी ने देखा कोई समाचार नहीं, कुछ नहीं। लक्ष्मण जी ने पता किया सुग्रीव कहाँ है? वह तो अपने महल में सुतारा के साथ मस्त है और लक्ष्मण को गुस्सा आया। जब लक्ष्मण पहुँचते हैं वहाँ अब, उसको ललकारते हैं- दुष्ट! तेरे लिए इसलिए रक्षा की गई थी इसलिए यहाँ पर मौज-मस्ती के लिए तुझे सुतारा दी गई थी कि तुम भी अपनी प्रतिज्ञा भी भूल जाए। फिर उसको याद आया, क्षमा मांगी और कहता है- मैं बहुत जल्द ही आपके लिए सूचना ला करके देता

हूँ। उसने अपनी सारी सेना के लोगों को इधर-उधर भेजा और फिर उस समय पर वह रत्नजटी उस सुग्रीव को मिल गया जो अलग एक जगह पर

पर्वत पर अकेला बिना विद्या के तड़प रहा था। कैसे भी अपना जीवन निकाल रहा था? उस रत्नजटी ने बताया कि मैंने उस सीता की आवाज सुनी, वह रो रही थी। हा लक्ष्मण, हा राम ऐसे करके बुला रही थी और रावण उसे ले जा रहा था। वह रावण है, जो उसे लंका में ले गया है और यह बात रत्नजटी ने जब सुग्रीव को बताई। सुग्रीव रत्नजटी को लेकर के राम के पास लेकर के आए और जब रत्नजटी ने राम को बताया तो उस समय पर पहली बार उन्हे यह सुनने को मिला कि सीता लंका में रावण के यहाँ पहुँच गई है। अब उस समय पर राम जी कहते हैं- देर करने की जरूरत नहीं है। जल्दी बताओ! यह लंका है किधर? वह उस समय पर लंका पर चढ़ाई करने के लिए, लंका में जाने के लिए तैयार होते हैं लेकिन सारे विद्याधर जैसे यह सुनते हैं कि रावण के यहाँ पर सीता है, सबके हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं। सबसे लड़ा जा सकता हैं, लंकेश्वर रावण से नहीं। इस समय पर सबसे ज्यादा बलशाली विद्याधरों का राजा लंकेश्वर रावण हैं। तीन खंड का अधिपति है, जिसने कैलाश पर्वत को अपनी भुजाओं में उठाने की दमखम दिखाई थी। बड़े-बड़े देवता जिसके चरणों में रहते हैं। कोई भी उससे लड़ नहीं सकता। सब विद्याधर नीची निगाह करके भूमि पर देखने लग गए और आपस में विचार करने लग गए। यह काम असंभव है। श्रीराम से बोलो अनेक विद्याधरी स्त्रियाँ मिल जाएँगी, रानियाँ मिल जाएँगी। उनसे इनका विवाह करा दो, इनके साथ रह ले, सीता की बात छोड़ दें। अनेक विधाधरों ने उनसे यह सलाह दी। लेकिन उस समय पर रामचंद्र जी क्या कहते हैं?

सुनकर यह श्रीराम ने, कहे वचन गंभीर,
मेरा निश्चय भी सुनो, धारण कर मन धीर।

उन विद्याधरों से वह कहते हैं, क्या कहते हैं?

स्वर्ग की अप्सराएँ लाओ, उनमें भी हैं, कुछ रुचि नहीं

सीता के बिना सूना जीवन, बिन उसे छुडाए आए चैन नहीं।
तुम रहो मग्र ले, धनुष हाथ, हम दोनों भाई जायेंगे।
विश्वास हमें अपनी सीता को छुड़ा ले आएँगे।

लक्ष्मण द्वारा कोटिशिला को उठाना और देवों द्वारा पुष्प वृष्टि करना

जब राम जी का यह विश्वास सामने आया और उन्होंने कहा तुम विद्याधर लोग हो तुम डरते हो, डरते रहो। हम दोनों भाई ही वहाँ लंका जा करके सीता को ले करके आते हैं तो उस समय पर एक जामवंत विद्याधर थे। सुना हैं न नाम? जामवंत। वह विचार करके वहाँ पर बोलते हैं-

सिर धुन कर जामवंत बोले, एक बात तुम्हें बतलाते हैं,
रावण ने केवल से पूछा, मम मृत्यु कब तुम्हें बताते हैं।
मुनिवर ने उसे यह बतलाया, जो कोटशिला उठाएगा।
वह हो नारायण अवतारी, उन हाथों मारा जाएगा।
सुनते लक्ष्मण उठ खड़े हुए यह कहते कोटशिला चलिए।
मैं उसको अवश्य उठाऊंगा, मुनि वचन सत्य निश्चय करिए।
तब विद्याधर और राम लखन, मिल कोटशिला पर आते हैं।
आश्चर्य मई उस ऊंचे पर्वत की, पूजा मिल सभी रचाते हैं।

उन विद्याधरों में जामवंत के पास में यह समाचार था। उन्हें पता था कि एक बार रावण ने केवली भगवान से, सर्वज्ञ भगवान से पूछा था, जिन के समक्ष रावण ने नियम लिया था कि मैं बिना चाहे हुए किसी भी स्त्री को स्वीकार नहीं करूँगा। बड़े-बड़े महापुरुष पूछ लेते हैं- कितने दिन बचे हैं? कितने दिन राज्य करूँगा? कौन मेरी, कैसे मेरी मृत्यु होगी? उस समय पर रावण ने पूछा होगा मेरी अंतिम स्थिति क्या बनेगी? तब केवली भगवान के मुख से निकला होगा, जो कोटि शिला, एक बड़ी शिला होती है, वह कोटि शिला के नाम से विख्यात है। कोटी शिला को उठाने वाला जो मनुष्य होगा उसी के माध्यम से तुम्हारी मृत्यु होगी। यह बात केवल जामवंत को मालूम थी और जामवंत ने इसी बात से परीक्षा करने के लिए कि यह महापुरुष तो हैं लेकिन रावण की मृत्यु उसके अलावा और कहीं

नहीं हो सकती जो केवली भगवान ने बताया है। रावण की मृत्यु के लिए पहले हमें विश्वास हो जाए तब इनकी हम रक्षा करें, इनके लिए हम सहयोग दें। जामवंत ने यह बात बताई। राम लक्ष्मण सभी मिलकर के उस कोटि शिला के पास पहुँचे। वह बहुत बड़ी शिला होती हैं। उस शिला की उन्होंने पूजा की और सब मिलकर के उस शिला को देख कर के आश्चर्य में रह जाते हैं, वह देव रक्षित शिला होती है और उस आश्चर्यमयी शिला को लक्ष्मण जी मंत्र पढ़कर के, सिद्धों का स्मरण करके, अपने हाथों से उस शिला को घुटने पर्यंत तक उठा लेते हैं और जैसे ही वह शिला घुटने पर्यंत तक उठा ली जाती है।

देवों ने जय-जयकार किए, आकाश में फूल बरसते हैं।
सब राजा भी हर्षित होकर, श्री राम लखन जय बोले हैं।
इनकी शक्ति हैं अनुपम भाई, क्या इनका कोई बल तोले।
रावण ने तो विद्या बल से, कैलाश को जाए उठाया था
उनकी शारीरिक शक्ति लख, आश्चर्य सभी को आया था।
सब तीर्थों का वंदन करके, किष्किंधा पुर में आते हैं।
सीता की सुधि ले आने का, हनुमान जी को बुलवाते हैं।
सोचा सबसे बलवान हैं वह, गुणवान और चरम शरीरी भी,
वह लंका में जा सकता हैंः समझायेगा आखिर भी।

हनुमान का श्रीराम जी का प्रथम दर्शन,और हनुमान जी का लंका जाना

सभी लोग कोटी शिला को उठाने के बाद सुग्रीव, राम, लक्ष्मण, जामवंत आदि सभी यह वानर वंशी लोग फिर तीर्थ यात्रा करके सम्मेदशिखर, अष्टापद कैलाश गिरी की यात्रा करने के बाद में पुनः अपनी किष्किंधा नगरी में आ जाते हैं और वहाँ पर बैठकर के योजना बनाते हैं। इस रावण के महल तक, लंका तक पहुँचने वाला कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसकी बात भी रावण मानता हो और वह रावण की लंका में प्रवेश करने में समर्थ भी हो। क्योंकि सुना गया है कि लंका में चारों ओर कोट बना दिया गया है।

मायामयी कोट बना दिया गया है। जहाँ पर किसी विद्याधर को आने की अनुमति नहीं है। ऐसा विचार करके सब विद्याधरों ने उस समय पर एक

नाम सुझाया और वह नाम क्या था? बोलो श्री हनुमान भगवान की जय! ऐसा वह नाम सुझाया गया कि वह हनुमान जी को बुलाया जाए, जो इन विद्याधरों में अभी सर्वश्रेष्ठ विद्याधर हैं, बलवान हैं और वही रावण के पास जा सकते हैं, रावण की उन से रिश्तेदारी भी हैं। सुन रहे हो राम भक्त लोगों? यह विद्याधरों की आपस में रिश्तेदारी रहती है। पूर्वज आपस में रिश्तेदार रहते हैं लेकिन सब लोग अपने-अपने विवेक से काम लेते हैं। जब किसी का जीवन अस्त होने को होता है, मृत्यु सामने दिखाई देती है तो सब लोग अपना पैंतरा बदलते हैं। कहते हैं- गिरती हुई दीवार से हर कोई बच कर चलता है। इसी तरह से उस समय पर हनुमान जी को बुलाया गया और कहा गया कि यही वह सर्वसमर्थ व्यक्ति हैं, जो रावण को समझा भी सकते हैं, रावण की लंका में प्रवेश भी कर सकते हैं और वहाँ पर इन्हें कोई रोक नहीं सकता है। रावण इनकी बात को मानता है और इस तरह से उनको जब बुला करके राम लक्ष्मण को जब उन हनुमान जी ने पहली बार देखा, पहली बार जब उनकी भेंट होती हैं तो कहते हैं- पहले ही दर्शन में जो होता है, वही सच्चा प्रेम होता है, वही सच्ची भक्ति होती है। सुन रहे हो? पहले दर्शन में। हमने भी गुरु जी के पहले दर्शन किए थे तो पहले दर्शन में ही सोच लिया था अब जिंदगी गुजरेगी तो इन्हीं के चरणों में गुजरेगी नहीं तो बिना इनके भी कहीं रहना पड़ा तो रह लूँगा लेकिन इनके अलावा किसी को नहीं पूछूँगा, किसी के पास नहीं जाऊँगा। पहला दर्शन, हनुमान जी का पहला दर्शन, श्री राम के लिए हुआ। श्री राम को पहला दर्शन हनुमान जी के लिए हुआ और श्री हनुमान ने यह सोचा कि हमको बुलाया जा रहा है। देखो! बड़ी ही विचित्र स्थिति है, अगर आप वास्तव में इसका अनुभव करो। राम तो वहाँ पर नए-नए हैं, वे तो भूमि गोचरी मनुष्य हैं। रावण उनका पहले से रिश्तेदार है। रावण के वंश के बारे में वह जानते हैं लेकिन वह विचार करते हैं कि मैं रावण की सहायता करूँ

कि राम की सहायता करूँ? उनके मन में विचार आता है कि जिसने खरदूषण को मार गिराया, शम्बुक को मार गिराया और अगर देखा जाए नीति-न्याय की अपेक्षा से तो रावण ने एक बहुत बड़ा अपराध किया है। बहुत बड़ा राजा होने के बाद भी रावण का यह अपराध क्षम्य नहीं है। हम जैसे लोग अगर रावण की सहायता करेंगे तो हमारी भी गिनती उन में आने लग जाएगी। ऐसा विचार करके उन हनुमान जी ने अपना मन बनाया कि मैं सुग्रीव के कहने पर जिन्होंने नकली सुग्रीव को भी पता कर लिया, ऐसी उनकी ख्याति उन विद्याधर वंश में पहुँचने लग गई तब जाकर के हनुमान जी को लगा कि यह कोई बड़े महापुरुष हैं। इनके पास चलना चाहिए क्योंकि उस नकली सुग्रीव का पता लगाने के लिए उस समय पर हनुमान जी के पास भी ये सुग्रीव पहुँचे थे। लेकिन वह सुग्रीव की इच्छा पूर्ण नहीं हो पाई। हनुमान जी उस नकली सुग्रीव का पता नहीं लगा पाए, वह पता रामजी ने लगा लिया। इसके माध्यम से पूरे वानर वंश के अन्दर यह खलबली मच चुकी थी कि सबसे बड़े यहाँ पर योद्धा, सबसे बड़े महापुरुष अगर कोई हैं तो यह दो भूमिगोचरी जो हमें यहाँ दिखाई दे रहे हैं, ये राम और ये लक्ष्मण हैं ऐसा उनकी ख्याति विद्याधरों के वंश में पहुँच चुकी थी और उसी के कारण से हनुमान जी आकृष्ट होकर के उनको समाचार मिलते ही वे राम के पास में आते हैं।

श्रीराम से भेंट हित, आए श्री हनुमान देखत ही मोहित हुए।
बोले स्तुति गान, जैसे थे मैंने सुने सुंदर तेज स्वरूप
वैसा ही देखा तुम्हें हे रघुकुल! के भूप।

हनुमान जी ने जैसा मन में विचार किया था, सोचा था कि वह राम कैसे होंगे? लक्ष्मण कैसे होंगे? जब उन्होंने प्रथम भेंट की, प्रथम दर्शन किए तो वह आह्लादित हो गए। श्री राम की पीतमयी स्वर्ण की काया, लक्ष्मण की नीलमणि की वह नीलिमा लिए हुए अद्भुत काया और उस दोनों की काया को देख कर के उस समय पर-

वे दिन आने खाली समय पाए, सांचे में तुमको ढाला हैं।
है स्वर्ण वर्ण नख शिख सुंदर मन देख हुआ मतवाला है।

इस नीलांबर परिधान मध्य स्वर्णो की किरणे फूट रही,
लख सौम्य प्रकृति गंभीर मानस में भक्ति मचल चली।
घनश्याम अंत मे मिली सूरज जैसी छवि निज में लाता है,
लक्ष्मण का वैसा रूप देख मन भर उमंग में आता है।

क्या कहूँ? प्रशंसा तो रघुवर सज्जन की पीछे होती है लेकिन प्रत्यक्ष ही कहने को यह वाणी विचलित होती है।

सुनकर हनुमंत के वचन प्रेम स्नेह गंभीर,
मिले राम पुलकित हृदय गिरा गंभीर।
हे हनुमान क्या गुण गाते, बिन सीता हम मुरझाए हैं।
यह कार्य करो तुम ही भाई, इसलिए तुम्हें बुलवाए हैं।
सुनकर के श्री शैल तभी तैयार हुए हैं जाने को श्रीराम मुद्रिका देते हैं, सिय को विश्वास दिलाने को।

श्रीराम की मुद्रिका लेकर हनुमान का सीता के पास जाना

उस समय पर हनुमान जी तुरंत ही श्री राम को पा करके वह हनुमान जी भक्ति से भर गए और तुरंत ही श्री राम की आज्ञा पाकर के वह लंका जाने के लिए तैयार हो गए। उस समय पर श्री राम ने कहा तुम जा तो रहे हो लेकिन उस सीता को विश्वास कैसे होगा कि तुम मेरे पास से आए हो। यह मेरे हाथ में एक मुद्रिका है, अंगूठी है इससे लेते जाओ। उसे पता है कि यह मुद्रिका केवल श्रीराम के हाथ में ही थी और यह मुद्रिका उसके लिए देना तो उसे विश्वास हो जाएगा कि तुम राम के पास से आ रहे हो। इस तरह से उनको कह कर के वहाँ से विदा करते हैं और वह शीघ्र ही वहाँ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

यह कहा– 'सती से जा कहना हम शीघ्र वहाँ पर आएँगे।
कष्टों को धर्म सहित सहना, हम तुमको आन छुड़ाएगें।
है तुम्हें अधिक कहना ही क्या, तुम शील धर्म पालन हारी
चूड़ामणि उनकी ले आना, मम हाल की वह जाननहारी।

जब तुम वहाँ से लौट कर के आओ तो सीता का चूड़ामणि ले आना। चूड़ामणि जानते हो क्या होता है? बालों के गजरे में जो लगा रहता है, उसे

चूड़ामणि कहते हैं। वह चूड़ामणि ले कर के आ जाना तो मैं समझ लूँगा कि तुम वास्तव में सीता से मिल कर के आए हो। और इस तरह से

कर के कुछ सेना संग में हनुमान विमान से जाते हैं।
रास्ते में एक वनी अंदर, अग्नि लगी लख पाते हैं।
जो चारण मुनि अग्नि में थे, वहाँ उनकी जान बचाई हैं
लेकर सागर से खारा जल, मूसलधार वर्षायी है।
फिर मुनि चरणों जाए कर, बैठ गए हनुमान।
इतने में कन्याएं कुछ, पहुँची वहाँ पर आन॥

हनुमान जी ने मार्ग में मुनियों का उपसर्ग दूर किया

रास्ते में जब वे जा रहे थे तो उन्हें दो मुनि महाराज के दर्शन होते हैं। उनके लिए चारों तरफ आग लगी होती हैं और उस आग को देख कर के वह सोचते हैं, मुनि महाराज इसमें जल जाएँगे। ऐसा विचार करके उन्होंने वहाँ पर उस आग को बुझाया और वहाँ पर शीतल जल की वर्षा अपनी विद्या के माध्यम से की और उन मुनि महाराज का भी आशीर्वाद लेकर के वह आगे बढ़ते हैं। उस समय पर जब वह आगे बढ़ते जाते हैं-

मौन रहे श्री राम जी सीता के वेराग,
बोले कभी तो जानकी निकले ऐसे ही राग,
इधर राम की यह दशा उधर बढ़े हनुमान
लंका के पर कोट पर आकर रुका हुआ
लंका के प्रकोट पर आकर रुका विमान

मायामयी कोट को तोड़कर हनुमान जी का लंका में प्रवेश।

जब वे लंका के प्रकोट पर पहुँचे तो वहाँ पर आकर के विमान रुकता है।

जाकर उधर हनुमान का विमान कोट पर थम गया।
लंका की चारों ओर से ही जो था रक्षा कर रहा

फिर उस समय पर जब वह विमान रुक जाता है। वह सोचते हैं कि इस मायामयी कोट को तोड़ कर के मैं चूर्ण कर दूँ और अपनी गदा को वह उस

समय हाथ में लेकर के, बख्तर पहन कर के अपनी विद्याओं के माध्यम से, अपने मुख में जो उनके लिए विद्याओं के माध्यम से मुख से अग्नि निकालते हुए उस व्रजमयी कोट को तोड़ कर के उसके अन्दर पहुँच जाते है। अनेक जो बीच में उन्हें योद्धा मिलते हैं, उन सब से लड़ते हुए वह लंका के अन्दर पहुँच करके विभीषण के पास पहुँचते हैं सबसे पहले और कहते हैं-

लंका के अन्दर पहुंच गए विभीषण पास
कहा सिया सुध हो सके आया हूँ तुम पास।
हे भाई तुम ने रावण को अब तलक नहीं समझाया है,
मर्यादा रहित है काम किया, अपने कुल कलंक लगाया है।
अब कहा विभीषण ने जो, कोई भी इनको समझाता है।
वह नहीं किसी की सुनते हैं, गुस्सा उन को आ जाता हैं।

वह नहीं किसी की सुनते हैं, गुस्सा उनको आ जाता है। किस को? रावण को।

सुन यह कहकर हनुमान चले माता का दर्शन पाना है,
त्रैलोक्य सुंदरी है कैसी जिन रावण का मन छाना है।

वह विचार करते हैं अगर विभीषण तुम भी हमारी सहायता नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं मैं अकेला ही जाता हूँ। सबसे पहले सीते को देखता हूँ। वह सीता है कैसी? जिसने इस रावण के मन को जीता और रावण के मन को मोहित किया। ऐसा विचार करके वे उस देवारण्य वन में जहाँ जानकी बैठी हैं उनके पास तक पहुँचते हैं और पास पहुँच करके एकदम से पहले उनके पास नहीं जाते हैं। उनके लिए भी यह विचार आता है कि देखें यह क्या करती है? क्या सोचती हैं? मेरे किसी भी तरह की प्रतिक्रिया का यह किस तरह से उत्तर देती है? यह विचार करके वह उनको पहले आसपास खड़े वृक्षों के झुरमुटों से देखते हैं और फिर उसके बाद में वह हनुमान जी क्या करते हैं? यह आपको कल सुनने को मिलेगा। क्योंकि हनुमानजी के लिए भी यह एक बहुत बड़ा रहस्य भरा कार्य था और वह सीता को देख करके कैसे राम का समाचार उनके लिए देते हैं? यह उनकी बहुत बड़ी एक विद्वता है। जो आपके लिए कल सुनने को मिलेगी। आज हम समझते

हैं समय काफी हो गया है। आपके लिए यही भाव बना रहे कि हम ऐसे महापुरुषों के जीवन से ये समझें, उनके चरित्र से ये समझें कि हमारा पुण्य और हमारा पाप कर्म ही हमें अनेक प्रकार की विपत्तियों और संपत्तियों में सहायक होता है। पुण्य के उदय से सब काम बनते हैं और पाप के उदय से सब काम बिगड़ते हैं। लेकिन अगर हम पाप के उदय में भी सामर्थ्य रखते हैं, धैर्य रखते हैं तो अनेक सहयोगी लोग हमारे सामने मिलते हैं। हमारे पुण्य भाव के कारण से उन सब के सहयोग से हमारे काम भी बनते चले जाते हैं। इसलिए कभी भी आपत्ति के समय पर निराश होकर के मोहित होकर के मूर्छित होने की जरूरत नहीं है। अगर रामजी depression में चले जाते तो क्या होता? बताओ? बताओ? बताओ? मोहित तो थे, मूर्छित भी हुए लेकिन उन्होंने अपने आप को संभाला। अगर वह depression से उबर पाते तभी वे इन सब तरह की नीतियों को समझ कर के, कोई भी तरह का अपने लिए वह कार्य आगे को जाने के लिए बना पाते। इसलिए किसी भी व्यक्ति को दुःख के समय पर बहुत ज्यादा शोकाकुल होने की जरूरत नहीं होती। उस समस्या से कैसे निपटा जाए? इसका विचार करने की जरूरत होती है। यह हमें राम को आपत्ति में पड़ते हुए देख कर के उन श्री राम जी से यह सीखना है तब आपके लिए यह कथा कुछ मायने रखेगी कि कभी भी अपने जीवन में विपत्तियाँ आएँ, हम दुःखी तो हो लेकिन दुःख हमारे ऊपर इतना न समा जाए कि हम आगे का विचार करने का कोई भी ज्ञान न रख पाएँ और यह भी न सोच पाए कि आखिर इस दुःख से उबरने का क्या उपाय है? इतना ज्ञान अपने अन्दर आप बनाए रखोगे तो श्रीराम का यह चरित्र आपकी सहायता करेगा। आपके बिगड़े हुए काम भी बनेंगे केवल बस! आप उनका इसी समय पर स्मरण करना

प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम,
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।

बस! इन पंक्तियों से आप उनका स्मरण करना, आप देखना कि अपने आप आपके लिए कोई न कोई सहायता करने, कोई व्यक्ति आपके सामने

खड़ा होगा। आपका विचार आपका ज्ञान अपने आप काम करने लग जाएगा कि मैं वहाँ जाऊँ, उनसे बात करूँ और मेरा यह काम हो जाए। इस तरह का विवेक आना भी हमें भगवान की भक्ति से ही संभव होता है और इस तरह की भक्ति अगर हम करते रहेंगे तो कभी भी असमय में काल के कवल नहीं बने इसी भावना के साथ कि सब लोग रामचंद्र जैसी अपने अंदर धैर्य और अपने अंदर के पराक्रम का परिचय दें। सभी श्रोताओं से यही भावना रखता हूँ कि सभी लोग अपने आप को इस तरह के depression से उबारने की शक्ति प्राप्त करें और रामचंद्र जी का यह चरित्र हमेशा सुनकर के आत्मशक्ति को बढ़ाएँ।

विरह में व्याकुल सीता-हनुमान का संवाद

त्रेसठ श्लाका पुरुष कौन होते हैं?

जैन दर्शन के अनुसार चतुर्थ काल में जब त्रेसठ शलाका पुरुषों का अवतरण होता है, उन त्रेसठ शलाका पुरुषों में यह सभी महापुरुष उत्पन्न होते हैं, जिनके जीवन चरित्र से यह भरतक्षेत्र की आर्यखण्ड की भूमि अलंकृत होती है। उन त्रेसठ शलाका महापुरुषों में **चौबीस तीर्थंकर** होते हैं, **बारह चक्रवर्ती** होते हैं, **नौ बलभद्र** होते हैं, **नौ नारायण** होते हैं और **नौ प्रति नारायण** होते हैं। इन्हीं के माध्यम से तीर्थंकरों के काल में, तीर्थंकरों के द्वारा और तीर्थंकरों के जाने के बाद भी अनेक-अनेक महापुरुषों के द्वारा जो विशिष्ट रूप से उनके पुण्य के प्रभाव दिखाई देते हैं, पुण्य के प्रभाव के साथ-साथ अनेक तरह के बल, पराक्रम और अनेक तरह के उनके जो प्रभाव दिखाई देते हैं, उनमें अनेक महापुरुष हुए हैं। उन्हीं महापुरुषों में से **श्री राम आठवें बलभद्र** के रूप में माने जाते हैं। **लक्ष्मण जी आठवें नारायण** के रूप में माने जाते हैं और जो **रावण है, वह आठवाँ प्रतिनारायण** है। इन सभी महापुरुषों का एक संयोग बनता है, इस धरा पर इनके अनेक तरह के पराक्रम दिखाई देते हैं। अनेक चक्रवर्ती हुए, अनेक बलभद्र हुए, अनेक नारायण हुए, लेकिन हम किन्हीं-किन्हीं के जीवन से प्रभावित होकर के उनका स्मरण कर पाते हैं। क्योंकि उनके जीवन में अन्य अनेक चक्रवर्तियों और नारायणों आदि की अपेक्षा से कुछ विशेषताएँ रही हैं।

भगवान ऋषभदेव ने सबसे पहले इक्ष्वाकु वंश चलाया था

इसी क्रम में यह जो श्री राम और लक्ष्मण जी का यहाँ पर आपको चरित्र चित्रण करके सुनने में आ रहा है, सुनाया जा रहा है, यह बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ भगवान के काल में उत्पन्न हुए महाप्रतापी यह बलभद्र

राजा हुए और इन्हीं के जीवन में जो यह घटनाएँ घटित हो रही हैं, उन

घटनाओं में अगर हम इनका इतिहास देखते हैं तो यह सभी रघुवंशी कहलाते हैं। सबसे पहला वंश भगवान ऋषभदेव ने इक्ष्वाकु वंश के रूप में चलाया था और जितने भी वंश कालांतर में उत्पन्न होते गए, वह सभी इसी इक्ष्वाकु वंश की परंपरा में, इसी की श्रंखला में आए। उस इक्ष्वाकु वंश को बाद में सूर्यवंश भी कहा गया, इक्ष्वाकु वंश से ही सूर्यवंश, चंद्रवंश, उनके पुत्रों के नाम आदि के रूप में आगे बढ़े। फिर उसी वंश में उन्हीं क्षत्रियों की परंपरा में राजा दशरथ के दादा, राजा रघु थे। राजा दशरथ के कौन? दादा, राजा रघु थे। उन राजा रघु के नाम से यह रघुवंश चलता रहा। राजा दशरथ अत्यंत पराक्रमी थे। उनके दादा जो रघु थे, उन रघु के पुत्र का नाम अनरण्य था। उन **अनरण्य** के **दो पुत्र** थे, **अनंतरथ** और **दशरथ।** कभी उन राजा अनरण्य को वैराग्य हुआ, उन्होंने गृह त्याग करके राजपाट का त्याग करके, अपने पुत्र अनंतरथ को देना चाहा। लेकिन वह अनंतरथ भी नहीं माना कि जब आप इस वैभव को तुच्छ समझ कर के जा रहे हो तो एक तुच्छ चीज हमें क्यों दे रहे हो? जब आपको यह गृह, यह राजपाट अच्छा नहीं लग रहा है, तो हमको क्यों सौप के जा रहे हो? हम भी आपके साथ चलेंगे और वह बड़ा पुत्र भी उनके साथ हो लिया। उस समय दशरथ छोटे थे लेकिन उन अनरण्य के मन में चूँकि वैराग्य का भाव आ चुका था, इसलिए वह उन दशरथ जी को ही राज्य दे करके निकल गए अपने बड़े पुत्र के साथ। उन दशरथ का यह वंश है, यह रघुवंश जिन्हें आज हम रामचंद्र जी को विशेष रुप से रघुवंशी कहते हैं। यह दशरथ जी के दादा रघु के नाम पर उनका यह वंश रघुवंश चलता है। बीच-बीच में अनेक महापुरुष होते हैं, उनके नाम पर वंश चलते हैं लेकिन जो मूल शाखा होती है वह मूल शाखा की अनेक अनेक शाखाएँ और भी निकलती रहती हैं। उस शाखा का भी अपना नाम होता है और मूल शाखा का भी अपना नाम चलता रहता है। इसलिए यह सभी वंश इक्ष्वाकु वंशी राजा कहलाते हैं। रघुवंश हो, सूर्यवंश हो, सोमवंश हो, चंद्रवंश हो, यह सभी इक्ष्वाकु वंश

की ही सभी शाखाएँ हैं। समय-समय पर अनेक अनेक राजाओं के नाम पर इस तरह से यह वंश चलते रहे और यह कर्मभूमि के वंश के बारे में आपको बता रहा हूँ।

रावण का नाम दशानन कैसे पड़ा?

उधर विद्याधरों के यहाँ पर राजा नमि और विनमि यह प्रमुख राजा माने जाते हैं। उनके हिसाब से वहाँ पर विद्याधरों के भी वंश चला करते हैं और उनमें राक्षस वंश, वानर वंश ये प्रमुख वंश हैं। यह विद्याधरों के वंशों में राक्षस नाम के राजा हुए, जिनके नाम पर वह राक्षस वंश चला। इसी तरह से वानर वंश भी चला और यह वंशों के नाम उनके पूर्वजों ने जो अच्छे-अच्छे कार्य किए थे, उसके कारण से उनके वंशों के नाम आगे चलते रहे। यह विशेष बात आपको जैन रामायण के माध्यम से देखने, सुनने को और पढ़ने को मिलेगी कि ये इनके वंश के नाम थे। रावण, उनके भाई यह सब कोई राक्षस नहीं थे। आपसे कहा था, इनके पूर्वज सभी बड़े-बड़े पराक्रमी, बड़े-बड़े दयालु राजा रहे हैं। प्रजा पर शासन करना पड़ता है, युद्ध भी करना पड़ता है और धर्म भी ध्यान में रखना पड़ता है। यह सभी नीति प्रिय, न्याय प्रिय राजा रहे हैं और इन्हीं के वंश में यह रावण जो जन्म लिया है, इसका मूल नाम दशानन था। जब इसका जन्म हुआ था तो जन्म के होते ही दूसरे ही दिन इनके घर में एक बहुत बड़ा नाग रक्षित हार रखा हुआ था। जिसकी रक्षा हजारों नाग किया करते थे, उसे हर कोई हाथ नहीं लगा सकता था। यह एक दिन का बालक उस नाग रक्षित हार से खेलने लग गया। उसको अपने हाथ में पकड़ कर के उसे घुमाने लग गया और उस हार में इसके दस मुख देखने को मिलते थे। दस-दस इसके चेहरे, इसकी माँ को और इनके **पिता रत्नश्रवा, माँ का नाम केकसी था**, उनको यह देखने को मिला तो इनके माता-पिता ने इसका नाम दशानन रख दिया यानी जिसके दस मुख हमें जन्म से ही देखने को मिल रहे थे, इसलिए इसका नाम दशानन रख दिया था। यह **दशानन राक्षस** वंशी बहुत बड़ा विद्याधर राजा बना चूँकि यह **प्रतिनारायण की उपाधि से अलंकृत** था

और यह उपाधियाँ पूर्व जन्म में किए गए अनेक तरह के पुण्यों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं।

वानर वंशी, राक्षस वंशी राजा बहुत पराक्रमी और बहुत सुन्दर होते है

यह इधर विद्याधर वंश में राक्षस वंशी राजा हैं तो उधर जो सुग्रीव है, हनुमान है, यह सब वानर वंशी राजा हैं, विशिष्ट राजा हैं। जैन रामायण के अनुसार इन्हें बहुत सुंदर, कामदेव रूप के समान इन्हें सुंदर राजा माना जाता है। बहादुर, पराक्रमी, बल, शौर्य से परिपूरित इनका पूरा का पूरा विवरण दिया गया है। जैन दर्शन में, जैन रामायण में इनका कहीं पर भी बंदर जैसा मुख है यह नहीं बताया गया। इन्हें कपिराज तो कह सकते हैं क्योंकि यह वानर वंश के राजा थे इसलिए कपिराज हैं। लेकिन लोक में जो प्रचलित है कि इनका मुख बंदर की तरह था, यह जैन दर्शन में देखने को नहीं मिलता। सभी श्रद्धालु लोगों को सभी बातें समझनी चाहिए, सुननी चाहिए और अपने मन में विचार करके भी हर चीज का आंकलन करना चाहिए कि जब हमें भगवान की कथाएँ अनेक-अनेक रूपों में मिल रही हैं तो भगवान कभी किसी एक के नहीं होते हैं, भगवान सबके होते हैं। राम हनुमान सबके हैं, हमारे भी राम हैं, हमारे भी हनुमान हैं, आपके भी राम है, आपके भी हनुमान हैं, सबके अपने-अपने राम हैं, अपने-अपने हनुमान हैं। जिनके अन्दर वास्तव में राम और हनुमान के प्रति भक्ति होती है, वह हमेशा हर पहलू से उनको देखते हैं, सुनते हैं और उनके बारे में जितनी ज्यादा से ज्यादा जानकारी मिल सकती है, लोग उसे इकट्ठा करके अपने ज्ञान को समुन्नत बनाने की कोशिश किया करते हैं। यह विचारमान, बुद्धिमान लोगों के कार्य होते हैं। इसलिए आग्रहों को छोड़ करके अगर आप इस जैन रामायण को सुनेंगे तो आपको बहुत अच्छा लगेगा। आपके मन में भले ही पहले से कुछ बैठा हो लेकिन अगर आप विचारपूर्वक सुनेंगे, समझेंगे तो आपको समझ में आएगा कि वास्तव में कुछ भी असलियत हो सकती है। लेकिन हम अगर एक पहलू से अनभिज्ञ रहते हैं तो वह भी हमारी एक अज्ञानता कहलाती है। हमें अपने ज्ञान की परिपूर्णता हर पहलू

को सुन करके, समझ करके करनी चाहिए। इसलिए कोई भी चिंतक होता है, कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति होता है, वह हर पहलू से हर बात को समझने की कोशिश करता है और वह कभी भी आग्रहों में नहीं पड़ता। यही बात हमें जैन रामायण सिखाती है कि वह राक्षस वंशी दशानन एक राजा था, राक्षस नहीं था। सुग्रीव, हनुमान इनके किसी के मुँह बंदर की तरह नहीं थे, यह सभी वानर वंशी अच्छे, सुंदर राजा थे।

कुंभकर्ण का मूल नाम भानुकर्ण था

इस तरह की विचारधाराओं के साथ में यह रामायण आगे बढ़ रही है और आपको यह भी बताया गया है कि जब इन दशानन के साथ में इनके और भाई थे, जिनका नाम कुंभकर्ण माना जाता है। यह कुंभकर्ण एक तरह से शास्त्रों में जो नाम मिलता है, इनका नाम आता है- **भानुकर्ण।** क्या नाम आता है? भानुकर्ण। इन भानुकर्ण का विवाह एक कुंभपुर के राजा महोदर थे, उनकी बेटी के साथ में इनका विवाह हुआ था और कभी वहाँ कुंभपुर में कोई बहुत बड़ा उपद्रव हुआ। तब इन **भानुकर्ण** ने उस कुंभपुर की बहुत सहायता की, उस नगर की और वहाँ के राजा की सहायता की, जिससे इनका नाम बाद में कुंभकर्ण पड़ गया, यह शास्त्रों में लिखा हुआ है। मूल नाम उनका क्या था? भानुकर्ण था। बहुत धर्म बुद्धि वाले लोग थे, अनेक कलाओं में प्रवीण लोग थे, सभी प्रकार की कलाओं से, गुणों से, शक्तियों से संपन्न थे। इनके बारे में जो एक भ्रांतियाँ कहें या विचारधारा कहें, जो प्रचलित रहती है, हम वह तो सब जानते ही हैं लेकिन जैन शास्त्रों के अनुसार इन्हें हमेशा धार्मिक कार्यों में संलग्न रहने वाला अच्छा सुंदर बालक कहा गया और यही आगे चलकर के दशानन का भाई एक बहुत बड़ा योद्धा बनता है। उसके आहार के विषय में भी लोगों की तरह-तरह की धारणाएँ रहती हैं। लेकिन जैन शास्त्रों में लिखा है कि उनका जीवन इतना पवित्र था कि विद्याधरों में, विद्याधर के वंश में उत्पन्न होने के बाद भी वहाँ विद्याधर की श्रेणियों में भी मुनि महाराजाओं का गमन होता है। वहाँ पर भी मुनि महाराज रहते हैं, वहाँ पर भी वह सभी राजा स्वयं मुनि

बनते हैं, वहाँ पर भी मुनियों का आवागमन होता है। मुनियों की तपस्या वहाँ पर दिखाई देती है और यह **कुंभकर्ण** हमेशा मुनियों को आहार देने के बाद ही भोजन किया करते थे और इनका भोजन अत्यंत शुद्ध सात्विक और पवित्र हुआ करता था। यह उन कुंभकर्ण के विषय में आप को विशेष रुप से ध्यान रखना है। हमेशा धर्म कार्य में उनका मन लगता था और इन्हीं के एक और भाई थे **विभीषण**, जो अति सज्जन, नीति-न्याय में निपुण, दयावान यह सब गुणों से परिपूर्ण थे। ऐसे दशानन अपने इन दोनों भाइयों के साथ में और जो उनके पुत्र हुए बाद में दशानन के इंद्रजीत और मेघनाथ इन सब पुत्रों के साथ में वह दशानन लंका में रह रहे हैं और वहाँ पर हम पहुँच चुके हैं, जहाँ कि उस लंका के अन्दर श्री हनुमान का प्रवेश हो चुका है।

विभीषण ने रावण को सीता हरण करने से रोका था

हनुमान जी ने विभीषण के पास जाकर के सबसे पहले विभीषण को पूछा कि आपके रहते हुए यहाँ पर इस तरह से किसी नारी को हरण करके यह रावण ले आए और आपने उनका विरोध नहीं किया, कुछ कहा नहीं, यह कैसी न्याय प्रियता है आपकी? यह बात जब विभीषण से कही तो विभीषण ने उत्तर दिया कि मैंने अपने लिए जितना संभव हो सकता था, उनको समझाने की कोशिश की है लेकिन अभी उन्होंने कुछ भी स्वीकारा नहीं है और यह बात सुनकर के वह हनुमान जी वहाँ सीता जी के पास direct जाने की कोशिश करते हैं कि मैं देखूँ वह सीता सुंदरी किस रूप में विद्यमान है? और मैं भी उनका दर्शन करूँ, पहली बार देखूँ, कि जिनके बारे में मैंने इतना सुन रखा है, वह कैसी है? उसको देखने के लिए वह आसपास छुपे हुए वृक्षों के पास में उसको देख कर के वहाँ पर वह क्या प्रतिक्रिया करते हैं? यहाँ से आज की यह रामायण प्रारंभ होती है। थोड़ा सा हम श्री राम का गुणगान करते हैं-

मर्यादा पुरुष श्री राम है सिद्ध प्रभु बलराम।
आदर्श बने जन जन के वसुधैव कुटुंब थी जिनके।

जो भी ले इनका नाम बिगड़े बनते सब काम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम है सिद्ध प्रभु बलराम।
दशरथ जिनके जनक कहाए कौशल्या नंदन जन गाए।
इक्ष्वाकु वंश की शान क्षत्रिय जग दया निधान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम है सिद्ध प्रभु बलराम।

हनुमान जी वन में सीता के दर्शन करते है,सीता की आँखों में आँसू झर रहे हैं

वहाँ देवारण्य वन में अशोक वृक्ष के नीचे जब सीता को उन श्री हनुमान ने देखा तो वह कैसा देखते हैं?

काले काले घुंघर वाले, मुखड़े पर केश ये झूम रहे।
बिन संवरे, बिखरे से, मैले वह धूल धूसरित होय रहे॥
ग्यारह दिन का उपवास-युक्त, तन सारा ही कुम्हलाय रहा।
नैनों से आँसू झरते हैं, और सांस भी रुक रुक आय रहा॥

जब उन्होंने देखा कि वह स्वभाव से सुंदर है लेकिन उसे ग्यारह दिन हो चुके हैं और ग्यारह दिनों से कोई भी राम का समाचार नहीं मिला, उसने यह संकल्प ले रखा था, सीता ने यह नियम ले रखा था कि जब तक कोई भी राम का समाचार नहीं मिलेगा मैं अन्न जल का ग्रहण नहीं करूँगी। ग्यारह दिनों से उसने कुछ नहीं खाया, कुछ नहीं पिया, ऐसी वह सीता को, जिसका शरीर बिल्कुल कुम्हला रहा है, नैनों से आँसू झर रहे हैं, बार-बार वह दीन-हीन होती हुई उसकी साँसें रुक रुक सी जाती हैं और इतने पर भी वह अपने पति का नाम स्मरण नहीं भूलती है। ऐसी उस सीता माँ को देख करके वह श्री हनुमान वहाँ पर विचार कर रहे हैं- -

नहीं तीन लोक में इन सम, नारी, शुद्ध भावना है मन की।
जैसे श्री राम को देखे हैं, ऐसी ही है अद्भुत माता॥
मैं राम से इन्हें मिलाऊँगा, तभी ही पाऊँगा सुख साता॥

राम जी की अंगूठी देख कर सीता बहुत प्रसन्न होती हैं

जैसे श्री राम को देखा था वैसे ही मैंने इन माँ सीता को देखा है और उनको देख करके यह भी देखा है कि यह विरह की अग्नि में कैसे कोमल लता की तरह जल रही है?

देख सिया के हाल को, सोच रहे हनुमान।
विरह दिया है क्यों इन्हें, क्या चाहि भगवान॥
दबे पाँय से बढ़ रहे, मुद्री दीनी डाल।
छिप करके देखन लगे, सब माता का हाल॥

उन हनुमान जी ने दूर से, एक दबे पाँव से, वहाँ पर पास में पहुँच करके, वह जो नीचे मुँह किए बैठी थी, उनके पास में ऊपर से एक मुद्रिका छोड़ दी। उन्हें पता नहीं पड़ा कि वह मुद्रिका, वह अंगूठी जो राम ने दी थी हनुमान को, वह उनके पास कहाँ से आ गई और वह उस अंगूठी को छोड़ करके वह दूर थोड़ा सा वृक्ष की आड़ में देख करके, बैठ करके, देख रहे हैं कि क्या प्रतिक्रिया होती है? क्या प्रतिक्रिया होती है?

अंगूठी देख सीता जी के हृदय में हर्ष आता है।
सुना रावण ने चेटी से, तो मन्दोदरि से कहता है॥
कहा दासी आकर के, प्रफुल्लित आज सीता है।
प्रिये जाकर के समझाओ, मान जायेगी सीता है॥

जैसे ही सीता ने अंगूठी देखी, राम की मुद्रिका देखी तो उसका चित्त प्रसन्न हो गया। सभी मंदोदरी आदि रानियाँ उसे टकटकी लगाए हमेशा घेरे हुए उसको देखती रहती थी। ग्यारह दिन से उसके चेहरे पर कभी मुस्कान नहीं देखी, कोई भी प्रसन्नता नहीं देखी। अचानक से उसके चेहरे पर प्रसन्नता देख करके एक दासी ने जाकर के रावण से कहा, आज सीता प्रसन्न हो गई है, तो रावण भी प्रसन्न हो गया और रावण तुरंत मन्दोदरी को बुला करके कहता है कि जाओ आज सीता प्रफुल्लित है, ऐसा सुनने में आया। उसको जाकर के मनाओ, शायद उसका मन मान गया हो। तभी वह सज धज कर के मन्दोदरी आती है और वह जानकी के पास में आकर के कहती है-

सभी सज धज के आई हैं, ये कहती जानकी जी से।
हे रानी आज तुम खुश, देख हमको हर्ष होता है॥
कृपा जो आज तुमने की सभी जाती हैं बलिहारी।
उठो अब महल में चलिए, नहीं हट अच्छा सुकुमारी॥
सीता बोली पति की, पाई मुद्रिका आज।
उसे देख हर्षित भई, तुम क्या जानों राज॥

हनुमान जी को देख कर सीता और मन्दोदरी आश्चर्य चकित हो जाती है

सीता कहती है मेरे हर्ष का कारण मेरे पति की यह मुद्रा है। उस पर, उस विषय को देख करके वह रानी मन्दोदरी कहती है, लगता है ग्यारह दिनों से कुछ खाया पिया नहीं है, विक्षिप्त हो गई है। ऐसा लग रहा है और यहाँ पर इसे मुद्रा कौन देने आएगा? ऐसा विचार करके -

हे भाई जो मुद्रिका लेकर, उपकार करन को आया है।
आकर के बहन को दर्शन दो, क्यों मन तेरा तरसाया है॥
मन्दोदरि समझी बाय लगी, अनजल जो छोड़े बैठी है।
नहीं कोट को भेद कोई आवे, तू कर रही नाटक हेटी है॥

उस समय पर वह सीता कहती है- मेरे भाई! जिसने यह मुद्रा ला करके दी है, मेरे सामने आओ। मुझे परेशान न करो और यह बात जब मन्दोदरी सुनती है, तो उसके मन में आता है कि इसका चित्त अब विक्षिप्त हो गया है। यहाँ इस लंका के कोट को भेद करके कोई पक्षी भी पर नहीं मार सकता और यह कह रही है कि यहाँ पर कोई मुद्रा लेकर के आया है।

इतने में ही हनुमान प्रकट, सीता के पास में आते हैं।
मन्दोदरि देख आश्चर्य करें, क्या सुधि पाने को आते हैं॥
हनुमान से कहने लगी ऐसे, तुम हमरे सम्बन्धी भारी।
गुणवान बड़े और बलशाली, क्या अक्ल गई है सब मारी॥

उस समय पर मंदोदरी ने भी देखा हनुमान जब सामने आकर के सीता के सामने आ करके बैठ गए और वह प्रकट हो गए तो वह मन्दोदरी कहती अरे! यह तो हनुमान है, यह तो हमारे संबंधी हैं। यह तो पहले कई बार

लंका के ईश्वर जो रावण है, उनके युद्ध में उन्होंने कई बार उनकी सहायता की है। यह बड़ा आश्चर्य की बात है कि यह हनुमान आज इन भूमि गोचरी के दूत बन करके कैसे आ गए? जो हम विद्याधरों के साथ रहा करते थे, यह आज इनकी मुद्रिका ले करके, इनके दूत बन करके कैसे आ गए? उस समय पर थोड़ा सा वाद विवाद मन्दोदरी और हनुमान के बीच में भी होता है।

गुणवान बड़े और बलशाली, क्या अक्ल गई है सब मारी।
तुम राम दूत बनकर आये, क्या लज्जा तुम्हें ना आती है।
यदि रावण को मालूम हुआ, तो जान मुफ्त में जाती है॥
हनुमान यह सुनके कहने लगे, लेकिन मुझ को अचरज भारी।
राजा मय की तुम पुत्री हो, त्रिखंड-पति की हो नारी॥
लेकिन पर-स्त्री चोर की तुम, क्यों दूती बन कर आई हो।
क्या उसको रोक नही सकती,
आते भी ना शर्मायी हो।

जब मन्दोदरी ने हनुमान जी से कहा कि तुम उनके दूत बन करके क्यों आए हो? हनुमान जी ने तुरंत जवाब दिया तुम भी तो दूती बन करके ही आई हो। तुम उस चोर की, पर-स्त्री चोर की दूती बन करके क्यों आई हो? तुम भी तो राजा मय की पुत्री हो, तुम भी तो विद्याधरनी हो और तुम भी आज अगर दूती बन करके आई हो और हम भी आए हैं तो इसमें बुरा क्या है? अपना-अपना विवेक है।

क्या उसको रोक नहीं। सकती, आते भी ना शरमाई हो॥
जो पर नारी-रत स्वामी हो, मर्याद रहित जो राज्य करे।
कितने दिन सो अन्याय चले, निश्चय वह कल या आज मरे॥
यह सुन मन्दोदरि कुपित हुई, मन ही मन में कुछ सोच रही।
क्या क्या अपमान करूं इसका, हृदय में ये ही तोल रही॥

और इस बातों को सुनकर के उस मन्दोदरी का बहुत बड़ा अपमान हनुमान जी ने कर दिया।

इतने में बोली सिया, हे भाई बतलाओ।

मम स्वामी के पास हैं, तुम सम कितने राव॥
तुम सम कितने राव और यह मुद्रा कैसे पाई।
मेरे स्वामी तो जीवित भी है, हाल कहो समझाई॥

विरह में व्याकुल सीता हनुमान से पूछती राम जी कैसे हैं?

उस समय पर सीता ने उन हनुमान जी से पूछा कि मुद्रा तुम्हारे पास कैसे आई? सीता को एकदम से विश्वास भी नहीं हुआ कि इस लंका में कोई आ सकता है और वह दूत बन करके आ सकता है? क्योंकि सीता सोच रही है, यह सब माया नगरी है। यहाँ कुछ भी यह लोग इस भेष बना लेते हैं, कुछ भी किसी भी तरह का रूप बना लेते हैं, इन सब विद्याधरों को सब कुछ बनाना आता है, मनाना आता है। यह मुझे मनाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। वह हनुमान जी से पहले विश्वस्त होती है और उसके लिए उनसे पूछती है कि आप अगर वहाँ से आए हो तो पहले मुझे वहाँ का हाल समाचार सुनाओ कि वह राम जी कैसे हैं? लक्ष्मण जी कैसे हैं? वह हैं भी हैं कि नहीं हैं? उनका सही समाचार आपका उनके बारे में जानकारी दे करके ही मुझे समझ में आएगा। वहाँ पर क्या-क्या हो रहा है? यह सब सीता वहाँ उन हनुमान जी से पूछती है।

लक्ष्मण गए युद्ध के कारण, सकुशल वापस आए ?
पहले बोली मन्दोदरि, क्या तूने ना सुन पाए।
पवन का ये पुत्र कहाता जी। बहादुर नहीं घबराता जी॥
न इस सम और है कोई अच्छे अच्छे
योद्धाओं को इसने मात खिलाई।
इतने में हनुमान जी, बोल उठे तत्काल।
हे माता सुन लीजिये, सारा सच्चा हाल॥
तुम बाद मिले सुग्रीव, राम ने साहसगति को मारा है।
खरदूषण हनन किया लक्ष्मण, श्रीराम के वही सहारा है॥
मुझको सुधि लेने को भेजा, तुम बिन राम सदा रोते।
हे मात तुम्हारे बिना प्रभु, भर निद्रा कभी नहीं सोते॥
इतनी सुनकर मन्दोदरि ने, श्रीराम को कहे वचन खोटे।

वो दोनों दीन भिखारी से, क्या हस्ती लंका को जीते॥
पति की निंदा सुनकर सीता, क्रोधित हो ऐसे कहन लगी।
अब दोनों भाई आवेंगे, सच मानो गद्दी लंक डिगी॥
देवर लक्ष्मण के हाथों से, तुमको रानी विधवा होना॥

मन्दोदरी के खोटे वचन सुनकर सीता आहत हो उठती है

जब बाद में हनुमान जी ने बताया कि बाद में राम ने साहसगति विद्याधर को मारा है। सुग्रीव उनके साथ हो गए, खरदूषण का हनन लक्ष्मण ने किया। मुझे हनुमान को बुलाया गया आपकी सुध लेने के लिए और इस तरह से जब उन्होंने हाल बताया कि वह रामजी भी आपकी याद में कभी सोते नहीं है, कभी निद्रा नहीं ले पा रहे हैं। वे दोनों राम और लक्ष्मण हमेशा इस बात से दुःखी हैं कि जब सीता का समाचार हमारे लिए क्यों नहीं मिल रहा है? इस तरह से जब सीता को लगा कि यह कोई छल नहीं है और यह वास्तविकता है क्योंकि उस मुद्रिका को देख करके उसे वास्तविकता का विश्वास हो गया, आश्चर्य भी हुआ लेकिन उसे विश्वास हो गया। उसी समय पर वह मन्दोदरी राम के लिए खोटे वचन बोलने लगी। पति की निंदा सुन करके सीता उस समय पर क्रोधित होकर के उनके यहाँ बैठी हो करके भी उन को डाँटने लगी और कहने लगी कि जब यह राम और लक्ष्मण आएँगे तो तेरे पति का कुछ भी यहाँ पर बचेगा नहीं और यह लंका भी नहीं बचेगी, तुझे विधवा होना पड़ेगा। यह केवली भगवान की वाणी है, तू अभी भी समझ जा। ऐसी उस मन्दोदरी से कहने का साहस सीता को उसी के घर में बैठकर के उन हनुमान के कारण से आ जाता है और इसी कारण से वह हनुमान जी आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं।

यह वचन न केवली दुर्निवार, मुझको है क्या लेना-देना॥
जिसने खरदूषण को मारा, शंबूक हना और खड्ग लिया।
उस अद्भुत भारी कोटशिला को जो घोटों तक जो उठा लिया॥
उसके हाथों ऐ मय-पुत्री, तव-पति अवश्य हनन होगा।
जाकर समझा ले आज पति, लंका का नहीं पतन होगा॥
मन्दोदरि आग बबूला हो, सीता को मारने धाई है।

अठ-दस हजार राणियाँ सभी, उस पीछे पीछे आई हैं॥
हनुमान ने बीच में आकर के, सीता के प्राण बचाए हैं।
अपमान हुआ मन्दोदरी का, सब हाल पति को सुनाएँ हैं॥

सीता, हनुमान के साथ जाने के लिए मना करती है

उधर इन स्त्रियों के बीच के युद्ध में हनुमान जी ने सीता का पक्ष लिया और मंदोदरी को वहाँ से हटा करके वापिस पहुँचाया। तब मंदोदरी जा करके अपने प्रिय पति के पास में पहुँच करके उनसे सब हाल सुनाती है और उस हाल को सुनने के बाद में यह विचार आता है कि यह हनुमान जी यहाँ पर कैसे आ गए? हनुमान को पकड़ने के लिए वह रावण किस तरह से उनका अपमान करने के लिए योजना बनाते हैं? यह बात भी आपके सामने आती है।

सीता सती के, धैर्य की महिमा इंद्र सुरासुर गाँवे।
हनुमान आश्चर्यचकित हो, सिया जी को शीश झुकावे॥
प्रभु जी सिया जी को शीश झुकावे।
कहन लगे हनुमान जी, सुनो मात मन लाय।
काँधे चढ़ चलिये मेरे, राम से देऊँ मिलाय॥

क्या कहा? हनुमान जी ने कहा माते! तुम मेरे कंधे पर बैठो। मैं अभी लंका पार करा के तुम्हें श्री राम से मिलाता हूँ लेकिन सीता बोली पति की आज्ञा के बिना मैं कहीं नहीं जाऊँगी। मेरी तकदीर में अगर पति के दर्शन होंगे तो पति मेरे यहीं पर मुझे लेने के लिए आएँगे।

सीता बोली, मेरे भैया, पति आज्ञा बिन कैसे जाऊँ।
तकदीर में जब दर्शन होंगे, तब ही दर्शन करने पाऊँ॥
रावण को खबर मिली ये जब, हनुमान मुद्रिका लाया है।
वो रामचन्द्र का बना दूत, सीता सुधि लेने आया है॥
सेनापति को यह हुक्म दिया, जो बागवान वहाँ रहते हैं।
जो देशद्रोही वहाँ आया है, क्यों उसको नहीं पकड़ते हैं॥
आज्ञा मिलते ही दौड़ पड़े, क्या सेना और क्या बनमाली।
हनुमान पे कोई शस्त्र न था, तदबीर और ही कर डाली॥

जो वक्ष लगे उद्यान में थे, उनमें से कुछैक उखाड़ते है।
जो कोई भी समक्ष आवे, उनसे ही उसे मारते हैं॥
कुछ पैरों से, कुछ हाथों से, सब सैन्य नष्ट कर डाली है।
कुछ भाग गए, कुछ सिसक रहे और कुछ ने मुक्ति पा ली है॥
जब भाग गई सारी सेना, उद्यान नष्ट हो टूट पड़े।
द्रुम, लता, वृक्ष आदि सारे, पल में उखाड़ के नष्ट करे॥
जो सुन्दर महल बने थे वहाँ, उनको ढ़हा और फोड़ दिये।
क्या वापी सरोवर एक-एक, सब को ही कर विषमार दिए॥

रावण हनुमान को पकड़ने का आदेश देना और हनुमान का लंका को तहस-नहस करना

उस समय पर हनुमान जी से युद्ध करने के लिए जो रावण के अनेक सेनापति आए, वह सेनापति तो तहस-नहस हो ही गए। हनुमान जी ने वहाँ के जितने भी वृक्ष थे, वापीयाँ थी, तालाब थे, सब की हालत खराब कर दी। जो पूरा जो लंका का सौन्दर्य था उन्होंने सारा उजाड़ डाला, सब कुछ तहस-नहस कर दिया। वहाँ पर जितने भी सड़कें, बाजार जो भी दुकानें, अनेक तरह के सौंदर्य सामग्रियाँ, तरह-तरह की जो सजी हुई, जगह-जगह पर रखी हुई थी, उन्होंने सब को बिल्कुल ऐसे ही कर दिया जैसे कोई तूफान आता है और सब कुछ उजाड़ देता है, पूरी लंका में उन्होंने वह उजाड़ मचा दिया।

फिर चले सड़क, बाजारों में, दुकानें तोड़ फोड़ डाली।
प्रजा सारी भयभीत हुई, भगवान कौन ये बलशाली॥
थे महल स्वर्ण और रत्नों के, सब बिखर पड़े हैं लातों से।
जो कोई सामने आ जावे, वो पीस डालते हाथों से॥
रावण क्रोधित हो रहा सुनकर सारा हाल।
मेघनाथ को भेजता, जा पकड़ो तत्काल॥
इंद्रजीत भी चल दिया, सेना संग अपार।
बलशाली दोनों बड़े, रावण राजकुमार॥

युद्ध हुआ घनघोर था, देखे सब नर नार।
नाग-पाश में बांध कर, ले आए दरबार॥

हनुमान को नागपाश में बाँध कर रावण के दरबार में लाया जाता है

वह मेघनाथ, इंद्रजीत हनुमान जी को नागपाश में बाँध कर के रावण के समक्ष ले करके आ जाते हैं। वह भी एक खेल है क्योंकि उन हनुमान जी को कोई नहीं पकड़ सकता। वह भी रावण के पास जाने के लिए उनके फंदों में बंध जाते हैं और जा करके देखते हैं कि रावण क्या बोलता है?

श्री हनुमान को लेकर के, रावण के पास में आते हैं।
रावण लोहे की सांकल से, पोरी पोरी बंधवाते हैं॥
यह कहा नीच कायर आकर, क्यों आफत यहाँ मचाई है।
हो विद्याधर बन भूमि-चरी, का दूत लाज ना आई है॥
ये आज हमें मालूम हुआ, बेशक तू पवन का पुत्र नहीं।
नहीं श्रीराम वनवासी का, हरगिज भी बनता दूत नहीं॥
ओ मूर्ख आज तुझको तेरा, यहाँ काल खींचकर लाया है।
जो बनवासी का पायक हो, बन दूत यहाँ पर आया है॥

रावण ने हनुमान जी को कहा कि तुम्हारा यह कृत्य अच्छा नहीं है। हमें आज समझ में आया कि तुम विद्याधर नहीं हो। अगर वास्तव में विद्याधर होते तो इन भूमि वासियों का, वनवासियों का कभी भी साथ नहीं देते और इनके दूत बन करके नहीं आते।

हनुमान सुनकर हंसे, कहे मन्द मुस्काय।
क्या जाने मृत्यु तेरी, मुझसे पहले आय॥
अरे तुझ पर होनी है सवार, बेकार रहेगा समझाना।
नहीं शर्म रही, नहीं लाज रही, चल रहा तू अपने मनमाना॥
चोरी से परनारी लाया, मर्यादा का भी पास नहीं।
निज कुल को किया कलंकित है, अपने पर भी विश्वास नहीं॥
अब राम लखन आकर तेरा, कुछ दिन में नशा उतारेंगे।

पीछे पछताते हैं पापी, पहले तो कभी न हारेंगे॥
भरा दशानन क्रोध में, सुन कर ऐसे बैन।
कायर कैसा बंध रहा, फिर भी है नही चैन॥
फिर भी नहीं है चैन, इसे लंका घुमाओ।

सीता का चूड़ामणि लेकर हनुमान राम के पास पहुँचते है।

रावण को क्रोध आता है और कहता है कि चारों ओर से नागपाश से अंग-अंग बंधा हुआ है और फिर भी कैसे बैन वचन बोल रहा है? इसके लिए ऐसा करो इसे लंका में खूब घुमाओ और इसके लिए हर तरह से जो अपमान बन सके, इनका अपमान करो ऐसा कह कर के रावण अपने पुत्रों को आज्ञा दे देता है। लेकिन हनुमान जी उन सब बंधनों को एक साथ तोड़ कर के और वह लंका से बाहर निकल जाते हैं और उनको कोई भी नहीं पकड़ पाता है। वह सब नागपाश, इंद्रजीत, मेघनाथ जितने भी बंधन डाले हुए थे, वह सब उनके बंधनों को तोड़ करके, जैसे हाथ में आई हुई कोई चिड़िया अपने आप छूट करके उड़ करके निकल जाती है, ऐसे वह चले जाते हैं। उनको कोई भी नहीं पकड़ पाने के कारण से वह रावण फिर हैरान होता है। सोचता है कि यह कितना बलशाली है और वह जाकर के सीधे सीता से उनका चूड़ामणि लेकर के वह राम के पास पहुँच जाते हैं। किष्किन्धापुर में जहाँ वे राम जी विराजमान रहते हैं, वहाँ जाकर के पहुँच जाते हैं और फिर वहाँ पर जो कथा प्रारंभ होती है, वह भी आपस में विचार चलता है।

मर्यादा पुरुष श्री राम है सिद्ध प्रभु बलराम।
हर प्राणी जिनको गाता ना जातिभेद मन लाता।
सीता के स्वामी प्राण हनुमान के जो अभिमान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम है, सिद्ध प्रभु बलराम।

जब श्रीराम ने सीता का चूड़ामणि देखा तो उनके लिए विश्वास हो गया कि सीता अभी सुरक्षित है और उसको छुड़ाने के लिए अब हमें हर संभव प्रयत्न करना होगा। वह उसी समय पर सेना ले करके जो उनके पास में वानर वंशी सुग्रीव आदि की सेना थी, उन सब की सेना को ले करके वह लंका के निकट एक हंस द्वीप पड़ता है। उस **हंस द्वीप** में आ करके अपना डेरा डाल लेते हैं और उधर से भामण्डल को बुलाते हैं। दो-चार दिन में वह भामण्डल भी वहाँ पहुँच जाता है और चारों तरफ वह लंका को घेर करके उस लंका में घुसने की और लंका में युद्ध करने की तैयारियाँ चलती हैं।

विभीषण, रावण को समझाते हैं

जब इधर युद्ध की तैयारियाँ हो रही होती है, तो उस समय पर लंका के अन्दर जो रावण का भाई विभीषण है, वह विभीषण बार-बार उन रावण को समझाने लगा। रावण को समझाता है कि आपका यह कृत्य बिल्कुल अन्याय के साथ चल रहा है। आप सोच रहे हो कि हनुमान यहाँ क्यों आए? सुग्रीव राम के साथ क्यों हो गया? अगर इसका एकमात्र कारण समझना चाहते हो तो वह इतना ही है कि जितने भी विद्याधर आपके रिश्तेदार थे, सगे संबंधी थे, आपकी सहायता करते थे, आपके मित्र थे। वे सब धीरे-धीरे आप के विरोध में खड़े हो रहे हैं। आपको समझना चाहिए यह बात और वह विरोध में इसलिए खड़े हो रहे हैं। क्योंकि वह कोई भी विद्याधर अन्याय का, अनीति का, दुराचार का साथ नहीं देना चाहते हैं। यह विद्याधरों के लिए यह बात समझ में आ चुकी है कि आपने बहुत गलत किया है। किसी की स्त्री का हरण कर लेना एक बलशाली राजा के लिए और वह भी एक मान्य राजा के लिए उचित नहीं है। यह बात किसी को अच्छी नहीं लग रही है। आपने देखा हनुमान जी यहाँ आए पूरी लंका में तहस-नहस मचा कर चले गए। सब कुछ तोड़फोड़ करके लंका को नष्ट भ्रष्ट करके चले गए, आप के पुत्र कुछ नहीं कर पाए। थोड़ी देर के लिए बांध लिया, आपको लगा कि उनके पुत्र, हमारे पुत्रों ने उनको बांध लिया

लेकिन वे उस सबको छोड़ कर के चले गए। उनको कोई बंधन में नहीं रख पाया। आप सोचने की कोशिश करें। मैंने सुना है कि लक्ष्मण वही लक्ष्मण है जिन्होंने कोटीशिला उठा रखी है और कोटी शिला उठाने वाले नारायण होते हैं। अगर वह राजा दशरथ के पुत्र वही लक्ष्मण हैं तो यह मानकर चलना बहुत पहले एक बार सुनने में आया था, आपको भी पता होगा रावण की मृत्यु किससे होगी? एक निमित्त ज्ञानी ने बताया था राजा दशरथ के पुत्रों से रावण की मृत्यु होगी। आप अभी भी समझने की कोशिश करें। परनारी का ग्रहण करना, उसको ले करके आना, बंदी बना करके रखना, यह महापुरुषों का कार्य नहीं है। अगर आप उसको छोड़ देंगे, उसको उनके पास पहुँचा देंगे और यह बात पहले भी कही जा चुकी है कि राम को कुछ नहीं चाहिए। उन्हें केवल सीता चाहिए। केवल सीता के कारण से इतना बड़ा युद्ध करना अच्छी बात नहीं और इस युद्ध में अनेक लोग मारे जाएँगे, नरसंहार होगा। उधर राम जी भी लंका के पास आकर के हंस द्वीप में ठहर गए हैं। सारे के सारे जितने भी विद्याधर थे वे सब उनके साथ में हैं। इस तरह के युद्ध में अगर आप की जीत भी हो गई तो भी वह आपकी हार ही मानी जाएगी और दुनिया आपको कभी भी माफ नहीं करेगी क्योंकि पर स्त्री को हरण करना और उसके कारण से दूसरों से लड़ना यह बहुत तुच्छता है। इस तरह से विभीषण ने रावण को अच्छे ढंग से समझाया लेकिन रावण की समझ में कुछ नहीं आया। जब रावण की समझ में कुछ नहीं आया तो रावण को उल्टा विभीषण पर ही गुस्सा आया। विभीषण पर गुस्सा आया तो दशानन कहने लगा कि इस विभीषण को भी यहाँ से बाहर निकाल दो क्योंकि जो मेरा भाई होकर के भी मेरे पक्ष में नहीं है। मेरे साथ रह करके अगर यह इस तरह की उच्च स्वर में बातें कर रहा है, तो यह धीरे-धीरे हमारे विरोध में सारी लंका की सेना को और बड़े-बड़े योद्धाओं को भड़का देगा। इसलिए अपने विरोधी को यहाँ से निकाल देना ही अपनी सुरक्षा है। ऐसा विचार करके लंका के ईश्वर उस रावण ने विभीषण को अपमानित करके वहाँ से निकलने के लिए कह दिया।

अपमानित विभीषण लंका छोड़कर राम से मिलने पहुँचते हैं

विभीषण अपनी अक्षौहिणी सेना लेकर के वहाँ से निकल गए और निकलने के बाद में उन्होंने वहाँ हंस द्वीप में जा करके उन राम जी से मिलने के लिए अपना मन बना लिया। जब वह वहाँ पहुँचते हैं तो उनको आता देख करके पहले तो लोग डर जाते हैं कि यह रावण के महल से कौन सी सेना आ रही है? कौन योद्धा युद्ध करने आ रहा है? लेकिन उन विभीषण ने पहले अपने दूत को आगे पहुँचा करके वहाँ एक शांति का समाचार पहुँचाया और कहा कि मैं राम का सेवक बन करके राम के समक्ष आना चाहता हूँ। मैं राम के चरणों का दास बन करके राम के पास में रहना चाहता हूँ। मैंने अपने भाई से संबंध छोड़ दिया है, भाई ने मुझे अपमानित किया है। मैं अन्याय अनीति का साथ नहीं दे सकता, इसलिए मैं श्री राम के पास आना चाह रहा हूँ। अनेक विद्याधर वहाँ सुग्रीव, जाम्बवन्त, हनुमान आदि थे। उनको यह पता था कि विभीषण वास्तव में दया प्रिय, न्यायप्रिय और अनीति को सहन नहीं करने वाला अच्छा राजा है। इसकी मनमुटाव रावण से पहले से भी हो चुका है और यह संभव है कि रावण ने इसका अपमान किया हो और यह रावण को छोड़ करके आ रहा हो। उसी समय पर वह राम जी को यह बात बताते हैं और फिर जब विभीषण उनके पास आते हैं तो देखो क्या होता है?

जहाँ होना था संग्राम युद्ध, भूमि पर फौरन आए हैं।
बाजे बजते रावण ने सुने, फूले नहीं अंग समाए हैं॥
सब राजाओं को बख्तर बांटे, शस्त्रों को भी वो देते हैं।
और बड़े बड़े राजा आकर, रावण का शरणा लेते हैं॥
मंत्री, सेनापति और सैनिक, घर घर से बिदाई लेकर के।
आ जुटे सभी संग्राम बीच, प्राणों को हथेली पर रख के॥
जिस समय दशानन जाने लगा, अपशकुन हुए हैं अति भारी।
सब जानते भी तो हैं लेकिन, होनी ने सबकी मति मारी॥

युद्ध भूमि में जाते समय रावण को बहुत अपशकुन होते है

इधर विभीषण राम जी से आकर के मिल गए, उधर रावण भी युद्ध की सेना लेकर के आने लग गया, क्योंकि रावण को लगा अगर यह युद्ध होना ही है, तो हम भी युद्ध करने के लिए तैयार हैं। यद्यपि रावण का मन युद्ध करने का नहीं था लेकिन युद्ध के अलावा और कोई उसे चारा दिखाई नहीं दे रहा था उस समय पर

राम की सेना में से सबसे हनुमान जो आगे जाय।
भामण्डल सुग्रीव चले हैं, योद्धा एक से एक शिवाय॥
उधर से कुम्भकरण आए हैं, जो त्रिशूल को रहे घुमाय।
मेघनाथ और इंद्रजीत भी, सबसे आगे पहुँचे जाय॥

यह युद्ध का एक पहला प्रारूप है जो सामने आ रहा है। राम और रावण की सेना के जो बड़े-बड़े योद्धा हैं, वह सब आगे आकर के उस युद्ध में अपना-अपना पराक्रम दिखा रहे हैं और रावण वंशी योद्धाओं से वानर वंशी भी कुछ कम नहीं हैं और इस तरह से दोनों की सेना के अग्रणी योद्धा सामने आकर के युद्ध लड़ते हैं।

रावण पक्षी मरे बहुत से, तब मन सोच सोच रह जाये।
इंद्रजीत और मेघनाथ, यह कैसे इन काबू में लायँ॥
भामण्डल सुग्रीव के ऊपर, नागपाश फिर दिया चलाय।
दोनों बंधकर नागपाश में, पड़े भूमि मूर्छित हो जायं॥
कुंभकरण ने माया बल से, हनुमान को बाँधा आय।
महाबली हनुमान उसी दम, झटका देकर के छूट जांय॥
तभी विभीषण रामचन्द्र से, कहने लगे बहुत समझाय।
दो ही राजा थे सर्वेश्वर, दोनो पड़े भूमि पर आय॥

गरुडेंद्र आकर के दो बहुत बड़ी विद्याएँ, राम-लक्ष्मण को देते हैं

उस समय पर रावण के वंश के राक्षस वंशी उन योद्धाओं ने जिनमें मेघनाथ और इंद्रजीत प्रमुख थे, उन्होंने भामण्डल को, सुग्रीव को बांध लिया, पकड़ लिया और उस समय पर वह लक्ष्मण को भी युद्ध करने के लिए जब आगे

आता हुआ देखते हैं, तो स्वयं रावण उन लक्ष्मण से युद्ध करने लग जाते हैं। लेकिन बड़े-बड़े जो योद्धा थे राम के पक्ष में, उन दोनों को बंधा देख कर के, वह बात थोड़ी सी वहाँ पर बिगड़ती दिखाई देती है। उस समय पर सभी लोग आकर राम से कहते हैं, लक्ष्मण भी चिंता में पड़ जाते हैं, जो अपनी सेना के बड़े-बड़े योद्धा थे, यह दोनों योद्धा भामण्डल और सुग्रीव यह नागपाश से बांध लिए गए हैं। हमें कुछ और सोचना चाहिए और उस समय पर श्री राम को याद आता है कि जब देशभूषण-कुलभूषण मुनि महाराज की हमने रक्षा की थी तो उस समय पर गरुडेंद्र हमसे प्रसन्न हो करके हमें वरदान दे करके गया था कि आपको जब हमारी जरूरत पड़े मुझे बुला लेना। उस समय पर वह गरुडेंद्र को याद करते हैं और गरुडेंद्र वहाँ पर आकर के तुरंत दोनों के लिए बड़ी-बड़ी विद्याएँ और अस्त्र-शस्त्र दे करके जाते हैं।

श्रीराम ने कहा तभी भैया, गरुडेंद्र को आज बुलाता हूँ।
यह कार्य उन्हीं से सिद्ध होय, मैं वचन की याद दिलाता हूँ॥
इतना कहना रघुवर का था, गरुडेंद्र का आसन कांप उठा।
तब अवधिज्ञान से जान लिया, श्री राम का कोई कार्य घटा॥
एक देव को फौरन भेजते हैं, दो विद्याओं को दे करके।
श्रीराम कटक में आता है, बहु दिव्य शस्त्र वह लेकर के॥
थी सिंह वाहिनी राम को दी, और गरुड़ वाहिनी लक्ष्मण को।
बलभद्र को हल मूसल सोपे, त्रिशूल दिया नारायण को॥

उसी समय पर गरुड़ेंद्र ने अपने और देव को भेज करके उन श्रीराम के लिए एक सिंह वाहिनी नाम की विद्या प्रदान करी और लक्ष्मण जी के लिए गरुड़ वाहिनी नाम की विद्या प्रदान करी। वह श्रीराम बलभद्र थे उनके लिए देव रक्षित हल और मूसल यह भी उनको अस्त्र के रूप में दिए और नारायण लक्ष्मण के लिए त्रिशूल दिया। इसके अतिरिक्त -

दो छत्र श्वेत और दो कुंडल, मणिमाला सुन्दर छबि छाई।
श्रीराम लखन धारण करते, शोभा नहीं वर्णन जाई॥

उस गरुड़-वाहिनी विद्या ने, उस नागपाश को काट दिया।
सुग्रीव और भामण्डल को, उस सर्प जाल से मुक्त किया॥

उस गरुड़ वाहिनी विद्या का जब लक्ष्मण ने प्रयोग किया तो सुग्रीव और भामण्डल को उन्होंने नागपाश से बचा लिया, उसे छुड़ा लिया और फिर उसके बाद में -

दोनों भाई निज वाहन चढ़, फिर युद्ध भूमि में आते हैं।
गरुडेंद्र मिले क्या वचन दिये, वह सारी कथा सुनाते हैं॥
इधर विभीषण ने कटक, रावण राका आन।
बलशाली की मार से, भगी फौज एक आन॥
दुर्दशा सुनी जब सेना की, रावण मैदान मध्य आया।
भाई को आता देख विभीषण, ने प्रणाम में सिर में नाया॥
लेकिन उसको लख दशकंधर, क्रोधित होंकर चिंधाड़ उठा।
यह शीश झुकाना छोड़ अरे, कर में अपने करवाल उठा॥

युद्ध भूमि में पुनः विभीषण रावण को संधि करने के लिए समझाते हैं

विभीषण के सामने रावण आ जाते हैं और रावण उस विभीषण को देख कर के क्रोधित होने लग जाता है। यद्यपि विभीषण पहले रावण को प्रणाम करता है लेकिन विभीषण कहता है कि तुम इस युद्ध में अगर सामने आए हो तो मैं तुम से युद्ध नहीं करूँगा। लेकिन रावण कहता है- अब युद्ध के सामने खड़ा हो करके इधर उधर की बातें मत कर, हाथ में धनुष बाण उठा और युद्ध कर। उन दोनों का युद्ध होता है और रावण उन्हें तरह-तरह की बातें कहता है कि तू देशद्रोही है, कुलद्रोही है, पाखंडी है, कायर है, तूने अपने भाई के साथ में बहुत छल किया है। इस तरह से तू अब मेरा भाई नहीं है। तू जिंदा रहने लायक नहीं है, मैं तेरे इस तलवार के द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। ऐसा कह करके रावण उस विभीषण के लिए मारने को तैयार होता है, तो विभीषण उस समय पर भी इतना आत्मविश्वास को धारण करके हंस करके बोलता है -

श्री विभीषण हंसकर बोले, क्या खबर मृत्यु किसकी आई।
लेकिन फिर भी समझाता हूँ, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा भाई॥
यह युद्ध क्षेत्र फिर भी तुम से, कुछ हित की बातें कहता हूँ।
नहीं मान बुरा कटु वचनों का, व्यवहारी बातें कहता हूँ॥
हैं 'राम' श्री बलभद्र और 'लक्ष्मण' नारायण अवतारी।
कर सत्य केवली वचन उठाई, कोटि-शिला उसने भारी॥
इसलिए यही है उचित राम से, मिलकर संधि करो भ्राता।
सीता को लौटा प्रेम सहित, कर लो उनसे बंधु नाता॥

विभीषण रावण को वही बात बार-बार समझा रहे हैं लेकिन उस समय पर भी वह युद्ध करना नहीं छोड़ता। रावण अपने उस युद्ध की तैयारी में पूरा लगा हुआ है। इधर उस युद्ध में एक दूसरे का मुकाबला करने के लिए कौन खड़े हैं?

राम लक्ष्मण का रावण से महायुद्ध

राम मुकाबिले कुंभकर्ण के, लड़ते हैं त्रिशूल उठाय।
इन्द्रजीत और मेघनाद के, लक्ष्मण खड़े अघाडी आय॥
अद्भुत युद्ध देखकर नभ से, पुष्प देवता रहे गिराय।
हो गए घण्टों लड़ते-लड़ते, कोई हार मानता नाय॥
राम और लक्ष्मण दोनों ने, नागपाश छोड़ी, ऋषियाय।
देव अस्त्र उस नागपाश ने, तीनों मुश्कें बांधी जाय॥
भामण्डल को सौंपे तीनों, उन कारगृह दिये पठाय।
और विभीषण पे उतरा रावण, शक्ति का त्रिशूल चढ़ाय॥

उधर राम और लक्ष्मण ने जब अपने उस गरुणवाहिनी विद्या का प्रयोग किया, नागपाश में उनके वह पुत्रों को बांध लिया, जो इंद्रजीत और मेघनाथ थे। इधर विभीषण रावण से लड़ रहे हैं और ..

लक्ष्मण जी ने आता देखा, काटा उसे बीच में जाय।
वार करे जितने दशकन्धर, एक काम में आता नाय॥
इससे रावण चढ़ा क्रोध में, दिव्य अस्त्र को लिया निकाल।

विजै-अमोघ शक्ति ले कर में, लक्ष्मण पर उसको दी ढाल॥

रावण लक्ष्मण पर विजय अमोघ शक्ति का प्रयोग करते है, लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते हैं

लक्ष्मण और रावण के बीच में युद्ध होने लग जाता है क्योंकि जब लक्ष्मण ने देखा कि विभीषण के ऊपर रावण का वार हो रहा है तो विभीषण को बचाने के लिए वह लक्ष्मण आगे आ जाते हैं और लक्ष्मण और रावण के बीच में युद्ध होते-होते, अनेक तरह से वह युद्ध होता रहा और अंत में रावण ने एक विजय **अमोघ शक्ति** का प्रयोग किया। यह एक बहुत भारी शक्ति थी, यह शक्ति उसको एक बार तब मिली थी, जब उसने कैलाश पर्वत पर उन राजा बलि पर उपसर्ग किया था। उसके बाद में वह जब देखा कि यह मुनि महाराज हैं और इन्होंने मेरे अहंकार को चूर कर दिया है, तो वही कैलाश पर्वत पर बने हुए जिनालयों में वह शांतिनाथ भगवान के जिनालय में बैठकर के बहुत भारी भक्ति करता है। इतनी उसने भक्ति की थी कि भक्ति में उसकी वीणा टूट गई तो उसने अपने हाथ की नस निकाल कर के वह भक्ति पूरी करी। बीच में उसने भक्ति नहीं छोड़ी। उसकी उस भक्ति से प्रसन्न होकर के उस समय पर देव ने आकर के उसे यह शक्ति प्रदान की थी। यह विजय अमोघ शक्ति थी और इस शक्ति को उन्होंने दिया था और यह कहा था कि जिसके पास में यह चक्र होगा उसके लिए यह शक्ति काम नहीं करेगी। बाकी यह शक्ति हर किसी को मार सकती है, मूर्छित कर सकती है। ऐसी उस विजय अमोघ शक्ति का रावण ने लक्ष्मण के ऊपर प्रयोग किया और जो वह शक्ति उन लक्ष्मण जी को लगी तो लक्ष्मण जी उसी समय पर मूर्च्छित होकर के भूमि पर गिर पड़े।

मूर्छित लक्ष्मण गिरे भूमि पे, हनुमन उन्हें संभाले आय।
इधर राम लक्ष्मण को गिरते देख, मुकाबिल में आ जाय॥
दिव्य बाण रख दिया धनुष पर,
राजा कांप कांप रह जाय छूटा बाण अग्नि थी फैली,
जल बरसावे रावण बाण सन् सन् वायु बाण छोड़कर,

जल के खता किए औसान॥
बाण छोड़ कर कुछ तेजी से, भेदा बख्तर-रथ एक आन।
सात बार रथ रहित किया, पर रावण रहे मुकाबिल आन॥

लक्ष्मण के मूर्च्छित होने से राम युद्ध रोक देते हैं

इधर रावण और राम के बीच में युद्ध होने की बारी आ गई क्योंकि लक्ष्मण बीच में मूर्च्छित हो गए। हनुमान उन्हें संभालने लगे, सेना के बड़े-बड़े सेनापति उन्हें संभालने लगे। उस समय पर राम जी को युद्ध करने का भाव नहीं हुआ। उन्होंने रावण से कहा, लगता है कि मेरे बाणों से, मेरे अस्त्रों से अभी तेरा कुछ नहीं हो रहा है। तेरी आयु पूर्ण होने में कुछ दिन बाकी हैं। इसलिए अभी मेरा भाई मूर्च्छित हो गया है, मैं उसे देखना चाहता हूँ। अगर तू न्यायप्रिय है, तो इस युद्ध को यहीं पर रोक दें। मैं भाई की पहले खबर ले लूँ, उसके बाद में तेरे से युद्ध करूँगा। यह बात रावण ने मान ली। उस समय पर युद्ध रुक जाता है और राम जी लक्ष्मण के पास जा करके देखते हैं, उन्हें लगता है कि लक्ष्मण जी की मृत्यु हो गई। वह घबड़ाने लग जाते हैं, रोने लग जाते हैं और कहते हैं- अगर यह लक्ष्मण मर गया तो फिर मैं भी कुछ नहीं करूँगा, मैं भी अपना जीवन समाप्त कर लूँगा। उन्हें लक्ष्मण के प्रति इतना प्रेम था और इस प्रेम को देख करके वहाँ पर जो और भामण्डल आदि लोग थे उन्होंने कहा कि अभी लक्ष्मण मूर्च्छित हुआ है, मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ। इन लक्ष्मण के लिए भी कुछ न कुछ उपाय जरूर किया जाएगा। कोई रावण की दिव्य शक्ति इनको आकर के लगी है। लक्ष्मण अभी बेहोश है, ऐसा आप विचार करें कि इनको कैसे उस शक्ति से निकाला जाए? इस तरह का विचार वहाँ पर चल रहा था। राम जी उस समय पर लक्ष्मण को देख करके दुःखी थे।

आँखें खोलो, मुख से बोलो, रूठते क्यों राम से।
तुम बिना सीता भी तजनी, वे ही सोचा शाम से॥
जा रहे क्यों छोड़ कर, मन मेरा बहुत अधीर है।
राम रो रो कर कहें, अब कुछ तो दिजे धीर है॥
क्या सोचा था क्या हो गया, मन भर कर के तुम तो सो लोजी।

अवध भी जाऊँ नहीं, पूछे सुमित्रा मात जी।
लक्ष्मण छोड़े कहाँ, भेजे तुम्हारे साथ जी॥
किस तरह दिखाऊंगा, दुनिया को मुँह चिंता बड़ी।
वायदा किया विभीषण से, समस्या है कड़ी॥

हनुमान जी राजा द्रोण मेघ के यहाँ औषधीय जल लेने जाते हैं

उस समय पर इस समस्या का समाधान पाने के लिए भामण्डल, सुग्रीव आदि यह बड़े-बड़े वहाँ पर योद्धा लक्ष्मण के लिए पहरा देने को तैयार हुए क्योंकि किसी ने उन्हें आ करके उस समय पर बताया कि जिसको दिव्य शक्ति लग जाती है, उसे कोई स्पर्श न करें। रोने से कुछ काम नहीं बनेगा, उपाय करना पड़ेगा। तभी एक व्यक्ति ने आकर के उन्हें कुछ खबर दी कि एक बार इस तरह की विपदा भरत जी के पास में आई थी और भरत जी ने उस विपदा को दूर करने के लिए द्रोणमेघ राजा के यहाँ से कुछ जल मंगाया था और उस जल के माध्यम से इस विपदा को दूर किया था। यह बात जब उन्हें पता पड़ी तो तुरंत, भले ही वह भरत जी का स्थान अयोध्या बहुत दूर थी लेकिन विद्याधरों के लिए वह चीजें दूर और पास कुछ नहीं होती क्योंकि वह विमान से क्षण भर में वहाँ पहुँच जाते हैं। हनुमान जी क्षण भर में वहाँ पर भरत जी के पास पहुँच करके वह बात जानना चाहते हैं कि वह कौन राजा द्रोणमेघ है? किसके यहाँ का जल लाया गया था? जिससे उस समय यह विपदा दूर हुई थी और उसी विपदा से लक्ष्मण की विपदा दूर होगी। ऐसा विचार करके वह वहाँ पर पहुँचते हैं।

मैं बहुत दूर से आया हूँ, यह खबर केवली से सुनकर।
यहाँ लंकायुद्ध में लक्ष्मण को, एक शक्ति लगेगी बहु खरतर॥
तब द्रोणमेघ की पुत्री के, कर जल से वह अच्छे होंगे।
चल पहुँच समय से ही पहले, जो भाग्य यदि अच्छे होंगे॥
आकाश मार्ग से आता हूँ, रघुवर के पास लेवा चलिये।
वहाँ सारी कथा सुनाऊंगा, अब व्यर्थ समय ही मत हरिये॥

भामण्डल तब ले उसे, गये राम के पास।
हाल देख कहने लगा - राम न होय उदास॥
हे राम नहीं चिंता कीजे, मैं रोग की औषधि लाया हूँ।
बुलवायें शीघ्र विशल्या को, जिसका सन्देश ले आया हूँ॥
विश्वास करे श्री मुनियों ने यह तथ्य हमें बतलाया है।
तप पूर्व जन्म के बदले में, इस भव यश उसने पाया है॥
चाहे जैसा हो रोग, शक्ति चाहे जैसी ही कारी हो।
उस कर-जल छींटे से रोगों से, पल में मुक्ति सारी हो॥
एक बार अवध के तीर भरत जी, जब क्रीड़ा को आये थे।
थी शक्ति लगी मेरे देखी, तो जल छींटें दिलवाये थे॥

इस तरह से हनुमान जी ने जाकर के जब भरत को बात बताई तो भरत जी स्वयं जाने को तैयार हो गए लेकिन हनुमान जी ने उनको रोका और कहा कि आप मत चलिए, आपको अपनी सेना के साथ चलने में बहुत समय लगेगा। हमें अभी तुरंत राम जी के पास पहुँचना है। आप उन राजा द्रोणमेघ का पता दीजिए और बताइए कि वहाँ पर उस जल की क्या महिमा है? तब राजा द्रोणमेघ के घर जा करके उन हनुमान जी ने तुरंत यह बात जब बताई तो राजा द्रोणमेघ ने कहा कि मेरी बेटी है, विशल्या जिसका नाम है। उसके स्नान के जल से बड़ी-बड़ी शक्तियों का समाधान हो जाता है। शक्तियाँ जो बेहोश करके चली जाती हैं, कोई भी आपदाएँ आती हैं, वे दूर हो जाती हैं। उस जल को ले जाने के लिए हनुमान जी ने जब कहा तो उन राजा द्रोणमेघ ने कहा जल की क्या बात है? मैंने तो सुना था कि मेरी विशल्या का विवाह लक्ष्मण जी से होगा। तुम इस विशल्या को ही वहाँ ले जाओ और लक्ष्मण जी की मूर्च्छा को दूर करो।

तभी लेकर विशल्या को, श्री हनुमान धाए हैं।
न सूरज की किरण निकली, वो पहले ही ले आए हैं॥
विशल्या जा के जब उतरी, कटक के बीच आई है।
दिव्य शक्ति निकल भागी, शक्ल देवी बनाई है॥

सूर्य की किरण निकलने से पहले ही हनुमान विशल्या को लेकर आ जाते हैं

जैसे ही वह विशल्या उस कटक माने सेना के पास पहुँची और वह जैसे-जैसे वह लक्ष्मण के पास जाती जा रही है, लक्ष्मण को चेतना आती जा रही है। जैसे ही वह लक्ष्मण के निकट पहुँची वह उसमें जो शक्ति थी, विद्या थी, वह उसमें से निकलकर के एकदम से वह देवी का रूप धर करके बाहर निकल करके आई और जैसे ही वह बाहर निकल कर आई, हनुमान ने उसको अपने हाथ में दबोचा और पकड़ा, कहाँ जा रही है? उसको दबोच लिया, उस विद्या को पकड़ लिया, वह विद्या उस समय पर उनके हाथ जोड़कर के प्रार्थना करने लगी। धरणेंन्द्र का आसन कांपने लगा कि यह विद्या को पकड़ लिया हनुमान जी ने और वह विद्या उनसे प्रार्थना कर रही है लेकिन उस विद्या ने कहा मेरी कोई गलती नहीं है। मुझे तो सिद्ध करके गरुडेंद्र ने इस तरह से भेजा था, मैं उस शक्ति के कारण से इस में आकर के लग गई और मुझे छोड़ दीजिए। हनुमान जी ने उस विद्या को छोड़ दिया क्योंकि उसकी कोई गलती नहीं थी और इस तरह से वह लक्ष्मण जी की जब मूर्च्छा दूर हो जाती है, तो उन्हीं विशल्या के साथ में लक्ष्मण जी का विवाह भी हो जाता है और उसके बाद में फिर वह राम-लक्ष्मण की जोड़ी फिर से युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाती है।

रावण, राम लक्ष्मण के पास अपना दूत भेजते है, अब बहुत देर हो चुकी है

इधर जब वह युद्ध हो रहा था तो उस युद्ध में धीरे-धीरे रावण के भाई कुंभकर्ण को और उसके पुत्र इंद्रजीत, मेघनाथ को यहाँ राम की सेना के योद्धाओं ने बंदी बना लिया। जब उधर बंदी यह सब लोग बन गए तब रावण को घबड़ाहट हुई और उस समय पर वह रावण फिर विचार करने लगा कि इनको कैसे छुड़ाया जाए? उनको छुड़ाने के विचार में रावण के मन में यह आशंका आ गई कि मैं राम के पास में एक शांति का

समाचार भेजूँ। रावण उस समय पर राम के पास में एक शांति का समाचार भेजता है। क्या भेजता है? अगर तुम मेरे पुत्रों को और मेरे भाई को छोड़ दो तो मैं तुम्हें विद्याधरों कि जो बहुत बड़ी भूमियाँ हैं, इन सब भूमियों का तुम्हें राजा बना दूँगा। सीता की बात मत करना। मैं तुम्हें पूरे विद्याधर वंश का राजा बना दूँगा और यह युद्ध शांत हो जाएगा। इतनी बात अगर आप मान लो तो यह युद्ध नहीं होगा। उस समय पर भी उस शांति वार्ता के दूत को राम ने तो उस समय पर कुछ नहीं कहा लेकिन दूसरे लक्ष्मण, सुग्रीव यह जो लोग खड़े थे, उन्होंने उस को डाँट करके भेजा और कहा, रावण को अब शांति अच्छी लग रही है। अगर रावण को शांति अच्छी है, युद्ध अच्छा नहीं लग रहा है, तो उससे कहना कि किसी को कोई धन-दौलत नहीं चाहिए, किसी को कोई जायदाद नहीं चाहिए, कोई को कोई राजा नहीं बनना है, सब अपने-अपने राजा हैं। केवल एक बात मान ले सीता को छोड़ दे, सीता को वापस भेज दे। यह दूत को फटकार लगा करके वहाँ राम के सेनापतियों ने फिर रावण के पास में पहुँचाया और उस समय पर जब रावण के पास में यह बात पहुँची तो फिर रावण विचार करने लग गया कि अब हमारे लिए युद्ध करना ही एकमात्र उपाय रह गया है और यह युद्ध तो होगा। अब इस युद्ध में किस तरह से आगे और लड़ा जाए और यह युद्ध का आगे समापन कैसे हो? यह बात विचार करके वह जो युद्ध कुछ दिनों के लिए रुक गया था, वह युद्ध फिर से शुरू होता है। अब अंतिम युद्ध के रूप में जब सामने आएगा तब आप देखेंगे कि रावण का वध कैसे होता है? किसके द्वारा होता है और रावण के वध के समय पर कौन किस तरह से रावण का वध करता है? यह सब चीजें आपके सामने आएँगी, थोड़ा सा आपको इंतजार करना पड़ेगा। क्या इंतजार करना पड़ेगा? आप चाहते हैं कि रावण का क्या हाल होने वाला है? यह हम बहुत जल्दी से सुन ले या आप चाहते हैं कि बहुत आराम से सुन ले? क्या सुनना चाहते हैं? आराम से! आप सोचें, इस तरह की जब कथाएँ चलती हैं तो कितने ही लोगों के मन आज भी ऐसे हो जाते हैं, जैसे वह साक्षात उस घटना को देख रहे हैं। साक्षात उस समय का दृश्य देख रहे हैं और जैसे कोई episode बंद हो

जाता है, तो दूसरे दिन लगता है कि नहीं अभी अगले sunday को आएगा। लेकिन आप लोगों के लिए अच्छी बात है कि अगले sunday को नहीं आएगा, यह अगले दिन ही आ जाएगा। फिर भी हम थोड़ी सी इस बात को आगे बढ़ाते हुए इसी बात को और इस काव्य के रूप में सुनते हैं-

क्यों नाहक सेना मरवाओ, यह मानो हम इकरार करें।
कुछ और भी इच्छा होवे यदि, कह दीजे हम स्वीकार करें॥
इतनी सुनकर रघुवर बोले, हमको लंका दरकार नहीं।
हम आपसे कुछ नहीं चाहते हैं, पर सीता दे स्वीकार नहीं॥
सीता को लेकर वापस हों, जा वनमें बास लगायेंगे।
जाकर कहना तुम रावण से, पल कि नहीं देर लगायेंगे॥
अभिमानी का दूत था, बहुत फैलाया जाल।
सबने मिलकर सभा से, इसको दिया निकाल॥

वह जो रावण का दूत आया था,

इसको दिया निकाल, वह वापस लंकपुरी में आया।
सीता को नहीं दें रघुराई, जान बचाकर आया॥
रावण ने सोचा बहुरूपीण, विद्या सिद्ध करेंगे।
इंद्र नगेंद्र भी मिलकर आए, किसी से नहीं मरेंगे।

अष्टाह्निका पर्व में रावण द्वारा युद्ध को रोक कर विद्या सिद्ध करने का निर्णय

अब रावण यह सोचता है कि मुझे कुछ और करना पड़ेगा। जिन्होंने मेरे बेटों को बांध लिया है, इतने बड़े-बड़े योद्धाओं को बांध लिया है, उनके पास में भी शक्ति है और हमें अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए कुछ और करना पड़ेगा। तब रावण एक बहुरूपिणी विद्या सिद्ध करने की अपने मन में योजना बनाता है। जिस बहुरूपिणी विद्या सिद्ध होने के बाद में उस रावण को कोई नहीं मार सकता। ऐसी उस बहुरूपिणी विद्या को सिद्ध करने के लिए वह जब मन बनाता है, उसी समय पर फाल्गुन मास की अष्टानिका लग जाती है। अष्टानिका जानते हो? आठ दिन के नंदीश्वर के पर्व लग जाते

हैं। उन पर्वों के दिनों में वह रावण आदेश देता है कि कोई भी किसी भी तरह का कहीं पर भी मार-काट मचाए। कोई युद्ध नहीं होगा, आठ दिन तक, यह युद्ध विराम रहेगा और इन आठ दिनों में मैं भगवान की आराधना करके विद्या सिद्ध करूँगा। उस बीच में कोई भी, किसी भी तरह का उपद्रव न करें। विपक्षी व्यक्ति कोई भी आकर के किसी को बाधा न पहुँचाये, यह मेरा आदेश है। उस आदेश को मान करके सभी लंका के लोग उसकी धर्म आराधना में, विद्या सिद्धि में उसके साधक बनते हैं। उसी समय पर यह बात राम जी के उस पूरे कटक में पहुँचती है कि रावण विद्या सिद्धि करने के लिए, बहुरूपिणी विद्या सिद्धि करने के लिए, अपनी साधना करने को तैयार हो रहा है। उसकी साधना में दखल डालने के लिए सब सुग्रीव, हनुमान आदि जितने भी राजा हैं, सब तैयार होते हैं और राम जी से पूछते हैं। राम जी मना करते हैं, नहीं! अन्याय अनीति का कोई काम नहीं करना। राम जी कहते हैं- अगर वह अपनी आराधना कर रहा है, विद्या सिद्ध कर रहा है, भगवान की पूजा कर रहा है, किसी की पूजा में कभी दखल नहीं डालना। जब दूसरे लोग यह समझ लेते हैं कि यह राम जी तो हमेशा न्याय नीति के अनुसार चलने वाले हैं, ये कभी अपने को आज्ञा नहीं देंगे। वे सब विद्याधर लोग अपनी आपस में योजना बनाकर के, राम जी को बताए बिना ही लंका में पहुँचने की कोशिश करते हैं और उस समय पर क्या होता है?

तब राम कमल लोचन बोले, यह न्याय नीति का काम नहीं।
वीरों के लिए है लाज युक्त, मर्यादा तजना नाम नहीं॥
पाकर गुपचुप संकेत लखन का, गुपचुप सारे जाते हैं।
परकोट किया खंडित, नगरी में जाकर उधम मचाते हैं॥

लक्ष्मण के संकेत को पाकर लंका में उत्पात होना और देव श्री राम के पास पहुँचते है।

लखन का संकेत पाकर के, लखन माने लक्ष्मण का संकेत पाकर के, लक्ष्मण जी ने भी कहा, राम तो अपने राम ही हैं, भोले भाले हैं, यह कभी अपने को न्याय नीति के विरुद्ध आज्ञा नहीं देंगे। लक्ष्मण ने कहा, मैं तुमसे कह रहा हूँ, जाओ! और उस लंका में उत्पात मचाओ और उसको विद्या सिद्ध मत

करने दो, अगर उसकी विद्या सिद्ध हो गई तो फिर उसको जीतना बहुत दुर्जय हो जाएगा, अजय हो जाएगा। इस तरह की जानकारी जब विद्याधरों ने उसको दी तो उस समय पर सब ..

प्रजा में हा हा कार मची, भगवान यह क्या आफत आई।
प्रजा सारी बन फरियादी, रावण महलों में चली आई॥
नहीं कोई मुकाबिल में आया, तब कपिवंशी यह माना है।
अब चाहे जितना नष्ट करो, ऐसा मौका कब आना है॥
तब शांतिनाथ के मंदिर से, कुछ यक्ष देव आ जाते हैं।
विकराल बदन सब देख डरे, कपिध्वज वापिस आ जाते हैं॥
तब राम कटक के देव चले, यक्षों में बहुत ही युद्ध हुआ।
लंका के देव जो मुख्य थे दो, श्री रामादल को गमन किया॥

उधर जब शांतिनाथ भगवान के मंदिर में रावण बैठकर के विद्या सिद्ध करता है, तो वहाँ की यक्ष देव आ करके इधर राम के कटक में आते हैं और राम के पास में भी जो देव थे, वे आपस में मिलकर के वहाँ पर भी युद्ध होता है और उस समय पर

वह पूर्णभद्र और मणिभद्र, श्रीराम पे आ फरियाद करें।
दशरथ सुत महा न्यायकारी, ये क्यों ऐसा अन्याय करें॥
क्या तुम्हें नहीं कुछ पता राम, लंका में क्या उत्पाद हुए।
कपि-वंशी राजकुमारों ने, नर नारि सभी भयभीत किये॥

देवों ने आ करके राम के समक्ष से बात रखी कि आपकी न्यायप्रियता होते हुए भी यह अन्याय क्यों हो रहा है? वहाँ पर जाकर के लोग यह उधम मचा रहे हैं और आपके यह वानरवंशी अनेक राजा पूरी सेना को वहाँ परेशान कर रहे हैं। रावण ने तो आदेश दे रखा है कि कोई युद्ध न करें और यह सब वहाँ पर उत्पात मचाए हुए हैं।

सुन लक्ष्मण जी ये बोल उठे, तुम कैसे फरियादी आये।
क्या रावण भी है न्याय प्रिय, जो पक्षपात करने आये॥
यक्षों तुमको मालूम है सब, रावण की आग लगाई है।
वह सीता को हर लाया है, हम करें आज मनचाही है॥

जब दूराचरण करके भी वह, अभिमान बहुत ही करता है।
फिर नाम लड़े आश्चर्य ही क्या, बोलो पानी कहाँ ढलता है॥
रावण ने क्या उपकार किया है, हे यक्षो यह भी बतलाओ।
और हमने क्या अपराध किया, जो पक्षपात तुम ठहराओ॥
वह विद्या भारी साध रहा, हम उसे डिगाना चाहते हैं।
कुछ और नहीं इच्छा हमको, इतना उद्योग साधते हैं॥
इतनी सुन लज्जत हुए, वचन न निकले सार।
इतना ही कह कर गए, सुनिए लखन कुमार॥

उस समय पर जब लखन ने उन देवों को समझाया तो वे देव समझ गए और इतना ही कह करके वह देव वहाँ से चले गए कि

प्रजा को कष्ट ना होवे, ना धन हरने कोई पाये।
न रावण को जरब पहुँचे, नहीं मरने कोई पाये॥
और ही यत्न करके क्रोध, तुम उसको दिला देना।
महासाधक अडिग रावण, डिगे ना कुछ भी कर लेना॥

उन देवों ने कहा ठीक है! तुम्हें जो कुछ करना है कर लेना लेकिन जहाँ रावण बैठा है, उस रावण को मत छूना, उस रावण को touch मत करना। रावण जहाँ बैठा है उसे क्रोध दिलाने की कोशिश मत करना। उसके आसपास दूरदराज तुम्हें जो करना है, कर लेना, इतना कह कर के वह दोनों देव वहाँ से चले गए।

यह कह करके गए दोनों, सबको अंगद ले आया है।
पहुँचे लंकेश के महलों, न लेकिन मार्ग पाया है॥
गये मुशकिल से मंदिर तक, स्तोत्र प्रभु का गाते हैं॥
फिर रावण के निकट आ, कर के माला छीन लेते हैं॥

इधर अंगद आते हैं, उधम मचाने लग जाते हैं, रावण के पास में आ करके उसकी कहीं पास में बैठी हुई मन्दोदरी को मारते हैं, उससे माला छीन लेते हैं। उसके तरह-तरह से आवाज निकाल करके रावण को यह बताना चाहते हैं। मन्दोदरी भी रोने लगती है कि हाय नाथ! मेरी रक्षा करो लेकिन वह रावण बिल्कुल अड़िग बैठा रहता है।

रावण की एकाग्रता से उसे बहुरूपिणी विद्या सिद्ध हो जाती है

विद्या सिद्धि में इतनी एकाग्रता, सुन रहे हो? आचार्य कहते हैं- इतनी एकाग्रता अगर उसकी आत्मा के ध्यान में लग जाती तो उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती। इतनी एकाग्रता! मन्दोदरी को उसके सामने मारा जा रहा है, इतना बलशाली होकर के भी उसकी चीत्कार सुन रहा है, उसकी चीख-पुकार सुन रहा है लेकिन फिर भी अपनी विद्या सिद्धि के, मंत्र सिद्धि से अपना मन नहीं हटा रहा है। बिल्कुल भी विचलित नहीं हो रहा है क्योंकि उसके मन में एक ही बात है यह बहुरूपिणी विद्या मुझे सिद्ध करना है और उस समय पर सभी तरह से वह अंगद वहाँ पर आकर के उसके आसपास उसकी माला छिन लेते हैं, उसके लिए विघ्न डालते हैं, सब कुछ करते हैं। लेकिन वह बिल्कुल भी विचलित नहीं होता। ऐसा वह पट्ठा टस से मस नहीं होने वाला। समझ में आ रहा है? रावण बहुत बलवान था, जन्म लेने के बाद ही बहुत कम उम्र में भी उसने बहुत पहले विद्याएँ सिद्ध की थी और वह विद्याएँ सिद्ध करने में इतना माहिर था कि जो विद्याएँ किसी को बारह साल में सिद्ध होती हो, वह उसको बारह महीने में सिद्ध होती थी। इतनी उसके चित्त की एकाग्रता थी। जो मंत्र उस किसी के लिए साल भर में उसके लिए विद्या सिद्ध करते हो, वह मंत्र उसके लिए एक महीने में विद्या सिद्ध करके दे देते हैं। इस तरह कि उसके पास में एकाग्रता थी। इतना वह एक एकाग्रचित्त इस परिस्थिति में भी वह बना बैठा है। सोचें कि ये यह बड़े-बड़े लोगों का मन कितना पक्का होता है और यह सब आसपास देख रहे हैं कि सब कुछ तहस-नहस हो रहा है लेकिन उसे पता है कि एक विद्या के सिद्ध होने के बाद में सब कुछ फिर चमन हो जाएगा। इसलिए वह उस समय पर बिल्कुल भी विचलित नहीं होता।

निकट लाकर के रावण, के वचन ऐसा सुनाया है।
चोर श्री राम की रानी, हरण करके तू लाया है॥
तेरी भी अब रानियां, हर कर हम ले जाय।
चमर करे सुग्रीव पर, मंदोदरी हर्षाय॥

उधर अंगद उन्हें तरह-तरह की बात सुनाता है, जिस तरह से तू ये सीता रानी को पकड़ कर के लाया, हर करके लाया, ऐसे ही तेरी मन्दोदरी आदि सभी रानियों को मैं हरण करके ले जाता हूँ।

मन्दोदरि रावण से लिपटी, हें नाथ मेरी रक्षा कीजे॥
क्या आप दशानन नहीं रहे, क्या हो गया यह बतला दीजे॥
इतने में विद्या सिद्ध हुई, जय जय कारे कर आती है॥
हे स्वामी कुछ आज्ञा दीजिए, रावण को शीश झुकाती है

और इतने में यह सब उपद्रव मच रहा था लेकिन रावण की एकाग्रता के कारण से वह विद्या जो बहुरूपिणी विद्या है, वह उस रावण को सिद्ध हो जाती है। वे सभी विद्याएँ जो अनेक प्रकार के देव होते हैं, वे सब रावण को झुककर के शीश नवाते हैं और कहते हैं मुझे आज्ञा दीजिए, मैं क्या करूँ? वह बताते हैं कि मैं क्या कर सकता हूँ?-

बलभद्र, चक्री, अर्धचक्री को, मैं छोड़ सभी को वश करती।
विद्याधर, मानुष चीज ही क्या, देवों का मान भी हर लेती॥
इतनी सुन अंगद भाग गया, आकाश मार्ग से होकर के।
सब हाल बताया लक्ष्मण को, वहाँ का सब उसने जाकर के॥

विद्या सिद्ध होने के अहंकार से भरकर रावण सीता के पास पहुँचता हैद

विद्याओं ने क्या बताया कि मैं बलभद्र, चक्री और अर्धचक्री को वश में नहीं कर सकती, बाकी किसी भी विद्याधर, किसी भी राजा को वश में कर सकती हूँ। इस तरह से जब अंगद ने देखा कि विद्या सिद्ध हो गई है, अंगद वहाँ से तुरंत भाग निकले और -

अब रावण का कुछ हाल सुनो, स्नान किया भोजन पाया।
विद्या की परीक्षा लेने को, क्रीडा स्थल में वह आया॥
बहु रूप बनाकर देखे हैं, पद छाप से ही भूकंप किया।
श्रीराम के दल में भय उपजे, उत्पात सभी ने देख लिया॥
फिर देवारण्य में जाता है, सीता भी भय खा जाती है।
उस बहुरूपिणी विद्या से, वह चिन्तित भी हो जाती है॥

रावण कहता है, हें सीते अब राम लखन को मरे सुनना।
फिर मेरे साथ कुल पृथ्वी पर, विहार संग चल कर करना॥
सीता कानों पर हाथ धरें, यह शब्द न सुनना चाहती थी।
और कहती है, हे दशमुख सुन मैं जीवित उनकी आश में थी॥

उस समय पर वह विद्या के अहंकार में सीता के पास पहुँचता है और उस विद्या की बात को सुनकर के वह सीता भी आशंकित होती है और इधर राम के सेना में भी बहुत से योद्धा आशंकित होने लग जाते हैं। उसके बाद में यह युद्ध एक अंतिम रूप में सामने आएगा, वह अब आपको कल ही पता पड़ेगा कि कैसे इस युद्ध में रावण का कौन वध करता है? इसके लिए आप कल जरूर सुने। बोलिए श्री राम प्रभु भगवान की जय।

गुरु कथा सुनाए राम लखन गुणधाम की।
गुरु कथा सुनाए राम रतन गुण धाम की।
है पद्मपुराण में पुण्य कथा श्री राम की।
है पद्मपुराण में पुण्य कथा श्री राम की॥

रावण का वध

रावण बहुरूपिणी विद्या की परीक्षा करता है

यह श्री राम भगवान की कथा आप लोगों के समक्ष पिछले कई दिनों से चल रही है। आज उसका मंगलमय नौवां दिन है और इस कथा के होते-होते आप लोगों ने इतना देख लिया, जान लिया कि दशानन जिसे रावण कहते हैं वह जब यह महसूस करता है कि मेरे पुत्रों को, मेरे भाई को, राम की सेना के सेनापतियों ने बांध लिया है तो वह सोचता है कि हमारे लिए अब कुछ और करना बाकी है। उसने एक बहुरूपिणी विद्या की सिद्धि की थी। आठ दिन में उसने वह बहुरूपिणी विद्या की सिद्धि करने के लिए अष्टान्हिक पर्व में शांतिनाथ भगवान के जिनालय में बैठ करके सिद्धि की। बीच में अंगद ने आकर के लंका में कई तरह के उपद्रव किये। उसने रावण को उस विद्या सिद्धि से डिगाना चाहा। लेकिन रावण की एकाग्रता के कारण से उसे अंततः विद्या सिद्धि हो ही गई और जैसे ही उसे विद्या सिद्धि हुई वह जिनेंद्र भगवान की प्रतिमा को नमस्कार करके, उनकी प्रदक्षिणा दे करके अपने महल में लौटता है। रानी मंदोदरी उसे जो यहाँ पर अंगद आदि अनेक वानर वंशी कुमारों ने जो उपद्रव मचाया था उसके बारे में उसे जानकारी देती है। फिर भी वह दशानन सबको कहता है कोई बात नहीं। उनका काम जिस तरह का उपद्रव करना था वह उस तरह का उपद्रव कर पाए। तुम चिंता न करो। हमारे लिए जिस विद्या की सिद्धि हुई है उस विद्या के आगे यह वानर वंशी लोग बिल्कुल भी टिक नहीं पाएँगे। ऐसा विचार करके उसने लंका की सुरक्षा करने के लिए मायावी कोट की रचना करके युद्ध की योजना बना करके उस दिन वह बड़े हर्ष के साथ में प्रसन्न होकर के निद्रा में मग्न हो गया और दूसरे दिन जब वह उठता है तो उस समय पर वह सबसे पहले उस विद्या की परीक्षा करने के लिए तत्पर होता है। जब वह विद्या की परीक्षा करता है तो चारों तरफ उत्पात छा जाता है,

भूकंप सा आ जाता है, खलबली मच जाती है और इस तरह की स्थिति देखकर के राम के कटक में भी यह उत्पात दिखाई देता है। उसके पदचापों से ही धरती हिलती है। इस तरह की वह बहुरूपिणी विद्या का प्रभाव जब उसे देखने को मिलता है तो वह बहुत प्रसन्न होता है और प्रसन्न होने के बाद में वह आज महसूस कर रहा है कि आज हमसे बढ़कर के शक्तिशाली इस संसार में कोई नहीं है और आज का युद्ध एक तरह से निर्णायक युद्ध होगा। बहुत दिनों से युद्ध चल रहा है और अब इस युद्ध में अगला दिन यह वानर वंशी देख नहीं पाएँगे। इस बात का विश्वास उसे भी है, मंदोदरी को भी है।

सीता की दशा देखकर दशानन दुःखी हो जाता है

राम की सेना में भी भामण्डल, हनुमान जैसे लोग भी उसकी बहुरूपिणी विद्या सिद्धि को देख करके चिंतित हो गए और आशंकित हो गए कि कुछ भी हो सकता है। यह विचार करते हुए वह बड़ा प्रसन्न भाव से सबसे पहले सीता के पास पहुँचता है। सीता से मिलने के लिए जाता है और वहाँ पर जाकर के जब वह सीता को बताता है तो सीता को भी पहले से पता होता है कि इसने यह बहुरूपिणी विद्या सिद्ध कर ली है। सीता को भी बहुत आशंका होती है। उसे भी लगता है कि अब अगर मेरे पति का जीवन नहीं रहेगा तो फिर मेरा भी जीवन नहीं रहेगा और उस समय पर वह दशानन से कहती है- कोई बात नहीं, अगर मेरे पति की सांसें रुक गई और मेरा पति अगर तुम्हारे हाथों मृत्यु को प्राप्त हुआ तो यह जानना मेरे पति श्री राम से कहना कि इस सीता की सांसें तभी तक चल रही है जब तक श्री राम की सांसें चल रही हैं और यह संदेश उनको दे देना। इतना कहते-कहते सीता बेहोश हो जाती है मूर्छित हो जाती है। सीता की यह दशा देखकर के दशानन को बहुत दुःख होता है। उसका हृदय एकदम से कोमल हो जाता है, दया से भर जाता है वह सीता को देख करके उसका दुःख देखकर के भीतर से पिघल जाता है। विचार करता है मैंने व्यर्थ में इस युगल को, इस जोड़े को बिछोह कराकर के इन लोगों को बहुत दुःख दिया। उसके हृदय में ऐसा भाव उत्पन्न होता है कि इस सीता को मैं मना नहीं पाया और

यह सीता उन्हीं राम की रट लगाए रहती है। ऐसी सीता से अब हमें कोई प्रयोजन भी नहीं है। मैं अगर इसको युद्ध में जीत भी लूँगा तो भी मैं इसको हाथ नहीं लगाऊँगा क्योंकि जिसका मन किसी दूसरे पुरुष में लगा हुआ हो ऐसी उस स्त्री के साथ में जबरदस्ती करने का मेरा कोई भाव नहीं है। अब इस सीता के साथ में क्या किया जाए? मेरा मन है कि यह युद्ध न किया जाए। लेकिन अगर हम यह युद्ध नहीं करेंगे और इस सीता को यूँ ही अगर राम को दे देते हैं तो लोग मुझे कायर समझेंगे। लोग मेरी हंसी उड़ाएँगे। मेरी शौर्यता और मेरे पराक्रम के जो चर्चे विद्याधर वंश के अन्दर हैं तीन खंड की भूमियों पर जो मेरे चर्चे हैं वह सब अपकीर्ति में बदल जाएँगे।

रावण को अब युद्ध के अतिरिक्त कोई उपाय नही दिखता है

रावण विचार करता है कि मैं क्या करूँ? युद्ध मुझे पसंद नही है, बहुत नरसंहार होता है, बहुत बेवजह मनुष्यों की जान जाती है और ऐसी स्थिति में उसे एक ही उपाय समझ में आता है। वह अपने मन में बड़े दया भाव के साथ में, न्यायप्रियता के साथ में विचार करता है कि यह तो निश्चित ही है कि राम-लक्ष्मण इनको मैं मारना नहीं चाहता। मैं इनके लिए सीता अगर सीधी-सीधी दे देता हूँ तो मेरी अपकीर्ति होगी। मेरे वंश का अपमान होगा और लोग मुझे कायर समझेंगे। इसलिए एक ही उपाय उसके मन में आता है कि युद्ध तो करना पड़ेगा लेकिन उस युद्ध में मैं राम और लक्ष्मण को मारूँगा नहीं, उन्हें जीवित पकड़ लूँगा और जीवित पकड़ने के बाद में सीता उन्हें वापस कर दूँगा। इससे उनका भी भला हो जाएगा और मेरे भी अपकीर्ति नहीं होगी और मेरे युद्ध का जो कार्य है वह भी पूर्ण हो जाएगा। ऐसा विचार करके वह मन में विचार करता है कि मैं राम लक्ष्मण को तो वापस जीवित लौटा दूँगा लेकिन ये जितने भी वानर वंशी हैं जिन्होंने मेरे साथ छल किया है, यह सब पहले मेरे थे। सुग्रीव, हनुमान यह सब पहले मेरे लोग थे। हमसे इनके संबंध थे, अच्छी रिश्तेदारियां थी। यह सब हमारी लंका में आया करते थे, हमको सम्राट माना करते थे और इन्होंने सबने छल करके मुझे जो धोखा दिया है मैं इनमें से एक को भी नहीं छोड़ूँगा। इन सब विद्याधरों को यहाँ से मिटाकर के अपने वंश के राक्षस

वंश के लोगों को इस कर्म भूमि के अन्दर राजा बनाऊँगा। जिसके कारण से आने वाले समय में तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलभद्र सब हमारे विद्याधर कुल में पैदा हो। ऐसा वह विचार करता है और उस विचार को देख करके उसी समय पर मंदोदरी उसके पास में आ जाती है और देखती है कि आज स्वामी का मन कुछ परिवर्तित हुआ है। वह कुछ दयालु हृदय से मन में भीगे-भीगे से दिख रहे हैं। उनके हृदय में कुछ युद्ध न करने का भाव भी आया है। सीता को वापस लौटाने का भाव आया है। उनका हृदय सीता से विरक्त हो चुका है। इस तरह से वह मंदोदरी जब विचार करती है तो मंदोदरी के अन्दर भी उन दशानन के प्रति मन अनुराग से भर जाता है और वह पति को प्रसन्न चित्त देखकर के सोचती है कि यह बहुत अच्छा मौका है, अवसर है, स्वामी को आज भी समझाया जाए, कहा जाए कि वह उस सीता को छोड़ दें। व्यर्थ का यह जो तमाशा हो रहा है, व्यर्थ का यह जो युद्ध हो रहा है इस युद्ध को एक सीता के पीछे इतना बड़ा युद्ध करना अच्छी बात नहीं। वह मंदोदरी दशानन को कहती है हे स्वामी! आपके रणवास में, आपकी लंका में एक से एक सुंदर स्त्रियाँ हैं और मैं स्वयं आप की पटरानी हूँ। आप बताओ कैसा सुंदर रूप बनाना है? आप कहो तो मैं सीता का ही रूप बना लूँ। लेकिन आप इस सीता को छोड़ दो और यह बात दशानन को भी बहुत अच्छी लगती है। तब वह दशानन कहता है कि तुम्हें रूप बनाने की क्या जरूरत है तुम तो स्वभाव से ही बहुत सुंदर हो। मैं तुम्हारे अलावा किसी को नहीं चाहता।

लेकिन अब क्या करूँ? यह सीता के साथ जो हरण हो गया और इस सीता को मैं जो लंका में ले आया, यह अब ऐसे गले की हड्डी बन गई है, न अब इसको निगल सकता हूँ और न इसे छोड़ सकता हूँ। यह विचार करते-करते जब मंदोदरी को लगा कि आज दशानन अनुकूल हैं, इनके मन में सीता को छोड़ने का विचार है, तो वह हर्षित होती हुई तुरंत वहाँ पर दशानन से कहती हुई कि मैं अभी जाकर के सीता को वापस राम के पास पहुँचा करके और आपके भाइयों को, बेटों को भानुकरण, इंद्रजीत,

मेघनाथ सबको छुड़ा करके अभी ले करके आती हूँ और जैसे ही उस मंदोदरी ने इतना कहा वह दशानन फिर से भड़क उठा। जैसे ही मंदोदरी ने यह बात कह करके उससे आगे जाने को हुई तुरंत दशानन उसे चिल्ला करके बुलाता है– मय की पुत्री और सम्राट दशानन की महारानी अगर ऐसी कायरता की बातें करती है तो इसका मतलब है कि उसका पति भी तुझसे ज्यादा कायर है और यह कायरता की बातें हम जैसे लोगों को शोभा नहीं देती। आज अगर तुझे अपने पति पर विश्वास हुआ है तो तुझे यह भी विश्वास होना चाहिए कि यह जो बहुरूपिणी विद्या मैंने सिद्ध की है, यह मेरी विजय का सबसे बड़ा कारण है और इसके कारण से आज सीता भी डर गई है। वह भी मेरी बात को सुनकर के मूर्छित हो गई। आज सीता ने पहली बार मुझसे कहा- दशानन मैं मानती हूँ कि मेरा पति आज हो सकता है कि मृत्यु को प्राप्त हो जाए। आज उसे पहली बार लगा कि मेरे पति की भी मृत्यु हो सकती है। अभी तक तो वह भी अकड़ती रहती थी। अभी तक तो वह भी राम और लक्ष्मण को बड़ा महापुरुष मानती थी और कहती रहती थी कि वह हमें छुड़ाने आएँगे। एक न एक दिन वह मेरे लिए मरण करा देंगे। इस दशानन की मृत्यु तुम्हारे हाथों से होगी। इस तरह से वह हमेशा अपने राम और लक्ष्मण के बारे में कहती रहती थी। लेकिन आज पहली बार वे आशंकित हुई, भयभीत हुई, डरी हुई दिखाई दी। इससे तुम्हें भी समझ लेना चाहिए कि जब वह डर सकती है तो तुम्हें डरने की क्या जरूरत है? तुम्हें कायरता रखने की क्या जरूरत है? तुम्हें सोचना चाहिए कि आज तुम्हारा पति उन सब राम लक्ष्मण को जीत करके, तुम्हारे लिए जो युद्ध का भय है मैं इतना विश्वास दिलाता हूँ कि अगर वह हमारे हाथों आए तो मैं उन्हें जीवित पकड़कर के लाऊँगा और सीता को वापस कर दूँगा लेकिन कायरता के साथ नहीं।

रावण मंदोदरी को समझाकर युद्ध के लिए निकलता है

रावण को सम्मान के साथ मरना पसंद है, अपमान के साथ जीना पसंद नहीं है । यह जब रावण ने मंदोदरी से कहा तो फिर मंदोदरी देखती रह गई और उस दिन रावण का वह प्रयाण होना था, लंका से बाहर निकलना

था। अपनी आयुधशाला में गया। वहाँ जा करके अपने अस्त्र-शस्त्रों को संभाला और जब वह आयुधशाला में जा रहा था उस समय पर अनेक अपशकुन हुए। उन अपशकुनों को रावण ने भी देखा, मंदोदरी ने भी देखा और मंदोदरी ने उन अपशकुनों को देख करके मन के अन्दर डर समा गया। वह फिर विचार करने लगी कि आज सुबह-सुबह ही मेरे पति का मन बहुत अशांत था। अपशकुन भी हो रहे हैं लेकिन कुछ कह नहीं सकते। इन अपशकुनों का फल अगर कहीं विपरीत हुआ तो मुझे विधवा हो जाना पड़ जाएगा। ऐसा विचार करके वह फिर से एक बार दशानन के पास जाती है और कहती है कि निमित्तज्ञानियों ने आप की मृत्यु के बारे में बताया था, आप स्मरण करें। राजा जनक की पुत्री और दशरथ के पुत्रों के निमित्त से आपकी मृत्यु बताई गई है। यह सीता उन्हीं जनक की पुत्री है। यह राम लक्ष्मण उन्हीं दशरथ के पुत्र हैं और आपने यह भी सुन लिया है कि लक्ष्मण नारायण हैं उन्होंने कोटशिला उठा रखी है और बलभद्र और नारायण यह दोनों सिद्ध हो चुके हैं। हर कोई इनको बलभद्र और नारायण मानने लग गया है। अगर यह बलभद्र और नारायण है तो आप प्रति नारायण हैं और नारायण के माध्यम से प्रति नारायण की मृत्यु होती है यह भी केवल भगवान के वचन में सबने सुन रखा है। आप फिर भी एक बार विचार करो। आज यह युद्ध रोक दो, आज युद्ध करने मत जाओ मेरा मन भीतर से कह रहा है आज अच्छा नहीं होगा। मुझे इन अपशकुनों को देख करके भय लग रहा है, डर लग रहा है और मैं आपके चरणों में गिर करके यह प्रार्थना करती हूँ कि इस युद्ध को टालने की कोशिश करो, मेरी ओर थोड़ा सा ध्यान दो। तब दशानन कहता है यह ठीक है कि नारायण, प्रति नारायण केवली भगवान ने कहे हैं, मुझे भी पता है। लेकिन यह कोई सिद्ध इस बात से नहीं हो जाता कि यह नारायण वही है। यह भूमि गोचरी वनवासी जिनके घर का कोई अता पता नहीं है यह नारायण नाम रख करके सामने आ गए हैं तो क्या यह नारायण हो जाएँगे? केवल नारायण नाम लेने से यह नारायण हो जाएँगे। मुझे इस चीज का कोई विश्वास नहीं है और

ऐसा कहते हुए वह मंदोदरी से कहता है- तू बिल्कुल नि:शंक रह, मैं आज ही अपने बेटों को और भाइयों को उनके बंदरों से छुड़वा करके वापस लेकर के आऊँगा और तुझे उस समय तक अपने मन में धर्म ध्यान के भावों के साथ में मन को निश्चिंत बना करके रखना है। पति के प्रति आशंकित नहीं होना है। उनके लिए अच्छा सोचना है और ऐसा कह करके वह रावण युद्ध करने के लिए उस लंका से बाहर निकलता है और उस युद्ध की तैयारी करते हुए जब वह लंका से बाहर निकलता है, राम की सेना को पता पड़ता है कि सामने से कोई बहुत बड़ा ऐसा लग रहा है जैसे कोई पर्वत सामने से आ रहा हो और वह सेना आशंकित हो जाती है कि यह चलता फिरता विशालकाय पर्वत कहाँ से दिखाई दे रहा है। उस समय पर सुग्रीव आदि उनको बताते हैं कि यह पर्वत नहीं है यह रावण की बहुरूपिणी विद्या की माया है और यह स्वयं रावण उस बहुरूपिणी विद्या से महामाया बना करके उस अनेक रूपों के साथ में उस विशिष्ट रथ पर सवार होकर के सामने आ रहा है। इस तरह से जब युद्ध की तैयारी होती है तो उस युद्ध के लिए वह राम की सेना भी तत्पर होती है, तैयार होती है और आज यह युद्ध एक निर्णायक युद्ध के रूप में आपके सामने आएगा। हम तब तक इस युद्ध को देखें इससे पूर्व में श्री राम का गुणगान करते हैं-

मर्यादा पुरुष श्रीराम हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
आदर्श बने जन जन के वसुधैव कुटुंब थे जिनके।
जो भी ले इनका नाम बिगड़े बनते सब काम।
प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
पितु वचन निभाने खातिर तज के राजा सुख आखिर।
वन वन करते विश्राम, अन्याय अनीति नाकाम।
प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम,प्रभु श्रीराम प्रभु श्रीराम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।

रावण का नियम भी वर्तमान युग में अनुकरणीय

आपने देखा दशरथ दशानन के हृदय में किस तरह का परिवर्तन आया और दशानन रावण किस तरह से मन में विचार करता है। रावण के इस चरित्र को देख करके आज हर एक व्यक्ति इस बात का विचार कर सकता है कि रावण न्याय नीति वाला एक बहुत बड़ा विद्वान भी है, दयावान भी है और बहुत बड़ा है जिनभक्त भी है। अगर उसके अन्दर दया न होती, न्यायप्रियता न होती तो वह सीता के साथ कुछ भी कर सकता था। लेकिन उसने अपनी उसी न्यायप्रियता के कारण से सीता का कभी भी स्पर्श नहीं किया। वह सीता को हरण करके तो लाया, मन में विचार उसके अन्दर उस मोह के कारण से आ गया और उस हरण करने के बाद में फिर जब उसने देखा कि सीता हमें स्वीकार नहीं कर रही है उसने सीता को मनाने के लिए समय लगाया लेकिन अंततः सीता ने उसे स्वीकार नहीं किया। उस रावण ने कभी भी उसके साथ जबरदस्ती नहीं की। जो व्यक्ति श्रीराम का भक्त है, रामायण को बहुत अच्छे ढंग से समझता है, जानता है, वह श्रीराम के आदर्शों को तो अपनाता ही है। आज के इस पंचम काल में, आज के इस कलिकाल में मैं इतना जरूर कहना चाहूँगा कि **राम के चरित्र** को अपनाना तो बहुत बड़ी बात है। अगर आदमी आज **रावण का ही थोड़ा सा चरित्र अपना ले** तो भी बहुत कुछ अराजकता इस दुनिया की दूर हो सकती है। महापुरुषों के पास में जो गुण होते हैं, वे गुण सबके लिए प्रेरणास्पद होते हैं। गलतियाँ अलग चीज होती है। गलतियाँ कोई भी करता है। गलतियाँ जीवन के अंत में कर्म के उदय से इसलिए भी होती हैं क्योंकि मृत्यु का कारण वह गलतियाँ बनती हैं तो इसी तरह के निमित्त बनते हैं। रावण की मृत्यु क्यों होनी है? किस कारण से होनी है? उसकी यह गलती उसके लिए भारी पड़ जाती है। लेकिन अगर हम रावण के गुणों की ओर देखें तो आदमी को अनेकांत दृष्टि से विचार करते हुए कभी भी किसी को एकांत रूप से गलत नहीं मानना चाहिए। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होता जिसमें केवल दोष ही दोष हो। अगर हम उसके जीवन में झांकें

तो रावण से भी हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, गुण प्राप्त कर सकते हैं। आज की यह मनुष्यता, मानवता के लिए यह बहुत बड़ा यह एक उपदेश है, संदेश है कि अगर वह रावण से इतना सीख ले कि आज का मनुष्य किसी भी परस्त्री से जबरदस्ती न करें, किसी भी परस्त्री से हठात, उसके साथ में दुर्व्यवहार न करे तो भी बहुत कुछ अपराध इस दुनिया के कम हो सकते हैं। राम बनना तो राम के चरित्र को पाना तो बहुत बड़ी चीज है। मैं कहता हूँ तुम पहले रावण के ही अगर इस गुण को अपना लो और अगर दुनिया में केवल अगर यह रावण का ही गुण अपना लिया जाए तो आदमी मनुष्य बना रह सकता है। बहुत बड़े-बड़े जो जघन्य अपराध किए जाते हैं यह सिर्फ जबरदस्ती के माध्यम से होते हैं और अगर आदमी इतना सोच ले कि जब तक कोई परस्त्री मुझे न चाहे मैं कभी भी परस्त्री के साथ में जबरदस्ती नहीं करूँगा। अगर इतना भी बड़ा वह व्रत ले लेता है, तो यह रावण का व्रत भी उसके जीवन की सुरक्षा का बहुत बड़ा कारण बन सकता है और उसके जीवन में अपयश नहीं होगा, उसके जीवन में कभी भी बुरा नहीं होगा। यह एक रावण व्रत से भी उसका जीवन बहुत सुधर सकता है। इसे मैं रावण व्रत कह रहा हूँ। राम व्रत और सीता व्रत तो सभी करते हैं। रावण व्रत भी अगर व्यक्ति करने का भाव करे, यह जितने भी अपराधी मानसिकता के लोग दिखाई देते हैं, ये अगर रावण के भी चरित्र से इतना सीखे तो यह समझ सकते हैं कि वह रावण से भी अपने जीवन को कितना अच्छा बना सकते हैं। जब इस तरह के कृत्य दिखाई देते हैं कि व्यक्ति परस्त्री के साथ में जबरदस्तियाँ करके, दुर्व्यवहार करके उसके कत्ल तक करके उसके साथ में अनेक तरह से बेइन्साफी करके उसके लिए पूरा जीवन मिटा देता है तो तब समझ में आता है कि रावण से बड़े-बड़े रावण इस दुनिया में बहुत घूम रहे हैं। वह रावण ने क्या बुरा किया? उतना शौर्य, पराक्रम किसके अन्दर है? इतना बलवान होते हुए भी, परस्त्री को अपने पास में रखते हुए भी, उसने कभी उसके साथ जबरदस्ती नहीं की। यह पराक्रम, उसका क्षत्रियता, उसकी न्यायप्रियता अगर ध्यान में रखी जाए तो हमें रावण के अन्दर भी बहुत कुछ गुण दिखाई दे सकते हैं।

रावण को जलाने में हर्ष मत मनाओ,राम की विजय का पर्व मनाओ

रावण को जलाने वाले हर साल तैयार खड़े रहते हैं। बड़ा बड़ा पैसा खर्च करते हैं, बड़े बड़े आयोजन करते हैं और वह रावण को जलाने के लिए बड़ा हर्ष के साथ में तैयारियाँ करते हैं लेकिन मैं समझता हूँ वह सब कुछ बेईमानी है, गलत है। रावण को जलाने के लिए जो लोग तत्पर होते हैं वे पहले अपने गिरेबान में इतना झांक करके देख लें कि रावण के लायक भी उनके अन्दर कोई गुण हैं या नहीं है। रावण जैसा भी उनके अन्दर कोई शौर्य, कोई पराक्रम, कोई न्यायप्रियता और इस तरह का जबरदस्ती नहीं करने का कोई उनके अन्दर व्रत है कि नहीं है। जलाने के लिए सब खड़े हो जाते हैं लेकिन पहले अपने गिरेबान में झांक करके देखना चाहिए। अपना self observation करना चाहिए कि हम जिसके लिए जलाने जा रहे हैं जिसके लिए हम मारने जा रहे हैं, जिसके लिए हम बुरा सोच रहे हैं क्या हम उससे अच्छे हैं? जो हम उसके लिए इस तरह का कृत्य करने जा रहे हैं। मैं मानता हूँ अगर व्यक्ति इतना भी रावण के बारे में सोचने लग जाए तो किसी भी सहृदय व्यक्ति को, बुद्धिमान व्यक्ति को, रावण को जलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बार-बार हर साल उस रावण का पुतला जलाना यह बहुत बड़ी भाव हिंसा कहलाती है। जो व्यक्ति अपने कर्मों से मरा, अपने कर्मों से फल भोगा, सुख-दुःख अपने कर्मों से उसने पाया, अगर हम उसका प्रतिवर्ष पुतला बनाते हैं, जलाते हैं और वह पुतला बनाकर के जलाने के लिए जो लोग भी वहाँ पहुँचते हैं, हर्षित होते हैं, आतिशबाजी करते हैं, पटाखे चलाते हैं, हर्ष मनाते हैं, यह हर्ष मनाने का गलत तरीका

है। अगर आपको वास्तव में अहिंसक तरीका अपनाना है तो राम की विजय का तरीका अपनाना चाहिए। राम की विजय का आपको पर्व मनाना चाहिए न कि उस दशानन के जलाने का और उस रावण के मारने का आपको हर्ष मनाना चाहिए। मारने का हर्ष मनाना मतलब हिंसा का जश्न मनाना है और राम की विजय का हर्ष मनाना मतलब अहिंसा का जश्न

मनाना है। यह आपको विचार करना है कि आपको जश्न किसका मनाना चाहिए? यह एक विचार दे रहा हूँ लोगों को पसंद आए तो उस पर विचार करना। अगर बुद्धि खुली हो, दिमाग के दरवाजे खुले हो तो विचार करना कि हम क्या करते हैं? किसी व्यक्ति की किसी भी रूप में हम उसकी आकृति बनाते हैं और फिर हम उसको मारते हैं, यह **भाव हिंसा** कहलाती है। आपके लिए उस व्यक्ति को मारने का ही पाप लगेगा। मनुष्य को मारने का जो पाप होता है, पंचेन्द्रिय मनुष्य को मिटाने का जो पाप होता है, उसकी हिंसा का जो पाप होता है, वही पाप आपको भावों से लगेगा क्योंकि आप भावों से एक व्यक्ति को जला रहे हो, एक व्यक्ति को मार रहे हो। वह भी एक व्यक्ति है, राक्षस नहीं है, यह ध्यान रखना। राक्षस वंश का वह एक महाराजा है, सम्राट है, बहुत बड़ी प्रतिनारायण की पदवी को प्राप्त है। इस तरह के उस व्यक्ति का इस तरह से हर वर्ष यह रावण जलाने का कार्य करना, यह बुद्धिमान लोगों के लिए मैं विचार दे रहा हूँ कि वह इस पर विचार करें। क्या यह सही है? या यह करना उचित है? क्या इसको करने से हमारी कोई बुराइयाँ जल जाती हैं? क्या इस तरह के कृत्य से हमारे लिए कोई लाभ मिलता है? अगर इस तरह का कोई लाभ नहीं मिलता है तो ऐसे कृत्य हमें बंद करना चाहिए। इसकी बजाय जितना पैसा हम रावण को बनाने, जलाने में लगाते हैं, उतना पैसा अगर हम राम की यात्रा निकाले और राम की अच्छी सजा धजा करके अगर हम उनकी कोई अच्छी प्रशंसा के साथ में कोई यात्रा निकाले, रथ निकाले तो हम समझते हैं ज्यादा फायदा मिलेगा। रावण को जलाने से, पुतला जलाने से आपको कोई लाभ नहीं मिलने वाला है। यह आप विचार कर सकते हैं। मैं जितने भी बिंदु देता हूँ विचार के लिए देता हूँ। अगर आपके दिमाग की खिड़कियाँ खुली हो तो विचार जरूर करना।

बहुरुपिणी विद्या का शक्ति प्रदर्शन

यह बात ध्यान में रखना और इस बात को ध्यान में रखते हुए हम आगे बढ़ते हैं कि जब वह दशानन युद्धस्थल की ओर पहुँचता है। उस समय पर सुग्रीव, जांबूनद यह सब लक्ष्मण राम आदि को बताते हैं कि यह कोई पर्वत

नहीं है। बहुरूपिणी सिद्ध विद्या से बनाया गया इसका रथ है और यह सब लोगों की, अनेक लोगों की मृत्यु का यह कारण बनेगा। राम अपनी सेना

को भयभीत देखकर के अपने रथ पर सवार होते हैं और लक्ष्मण अपने रथ पर सवार होकर के दशानन की ओर बढ़ते हैं। उस समय पर दशानन के पास में सबसे बड़ा वीर योद्धा राजा मय था जो मंदोदरी का पिता था क्योंकि सब और उसके जो पुत्र थे बड़े-बड़े बहादुर वह सब बंदी बना लिए गए थे। राजा मय के लिए उस रावण ने आगे युद्ध करने को कहा और जब राजा मय युद्ध करने के लिए आगे बढ़े तो सबसे पहले हनुमान जी उस राजा मय से युद्ध करने के लिए तत्पर हुए। जब हनुमान जी युद्ध करने लगे, युद्ध में जब राजा मय पराजित से होने लगे तब उस समय पर रावण ने अपना मायामई रथ का एक प्रारूप बना करके उन राजा मय के लिए दे दिया। उन्हें भी उस मायामयी रथ पर बहुरूपिणी विद्या से जो सिद्ध हुआ था उसी रथ पर एक और रथ बनाकर के उन राजा मय के लिए दे दिया और जब ऐसा कर दिया तो राजा मय से जब हनुमान जी का युद्ध हुआ तो हनुमान जी भी उस समय पर विचलित हो गए। युद्ध करते-करते हनुमान जी उस राजा मय को परास्त नहीं कर पाए और हनुमान जी खुद भी हारने लग गए। उनको हारता हुआ देखते हुए उसी समय पर भामण्डल उनकी सहायता के लिए आते हैं और भामण्डल भी जब उनके साथ में युद्ध करते हैं राजा मय को उस समय पर वह भी परास्त नहीं कर पाते हैं। राजा मय ने हनुमान के छक्के छुड़ाए। भामण्डल को भी विचलित कर दिया और जब भामण्डल भी उन राजा मय से नहीं जीत पा रहा है तो उनका सहयोग करने के लिए फिर सुग्रीव सामने आते हैं और सुग्रीव की सेना सामने आती है। सुग्रीव अपने सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करते हैं लेकिन वह बहुरूपिणी विद्या से सिद्ध जो रथ है, उस रथ को तोड़ने में और उन राजा मय को उस रथ से हटाने में वह सुग्रीव भी सफल नहीं हो पाता। तब फिर जाकर के विभीषण उनके सामने आते हैं।

लक्ष्मण, दशानन आदि सभी युद्ध भूमि में अनेक अस्त्र-शस्त्र, विद्याओं का प्रयोग करते हैं

इधर लक्ष्मण केवल दशानन से लड़ते हैं। इधर राजा मय से लड़ने के लिए यह सारे के सारे बड़े-बड़े योद्धा सामने आते हैं और सुग्रीव के भी हार जाने पर विभीषण सामने आते हैं तब विभीषण को भी हारा हुआ देखते हुए, विभीषण से भी जब वह राजा मय नहीं संभलते हैं तब राम आगे आने के लिए तैयार होते हैं। जब राम आगे आने लग जाते हैं तो लक्ष्मण उधर दशानन को छोड़कर के राम के पास आ करके कहते हैं कि आपको उधर जाने की जरूरत नहीं है। इधर मैं दशानन को संभाल रहा हूँ आप उस समय पर अपने आपको केवल इतना ही मानकर के वहाँ पर खड़े रहें कि बस आपकी वहाँ उपस्थिति है। आपको युद्ध करने की जरूरत नहीं है। ऐसा कहते हुए लक्ष्मण उस समय पर उस राजा मय से, जो योद्धा लड़ रहे थे वह तो लड़ ही रहे थे लक्ष्मण सीधा-सीधा दशानन से युद्ध करने के लिए जब तत्पर हो जाता है तो दशानन से उनका युद्ध होते हुए वह दशानन भी उस समय पर राजा मय की रक्षा करने के लिए आने लग जाता है। जब राम उनके साथ पहुँचने लग जाते हैं तो दशानन भी उधर अपना रुख बदलता है। जब दशानन राजा मय की ओर अपना रुख बदलता है तो उस समय पर लक्ष्मण उन्हें ललकारता है। उस समय पर लक्ष्मण दशानन के लिए जोर-जोर से क्रोधित होकर के कहते हैं– कहाँ जा रहे हो छोड़कर के? युद्ध हमसे चल रहा था, उधर क्यों जाने लगे? उस समय पर फिर लक्ष्मण और दशानन के बीच में क्रोध पूर्वक एक युद्ध का एक नया रूप शुरू हो जाता है। दशानन ने उस समय पर जितने अपने पास में बड़े-बड़े बाण थे, विद्याएँ थी, उन सबका प्रयोग करना लक्ष्मण के लिए शुरू कर दिया। इधर दशानन मेघबाण चलाता था तो उधर लक्ष्मण उन दशानन के बाणों को पवन बाण से रोक लेते थे। इधर दशानन ईंधन बाण चलाता था तो लक्ष्मण अपने बाणों को उस समय पर अग्निबाण छोड़कर के उसके बाणों को रोक लेते थे। इधर दशानन जब तिमिर बाण चलाता था तो वह उस समय पर लक्ष्मण सूर्यबाण चला करके उसके बाणों को रास्ते में ही रोक लेते थे। यह

सब आपने सुना होगा, देखा होगा। युद्ध वैसा ही हो रहा है जैसा आपके दिमाग में पहले से बसा हुआ है। इधर दशानन नागबाण चलाता है और उधर जो है वह गरुड़ बाण चलाने लग जाते हैं। लक्ष्मण तो वह उस नाग बाण को रोक लेते हैं और जब इधर सर्प बाण चलाया जाता है तब वह मयूर बाण चलाते हैं और इस तरह से उनके बाणों को रोकते हुए दशानन और लक्ष्मण के बीच में जो युद्ध हो रहा है वह युद्ध रुकने का नाम नहीं ले रहा है। कोई किसी से कम नहीं पड़ रहा है। दशानन ने क्रोधित होकर लक्ष्मण पर आग्नेय अस्त्र भी छोड़ा। लक्ष्मण ने उसको वरूण अस्त्र से control कर लिया। फिर जब लक्ष्मण ने दशानन पर पाप बाण छोड़ा तो दशानन ने उस समय पर धर्म बाण से रोक लिया। दोनों किसी से कभी भी कम नहीं पड़ रहे। अगर वह लक्ष्मण जी इधर से बाण छोड़ते हैं तो दशानन उसको रोकता है और दशानन के बाण आते हैं तो लक्ष्मण जी उसको रोकते हैं।

पुण्य कम होने पर विद्या भी विस्मृत हो जाती है

इस तरह से यह युद्ध चलते-चलते दशानन के लिए फिर एक और विशिष्ट बाण याद आता है जिसका नाम है विघ्न बाण। कौन सा? जब वह विघ्न बाण दशानन ने चलाया तो उस समय पर लक्ष्मण को उस बाण का प्रतिकार करने के लिए अपना सिद्ध बाण था जो वह उन्हें याद नहीं आया। उस आपाधापी में उन्हें उसका नाम स्मरण नहीं हुआ। आप जानते हो यह विद्याएँ काम करती हैं जब आदमी का दिमाग भी काम कर रहा हो और उधर से जो आतंक आ रहा है, उधर से जो प्रहार हो रहा है उसको भी संभालना और इधर तुरंत उसका प्रत्युत्तर ढूँढते हुए वह बाण अपने आप तरकश में नहीं आ जाते हैं उन्हें स्मरण करना पड़ता है। यह सब विद्याओं से सिद्ध जो उनके पास में बड़े-बड़े अस्त्र होते हैं, इसके माध्यम से वह युद्ध किया करते हैं और वह उस समय पर उनकी स्मृति में उसका काट नहीं आया। उसने विघ्न बाण छोड़ा तो लक्ष्मण जी को याद नहीं आया कि इसको तोड़ने के लिए कौन सा बाण चाहिए? उस समय पर जब उन्हें याद नहीं आया तो फिर वह दूसरी चीजों से उसको रोक रहे हैं। दूसरी चीजों से

उस पर प्रहार कर रहे हैं। वह कभी वज्रदंड चलाते हैं, कभी और दूसरा मूसल चलाते हैं, कभी और दूसरे दूसरे बाण उसको काटने के लिए चलाते हैं लेकिन जो उसका वास्तविक काट है, वह उन्हें याद नहीं आता। ऐसा कभी-कभी होता है। विद्या कभी-कभी विस्मृत भी हो जाती है। आपके लिए कभी-कभी ऐसा महसूस होता है कि हम किसी को कोई उत्तर देना चाहते थे हमें वह उत्तर याद था लेकिन फिर भी वह उत्तर हमें समय पर याद नहीं आया। Exam Hall में हम बैठे होते हैं, पेपर दे रहे होते हैं हमें खूब वही प्रश्न रट करके गए थे लेकिन वहाँ पर जाकर के दिमाग एकदम सा सुन्न पड़ जाता है और समझ नहीं आता है कि इसका उत्तर क्यों याद नहीं आ रहा है। यह क्यों होता है? यह भी अपने किसी पुण्य की कमी के कारण से अपनी स्मृति उस समय पर चली जाती है। लेकिन अगर पुण्य जोर मारता है, भीतर से शुभ कर्म का जोर होता है तो किसी न किसी निमित्त से वह बात उन्हें याद आ जाती है। जब कोई एक प्रवचनकार वक्ता प्रवचन देता है तो वह बहुत सी बातों को बोलते-बोलते किसी बात से कितनी बातें निकालता चला जाता है। कभी-कभी उसे याद नहीं आती कि यह बात हमने कहाँ से शुरू की थी। लेकिन वह फिर उसी समय पर घुमाता रहता है उस बात को, घुमाता रहता है और घुमाते-घुमाते उसे एकदम से याद आ जाता है, हाँ! यह बात यहाँ से शुरू हुई थी। तब वह उसी स्थिति पर फिर लौट करके आ पाता है। समझ में आ रहा है? ऐसा ही कुछ लक्ष्मण के साथ हो गया। विघ्न बाण का काट था सिद्धबाण लेकिन उन्हें उसका नाम याद नहीं आ रहा और उस नाम को याद दिलाने के लिए उस समय पर जब पुण्य का उदय होता है तो कोई न कोई किसी न किसी तरह से वह याद दिला ही देता है। उस युद्ध को देव लोग देख रहे हैं, विद्याधर देख रहे हैं, विद्याधर की स्त्रियाँ देख रही हैं। उस युद्ध में देखने वाले भी अनेक लोग आकाश में छाए हुए हैं। लक्ष्मण के लिए यह देखते हुए उस समय पर एक विद्याधर था चंद्रवर्धन। उसकी स्त्रियाँ थी, जो स्त्रियाँ उस लक्ष्मण को चाहती थी और उस समय पर वह स्त्रियाँ उस विमान से लक्ष्मण के लिए कहती हैं, आपस में बातचीत करते हुए कहती हैं तो बातचीत करते हुए

लक्ष्मण का साहस बढ़ाते हुए वह कहती हैं- देखो! लक्ष्मण अकेला ही रावण के बाणों से कैसे लड़ रहा है? इस तरह से प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण का ध्यान उनकी बात पर जाता है तो वह उस समय पर उसको उन लक्ष्मण को देखते हुए कहती हैं- तुम्हारा कार्य सिद्ध हो, तुम्हारा कार्य सिद्ध हो, तुम्हारा कार्य सिद्ध हो। यह सिद्ध शब्द सुनते ही उसे सिद्धबाण की याद आ जाती है। जैसे ही उसे सिद्धबाण की याद आई तो वह जो विघ्नबाण को तोड़ने के लिए कई दिनों से युद्ध कर रहे थे, वह सिद्धबाण चलाकर के उस विघ्नबाण को भी रोक लेते हैं और यह युद्ध फिर भी आगे बढ़ता है। अब दशानन को जब लगता है कि यह युद्ध चल ही रहा है। मेरे सभी अस्त्र-शस्त्र जितनी विद्याएँ सब प्रकार के प्रयोग यह सब धीरे-धीरे अब काम नहीं आ रहे हैं और ऐसा करते-करते दस दिन हो गए हैं। कितने? यह घमासान दस दिनों तक लगातार चला है। बीच में रुक गया था जब अष्टान्हिका आयी थी जब वह विद्या सिद्ध करने बैठा था और फिर जब से युद्ध हुआ है तब से यह युद्ध दस दिन तक लगातार चल रहा है।

चक्ररत्न लक्ष्मण की परिक्रमा देकर उनके हाथ में स्थित हो जाता है

अब वह दशानन विचार करता है कि अब मेरे पास में यह बहुरूपिणी विद्या के बल से इस लक्ष्मण को जीतने के लिए भी जो मेरे जितने प्रहार थे वे सब मंद पड़ते चले जा रहे हैं। वह बहुरूपिणी विद्या के माध्यम से अनेक रूप बना लेता है और उसके अनेक मुँह बनते हैं, हजारों मुँह बना लेता है। कौन? दशानन और वह लक्ष्मण एक-एक करके उनको काटते चले जाते हैं। वह एक-एक मुँह उसका समाप्त करते चले जाते हैं। वह फिर बार-बार मुँह बना लेता है। अनेक प्रकार के अपने फिर से बार-बार सिर बना लेता है और लक्ष्मण उसके फिर अनेक-अनेक सिरों को काटते चले जाते हैं और इस तरह से वह बहुरूपिणी विद्या से अनेक सिर बना करके वह विद्या भी थक जाती है लेकिन लक्ष्मण जी थकते नहीं है। उसकी वह विद्या जब थक करके काम नहीं करती है तब वह उसकी विद्या की शक्ति मंद पड़ जाती है कि यह रूप जितने बनाता है उतने ही यह लक्ष्मण उनके रूपों को काट देते हैं और इस कारण से जब दशानन भी थकने लगता है उसे लगता है कि

इस तरह से यह युद्ध जीतने में नहीं आ सकता क्योंकि यह मैं जितने मुँह बना रहा हूँ, जितने बहू रूप बना रहा हूँ, ये सब यह लक्ष्मण जी काट रहे हैं।

तब उसके पास में एक अंतिम उपाय बचता है। वह अंतिम उपाय क्या है? जब सब अस्त्र-शस्त्र प्रयोग सब प्रकार के उसने कर लिए तब दशानन ने देखा, इस लक्ष्मण को काबू करने के लिए हमारे पास में अब एकमात्र उपाय है जिसके कारण से मैं प्रतिनारायण बना हुआ हूँ, जो मेरी आयुधशाला में उत्पन्न हुआ था और जिसके कारण से मैंने तीन लोक की इस पृथ्वी में तीन खंड पर राज्य किया। आज मैं उसी **चक्ररत्न** को याद करता हूँ। ये सब विद्याएँ स्मरण करने से सामने आती हैं। योद्धा युद्ध करते हैं केवल बाहुबल से नहीं करते। बुद्धि बल भी उस समय पर काम करता है। कब कौन सा अस्त्र चलाना? और उस अस्त्र को स्मरण करने की बुद्धि भी उस घमासान युद्ध के बीच में बनी रहे, यह बहुत बड़ी चीज होती है। इसलिए बुद्धिमान लोग ही उस प्रकार के युद्ध में समर्थ हो पाते हैं। इस तरह से जब रावण ने अंतिम अस्त्र जो उसका चक्ररत्न था, उस चक्ररत्न को उसने स्मरण किया, वह चक्ररत्न सूर्य से भी ज्यादा तेजस्वी तेज को धारण करने वाला, सूर्य के भी प्रकाश को धूमिल कर देने वाला, अनेक हजारों आरों से सहित और हर एक आरे में अनेक-अनेक सूर्यों के प्रकाश से चमचमाने वाला, ऐसा वह चक्ररत्न उस रावण ने उस समय पर स्मरण किया। जब वह स्मरण किया तो वह दशानन के सामने दशानन के हाथ में चक्ररत्न आ गया। सुन रहे हो? दशानन ने वह चक्ररत्न अपने हाथ में लेकर के उस चक्ररत्न को फेंका, लक्ष्मण के लिए फेंका, लक्ष्मण पर चलाया और वह चक्ररत्न चलते हुए, चलते हुए जब रास्ते में आ रहा है, तो जितने भी राम की कटक में जितने भी बड़े-बड़े योद्धा थे सबने उस चक्ररत्न को रास्ते में ही गिराने के लिए भरसक प्रयत्न किए। राम ने प्रयत्न किया, सुग्रीव ने प्रयत्न किया, भामंडल ने किया, हनुमान ने किया, विभीषण ने किया, अंगद ने किया, सबने किया। किसी ने हल चलाया, किसी ने गदा चलायी, किसी ने त्रिशूल चलाया, किसी ने उल्कापात किया, अपने जितने भी उनके अस्त्र-शस्त्र थे सब

उन्होंने उस चक्ररत्न पर छोड़े। यह बीच में रुक जाए, यह ध्वस्त हो जाए। अगर यह चक्ररत्न लक्ष्मण के पास पहुँच गया तो यह चक्ररत्न गला काटने के लिए ही होता है। जिस शत्रु को उद्देश्य करके भेजा जाता है यह उसी पर प्रहार करता है और उसी का वह विनाश करके वापस लौट करके आता है। इस तरह का यह चक्ररत्न जब रावण ने लक्ष्मण के लिए फेंका तो उस समय पर सारी सेना स्तंभित हो गई, आश्चर्यचकित हो गई, देखती रह गई। उस सेना के लिए यह केवल एक ही दृश्य देखने में आ रहा है कि अब क्या होगा? अब क्या होगा? राम जी भी उस समय पर विचलित हो गए। यह चक्ररत्न लक्ष्मण के लिए फेंका गया है लक्ष्मण को कुछ हो न जाए। उन्हें याद आया कि एक बार रावण ने शक्ति फेंकी थी तो लक्ष्मण जी को वह शक्ति लगी थी लक्ष्मण जी मूर्छित हो गए थे। आज यह चक्ररत्न पर फेंका है लक्ष्मण को कुछ हो न जाए और इस तरह का वह विचार उस समय पर चल रहा है। चक्ररत्न जैसे ही लक्ष्मण के पास पहुँचता है, तो वह चक्ररत्न लक्ष्मण जी की परिक्रमा लगा करके उनके हाथ में स्थित हो जाता है। बोलो श्री राम भगवान की जय।

लक्ष्मण चक्ररत्न के द्वारा रावण का अंत कर देते है

जब लक्ष्मण के हाथ में वह चक्ररत्न आ गया तब जाकर के वह सुग्रीव आदि जितने भी बड़े-बड़े राजा थे हनुमान आदि इन सब की सांसों में सांसें आई। राम के लिए भी प्रसन्नता आई और उस समय पर एक निश्चिंतता का भाव आया। हाँ! आज वह केवली भगवान की वाणी सत्य होते हुए दिखाई दे रही है कि प्रतिनारायण के द्वारा फेंका हुआ चक्र नारायण के हाथ में आता है और फिर उस नारायण के चक्र से ही प्रति नारायण का समापन होता है। केवली भगवान की वाणी याद आ गई। यह जो कहा जा रहा था वह सब कुछ सामने आ गया और उस समय पर भी दशानन मन में विचार करता है। अनंत वीर्य केवली ने लगता है, सत्य ही कहा था। मंदोदरी ने चलते-चलते भी मुझे वह सत्य याद दिलाया था। मैंने मंदोदरी की बात नहीं सुनी। लगता है आज यह चक्ररत्न लक्ष्मण के हाथ में पहुँच गया है।
अब यह निश्चित हो गया है कि यह लक्ष्मण ही आठवाँ नारायण है, यह

निश्चित हो गया। जिसका छत्र का तेज देख करके विद्याधर राजा भयभीत होते थे, जो तीन खंडों को पृथ्वी को दास के समान मानता था, जो उस तीन खंड के सभी राजा जिसके आज्ञाकारी हुआ करते थे। ऐसा आज मैं इन भूमिगोचरी इन मनुष्यों के द्वारा क्या पराजित हो जाऊँगा? क्या इनके

द्वारा मर जाऊँगा? क्या इस चक्ररत्न के द्वारा मेरा अंत हो जाएगा? ऐसा वह विचार करते-करते रावण के मन में वैराग्य भी आ जाता है। यह राजलक्ष्मी, यह भोग सम्पदायें सब अविनश्वर हैं, अनित्य हैं, चंचल हैं। मैंने व्यर्थ ही अपना जीवन इनकी रक्षा में लगाया और इनके कारण से मैंने अनेक-अनेक जीवों की मृत्यु कराई और इन्हीं राजलक्ष्मी को भोगने के लिए मैं ऐसा पागल हो गया कि मैं सब कुछ मिटाने को तैयार हो गया। लेकिन मेरी बुद्धि कैसी भ्रमित हो गई कि मैं सीता को छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। आज यह कैसा मेरे सामने परिणाम दिखाई दे रहा है? दशानन के अन्दर इस तरह का विचारों का चक्र चल रहा है। इधर लक्ष्मण जी की गर्जना हो रही है उस समय पर और उस समय पर भी लक्ष्मण जी कहते हैं- दशानन अभी भी विचार कर ले। एक मौका और तुझे दिया जाता है। समझ ले अभी भी, तू भी सब समझ रहा है, दुनिया समझ रही है मैं अभी भी कह रहा हूँ, अभी भी विचार कर ले। क्या तेरे लिए उचित है? क्या तू आज भी सीता को वापस करना चाहता है? मैं तेरी मृत्यु नहीं करूँगा, तू सीता को वापस दे दे। युद्ध में हार मान ले। लेकिन उस दशानन के मन ने यह स्वीकार नहीं किया। उसकी अपनी जो स्वाभिमानता थी उसके कारण से उसके मन में हार मानने का विचार नहीं आया। उसने फिर भी यही मन में विचार किया कि मुझे अपमानित जीवन की अपेक्षा से सम्मानित मृत्यु मंजूर है लेकिन मैं तुम्हारे चरणों में झुकने वाला नहीं हूँ। यही उसका एक जो अपना उसका स्वाभिमान था इसके कारण से युद्ध में मैं अब वापस हार मानकर के अगर मैं लंका का राजा बन भी जाऊँगा तो मुझे तुम्हारा दास बनकर के रहना पड़ेगा। मैं तुम्हारा दास बन करके नहीं रह सकता। मैं लंका में वापस हार करके जाऊँगा तो लंका के लोग मुझे किस दृष्टि से

देखेंगे? मैं ऐसा अपमानित जीवन नहीं जी सकता। वह फिर से लक्ष्मण से कहते हैं तुम्हारे अन्दर जो सामर्थ्य है तुम अपना काम करो। मेरा पुण्य होगा तो मैं अपनी सामर्थ्य से अपना जीवन बचा लूँगा और उस समय पर वह दशानन उन लक्ष्मण की, राम की, दासता को स्वीकार नहीं करता और उसी के उपरांत लक्ष्मण उसे, दशानन को अंतिम warning दे करके वह दशानन के ऊपर वह चक्र छोड़ देते हैं और फिर उस चक्र को दशानन ने अनेक अस्त्रों के प्रयास से रोका लेकिन उस चक्र को वह रावण, वह दशानन किसी भी प्रयास से रोक नहीं पाया और दशानन का वह मर्मस्थल छेद करके, उसका गला उसके धड़ से अलग करके वह दशानन वहीं पर मूर्छित हो गया और मर करके उसी समय पर वह नीचे गिर पड़ा। **रावण का अंत हो गया,** उसका समापन हो गया और सबने जब यह देखा कि जिस निमित्त से मृत्यु होनी होती है, वह निमित अपने आप मिलते चले जाते हैं। दशानन की मृत्यु का कारण यह सीता बनी और दशानन अपनी मृत्यु को खुद अपने पास में ले कर के बैठा था। वह चक्ररत्न भी उसकी मृत्यु का कारण बना और वह सीता भी उसकी मृत्यु का कारण बनी।

देवता आकाश से पुष्प वृष्टि करते है,श्रीराम की जय जयकार होती है

उस समय पर दशानन का मृत शरीर देखकर के विभीषण बेहोश हो गए। उनके हृदय में अपने भाई का वह प्रेम फिर उमड़ पड़ा और वह मूर्छित हो गये। राम ने उनको संभाला और बड़े आश्वस्त करके उनका उपचार करके उन्हें कहा कि जो होना था वह हो गया, अब आपको विचलित होने की जरूरत नहीं है और इस तरह से उन्होंने विभीषण को संभाला। दशानन का अंत हो गया और उस समय पर फिर वही सर्वत्र जय जयकार होने लगी। अनेक देवता लोग आकर के पुष्प वृष्टि करने लगे और श्री राम की जय, श्री राम की जय, श्री राम की जय होने लगी। वह जय श्री राम की हो रही है लेकिन यह वास्तविकता भी आप को ध्यान में रखना है कि रावण का वास्तव में मरण लक्ष्मण के हाथों से होता है। लक्ष्मण नारायण थे उनके हाथ में चक्र आता है। वह चक्र चला करके उस रावण का मरण करते हैं।

राम उनके बड़े भाई हैं। सारा श्रेय राम को जाता है और बड़े लोगों के लिए तो केवल श्रेय ही मिलता है और श्रेय से ही उनका काम हो जाता है, यही उनका बड़प्पन है। इसलिए हम कहते हैं कि राम ने रावण को मारा। लेकिन वास्तविकता में लक्ष्मण ने रावण को मारा। यह भी आप को ध्यान में रखना चाहिए। दोनों चीजें एक साथ हैं क्योंकि राम लक्ष्मण से अलग नहीं है, लक्ष्मण राम से अलग नहीं है। लेकिन बड़ों का बड़प्पन तो इसी में रहता है कि अगर दशानन को मारना पड़े तो दशानन भी लक्ष्मण ने छोटे भाई ने ही मार दिया, बड़े भाई को मारने की उसको जरूरत पड़ी नहीं। वह इतना बड़ा नहीं था कि राम को उसे मारना पड़ता। यह भी हम विचार करके देख सकते हैं कि राम का कितना बहुमान और राम का कितना बड़प्पन और राम की कितनी शक्ति है कि राम को उसे दशानन को नहीं मारना पड़ा लक्ष्मण ने ही उसका अंत कर दिया लेकिन श्रेय सेना नायक को जाता है और वह श्रेय श्री राम को गया। इसलिए दुनिया में माना जाता है कि श्री राम ने रावण को मारा। गलत नहीं है। समझदारी आपकी है, समझ आप बना करके रखें और उस समय पर सब लोग श्री राम की भी जय-जयकार कर रहे हैं। अनेक गंधर्व देवता, किन्नर देवता सब आ करके उनके ऊपर पुष्प वर्षा कर रहे हैं। यह जब दशानन का अंत हो जाता है तो सभी देवता आकर के राम की, लक्ष्मण की, दोनों की जय जयकार कर रहे हैं और उस समय पर सारा माहौल, एक तरफ रावण पड़ा हुआ है लेकिन राम की प्रशंसा करने में पूरा भूमण्डल गुंजायमान हो रहा है। पूरे विद्याधर उनकी प्रशंसा कर रहे हैं और उस समय पर उनके उस प्रशंसा करते हुए सबके मन में यही भक्ति का भाव आ रहा है।

मर्यादा पुरुष श्री राम हैं, सिद्ध प्रभु बलराम।
इक्ष्वाकु वंश की शान, क्षत्रिय जग दया निधान।
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम

रावण के यथोचित दाहसंस्कार के बाद सभी मुनि श्री अतिवीर के दर्शन करने जाते हैं

उस समय पर जब रावण का शव पड़ा हुआ है, विभीषण मूर्छित हो गए हैं। उनको फिर से जागृत किया गया। राम ने उस समय पर आज्ञा दी कि जो हमने भानुकर्ण, इंद्रजीत और मेघनाथ इन सबको बंदी बना रखा है, इन सब को छोड़ दिया जाए। यह समाचार जब सेना में पता पड़ता है तो भामण्डल आदि सोचते हैं कि इधर विभीषण कहीं अपने भाई की इस तरह से मृत्यु को बर्दाश्त न कर पाये और यह कहीं फिर से यह बगावत न कर बैठे और यह तीनों भाइयों को जो हम छोड़ रहे हैं यह भी अगर उस रावण की दुर्दशा देख करके यह फिर से आतातायी हो जाएँगे तो क्या होगा? ऐसा विचार किया जा रहा है और फिर राम जी के पास में खबर भेजी जाती है कि इनको न छोड़ा जाए इनको बंदी बना करके ही वहाँ ले जाया जाए। लेकिन रामचंद्र जी कहते हैं- नहीं! आप लोग इनको पूर्ण रूप से मुक्त करें और इनको वहाँ पर अपने पिता को, अपने भाई को देखने के लिए जाने दें यह हमारे लिए यही एक सदाचार कहलाएगा, कुलाचार कहलाएगा। मृत्यु होने के उपरांत अगर यह लोग भी कुछ भी किसी भी तरह का उपद्रव करेंगे तो इनकी सुरक्षा का अलग प्रबंध किया जाए। इस तरह से उन तीनों की जो विशेष थे भानुकर्ण कुंभकरण आपकी भाषा में कुंभकरण इंद्रजीत और मेघनाथ इन तीनों को विशेष पहरे के साथ में विशेष सुरक्षा के साथ में लेकिन इनके हाथ पैर सब खोल करके रावण के पास जाने दिया और रावण के पास जाने के बाद में इन सब परिवारजनों ने मिलकर के उस रावण का यथोचित दाह संस्कार किया। राम-लक्ष्मण सभी उस दाहसंस्कार में शामिल हुए और सबने विधिपूर्वक उस रावण का दाह संस्कार किया। दाह संस्कार करने के बाद में जब सब लोग बिल्कुल शांत हो गए तब लक्ष्मण ने उन भानुकर्ण आदि से कहा अब आप लोग यहाँ का राज्य संभालें और आनंद से रहें। हमें यहाँ के किसी भोग-उपभोग की कोई चिंता नहीं। मुझे आपके राज्य की कोई चिंता नहीं। उस समय पर वह

कुंभकरण, इंद्रजीत, मेघनाथ क्या कहने लग गए? कहने लगे जिस समय पर हम जैसे योद्धा आपके द्वारा बंदी बना लिए गए, बांध दिए गए, उसी समय पर मैंने सोच लिया था कि जब हम जिस बल पर जिस शौर्य पर इतना गुरुर करते थे, आज हम भी बंधन को प्राप्त हैं तो यह बंधन सब अपने अपने पाप कर्म के कारण से उत्पन्न होते हैं। यह शरीर जिसके कारण से हम अपने आपको बड़ा महाशक्तिशाली समझते थे, आज इस शरीर को भी हम छुड़ाने में समर्थ नहीं हैं। उसी समय पर हमने मन में विचार कर लिया था, अगर हम बंधन मुक्त होंगे तो हम वन में दीक्षा लेकर के कर्म बंधनों से मुक्त होने का प्रयास करेंगे। यह हमारा संकल्प था। इसलिए आज हमें अगर इन बंधनों से छुटकारा मिला है तो अब हम निर्ग्रन्थ साधु होकर के पाणिपात्र में ही आहार करेंगे। मैं लंका में प्रवेश नहीं करूँगा और उस समय पर वह तीनों (दो तो बेटे थे, एक भाई था) और वह तीनों इसी संकल्प के साथ में लंका में जाते ही नहीं और ऐसा करते-करते शाम हो जाती है। दाह संस्कार हुआ, आपस में मिले बैठे यह बात जब सामने आई

तो रामचंद्र जी ने विभीषण के लिए कहा कि अब आप यहाँ लंका के राजा आप कहलाएँगे। आपका राज्याभिषेक करेंगे और यह सब बात चल रही थी। शाम का समय था, शाम के समय ही अतिवीर नाम के एक मुनि महाराज अपने संघ के साथ में वहाँ पधार जाते हैं। उसी लंका के आसपास एक उद्यान में वह आ जाते हैं और वह ऋद्धिधारी मुनि महाराज थे। उनके आने पर वहाँ चारों ओर शांति का वातावरण आ ही जाता है। लेकिन यह सभी कुमार जो तैयार थे इनके लिए यह वहाँ पर एक तरह से उसी समय पर उनकी सन्निधि मिल जाती है। वह उस समय पर उन मुनि महाराज के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऋद्धिधारी मुनि महाराज जहाँ पर होते हैं, वहाँ 200 योजन तक किसी भी प्रकार के उपद्रव नहीं होते हैं। उस समय पर कई लोग विचार करते हैं, यह मुनि महाराज अभी आए अगर यह सुबह की बेला में आ जाते तो शायद यह युद्ध नहीं होता और दोनों में शांति हो जाती। लक्ष्मण और दशानन रुक जाते युद्ध करने से क्योंकि जहाँ पर

मुनि महाराज होते हैं वहाँ पर इस तरह का उपद्रव 200 योजन तक होता नहीं है। ऐसा विचार सब लोग कर रहे हैं और वह मुनि महाराज वहाँ पर कौन से मुनि महाराज? अतिवीर मुनि महाराज। उसी समय पर रात्रि हो जाती है। वह ध्यान मग्न हो जाते हैं और रात्रि के मध्य में उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। केवलज्ञान होना मतलब सर्वज्ञ दशा आ जाना आत्मा के अंतरंग से यह मोहनीयकर्म, ज्ञानावरणकर्म, दर्शनावरणीकर्म, अंतरायकर्म सब का विनाश हो जाना और वह केवलज्ञान को प्राप्त हो जाते हैं। इधर अनेक देवता लोग, कहीं धातकी खंड द्वीप से किन्हीं तीर्थंकर का जन्म कल्याणक मना करके लौट रहे होते हैं और रास्ते में उन्हें दिखाई देता है कि यहाँ पर अतिवीर मुनिमहाराज को केवलज्ञान हो गया। वह उनका केवलज्ञान का उत्सव मनाने के लिए सब जुड़ जाते हैं और पूरी रात्रि वहाँ पर देवी-देवताओं के माध्यम से उन केवली भगवान की स्तुति के माध्यम से वह पूरी रात्रि व्यतीत होती है।

केवली भगवान का उपदेश सुनकर अनेक लोग दीक्षा ग्रहण करते हैं

फिर सुबह सब लोग उन केवली भगवान का उपदेश सुनते हैं। वह इंद्रजीत, मेघनाथ, भानुकर्ण सब उपदेश सुनते हैं। अपने पूर्वभवों को सुनते हैं। लक्ष्मण, नारायण और रावण प्रतिनारायण इन सबकी विभूतियों के बारे में सुनते हैं और सब कुछ सुन करके पूरे संसार की दशा उन्हें ज्ञात होने लग जाती है कि हर जीव जन्म-जन्मांतरों के पुण्य के फल से इस तरह की विभूतियों को प्राप्त होता है। हर जीव को मरण निश्चित करना पड़ता है और हर जीव का अपना यह शरीर छोड़ करके उसे परलोक जाना पड़ता है। हर आत्मा यहाँ पर कुछ समय के लिए ही अपनी आयु पर्यंत तक इस संसार में रहती है। इसलिए हमें अच्छे कर्म अर्जित करना चाहिए और इस तरह का विचार करके चूँकि उन तीनों का भाव पहले से ही वैराग्य का बना हुआ था, वह तीनों लोग, कौन तीनों? इंद्रजीत, मेघनाद और कुंभकर्ण और यह तीनों राजा जैनेश्वरी दिगंबर दीक्षा लेकर के यह निर्ग्रंथ मुनि महाराज के उस रूप को धारण कर लेते हैं, जिस रूप में फिर किसी से किसी का कोई मोह नहीं रहता। किसी के प्रति कोई कषायें नहीं रहती। जिस रूप को

धारण करने के बाद हर जीव के प्रति समता भाव मैत्री भाव आता है। संसार में फिर किसी का कोई शत्रु नहीं रह जाता। सब जीव छोटे से बड़ा जीव सबकी रक्षा का भाव आता है। ऐसी वह दिगंबरी दीक्षा ले करके यह तीनों लोग अपने-अपने ध्यान मग्न हो जाते हैं। उधर मंदोदरी के जो पिता

हैं- राजा मय, वह भी उस समय पर दीक्षा ले लेते हैं और दीक्षा लेने के बाद में वह चारण मुनि बनकर के ढ़ाई द्वीप की वंदना करते हैं और कैलाश पर्वत की यात्रा करते हैं, चैत्यालयों की वंदना करते हैं और बाद में वह भी अपना शरीर छोड़ करके छठे स्वर्ग में वह भी देव पर्याय में उत्पन्न होते हैं। यह राजा मय का आपको भविष्य बताया गया है। इधर यह जो भानुकर्ण वगैरह यह तीनों है यह तीनों आगे चल करके यह शुक्ल ध्यान करके यह भी केवलज्ञान प्राप्त करते हैं और तीनों ही चरम शरीरी थे, यह भी मोक्ष को प्राप्त होते हैं और यह तीनों ही सिद्ध भगवान बन जाते हैं। हमेशा से संसार के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं। यह इन जीवों की अंतिम परिणति होती है और उधर मंदोदरी रो रही होती है। उसको सीता समझाती है और उस समय पर उस मंदोदरी के लिए एक आर्यिका मिल जाती है। वह आर्यिका भी समझाती है और मंदोदरी भी संसार से विरक्त होकर के हजारों रानियों के साथ में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर लेती है। महापुरुषों की यही अंतिम गति हुआ करती है। जब उन्हें लगता है कि हमारा पिता, हमारे पुत्र, हमारे पति यह कोई भी अब हमारी रक्षा करने के लिए नहीं बचे। तो फिर अंतिम चरण बचती है- **'केवलि पण्णत्तो धम्मो शरणं पव्वज्जामि'** और वह शशीकांता नाम की आर्यिका के पास में दीक्षा ले करके वह भी वन-वन में अपना जीवन व्यतीत करती है।

राम और सीता का मिलन

इधर जब दूसरा दिन होता है तो राम लक्ष्मण सब वह लंका में प्रवेश करते हैं। विभीषण लंका में प्रवेश कराने के लिए आगे-आगे उनको लेकर के जाते हैं और यह राम लक्ष्मण सब जा करके सबसे पहले रावण के महल में जाते हैं। रावण के महल में जाकर के पहले शांतिनाथ भगवान, जो रावण

का महल में बहुत बड़ा उपवन में, एक शांतिनाथ भगवान का जिनालय था उस जिनालय में जाते हैं और जिनालय में जा करके भगवान की वंदना करते हैं। तदुपरांत उस देवारण्य वन में जहाँ वह सीता अशोक वृक्ष के नीचे एक उपवन के अन्दर बैठी हुई है। उसके पास तक समाचार पहुँच जाता है, आज श्री राम तुम्हारे पास तुमको लेने आ रहे हैं और वह श्रीराम का समाचार सुनकर के कितनी हर्षित हो सकती है इसका अंदाजा आप अगर वहाँ बैठ करके लगाएँ तो आपको लग सकता है। उस स्त्री के अंदर, उस सीता के अन्दर कितना हर्ष उस समय पर उत्पन्न हुआ इसका अंदाजा आप केवल अपने मन में विचार करके लगा सकते हैं। धीरे-धीरे वह सीता जब राम को देखती है तो उसकी आँखों से अश्रुओं की धारा बहने लग जाती है। श्री राम उसके निकट आते-आते उस सीता को अपने गले से लगा लेते हैं और लक्ष्मण जी उस सीता के पैरों में गिर पड़ते हैं। यह दृश्य देखकर के सभी वानरवंशी, विद्याधरवंशी जय-जयकार लगाते हैं। श्रीराम की जय हो, श्री लक्ष्मण की जय हो, सियाराम की जय हो। इस तरह की जय-जयकार करते हुए वह सीता और राम का पुनः मिलन होता है। आज तिथि के अनुसार पंचमी है, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी। कहा जाता है आज के दिन ही सीता और राम का विवाह हुआ था। अगर उस विवाह के बाद में उनका पुनः मिलन हुआ है तो यह मैं समझता हूँ यह सबसे बड़ा विवाह है। जब वह पुनः बिछुड करके फिर से मिल गए और आज के दिन उनका फिर से वह पुनर्विवाह हो गया। यह अपने आप बनने वाली यह अच्छी संयोजना है। आप अपने मन में विचार करें कि इस तरह की श्री राम और लक्ष्मण और सीता की यह कथा रावण के मरण होने के उपरांत भी अभी समाप्त नहीं होती है। क्या सुन रहे हो? आप यह सोच रहे हो कि महाराज अभी तो 8 वाँ ही, 9 वाँ दिन हुआ है अभी भी यह कथा और भी है और इस कथा के आगे क्या होना है ?

सीता जी से मिलन को राम हुए तैयार,
देवारण्य जाने लगे गज पर हो असवार।

राम और सीता जिनालय जाकर भगवान के दर्शन करते हैं

जब दोनों मिल जाते हैं तब दोनों मिल करके फिर उस शांतिनाथ भगवान के चैत्यालय में पहुँचते हैं। वहाँ जा करके वह कुछ दिन रुक करके फिर राजा विभीषण के महल में पहुँचते हैं और विभीषण के यहाँ पर पद्मप्रभु भगवान का एक विशेष जिनालय था वहाँ के दर्शन करते हैं और वहाँ दर्शन करते-करते उन लोगों के लिए अपने आप वहाँ पर ऐसा मन लगता है कि वह बहुत शांति के साथ में वहाँ पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। श्री राम ने, लक्ष्मण ने लंका में 6 वर्ष व्यतीत किए। कितने? 6 वर्ष और 6 वर्ष व्यतीत करने के बाद में वह जब उनका समय बार-बार पूरा होने को होता है, वह चाहते हैं कि अब हम यहाँ से जाएँ। लेकिन विभीषण उनको बार-बार रोक लेते हैं और इस तरह से वहाँ पर उनकी खूब खातिरदारी होती है। सब उनको नारायण और बलभद्र के रूप में स्वीकार करके उनकी खूब सम्मान दे करके उनका आदर करते हैं। इधर विभीषण भी लंका का राजा तो बन गए लेकिन फिर भी वह श्री राम के दास के रूप में वह भक्त के रूप में अपना जीवन व्यतीत करते हैं और इस तरह से यह जो कहानी चलती है वह किस रूप में मंगलमयता के साथ चल रही है थोड़ा सा पढ़ते हैं।

श्री राम लखन का, मंगलमय राज्याभिषेक भी करवाया।
जितनी नारी लक्ष्मणा ब्याही, उनको लंका में बुलवाया।
जितनी लक्ष्मण ने रानी रास्ते में ब्याही थीं।

ध्यान है किसी को कौन-कौन सी?

बनमाला और रत्नमाला जितपद्मा भी वहाँ आई है
सिंहोदर वज्रकर्ण की भी कन्या आई हर्षाई है।
श्री कुम्भ, मेघ अरू इन्द्रजीत मुनियों को केवलज्ञान हुआ।
आयु कर पूरी मोक्ष गए लंकेश विभीषण राय हुआ।
श्रीराम लखन को लंका में छः वर्ष व्यतीत हुए भारी।
इक रोज मुनि नारद आए कहे-देव दुःखी हैं महतारी।
श्रीराम लखन दोनों सुनकर हो दुखित नैन जल भर लाए।
और चलने को तैयार हुए विभीषण ने कुछ दिन ठहराए।

वह राम लखन बार-बार चलने को तैयार होते हैं लेकिन विभीषण उन्हें बार-बार रोक लेते हैं और अंतिम बार वह एक और रुक जाते हैं और अंतिम बार जब वह रुकते हैं तो उसके बाद में वह किस तरह से अयोध्या पहुँचते हैं? कितना विभीषण के यहाँ पर रुकने के बाद में उन सबकी अयोध्या में आगवानी होती है? उस अयोध्या में जाने के बाद में भी कुछ कहानी है। सीता की, राम की यह कहानी अभी अधूरी है। इस कहानी को पूरा सुने बिना जैन रामायण पूरी होती नहीं है। रावण के मरण होने पर रावण की कहानी पूरी हुई है। लेकिन अभी सीता और राम की कहानी बची हुई है। वह कहानी भी आपको आगे अवश्य सुनने को मिलेगी और उसका आगे ही अब विवरण प्रारंभ होगा तब तक के लिए आप बोले **श्री राम प्रभु भगवान की जय।**

लव, कुश का जन्म

श्री राम और लक्ष्मण का लंका में सुख पूर्वक वास एवं अयोध्या में कौशल्या पुत्र वियोग में दुःखी

श्री राम प्रभु की कथा में कल दशानन का सभी ने देहांत सुना। एक कहानी समाप्त हुई, प्रतिनारायण रावण का मरण लक्ष्मण के माध्यम से हुआ। तदुपरांत श्री राम ने रावण के सभी सगे संबंधियों को सांत्वना दी, विभीषण आदि सभी भाइयों को सांत्वना दी। उसके उपरांत वह लंका में प्रवेश किए, सीता से मिले और वहाँ पर विभीषण की खातिरदारी में उन्होंने अच्छे से सुख पूर्वक बहुत समय व्यतीत किया। वहाँ पर भी उन राम लक्ष्मण का अभिषेक किया गया। बलभद्र और नारायण की पदवी से उन्हें अलंकृत किया गया। उसके बाद में लक्ष्मण का जो अन्य-अन्य स्थानों पर वनवास के समय में विवाह हुआ था उन सब रानियों को बुला करके वहीं पर रखा गया, रोका गया। सभी हर्षपूर्वक उस लंका का आनंद ले रहे हैं, इधर अयोध्या में कौशल्या पुत्र वियोग से दुःखी है। उसका एक-एक दिन एक-एक वर्ष की तरह व्यतीत हो रहा है। वनवास तक की घटना और उसके बाद में जो लक्ष्मण को मूर्च्छा आती है, शक्ति लग जाती है, उसके बाद राजा द्रोणमेघ की पुत्री विशल्या से उनकी वह मूर्च्छा दूर होती है। इतना समाचार अयोध्या में सबको पता है। इसके आगे क्या हुआ किसी को ज्ञात नहीं है। उसी समय पर नारद जी कौशल्या के पास पहुँचते हैं उस अवध नगरी में, अयोध्या नगरी में और वहाँ पर जाकर के उस कौशल्या माँ को जब दुःखी देखते हैं तो पूछते हैं कि तुम्हें दुःखी किसने बनाया? वह माँ कहती है कि मेरे दुःख का कारण शायद तुम्हें पता नहीं है, तो वह नारद जी कहते हैं वास्तव में मुझे पता नहीं है। क्योंकि जिस समय पर वह सीता और भामण्डल के विवाह का वह प्रसंग चल रहा था उसके बाद में, मैं यहाँ से जाकर के धातकीखंड द्वीप में चला गया और वहाँ के पूर्व विदेह क्षेत्र में

जो तीर्थंकर भगवान विराजमान हैं, उनके अनेक कल्याणकों में, मैं वहाँ पर जा करके रम गया और मैं वही पर रहा। लगभग मुझे तेईस वर्ष हो गए उसके बाद में आज लौटा हूँ और आप की सुध लेने आया हूँ। यह सुनकर के कौशल्या ने नारद को सब कुछ बताया कि सीता और भामण्डल का विवाह तो नहीं हुआ, विवाह तो श्री राम और सीता का हुआ था। भामण्डल को बाद में जाति स्मरण से ज्ञात हुआ कि वह मेरी बहन है और उसके बाद दशरथ का वन गमन हुआ। उनका मुनि दीक्षा लेने का विचार पूर्ण हुआ और उसी समय पर कैकई के द्वारा वह वचन मांगा गया, भरत को राज्य दिया गया। राम, लक्ष्मण और सीता यह तीनों वनवास की ओर चले गए। इसके बाद में लक्ष्मण की शक्ति लगना और वह सब द्रोणमेघ की कन्या विशल्या का वहाँ जाना, यह सब समाचार कौशल्या ने नारद जी को सुनाया। उसके बाद में वह रो पड़ी कि इसके आगे का मुझे समाचार कुछ ज्ञात नहीं हुआ।

नारद जी लंका में जाते हैं और श्रीराम से उनकी माँ का दुःख सुनाते हैं

तब नारद जी ने कहा कि आप चिंता न करें। मैं बहुत शीघ्र ही लंका में जाकर के देख करके आता हूँ कि वहाँ पर रावण क्या कर रहा है? और राम, लक्ष्मण आदि किस स्थिति में है? नारद जी जाते हैं, लंका में पहुँचते हैं और लंका में पहुँच करके देखते हैं कि यहाँ रावण तो है ही नही है। यहाँ के राजा तो यह राम और लक्ष्मण ही बने हुए हैं। लोगों से समाचार पूछते हैं तब उन्हें पता पड़ता है कि उस रावण का तो वध हो चुका है और यह राम, लक्ष्मण ही अब इस धरती के राजा हैं। अब इनका कोई भी प्रतिद्वंदी राजा यहाँ पर शेष नहीं है। ऐसा विचार करके नारद जी प्रसन्न होते हैं और श्री राम के पास पहुँच करके कहते हैं- मैं अभी अयोध्या से आ रहा हूँ। आपकी माँ, आपके परिवार जन भरत आदि सब आपको बहुत याद करते हैं और बहुत दुःखी हैं। ऐसा सुनते ही उन श्रीराम के मन में विचार आता है कि अब हमें यहाँ से चलना चाहिए। यद्यपि उन्होंने लंका से चलने की बहुत बार सोची लेकिन विभीषण के आग्रह पर वह वहाँ पर बार-बार रुके

रहे। लगभग छह वर्ष उन्होंने उस लंका में निकाले और अंत में भी जब उन्होंने कहा कि मुझे अब अयोध्या जाना ही है, आपका बहुत आतिथ्य स्वीकार कर लिया है, अब मुझे वापस माँ की याद आ रही है। मैंने वायदा किया था कि मैं जब कहीं अच्छे ढंग से रुक जाऊँगा तो माँ को बुलाऊँगा लेकिन मैं उसे बुला नहीं पाया। अब समय है कि मैं सब परिवार को लेकर के स्वयं अयोध्या पहुँचू और इस तरह का वह विचार करके जब विभीषण को बताते हैं तो विभीषण फिर उस समय पर उनको रोकते हैं और कहते हैं- आप से निवेदन है, आपसे प्रार्थना है, आप से विनती है, एक अंतिम बार आप पंद्रह दिन और यहाँ रुकें और उसके उपरांत भी वह पंद्रह दिन वहाँ पर और रुकते हैं।

श्रीराम के आगमन पर अयोध्या नगरी को बहुत सुंदर सजाया जाता है

लगभग सोलहवें दिन उनका वहाँ से प्रस्थान होता है और उन पंद्रह दिनों के बीच में धीरे-धीरे यह जो समाचार है, यह समाचार सब कुछ अयोध्या में पहुँच जाता है कि रावण का वध हुआ है। नारद ने भी जा करके बताया और उसके बाद में अनेक दूत जब अयोध्या पहुँचते हैं, कौशल्या-सुमित्रा इन सब को यह सब समाचार देते हैं। यह समाचार सुन करके सभी लोग वहाँ पर हर्षित होते हैं। समाचार सुनने के बाद में वहाँ पर यह बात फैल जाती है कि बहुत जल्द ही श्री राम, लक्ष्मण, सीता अनेक-अनेक और रानियाँ शीघ्र ही अयोध्या में प्रवेश करने वाले हैं, आने वाले हैं। इस तरह का समाचार जब उस अयोध्या में पहुँच जाता है, तो सारे अयोध्यावासी सारा नगर हर्ष से रोमांचित हो उठता है। सबको देखने की ललक उत्पन्न होती है और वह उस अयोध्या के अन्दर विद्याधरों के द्वारा, विद्याओं के माध्यम से, विद्याओं के प्रयोगों से, जो अनेक प्रकार की धनसंपदा विद्याधर अर्जित करते हैं, वह सब ला करके अयोध्या वासियों को बांटी जाती है। कोई भी अयोध्या में दीन-दरिद्री, दुःखी नहीं रहता। प्रजा को मनचाही संपदा दी जाती है और इधर अयोध्या में रत्नों की वर्षा होती है, खूब धन की वर्षा होती है, सारे घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाते हैं। अनेक तरह की रंग-रोलियों के साथ में

वह अयोध्या नगरी को सजाया जाता है। श्रीराम का जब आगमन होता है, तो वह पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर के वह लंका से निकलते हैं, प्रस्थान करते हैं और रास्ते में जिन-जिन जगहों से गुजरते हुए वह आए थे, उन सब जगहों को देखते हुए वहाँ की कथा वार्ता करते हुए कि यहाँ पर यह हुआ था, यहाँ पर यह हुआ था, यहाँ यह मिले थे, यहाँ पर ऐसी घटना घटी थी, उन सब स्थानों को देखते हुए वह धीरे-धीरे अयोध्या पहुँचते हैं। अयोध्या के निकट पहुँचने पर वह आश्चर्यचकित होते हैं कि यह कौन सी अद्भुत नगरी है? जो कुछ अलग ही तरह की सजी हुई दिखाई दे रही थी और उसे देख कर के वह पूछते हैं तो उन्हें बताया जाता है कि यह कुछ और दूसरी नगरी नहीं, यह आपकी ही अयोध्या नगरी है। इस अयोध्या नगरी को इस ढंग से सजाया गया है कि पंद्रह दिन का समय आपसे इसलिए मांगा था। विभीषण, हनुमान, सुग्रीव, भामण्डल जितने भी विद्याधर राजा थे, सबने वहाँ पर राम जी के पहुँचने पर, सबने पहले से ही वहाँ पर अगवानी की बहुत अच्छी सुंदर व्यवस्था की थी। जब राम जी का अयोध्या में आगमन होता है, तो यह सभी विद्याधर लोग वहाँ पर श्रीराम, लक्ष्मण का स्वागत करते हैं और पूरी अयोध्या नगरी में इस तरह से एक प्रसन्नता का एक अद्भुत माहौल वहाँ पर उत्पन्न हो जाता है।

वीतरागी भरत का दीक्षा का संकल्प

पुनः वह जब अपनी नगरी में आ जाते हैं तो उस नगरी में रहते हुए धीरे-धीरे यह बात आती है कि यहाँ पर जो भरत पहले से राजा हैं, उन भरत के मन में अपने आप वह अपना संकल्प याद आता है और वह संकल्प क्या था? भरत ने पहले से ही सोच रखा था, जब राम और लक्ष्मण यहाँ आ जाएँगे, हम उनको अपना यह राज्य देंगे और हम सीधा वन गमन करेंगे। उनके अन्दर मुनिव्रत को ग्रहण करने की बहुत तीव्र लालसा थी। इसी की वजह से जब वह श्रीराम वहाँ पहुँचे तो भरत अपने निश्चय पर बिल्कुल अडिग रहे। उन्होंने श्रीराम के चरणों में अपना निवेदन किया और प्रार्थना की कि आप अब यहाँ पर इस अयोध्या और पूरी भूमि का राज्य

संभाले। मेरा भाव पहले से ही वीतराग भाव के रूप में था, मैं वीतराग मार्ग पर चलने के लिए पहले से ही अपने मन में संकल्पित था। कुछ कारणवश यहाँ पर माँ के कहने पर रुका रहा और वह निवेदन सुनकर के राम जी ने, लक्ष्मण जी ने भरत को बहुत समझाया लेकिन भरत नहीं माने। उन्होंने मन बना लिया कि मुझे अब मुनि व्रतों को धारण करना है। वन में जा करके आत्मध्यान करते हुए अपने आत्मानंद में निमग्न रहना है। मुझे यह राजपाट, संपदा से कोई प्रयोजन नहीं। मैं अपने स्वआत्मा के कल्याण के लिए साधना करूँगा, आराधना करूँगा। उसी के माध्यम से उनके मन में जब यह विचार आया, उन्हें अनेक तरह से मनाने का प्रयत्न किया गया वे नहीं माने।

केवली भगवान से अपने पूर्व भव का वर्णन सुनते ही भरत ने मुनि दीक्षा को अंगीकार किया

जब वे अपनी माताओं को, अपनी पत्नियों को यह बात बताने जा रहे थे, उसी समय पर एक घटना घटती है कि एक **त्रिलोकमंडल नाम का हाथी** है। यह हाथी रावण का ही हाथी था और इस हाथी को लंका से ही लाया गया था। यह हाथी एकदम से बहुत ही विक्षिप्त हुआ। नगर में उपद्रव करने लगा, उजाड़ मचाने लगा, सब कुछ तहस-नहस करने लगा। लेकिन जब इस हाथी को घूमते घूमते जैसे इसका भरत के सामने आगमन हुआ, भरत के सामने आना हुआ, यह हाथी एकदम से शांत हो गया। इस हाथी को पकड़ने के लिए राम, लक्ष्मण आदि सभी उद्यत हुए लेकिन जैसे ही इस हाथी ने भरत को देखा, यह एकदम से अपना उपद्रव छोड़ बैठा, यह शांत हो गया। यह देख कर के सब को बड़ा आश्चर्य हुआ, इधर यह आश्चर्य का विचार किया जा रहा था कि ऐसा क्यों हुआ? उसी समय पर एक और घटना घटती है कि उन्हीं राम और लक्ष्मण के यहाँ पर एक महेंद्र वन नाम का यह उद्यान है- **महेंद्र उद्यान।** जहाँ पर देशभूषण और कुलभूषण मुनि महाराज का, जो केवली भगवान बन गए थे, जिनका उन्होंने उपद्रव उस पहाड़ी पर दूर किया था, वह केवली भगवान विचरण करते हुए

वहाँ आ पहुँचे। उन केवली भगवान को देख कर के सबके मन में विचार आया कि हम अपनी शंका का निराकरण इन्हीं से करते हैं और सब लोग वहाँ पहुँचे उनकी पूजा की और सबके लिए जब बैठने का स्थान वहाँ बन गया तो सबने निवेदन किया। उनमें श्रीराम प्रमुख थे और उन्होंने निवेदन किया कि भगवान इस हाथी की यह क्या कथा है? जो यह पहले बहुत उपद्रव मचा रहा था अचानक से इसका भरत को देख करके शांत हो जाना और अभी सुनने में आ रहा है कि इसने खाना-पीना भी छोड़ दिया है। लगभग उस हाथी के उपद्रव होने के बाद धीरे-धीरे वह हाथी सब कुछ खाना-पीना बंद कर दिया। यह देख करके केवली भगवान ने भरत और उस हाथी के पूर्व जीवन की कथा सुनाई। जन्म-जन्मांतरों की उस आत्मा के संबंधों की कथा सुनाई, जिसे सुन करके भरत को और अधिक वैराग्य का भाव दृढ़ हो गया। फिर भरत के मन में ऐसा उनका चित्त विरक्त हुआ कि वह हाथी के पूर्व भव सुन करके और उससे अपने संबंध को सुनकर के वह उन्हीं केवली भगवान के पास में मुनि दीक्षा को अंगीकार कर लिए। वह भरत दिगंबर मुनि महाराज बनकर के आत्म साधना करने को तत्पर हो गए।

भरत को केवलज्ञान और सिद्ध अवस्था की प्राप्ति

राम और लक्ष्मण की कहानी तो आपने उनकी वार्ता तो आपने खूब सुनी है। भरत और शत्रुघ्न का शायद नाम भी बहुत कम लिया जा रहा है। लेकिन भरत की कहानी अपने आप में वैराग्य भरी कहानी है। भरत का जीवन शुरू से ही पूरा वैराग्य से युक्त रहा और अंततः उन्होंने बिना किसी भेदभाव के उनके मन में कोई राजपाट करने का कभी भाव ही नहीं आया। फिर भी माँ के वचन को निभाने के लिए उन्होंने वह राजपाट उनके ही प्रयासों से स्वीकार किया और अंततः उनका मन किसी भी प्रकार से इस संसार के राग में उनका लगता ही नहीं था। यह संसार के अन्दर की सारी घटनाएँ देख करके उनके अन्दर यही भाव आता था, हर जीव जन्म-जन्मांतरों से अपने कर्मों को बांधता हुआ, हमेशा शुभ-अशुभ भावों के

द्वारा कुछ पुण्य, कुछ पाप करता हुआ संसार में भटकता रहता है। हमें जन्म-मृत्यु की श्रंखला को समाप्त करना है और जन्म-मृत्यु के इस चक्कर को दूर करने का एकमात्र उपाय है- संसार के प्रत्येक पदार्थ से मोह त्याग करके, अपनी आत्मा के समभाव में स्थित हो करके, अपने केवलज्ञान स्वभाव रूप जो अपना आत्म तत्त्व है उसी में स्थिर रहा जाए। इसी प्रकार की स्थिरता से आत्मा में केवलज्ञान की जब प्राप्ति हो जाती है, तो यह आत्मा उस केवलज्ञान से पूरे जगत को देखने लग जाता है। फिर वह अपनी आयु पूर्ण करके सदा-सदा के लिए मुक्त हो जाता है। यह मुक्ति का मार्ग अनादि काल से खुला हुआ है, तीर्थंकरों ने इसी मुक्ति के मार्ग को हमेशा खोल रखा है, बना रखा है। इसी मुक्ति के मार्ग पर चलते हुए अनंत जीव मुक्त हो चुके हैं। हमें भी इस संसार के जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त होना है। यह विचार भरत के मन के अन्दर बहुत दृढ़ था और आखिर तय उन्होंने उस विचार को पूरा कर लिया। वह केवलज्ञानी कुलभूषण देशभूषण मुनि के पास में दीक्षित हुए। दीक्षा होने के बाद में उन्होंने तपस्या की। तपस्या के बाद उन्हें अनेक प्रकार की ऋद्धियाँ प्राप्त हुईं और उन ऋद्धियों पर भी वह किसी भी प्रकार से मोहित नहीं हुए। हर प्रकार की ऋद्धि से संपन्न हो गए और वह अपनी आत्म साधना में लगे रहे और एक दिन शुक्ल ध्यान के माध्यम से उन्हें भी केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद में वह केवली भगवान बन करके कुछ दिन उपदेश देते रहे, भ्रमण करते रहे, विहार किए। जब अपनी आयु के पूर्ण होने का समय आता है तो उस समय पर वह केवली भगवान पुनः अंतिम शुक्ल ध्यान के माध्यम से अपने शरीर और अपने कर्म जो बचे रह जाते हैं, उन सब को भी छोड़ करके वह आत्मा सदा काल के लिए मोक्ष गति को प्राप्त हो जाता है। वह भरत भगवान, सिद्ध भगवान बन जाते हैं। हमेशा के लिए उनकी आत्मा शुद्ध हो जाती है, उनकी आत्मा के अनंत गुण प्रगट हो जाते हैं। इस तरह से यह भरत की कहानी पूर्ण होती है।

कैकई भी आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर लेती है

भरत की दीक्षा लेने पर कैकई दुःखी हुई। कैकई को श्रीराम ने समझाया,

सबने समझाया; लेकिन **कैकई** का मन भी संसार से उचट गया और उन्हीं केवली भगवान के पास में वह कैकई भी आर्यिका बन गई। वह भी आर्यिका व्रत लेकर के आर्यिका माँ बन गई। उसने भी अपने कर्मों का अंत करने के लिए यथोचित तपस्या की और वह स्वर्ग में जा करके देव बनी। यह कार्य सुन करके आपको यह विचार करना है कि हर व्यक्ति के जीवन का समापन, अंत आत्म कल्याण करने के माध्यम से ही होता है। जो महापुरुष अपना आत्म कल्याण करने के लिए तत्पर होते हैं, वे तो अगले जन्म में स्वर्ग या मोक्ष की प्राप्ति करते हैं और अगर वह ऐसा नहीं कर पाते हैं तो वह रावण की तरह से अधोगति के पात्र बनते हैं, नरक के पात्र बनते हैं। इसलिए राजा बनना अच्छी बात है लेकिन यह ध्यान रखना, एक कहावत है- **'राजेश्वरी सु नरकेश्वरी'** अगर राजत्व का त्याग नहीं किया जाता है, तो वह आत्मा उसमें मोहित होकर के अधोगति को प्राप्त हो जाता है इसलिए हमेशा भारतीय संस्कृति के अन्दर त्याग को महत्व दिया गया। इसी त्याग की कहानी यह हमें भरत के माध्यम से पता पड़ती है। भरत का तो इस तरह से धीरे-धीरे आगामी समय में मोक्ष गमन हो जाता है।

अयोध्या में श्रीराम-लक्ष्मण जी का राज्याभिषेक

इधर जब भरत जी घर छोड़ कर के निकल जाते हैं तो उस समय पर राम और लक्ष्मण के लिए यह प्रस्ताव आता है कि अब आपका अयोध्या में भी अभिषेक किया जाए, जिसे राज्याभिषेक कहते हैं। एक अभिषेक तो वह लंका में हुआ था। यहाँ पर सभी सुग्रीव, भामण्डल आदि जितने भी विद्याधर हैं, सभी उनका राज्याभिषेक करने के लिए कहते हैं और कहते हैं कि अब यहाँ पर आप इस राज्य पद को स्वीकार करो, राजगद्दी पर बैठो, राज सिंहासन पर बैठो। इसके लिए यह बहुत बड़ा एक महोत्सव हमें मना करके आपको यहाँ का राजा घोषित करना है। तब श्रीराम कहते हैं- लक्ष्मण जी को राजा बना दो। क्यों बना दो? लक्ष्मण जी से पूछा गया तो लक्ष्मण जी कहने लगे हमारे भाई के रहते हुए मैं कैसे राजा बन सकता हूँ? लक्ष्मण

जी को फिर श्रीराम ने कहा- भाई रावण का वध तो तुमने किया है, राजा बनने के असली हकदार तो तुम हो। तब लक्ष्मण जी कहते हैं- आपकी कृपा के बिना कोई रावण का वध नहीं कर सकता। सच्चे हकदार तो आप ही है, आपके कारण से ही वह रावण मरण को प्राप्त हुआ। जब राम और लक्ष्मण में इस तरह का संवाद देखा गया और कोई भी राजगद्दी स्वीकारने को तैयार नहीं हुआ तो फिर उन सब विद्याधरों ने मन बना करके यह एक प्रस्ताव दिया कि हम राम और लक्ष्मण दोनों को ही इस अयोध्या का राजा घोषित करते हैं। दोनों को ही राजा बनाते हैं। फिर दोनों का एक साथ राज्याभिषेक हुआ, **राम और सीता एक सिंहासन पर बैठे,** लक्ष्मण और विशल्या एक सिंहासन पर बैठे और उन सबका वहाँ पर बड़े महोत्सव के साथ में यह राज्याभिषेक हुआ।

शत्रुघ्न मथुरा पर विजय प्राप्त करने जाते हैं

राज्याभिषेक होने के उपरांत श्री राम ने जो भी अपने और सहयोगी थे, भाई थे, उन सब के लिए अलग-अलग राज्य प्रदान कर दिए। उस समय पर शत्रुघ्न से पूछा गया कि बताओ! तुम्हें कहाँ का राजा बनना है? शत्रुघ्न ने कहा, मैं मथुरा का राजा बनना चाहता हूँ। जब श्री राम ने सुना कि मथुरा की बात कह रहे हैं तो उन्होंने कहा कि मथुरा में तो पहले से ही **रावण** का एक **जमाई** है, **मधु** नाम का राजा वह वहाँ पर काबिज है। उस मधु के पास में असुर कुमारों के द्वारा, चमरेंद्रों के द्वारा दी हुई शक्ति है। जिसके माध्यम से वह वहाँ पर राज्य करता है और उससे युद्ध करना, उस राज्य को प्राप्त करना, बड़ा कठिन काम है। लेकिन शत्रुघ्न नहीं माने, उन्होंने कहा आप हमें वहाँ का राजा बनाने की बस बात कह करके छोड़ दीजिए। उस राजा मधु को जीतने का काम हमारा है। शत्रुघ्न के कहने पर राम ने उनको वहाँ का राजा घोषित कर दिया लेकिन शत्रुघ्न के लिए उस मधु को जीतना एक बड़ी बात थी। वह अपना मन बना करके उस मथुरा पर चढ़ाई करने के लिए निकले। उस मधु राजा को जीतने के लिए निकले और जब वे वहाँ पर जाते हैं तो राम और लक्ष्मण भी उनको कुछ दूरी तक लगभग तीन मील तक छोड़ने के लिए जाते हैं। जब वहाँ से राम और लक्ष्मण वापस लौटते हैं

तो लक्ष्मण जी उन्हें अपने बहुत सारे अस्त्र-शस्त्र और विद्याएँ और शक्तियाँ और वह जो धनुष था, सागरावर्त नाम का धनुष, वह धनुष भी उन्हें प्रदान करते हैं और कहते हैं- इन सब विद्याओं और शक्तियों के माध्यम से तुम उस राजा मधु से जीत पाओगे और वह वापस लौट आते हैं।

युद्ध भूमि में मधु राजा का मुनि दीक्षा धारण करना

शत्रुघ्न मथुरा की ओर चलते हैं, उन्हें पता पड़ता है कि राजा मधु छह दिनों से राज महल में गया ही नहीं। वह एक उपवन में अपनी रानियों के साथ में व्यस्त है और वहीं पर वह आनंद मना रहा है। लक्ष्मण ने शत्रुघ्न को समझाया था, बताया था कि उस पर हमला तभी करना, जब उसके पास में वह त्रिशूल जो नाम की शक्ति है, वह न हो। शत्रुघ्न को बात याद आई कि अच्छा समय है। यह छह दिन से अपने राज्य में है ही नहीं, यह दूसरे उपवनों में वह रानियों के साथ में व्यस्त है। शत्रुघ्न ने सीधा जाकर के मथुरा पर हमला बोल दिया और वहाँ पर कोई राजा था नहीं। जब तक वह अपने आप को संभाल पाया, वहाँ के लोग सामंत, योद्धा उससे युद्ध करने आए तो उन सबको उन्होंने हरा करके वह स्वयं वहाँ के राज गद्दी पर बैठ गए और जब मधु उनसे युद्ध करने के लिए आया तो उस समय पर मधु के पास में वह त्रिशूल नहीं था। युद्ध हुआ और उस युद्ध में जब मधु ने देखा कि मेरी सेना परास्त हो गई, अब मैं परास्त हो जाऊँगा तो उस मधु के मन में विचार आया कि मैं इस नश्वर राजपाट को छोड़ता हूँ। वह उसी समय पर युद्ध करते-करते उसके मन में विचार आता है और वह वहीं पर बैठे-बैठे अपने सभी वस्त्रों का त्याग करके, निर्ग्रंथ मुनि हो करके वहीं पर केशलोंच कर लेता है। ऐसा देख करके वह शत्रुघ्न उनके समीप आते हैं तो उन्हें प्रणाम करके उन्हें मुनि महाराज के रूप में उनकी वंदना करके, वह प्रसन्न हो करके, उन की आरती उतार करके, वहाँ से वापस चले जाते हैं। इस तरह से शत्रुघ्न का वह निष्कंटक राज्य वहाँ पर प्रारंभ होता है। उसके बाद में इधर यह राम, लक्ष्मण यह अपने आराम से महलों में रहते हुए अब सुख के दिन गुजार रहे हैं। सीता भी बड़ी प्रसन्न है और बहुत दिनों के वनवास के बाद में जो इन लोगों को सुख की प्राप्ति हो रही है, वह सुख की प्राप्ति

सभी के लिए महसूस हो रही है। पूरा अयोध्या प्रसन्न है और उस प्रसन्नता का गुणगान करते हुए अपन श्रीराम के गुणगान करते हैं-

मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
आदर्श बने जन जन के वसुधैव कुटुंब थे जिनके।
जो भी ले इनका नाम बिगड़े बनते सब काम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
दशरथ जिनके जनक कहाए, कौशल्या नंदन जन गाए।
इक्ष्वाकु वंश की शान क्षत्रिय जग दया निधान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम प्रभु,प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
हर प्राणी जिनको गाता, ना जातिभेद मन लाता।
सीता के स्वामी प्राण, हनुमान के जो अभिमान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।

सीता जी का दो स्वप्न देखना एवं श्रीराम से दोनों स्वप्नों का फल पूछना

इस तरह से हर्ष से बहुत समय व्यतीत होने के बाद में एक बार एक रात को सीता कुछ स्वप्न देखती है।

एक रात श्री जानकी, सपने देखे सोय।
स्वेत वर्ण सुंदर बहुत, अष्टापद हैं दोय॥
दोनों आकर सीता जी के, मुख में प्रवेश कराया है।
आकाश से पृथ्वी पर है पड़ी, दूजा भयकारी आया है॥
जब भोर हुई पति पास गई, सपनों का फल बतला दीजे।
कहें राम पुत्र दो जुड़वा हों, और चर्म शरीरी लख लीजे॥
दूजा सपना हानिकारक, सो पूजा दान करो रानी।
धर्म ध्यान से शान्ति मिलती, ये ही बतलाती जिनवाणी॥
श्री रामचंद्र सब मंदिरों में, पूजा विधान कराते हैं।

इतने में वसंत ऋतु आई, सब मिल उपवन में जाते हैं॥
गज पर चढ़कर सियाराम चले, लक्ष्मण भी साथ में आते हैं।
सब रानियां दोनों ही आईं, मिलकर के बसंत मनाते हैं॥
अशुभ उदय जब होत है, अशुभ कार्य सब होय।
अग फरकते दाहिने, सीता जी के होय॥

कुछ दिनों के उपरांत सीता ने एक रात्रि को दो सपने देखे और उन दो सपनों में पहला स्वप्न था कि शरद ऋतु की चंद्रमा के समान उज्जवल श्वेत वर्ण वाले दो अष्टापद उनके मुख में प्रवेश कर रहे हैं। **दूसरा** स्वप्न उन्होंने देखा कि वह पुष्पक विमान से नीचे जमीन पर गिर पड़ी है। इन दोनों सपनों को देख करके वह अगले दिन सुबह अपने पति के पास में, स्वामी के पास में, पहुँचकर के अपने सपनों को बताती है। स्वामी उसका फल बताते हैं कि पहले स्वप्न का फल बहुत उत्तम है। दो अष्टापद आपके मुख में प्रवेश किए हैं मतलब दो जीव आपके गर्भ में प्रवेश किए हैं और वह इस विश्व के अन्दर अपनी कीर्ति और कांति के माध्यम से अपने प्रताप के माध्यम से बड़े बहादुर होंगे। उन्हें जीतने वाला इस धरती पर कोई नहीं होगा, ऐसे महा पराक्रमी दो पुत्र आपके गर्भ में आए हैं, युगल पुत्रों को आप जन्म देंगी, ये एक स्वप्न का उन्होंने फल बताया। दूसरे स्वप्न का फल बताते हुए थोड़ा सा वह श्रीराम घबराए और कहा यह स्वप्न का फल कुछ अच्छा प्रतीत नहीं होता। इस स्वप्न के माध्यम से आपको कुछ इसके फल से हानि हो सकती है क्योंकि यह कुछ अशुभता को बता रहा है। इसलिए अपने अशुभ कर्म की हानि करने के लिए, अपने अशुभ कर्म को दूर करने के लिए, आप अपना समय जितना हो सके धर्मध्यान में लगाओ क्योंकि धर्मध्यान के माध्यम से हमारे कर्मों में अगर कुछ संक्रमण हो सकता है और वह पूर्व कर्म अगर अपनी पूर्ण शक्ति के साथ में नहीं आएँगे तो हम उनको कुछ परिवर्तित कर सकते हैं। अन्यथा कर्म का फल भोगना हर किसी के लिए आवश्यक होता है और बिना कर्म फल भोगे हुए कोई भी जीव कर्म से मुक्त नहीं हो पाता है।

गर्भवती सीताजी का धर्मध्यान, दान करना और तीर्थ वंदना का दोहला होना

सीता रानी ने जब यह बात सुनी तो उस समय पर वह भी थोड़ी सी विचलित हो गई, घबरा गई और उसने भी मन बनाया कि हमेशा धर्म ध्यान करने के लिए, धर्म में मन लगाए रखने के लिए, दया धर्म का पालन करने के लिए, उसने हर तरह से अपने यहाँ पर जितने भी दीन-दुःखी लोग थे, उन सब के दुःखों को दूर करने के लिए किमिच्छक दान देने की घोषणा की। राज्य में घोषणा हुई। जिसके लिए जो भी चाहिए, वह आकर के यहाँ पर इस दरबार में से ले सकता है और वहाँ पर सारी प्रजा पहुँचकर के उस किमिच्छक दान के माध्यम से संतुष्ट हुई। सब प्रकार से धर्म ध्यान करने के लिए हमेशा सिद्धों का ध्यान करते हुई, शुद्ध आत्मा का ध्यान करती हुई, परमात्मा का ध्यान करती हुई, वह अपना समय बिताती थी। जिनमंदिर में रहती थी और भगवान का दर्शन करते हुए वह अपना समय व्यतीत करती हुई, यह सोचती थी कि आखिर यह हमारे साथ में क्या अशुभ होने वाला है? धीरे-धीरे समय आया, अशुभ कर्म का भीतर से जब उदय होता है, तो बाहर शरीर में भी कुछ उसके लक्षण दिखाई देने लग जाते हैं। सीता का दाहिनी आँख, दाहिना अंग जो फड़फड़ाते हैं, हिलते हैं, यह स्त्री के लिए अशुभ लक्षण माने जाते हैं। पुरुष के लिए दाहिने अंग का फड़कना अच्छा माना जाता है और स्त्री के लिए यह अशुभ माना जाता है। दाहिनी आँख का फड़कना पुरुष के लिए अच्छा माना जाता है और स्त्री के लिए यह अशुभ माना जाता है। स्त्री के लिए बायीं आँख का फड़कना शुभ होता है और ऐसा जब वह सीता अपने मन में सोचती है कि मेरे दाहिने अंग फड़क रहे हैं आखिर मेरे साथ अब क्या होने वाला है? वह मन ही मन विचार करती है, इधर यह भी सोचती है कि सब कुछ हमारे लिए अच्छा हुआ है, हमारे स्वामी हमारे साथ में है, इस राज्य में कोई भी किसी तरह का उपद्रव नहीं है। जितने उपद्रव होने थे, वे सब हमने सहन कर ही लिए हैं और जितनी भी कुछ भी कल्पनाएँ की जा सकती है दुःख की वह सब दुःख में पार कर आई हूँ। इससे ज्यादा और क्या दुःख हो सकता है? मैं

अपने पति के साथ में वनवास गई और वनवास के हर तरह के दुःख हमने भोगे लेकिन समभाव के साथ भोगे। हरण भी हो गया मेरा, मैं लंका में रही, दुःखी रही, पति के बिना रही तब भी मैंने अपने जीवन को जिया और मैंने कभी भी किसी भी तरह से अपने आप के धैर्य को नहीं छोड़ा। हे भगवन्! अब इससे भी बढ़कर के मेरे ऊपर कौन सा दुःख आने वाला है? वह अपने मन को उस समय पर मजबूत बनाती है कि इससे बढ़कर के और कोई दुःख नहीं हो सकते और जो कुछ भी अगर मेरे साथ कुछ अशुभ होगा तो मैं उसको सहन करने के लिए बिल्कुल तैयार हूँ। इधर जब वह गर्भवती होने के कारण से उसके लिए दोहला होता है। दोहला जानते हो? तुम क्या जानोगे? ये जानेगी, जिनको होगा वह जानेगी, गर्भवती स्त्रियों को कुछ मन में भाव आते हैं, विचार आते हैं और वह विचार पुत्र के अनुरूप आते हैं, जैसा पुत्र होगा। पुण्यशाली पुत्र होगा तो पुण्य भाव, पुण्य विचार आएँगे, शुभ विचार आएँगे। पापी जीव अगर गर्भ में होगा तो उन्हें क्रूरता के विचार आएँगे, अशुभ विचार आएँगे। इधर इन गर्भवती सीता को इच्छा होती है कि मुझे तीर्थों की वंदना करना है। जिनेंद्र भगवान के बड़े-बड़े जिनालयों में जाकर के उनके दर्शन करना है और ऐसे दर्शन करने की इच्छा जब उन्हें होती है, तो राम जी स्वयं उनकी उस इच्छा की पूर्ति करने के लिए आसपास के वनों में, उपवनों में उन्हें साथ लेकर के पहुँचते हैं। उनकी उस इच्छा की पूर्ति करने के लिए उन्हें वहीं आसपास के जो भी तीर्थ होते हैं उनकी वंदना कराते हैं।

सीताजी को दान, पूजा, तीर्थ वंदना करते हुए भी तीव्र अशुभ कर्म का फल भोगना ही पड़ा

वह वंदना करते-करते भी अपने अशुभ को दूर करने की इच्छा से सब प्रकार के दान-पूजा आदि कार्य करते हुए भी कभी कभी अशुभ कर्म के फल इतने तीव्र होते हैं कि उसे उस व्यक्ति को भोगना ही पड़ता है। इसमें कोई शनि, राहु, कोई साढ़ेसाती कोई काम नहीं करती। यह सब अपने कर्म के फल होते हैं, आप किसी भी तरह से कहीं पर भी पूजा करो, विधान करो, दान दो अगर वह अशुभ कर्म हल्का होगा तो वह दूर हो जाएगा इन

पूजा-दानों से। लेकिन कभी-कभी ऐसे तीव्र अशुभ कर्म होते हैं, जिसका फल जीव को भोगना ही होता है, चाहे वह कितना ही बड़ा महापुरुष हो। पूर्व जन्म में किए गए अनेक प्रकार के जो अनर्थ होते हैं, उन सब अनर्थों के माध्यम से बंधे हुए उन कर्मों का फल मिलता है, तो उस जीव के सामने अपने आप विपरीतताएँ आने लग जाती हैं। ऐसा अब देखो! क्या होने जा रहा है सीता के साथ में? आगे पढ़ते हैं-

मम आंख दाहिनी फरकत है, सब रानियों से बतलाती है।
क्या होनहार बाकी मेरी, जो मुझको भय दिखलाती हैं॥
सब रानीयाँ कहती सर्वश्रेष्ठ, तुम रानियों में हो पटरानी।
तुमको क्या दुःख हो सकता, है सत्य हमारी है वाणी॥
कुछ सोचके सीता ने फौरन, भंडारी को बुलवाया है।
किमेच्छिक दान बटे नित ही, नौ मासों तलक, बताया है॥
हाथी पर चढ़ कर इक सेवक, सारी प्रजा से कहत फिरे।
जो इच्छा हो सो ले आओ, दरबार राम से तुम्हें मिले॥
होनहार मिटती नहीं, करो अनेक उपाय।
सीता जी के अशुभ ने, रंग दिखाया आय॥
राम दरबार लगने पर, प्रजा सब मिल के जाती है।
कुछ कहना चाहते, लेकिन बात मुंह तक ना आती है॥
कहा श्रीराम ने भाई, कहो क्या कहने आए हो?
नहीं भय कीजिए मन में, संदेशा कौन लाए हो॥
जो था सबसे बड़ा मुखिया, कांपते स्वर में यों बोला।
प्रजा हो चली मर्यादा रहित अमृत में विष घोला॥
रही रावण के घर सीता, उसे फिर राम ले आए।
नहीं फिर दोष जनता को, करे जो जिसका जी चाहे॥
यह सुन कर राम ने सोचा, हमारा कुल बड़ा नामी।
हुए वृषभादि, भरतेश्वर, जो थे षट-खंड के स्वामी॥
क्या उस कुल में प्रथम मैं, ही कलंकी राव कहलाऊँ।
ना होगा ऐसा होगा अय 'दासी' सिया को वन में भिजवाऊँ॥

मुखिया का श्रीराम से प्रजा में होने वाले दुराचार का कारण बताना

जब राम के समक्ष आकर के राजसभा में प्रजा लोग आए और उन प्रजाजनों के अचानक आने का जब रामजी ने कारण पूछा तो सभी पहले तो डर के मौन रहे, बैठे रह गए। सब अपनी आँखें नीचे किये रहे, कुछ मन बना करके कुछ कहने के लिए आए थे लेकिन श्रीराम के समक्ष सीधा सीधा कह पाना किसी के बस की बात नहीं बन रही थी। धीरे से सब एक दूसरे को देख रहे हैं तभी उनमें से एक व्यक्ति प्रार्थना करता है- प्रभु! पहले आप मुझे **अभय दान दे तब मैं अपना मुख खोलूँगा।** अभय दान समझते हैं? अगर कुछ बात कही जा रही है, तो राजा उसे किसी भी तरह से क्रोधित होकर के प्राण दंड न दे दे। इसलिए पहले वहाँ पर एक व्यक्ति ने हिम्मत करके कहा, प्रभु! पहले मुझे अभयदान दीजिए, उसके बाद में इन लोगों की तरफ से कुछ बात आपके समक्ष कहना चाहूँगा। श्रीराम ने उन्हें अभय का आश्वासन दिया और उसके बाद में वह व्यक्ति कहने लगा कि मैं जानता हूँ कि दुनिया में बहुत सारी बातें होती हैं और उन बातों में सच्चाई नहीं होती है। यह लोग का, यह पूरी संसार का, जनता का स्वभाव है कि हमेशा जनता कुटिल भाव को धारण करने वाली होती है। उसी कुटिलता के कारण से जो घटित नहीं भी हुआ हो उसको भी वह बातें बना करके कहने लग जाती है। अनेक तरह की बातें जब प्रजा में होने लग जाती हैं तब उस प्रजा की उन बातों को रोक पाना बड़ा मुश्किल हो जाता है। जब उस मुखिया ने ये बातें कही तो रामजी बोले **आप कहना क्या चाहते हैं?** स्पष्ट बोलिए! आप का भाव क्या है? तब वह मुखिया रामजी से कहते हैं कि इस नगर में आजकल हर कोई दुराचार करने लग गया है। कोई भी आदमी किसी की बहन को, किसी की बेटी को उठा लेता है, घर में रखता है, कुछ दिनों के बाद उसे छोड़ देता है। फिर कहता है कि जब रामजी भी इस तरह से कर सकते हैं। रावण के घर में रही हुई इस सीता को ले कर के आ सकते हैं तो तू कौन सी दूषित हो गई? नारियाँ भी इसी तरह से करने लग गई कि वे भी पर घर में जाकर के रहने लग गई और फिर जा कर

के अपने घर में आती हैं तो कहती हैं कि जब सीता भी ऐसे करके आ सकती है, तो हमारे पर शंका क्यों की जा रही है? यह एक बहुत बड़ी विडंबना पूरे नगर में सुनाई पड़ रही है और इसी के कारण से एक बहुत बड़ा दुराचार का भाव फैल रहा है और कोई किसी के नियंत्रण में नहीं आ रहा है। हर कोई इसी तरह से शास्त्रों में निष्णात होते हुए भी, प्रवीण होते हुए भी, यह सभी लोग आपका उदाहरण दे रहे हैं कि इतने बड़े शास्त्रों के ज्ञाता, इतने बड़े पराक्रमी, बहादुर और न्याय नीति को जानने वाले यह श्रीराम जब इस तरह से कर सकते हैं तो फिर हमें करने में क्या बाधा है? ऐसा विचार करके यह सारी की सारी प्रजा एक तरह से आपके कुलाचार को दूषित कर रही है और अबलाओं पर अत्याचार कर रही है। इसका उपाय आप ही महाराज ढूँढ सकते हैं क्योंकि आप ही यहाँ के राजा हैं। मैंने तो जो प्रजा में चल रहा था आपको निवेदित कर दिया है। इससे ज्यादा मेरा कोई भाव नहीं है और ऐसा कह करके वह प्रतिनिधि जो वहाँ पर बन करके आया था वह अपनी सारी प्रजा को लेकर के और अनेक लोगों को लेकर के वहाँ से चला गया।

राजा श्रीराम को कुल की अपकीर्ति का भय और सीता को राज्य से निष्कासित करने का दुःख

यह सुना जब श्रीराम ने तो उनके मन में, हृदय में एक तूफान मच गया और वह तूफान मचना स्वाभाविक था क्योंकि वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते हैं। पिता की मर्यादा का ख्याल रखते हुए उन्होंने वन गमन स्वीकार किया। आज फिर उनके सामने उनकी मर्यादा की परीक्षा करने के लिए फिर उनके सामने प्रश्न उठा, कुल की कीर्ति को कोई कलंक लगाए, राजा कभी भी यह स्वीकार नहीं कर सकता। राजा न्याय और नीति में जब निपुण होते हैं तो वह अपने कुल के लिए सब कुछ छोड़ सकते हैं। कहा जाता है कि एक अपने लिए अगर कोई कुल में कलंक लगाने वाला हो तो उस कुल के कलंक लगाने वाले उस व्यक्ति को भी छोड़ देना चाहिए। जिसके कारण से गांव में कलंक लगता हो तो फिर आपको वह कुल भी

छोड़ देना चाहिए। जिसके कारण से अगर कहीं पूरे देश में कलंक लगता हो तो आपको गांव भी छोड़ देना चाहिए, वह देश छोड़ देना चाहिए और बन सके अपनी आत्मा के लिए सब कुछ छोड़ देना चाहिए। यह एक नीति है और नीति के लिए यह राजा लोग हमेशा तत्पर रहते हैं। नीति न्याय में निपुण जब वह श्रीराम के समक्ष यह बात आई तो वह सोचते हैं कि मैं जिस कुल में जन्मा हूँ, इक्ष्वाकु वंश, रघुवंश के इस कुल में कभी भी मेरे दादाओं ने, परदादाओं ने इस कुल की कीर्ति को मलिन नहीं किया। आज एक सामान्य से प्रजा में से व्यक्ति आ करके, जनता का व्यक्ति आ करके, मुझे इतनी बड़ी बात कह गया। अब मैं क्या करूँ? इस कुल की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए अगर कोई उपाय नहीं करूँगा तो इस कुल की कीर्ति पूरी मलिन हो जाएगी। अपकीर्ति मेरे माथे लगेगी और अगर में कोई उपाय करता हूँ तो फिर आज हमारे सामने एक बहुत बड़ा उपद्रव खड़ा होने वाला है। इस मलिनता को दूर करने के लिए, इस अपयश को दूर करने के लिए क्या करूँ? कैसे जनता को समझाऊँ? जिस कुल में भगवान ऋषभदेव, भरत चक्रवर्ती जैसे लोग जन्म लिए, आज मैं उसी कुल में जन्म लिया हूँ और इन्होंने कभी अपने उस कुल की कीर्ति को मलिन नहीं किया। क्या मैं पहला राजा होऊँगा जिसके कारण से इस कुल की कीर्ति को मलिनता होगी? ऐसा विचार करके उनके मन में एक ही उपाय आता है कि अगर सीता को यहाँ से निष्कासित नहीं किया जाता है, तो इन देश के लोगों का, नगर वासियों का मुँह कभी भी बंद नहीं हो सकता है। हम सब कुछ कर सकते हैं, तलवार चला सकते हैं, युद्ध जीत सकते हैं लेकिन लोगों का मुँह पर ताला नहीं लगा सकते। जिन्हें जो बोलना है उन्हें बोलना है लेकिन एक राजा के होने की खातिर हम उसका उपेक्षा भी नहीं कर सकते कि जो कुछ जो चाहे बोलता रहे, बोलता रहे क्योंकि यह राजा की मर्यादा है। सारा का सारा दबाव या किसी भी तरह का जो लोगों के मन में अपराध दिखाई दे रहा है, वह सब राजा के माथे लगाया जा रहा है। एक राजा होने के नाते हमें मन में विचार करना ही होगा और आखिरकर उन्होंने विचार किया कि सीता को मुझे पुनः इस राज्य से दूर निष्कासित करने के लिए तत्पर होना

पड़ेगा। यह विचार करते हुए, वह बार-बार सोचते हैं, दुःखी होते हैं कि इस प्राणों से प्रिय सीता को मैं कैसे छोड़ूँगा? जिसके लिए हमने रावण से युद्ध किया आज हम फिर उस सीता को कैसे छोड़ने के लिए तैयार हो? लेकिन उन्हें इसके अलावा कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा। वे बहुत दुःखी हैं, उनकी नींद आँखों से कोसों दूर चली गई है। अपने विचारों में निमग्न रहते हुए न वे कुछ खा पा रहे हैं, न पी पा रहे हैं, न किसी को अच्छे प्रेम से देख पा रहे हैं। उनकी यह मनःस्थिति देखकर के उनके भाई लक्ष्मण उनसे पूछते हैं- भाई! आपको हो क्या गया है? आपसे इस तरह का कभी भी व्यवहार देखने में नहीं आया कि आप इतना अप्रसन्न और इतने चिंतित रहें। यह किस कारण से आप के मुख पर यह चिंता दिखाई दे रही है? तब वह अपने भाई लक्ष्मण से वह सब बात कहते हैं और लक्ष्मण जब यह बात सुनते हैं तो वह क्रोधित होकर के उठते हैं कि मैं सारी प्रजा को नष्ट कर दूँगा। कौन सा ऐसा मुखिया है कि जिसने आकर के यहाँ पर आप कोई बात कही है? मैं युद्ध करके हर किसी का मुँह बंद कर सकता हूँ और इस तरह से वह क्रोधित होते हैं तो राम जी उनको हाथ पकड़ कर के बैठा लेते हैं। भाई! हर चीज युद्ध से समाधान को प्राप्त नहीं होती। युद्ध उनसे होते हैं, जो हमारे शत्रु हो लेकिन कुछ लोग अपने हितैषी भी होते हैं, जो अपनी बात आ करके अपने को बताते हैं कि और उसका निर्णय हमारे ऊपर छोड़ करके जाते हैं कि आप यहाँ के स्वामी हैं। अगर वह हमारे ऊपर अपना निर्णय छोड़ कर के गए हैं तो हमें उनसे युद्ध करने की जरूरत नहीं है। हमें मारकाट करने की जरूरत नहीं है। यह एक दयाप्रिय और न्यायप्रिय राजा के काम नहीं होते। हमें विचार वही करना है, जो हमने सोच लिया है और हमने सोचा है कि सीता को हमें पुनः इस राज्य से बाहर भेजना पड़ेगा। यह बात मैं सिर्फ तुमसे कह रहा हूँ। अभी तुम यह बात किसी से कहना नहीं और यह विचार श्रीराम के मन में आ जाता है।

तीर्थ यात्रा के निमित्त से सीता जी का परित्याग

इधर वह सीता के साथ में तीर्थ यात्रा करने निकले थे, सीता को जिन दर्शन की बहुत इच्छा थी तो उन्हें उस समय पर एक बहाना मिल जाता है कि

इसे तीर्थ यात्रा के निमित्त से ही और दर्शन कराने के निमित्त से ही इसे राज्य से बाहर निकाल दिया जाए और इस तरह का वह विचार करते हुए उस समय पर..

राम बहुत ही सोचते, निश्चय पर आ जाय।
एक सेवक को भेजकर, लक्ष्मण लिए बुलाय॥
लक्ष्मण आए शीघ्र ही, सुन राम से हाल।
क्रोध बढ़ा सुनकर बहुत, आँखें हो गईं लाल॥

जब यह हाल लक्ष्मण और श्रीराम का होता है, तो उस समय पर लक्ष्मण जी, राम जी को कहते हैं- किसी की निंदा सुन कर के उस चीज को त्याग देना, यह बात हमारी समझ में बिल्कुल नहीं आती। अगर कोई आप से धर्म की निंदा करें तो क्या आप धर्म को छोड़ दोगे? अगर कोई आपसे मुनि महाराज की निंदा करें तो क्या आप मुनि महाराज की भक्ति छोड़ दोगे? अगर कोई सीता के लिए इस तरह से कह रहा है, तो आपको सीता को छोड़ने का विचार करना, यह मुझे बिल्कुल ही समझ में नहीं आ रहा है। उस समय पर -

लखन भ्रात की बात से, हुआ राम को क्रोध।
होनी होकर ही रहे, नहीं आता है बोध॥
नहीं आता है बोध राम ने, सेनापति को बुलवाया।
सीता को ले जाकर वन में, छोड़े, हुक्म सुनाया॥
सेनापति यह आज्ञा पाकर, सीता पास सिधाया।
तीरथ वंदन चलिए माता, आकर यही बताया॥

उस सेनापति का नाम था कृतांतवक्र। क्या नाम था? **कृतांतवक्र।** उस कृतांतवक्र सेनापति को बुलाया गया और उससे कहा गया कि इस सीता को तीर्थों की यात्रा करा करके, सम्मेद शिखर आदि तीर्थों की यात्रा करा करके, इसे ऐसी अटवी में छोड़ करके आना, जहाँ पर मनुष्यों का आवागमन न हो। यह बात उस सेनापति ने सीता से चलते हुए कुछ नहीं कहा। उसे रथ में बिठाया और कहा कि श्रीराम का आदेश है कि

वह आपको तीर्थ वंदना कराएँ क्योंकि आपके लिए दोहला उत्पन्न हुआ है जिन दर्शन की आपकी इच्छा है तो तरह-तरह के तीर्थों की वंदना कराने के लिए आपको ले जाना है। वह अपने राज्य का आज के कारण से आपके साथ नहीं चल सकते हैं और इस तरह का वह बहाना बना करके सीता जी को रथ पर बिठा करके वह तीर्थ वंदना कराने के बाद में, जब वह उस एक निर्जन अटवी में पहुँचता है। उस अटवी के पास वहाँ पर बैठकर के वह सीता जी को रथ से उतारता है और फिर कहता है- माँ! मुझे क्षमा करना। यह कार्य मुझे स्वामी का दास बनने के कारण से करना पड़ रहा है। मेरी इस दासता को धिक्कार हो, जिसके कारण से दास को स्वामी के लिए उनकी ही आज्ञा के कारण से ऐसे अनर्थ भी करने पड़ जाते हैं, जो अनर्थ होते हैं और जो नहीं करने चाहिए। मुझे आदेश मिला था इसलिए आपको यहाँ इस अटवी में छोड़ रहा हूँ। मैं अब आपको बता रहा हूँ कि श्रीराम ने आपको छोड़ दिया है। आप का परित्याग कर दिया है और उसका कारण है कि उनके ऊपर यह दोषारोपण जनता ने किया है इसलिए श्रीराम ने मुझे यह हुक्म दिया था और उसी हुक्म का पालन करने के लिए मैं यहाँ तक आया हूँ। मैं आपके चरणों में नमस्कार करते हुए, विनम्रता पूर्वक आपसे क्षमा चाहता हूँ कि मुझे इस दासता के कारण से यह कार्य करना पड़ा। मैं अब स्वामी राम के पास जा करके क्या मुँह दिखाऊँगा? मैं यह भाव करता हूँ कि हे भगवन्! मेरी यह सेनापति कि यह उपाधियाँ, मेरी यह दासता और राजा के लिए काम करने का मेरा यह जो एक नौकरपने का काम है मेरा, यह जल्दी से जल्दी छूट जाए और मैं इससे मुक्त हो जाऊँ।

लोकापवाद और दूसरे से निन्दा सुनकर धर्म का त्याग कभी मत करना

ऐसा विचार करके जब वह जाने लगा तो उस समय पर सीता पहले तो मूर्च्छित हो गई। एकदम से सुनते ही बेहोश हो गई, उसके लिए साँसे रूकने लग गई लेकिन उसको ऐसी विचित्र स्थिति में देखते हुए उस सेनापति ने उसे फिर से संभाला और कहा, माँ! तुम्हें अपने आप को यही पर संभालना होगा। इस भयानक अटवी में भेजने का श्री राम का ही आदेश है और

उनका आदेश का पालन करने के लिए मैं आपको यहाँ तक लाया हूँ। जब उस सीता ने सुना कि यह श्रीराम के ही आदेश से सब कुछ हुआ है तो अपनी पति भक्ति से प्रेरित होकर के उसने अपने आप में यह फिर से साहस लाया। फिर वह कहने लगी, ठीक है! अगर तुम वहाँ जा रहे हो तो श्रीराम से मेरी कुछ बातें कह देना। मेरा कुछ समाचार उनके पास जरूर कह देना और वह समाचार यह है। उनसे कहना कि जिस तरह से लोक निंदा में लोक अपवाद के कारण से आप ने सीता को त्याग दिया है, ऐसे कभी भी अपने धर्म का त्याग किसी दूसरे की निंदा से मत कर देना और उनसे कहना है कि सीता आज भी तुम्हारी है और तुम्हारी आज्ञा से अगर यह हुआ है, तो यह सीता वन में भी सुखी हो करके रह लेगी। वन में भी अपने पुण्य से जीवित रह लेगी लेकिन अगर आपने अपनी लोक मर्यादा को पालन करने के लिए ऐसा किया है, तो मैं आज भी आपकी पति भक्त हूँ और उसी पतिव्रता सीता के अन्दर आज भी यही भक्ति है, जो पहले रावण के यहाँ पर रहकर की हुई थी। इस तरह से वह सीता उन कृतांतवक्र से कहती है, तो वह कृतांतवक्र रो-रो कर के वहाँ से वापस होता है। यह सब बातें जाकर के जब वह सीता की भावना को राम जी के पास में जा करके पहुँचाता है, कहता है। इधर सीता उस वनवास को पाकर के सोचती है, दुःखी होती है, तो वह विचार करती है-

वनवास क्यों दिया मुझे स्वामी ने बेकसूर।
सेनापति जाकर के सुनाना उन्हें जरूर॥
मेरे हरण पे क्यों करी, लंका पे चढ़ाई।
क्यों खून की नदियां, वहाँ जाकर के बहाई॥
लंकेश को बरबाद करा, मुझको छुड़ाई।
परित्याग करने को, करी थी मेरी रिहाई॥
हा कर दिया सदा को मेरे दिल में ये नासूर।
सेनापति जाकर के सुनाना उन्हें जरूर॥
प्रजा के मनोरंजन को जो त्यागा मुझे हे राम॥
जिन धर्म को मत त्यागना, कहना है मेरा काम॥

निंदा करें हैं धर्म की, ऐसे भी है तमाम॥
वह छोड़ने से ना मिले, शिव सुंदरी का धाम।
मुझको तो उनके प्रेम का, अब भी रहे सरूर।
सेनापति जाकर के सुनाना उन्हें जरूर॥
इस वक्त तो लाले पड़े हैं मेरी जान के।
जिन्दा रही तो दूँगी परीक्षा भी आन के॥
कोई भी नहीं दोष किया मैंने जान के।
वो जानते तो है सभी, पक्के हैं आन के॥
किस्मत में मेरी था यही, उनका भी क्या कसूर।
सेनापति जाकर के सुनाना उन्हें जरूर॥
विधना ने ये जोड़ी थी ऐसे वक्त मिलाई।
चाहते हुए भी चरणों में, रहने नहीं पाई॥
कैसे सहुँ उनका विरह यह भी ना बताई।
भगवान ले ले गोद में, अब तेरी दुहाई॥
'दासी' भी दुखित होके, कहती है ये जरूर।
सेनापति जाकर के सुनाना उन्हें जरूर॥
कहने को तो कह गई, रह रह मूर्छा आय।
सेनापति रोवे बहुत, सीता तजी ना जाय॥
हा कैसे रहेगी इस वन में, माता तो बहुत सुकुमारी है।
इस वन में ठहर नहीं सकते अच्छे अच्छे बलधारी है॥
सबसे ही बड़ा पाप है यह, करना दूजे की सेवकाई।
यदि सेवक आज नहीं होता, क्यों देता सती को दुःख भाई॥
सेवक की कीमत ही क्या है, स्वामी की आज्ञा का पालते हैं।
चाहे हो अच्छी, चाहे बुरी, आज्ञा को नहीं टालते हैं॥
मुड़ मुड़ कर देख जानकी को, सेनापति वापस चलता है।
और इधर सचेत हुई सीता, तन मन में दाह लग जाता है॥
रावण की कैद से छूट के भी, मुझको तो नहीं आराम मिला।
परित्याग किया क्यों राम मेरा हर बार यही आता है गिला॥

वन वन भटकती मैं फिरूँ, हाय राम तुमने ये क्या किया।
आता नहीं दिल को सबर, हाय राम तुमने ये क्या किया॥
अरमान दिल में था यही, रहूँ चरण शरण मैं आपकी।
किस्मत को यह मंजूर था, हाय राम तुमने ये क्या किया॥
दुख अपना मैं किससे कहूँ, आदिश का शरणा गहूँ।
विपदा के साथी हो तुम्ही; हाय राम तुमने ये क्या किया॥
तुम जानते हो गर्भ से, इस हाल में कैसी तजी।
आई नहीं तुमको दया, हाय राम तुमने ये क्या किया॥
तुम से पति पा करके भी, सदमों पे सदमे सह रही।
"दासी" को आशा दर्श की, हाय राम तुमने ये क्या किया॥
सहन करत श्री जानकी, क्या विधना के लेख।
गर्भवती बनकर फिरे, पशु तक रोवे देख॥
मर्यादा पुरुष श्री राम हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
जो स्वार्थ मोह को तजके, उपकार लोक का करके।
अपवाद का रखते ध्यान, पाते खुद में सम्मान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्री राम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।

भयानक अटवी में सीता जी एकाकी विचार करती है

सीता के जीवन में यह एक फिर से नई विपत्ति आई और यह उसके जीवन में दूसरी बार हुआ जब वह वन गमन करने के लिए फिर से उसके लिए एक वनवास हो गया। पहला वनवास तो उसका अपने पति के साथ था तो चिंता नहीं थी। अब की बार जो वनवास हुआ, वह पति के साथ नहीं है लेकिन उसके गर्भ में दो पुत्र हैं। उन पुत्रों के आसरे वह जी रही है और उन पुत्रों के पुण्य के साथ में अबकी बार उसका वनवास हुआ है। यह सोचती है सीता कि मेरे जीवन में कौन से मुहूर्त में मेरा विवाह हुआ? दुनिया के सारे ज्योतिषियों ने आकर के मेरी कुंडलियाँ मिलाई लेकिन किसी ने उस समय पर यह नहीं कहा कि तेरे जीवन में इस तरह से तुझे

बार-बार दुःख की प्राप्ति होगी। शायद मेरे कर्म का लेखा-जोखा कोई नहीं बता सकता और मैं सोचती रही कि मेरे लिए अब सुख मिलने का समय आया, अब मेरे दिन अच्छे आ गए लेकिन फिर भी मेरे साथ ऐसा हो गया। मेरी बात बनते-बनते क्यों बिगड़ जाती है और वह मन ही मन विचार करती है ..

बनते बनते बात बिगड़ जाती है क्यों,
जलते जलते बाती बुझ जाती है क्यों ?
बनते बनते बात बिगड़ जाती है क्यों,
जलते जलते बाती बुझ जाती है क्यों ?
होना था अभिषेक सुबह सिंहासन पर,
बैठा था निश्चिंत खुशी में सारा घर।
मेरा पति कल राजा होगा देखूँगी,
उनके राजमुकुट को लख सुधि खो दूँगी॥
पति के पीछे सीता वन जाती है क्यों?
बनते बनते बात बिगड़ जाती है क्यों,
जलते जलते बाती बुझ जाती है क्यों?
रावण मरण हुआ गृह आगमन हुआ,
पुत्रों का लख गर्भ राम मन चमन हुआ।
सोचा था अब गम की काली रात टली,
सीता का अपवाद सुने तब राम बलि॥
फिर से सीता एकाकी वन जाती क्यों ?
बनते बनते बात बिगड़ जाती है क्यों ?
जलते जलते बाती बुझ जाती है क्यों ?

पुण्डरीक पुर का राजा वज्रजंघ, वन में आता है

घर में रहो, जंगल में रहो, हर जगह पर अपना किया हुआ पुण्य और पाप ही हमको फल देता है। आज सीता अकेली वन में है, जिस जंगल में कोई नहीं आता। उस जंगल में उसके अपने दो पुत्रों के पुण्य के कारण से अचानक से वहाँ पर एक **पुण्डरीक नगरी का राजा** उस समय पर हाथी को पकड़ने

के लिए उस नगर अटवी में प्रवेश कर जाता है। वहाँ पर उस प्रवेश करने के बाद में वह किसी स्त्री का विलाप सुनता है, जो रो रही है। जिसकी सिसकियाँ पूरे वन में आ रही हैं लेकिन वहाँ पर एक भी मनुष्य, उसे कोई भी ढाढस दिलाने वाला नहीं है। उस समय पर वह राजा अचानक से उस सीता के पुण्य से, उन दोनों पुत्रों के पुण्य से, वहाँ पहुँच जाता है और उस समय पर उस सीता के पास पहुँच करके वह क्या कहता है? यह बात आपके लिए जरूर सुनना है -

पुण्डरीक पुरी का राजा जो, उस वन में उसी समय आया।
हाथी पकड़ने सेना के सहित, वज्रजंघ नाम सुंदर काया॥
सम्यकदृष्टि पर उपकारी, सीता की रुदन सुन पाया है।
दो चार सैनिकों को भेजा, देखो यहाँ कौन सताया है॥
सैनिक जब चलकर आए हैं, उन्हें देख सिया डर जाती है।
आभूषण देती है उतार, रो रो करके बिलखाती है॥
इतने में वज्रजंघ आए, करुणा से हृदय भर जाता है।
हे बहन कौन; कहाँ से आई, सब हाल जानना चाहता है॥
मैं रामदेव की रानी हूँ, लक्ष्मण देवर बलधारी है।
भामण्डल की प्रिय बहन, मुझे सब कहते जनकदुलारी है॥
है नाम जानकी सीता भी, अब तो निरभागिन कहलाई।
वनवास हरण रावण द्वारा, अब तक की बातें बतलाई॥
सुनकर राजा सीता से कही, तुम धर्म की बहन हुई मेरी।
अब शीघ्र चलो तुम संग मेरे, रक्षा प्रतिपाल करूँ तेरी॥
यह सुनकर सीता हर्ष भरी, मानो भामण्डल भाई है।
विश्वास हृदय धारण करके, संग जाने की ठहराई है॥
मणि जड़ित पालकी में लेकर, राजा वन से चल देते हैं।
जो राव प्रजा मार्ग में थे, दे भेंट सीया से मिलते हैं॥
वज्रजंघ ने नगरी सिंगारी, सब नारियां स्वागत करती हैं।

सीता की सेवा तन मन से, हर्षित हो हो कर करती हैं॥
जो द्रव्य भेंट में आता है, सीता सब धर्म में देती है।
मन धर्म ध्यान में देकर के, दुःख अपने को कम करती है॥

वह वज्रजंघ नाम का पुण्डरीक नगरी का राजा जब उस अटवी में अचानक आता है और वहाँ उस सीता के पास पहुँचता है और सीता को देख करके उससे उसका समाचार सुनता है, तो उसका हृदय करुणा से द्रवित हो जाता है। उसे अपनी धर्म बहन कह करके वह निवेदन करता है कि तुम मेरे नगर में चलो। मेरे राज्य में चलो, वहीं पर तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा। ऐसा कह करके वह सीता को बड़े सम्मान के साथ में अपने नगर में लाता है और सीता की हर तरह से प्रजा के द्वारा सेवा और उसके लिए अनेक तरह का सम्मान प्रजा के द्वारा करवाता है। यह सब देख कर कि सीता का थोड़ा सा दुःख दूर हो जाता है।

इधर सिया पुन्डरीक पुर, पहुँच गई फिलहाल।
उधर अवध सेनापति, जाय सुनाया हाल॥
सुनो स्वामी सिया को, ऐसे वन में छोड़ आया हूँ।
मनुष्य तक नहीं का संचार, यह मैं देख आया हूँ॥
कहाती सिंहनाद अटवी, भयानक है बहुत भारी।
पशु-पक्षी हजारों ही, बहुत से सिंह बलधारी॥
कहा माता ने जो वह आपसे, कहने को आया हूँ।
सुनाया हाल रघुवर को, दुखीत हो मूर्छा खाई।
हुआ जब होश फिर तो, याद सीता की बहुत आई॥
हाय यह क्या किया मैंने, वज्र हृदय हुआ मेरा।
गर्भ के भार से सीता, हुआ वन विच क्यों डेरा॥
कर्म के फल ने आ घेरा, यही विश्वास लाया हूँ।
कहो सेनापति ! सचमुच की वन में छोड़ आए हो॥
मौन सेनापति धारा, आप कह कर लजाए वो।
दुःखी होकर विलखते हैं, तभी फिर मूर्छा आई॥

लखन आ होश में लाए, ये क्या करते हो रघुराई।
ढूँढ़ माता को लाएँगे, यह "दासी" से बताया हूँ॥

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम दुःखी हो उठते हैं

जब सेनापति ने आकर के श्री राम को सीता के बारे में समाचार दिया कि आपके कहे अनुसार में उनसे निर्जन अटवी में छोड़ करके आया हूँ जहाँ पर मनुष्य का कोई संचार नहीं होता। उस समय पर वह श्रीराम दुःखी होकर के बार-बार बेहोश होते हैं, बार-बार गिर पड़ते हैं। कहते हैं कि यह मेरा वज्र हृदय क्या-क्या करवा रहा है? लोक अपवाद के कारण से, लोक मर्यादा का पालन करने के लिए, मुझे यह क्या-क्या करना पड़ रहा है? ऐसा वह अपने आप में, अपने को दुःखी बनाते हुए कोसते हैं, उस समय पर लक्ष्मण जी उन्हें संभालते हैं कि हे भगवन्! हे प्रभु! हे रघुराई! यह आप क्या कर रहे हो? आपके लिए इस तरह से तड़पना, अपनी छाती पीटना अच्छा नहीं लगता।

क्या समझाऊँ आप को, ज्ञानी हो तुम वीर।
होनहार टलती नहीं, हृदय धारों धीर॥
कर्मों से ही ये निमित्त मिले, टाले से नहीं टलते भाई।
और कर्म ही रक्षा करते हैं, पर्वत से चाहे गिर जाई॥
आकाश से नीचे आन गिरे, या सिन्धु में भी पड़ जाये।
यदि आयु कर्म सहाई है, बिन मौत न कोई मर पाये॥
माता की रक्षा भी होगी, चाहे वन बीच छोड़ आये।
यदि आप चाहते हैं स्वामी, कर के तलाश उन्हें लाये॥
समझाया लक्ष्मणजी ने बहुत, तब राम को थोड़ा धैर्य हुआ।
अब पुण्डरीकपुर चलो चलें, जहाँ पर लव कुश का जन्म हुआ॥

अनंगलवण और मदनांकुश का वर्णन

सीता के गर्भ से जब **लव, कुश** का जन्म होता है, तो दो पुत्रों का वह जन्म महोत्सव पुण्डरीक पुर का वह राजा बहुत आनंद और उत्साह के साथ मनाता है। उन पुत्रों के उन रूप को देख करके उनका नाम वह लव और कुश

जो दुनिया में कहने को आता है, वे तो उनका एक छोटा सा nickname है। उनका पूरा नाम तो **अनंग लवण** और **मदनांकुश** यह उनका पूरा नाम रखा गया था। अनंगलवण का वह लव शब्द कहने में आया और मदनांकुश का केवल कुश शब्द लोक में बोलने में आया, इसलिए वह लव और कुश के नाम से प्रसिद्ध हुए। वह दोनों पुत्रों का जब धीरे-धीरे उनका समय बीता, बड़े हुए तो उन्हें सिद्धार्थ नामक गुरु के पास में शस्त्र विद्या में निपुण करने के लिए उन राजा ने उनके लिए वह शस्त्र विद्या दिलवाई। उन गुरु के माध्यम से उन्हें हर तरह की कलाओं में प्रवीण किया गया। युवावस्था प्राप्त करके व तेजस्वी महा प्रतापी राम और लक्ष्मण की तरह ही महा पराक्रमी वह योद्धा के रूप में सामने आए और फिर उसके बाद में कहानी किधर जाती है? यह आपको आज तो नहीं, अब कल सुनने को मिलेगी। आपने सीता की भी कहानी अभी अधूरी है और कल यह सीता और राम की कहानी आपके लिए पूरी की जाएगी क्योंकि आपके कहे अनुसार आज यह दसवाँ दिन है। आप सभी लोगों ने बड़े धैर्य के साथ में इस कहानी को सुना है। आपके मन में अनेक तरह के जो भ्रम होंगे, प्रश्न होंगे उनका समाधान अगर आप इस कहानी को बार-बार सुनेंगे तो अवश्य होगा। ऐसी भावना के साथ में बोलिए श्री राम प्रभु भगवान की जय।

गुरु वन के वासी नगर जगावन आये।
पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की सुनिए कहानी॥

सीता की अग्नि परीक्षा

श्री राम, लक्ष्मण, सीता का अयोध्या आगमन और सीता का पुनः वनवास

श्री राम प्रभु की यह कथा विगत 10 दिनों से आप लोग बड़े आनन्द भाव के साथ एकाग्रचित्त होकर के सुन रहे हैं। जगत के सभी नर-नारी जो श्री राम के प्रति अपनी आस्था रखते हैं, वे सब तरह के सम्प्रदाय जाति वेदों को भुलाकर के श्री राम की कथा सुनते हैं। यह श्री राम का हर अन्तरात्मा में वास होना होता ही है इसलिए उनको राम कहा जाता है। जो हर आत्मा में रमे उसका नाम राम है। जिनके जीवन चरित्र को सुनकर के हर आत्मा अपने अन्दर एक पवित्रता महसूस करती है और जिनके जीवन चरित्र को सुनकर के लोगों के लिए अनेक प्रकार के इष्ट फलों की प्राप्ति होती है। ऐसी इस राम कथा का श्रवण आप लोगों ने विगत 10 दिनों से सुन रखा है, आज यह 11वाँ दिन है। रावण का देहान्त हो चुका है। उसकी कथा समाप्त हो चुकी है। श्री राम का अपनी अयोध्या में पुनः आगमन हुआ। सीता, लक्ष्मण सभी अपने नगर में पुनः आए, पुनः राजपाट सम्भाला और यह सब कुछ होने के बाद भी सीता के साथ फिर कुछ कर्म के वंश से ऐसा घटित हुआ, जो किसी को इष्ट नहीं था लेकिन कर्मों के आगे कोई कुछ नहीं कर सकता है। हर जीवात्मा इस संसार में अपने कर्म स्वयं अर्जित करता है और स्वयं ही उन कर्मों का फल जन्म जन्मान्तरों तक भोगता है। कर्म के उन फलों के आगे स्वयं राम भी असमर्थ होते हैं और सीता भी असमर्थ होती है। कर्म के लिए जब हम विश्वास में इस तरह से लाते हैं कि यह कर्म ही हमें हमारा फल दे रहे हैं तो दोषारोपण का कहीं पर भी कोई अवकाश नहीं रह जाता है। यही वजह है सीता जब पुनः वन में गई तो वह रोती तो रही, बिलखती तो रही लेकिन उसे अपने कर्मों के फल को भोगने का श्रद्धा था, विश्वास था कि राम ने कुछ मेरे साथ बुरा नहीं

किया। मेरा ही कर्म ऐसा जो मेरे लिए शुद्ध शील होने पर भी मुझे अपवाद का भागी बनना पड़ा। इस तरह का विचार करते हुए उसे उस जंगल में भी उसका पुण्य काम कर रहा है। उसका पूर्व अर्जित धर्म काम कर रहा है। उस धर्म के कारण से उचित सहयोग भी मिल रहा है। किन्तु कर्म भोगने के लिए बाधित भी होना पड़ रहा है।

लव-कुश का जन्म राजा वज्रजंग के महल में हुआ

उसे एक राजा मिल गया और उसने सीता को बहन की तरह अपने घर में लाकर के उस गर्भवती का पालन किया। जब उसके दो पुत्रों की उत्पत्ति हो गई तो वह अपने सब दुःख भूल कर के उन पुत्रों के साथ में वहाँ उस पुण्डरीकरी नगरी में उस राजा के घर में ही, महल में ही रहने लगी। राजा ने उन पुत्रों को अच्छी तरह से पालन-पोषण किया, उनका विद्या अध्ययन कराया उन्हें शस्त्र विद्या में निपुण किया। सिद्धार्थ नामक गुरु के पास में उन लव कुश ने शस्त्रों की एक विशिष्ट विद्या अर्जित की। उस विद्यार्जन के बाद में जब उनका वयस्क अवस्था का समय आता है, वे बड़े होते हैं। उस समय पर उनके उस यौवन को देख कर के राजा वज्रजंग उनका विवाह करने के लिए अपना मन बनाते हैं।

लव-कुश का विवाह सम्पन्न

उस समय पर उनको यौवन सम्पन्न देखकर के लव का विवाह हुआ 32 कन्याओं के साथ और कुश का विवाह करने के लिए एक पृथ्वीपुर के राजा पृथु की पुत्री जिसका नाम कनक माला था उसके लिए दूत भेजा गया। उस दूत ने जब इस तरह का निवेदन और राजा पृथु से किया तो उनके मन में विचार आया कि मैं अपनी पुत्री को दे तो दूँ लेकिन पहले यह तो पता हो कि जिनके लिए यह पुत्री दी जा रही है वह किस कुल के हैं? पहले के लोग कुल धर्म पूछा करते थे। अनजान कुल में अपनी पुत्री का विवाह नहीं करते थे। पूछा गया! उस कुल को बताने के लिए वह राजा वज्रजंग को भी गुस्सा आया और लव-कुश को भी गुस्सा आया तो यह सब युद्ध करके अपना

कुल का परिचय देने के लिए उस राजा पृथु के पास पहुँच गए। पृथ्वीपुर का वह राजा पृथु युद्ध करने लगा और इन लव कुश ने उसे युद्ध करके जब उसे हरा दिया तब उन्होंने कहा यही मेरा कुल है। जो वीरों के कुल में उत्पन्न होते हैं, उन्हें अपने कुल का परिचय इसी तरह देना पड़ता है। इस तरह से जब पृथु उनसे क्षमा माँग ली तो अपनी पुत्री कनकमाला का विवाह भी उनसे करा दिया। इस तरह से उनके शौर्य के, उनके वीर्य के उनके पराक्रम के चर्चे दुनिया में होने लग गए। जब एक दिन यह लव-कुश वन में क्रीड़ा कर रहे थे तो देवों से सम्मानित नारद जी आ पहुँचे।

नारद जी द्वारा लव-कुश को राम लक्ष्मण का परिचय देना

रामायण के अन्दर नारद जी की भी अपनी एक बड़ी भूमिका है। समय-समय पर आ कर के उस कथा को आगे बढ़ाने का काम ऐसा लगता है, नारद जी ही किया करते हैं। नारद जी जब आए तो उन्होंने देखा कि एक, दो पुत्रों ने इतने बड़े राजा के छक्के छुड़ा दिए। युद्ध में राजा को माफी माँगनी पड़ गई तो उन पुत्रों से बड़े प्रसन्न हुए और प्रसन्न होकर के उन्होंने बड़े आत्मीय भाव के साथ में उन्हें आशीर्वाद दिया। पुत्रों! तुम्हारा पराक्रम, तुम्हारी विभूति, तुम्हारा शौर्य, तुम्हारा प्रभाव राम-लक्ष्मण की तरह ही जगत में विख्यात हो। जब उन पुत्रों ने पहली बार राम और लक्ष्मण का नाम सुना तो वह कहने लगे भाई! यह राम और कौन है? हमारी तुलना राम और लक्ष्मण से क्यों की जा रही हैं? यह राम लक्ष्मण कौन हैं? कहाँ रहते हैं? किस कुल में उत्पन्न हुए हैं? क्या इनके विशेष गुण हैं? जिसके कारण से नारद जी हमसे कहते हैं कि आप भी उन राम और लक्ष्मण की जैसी विभूति को प्राप्त हो। ऐसा सुनकर के उन नारद जी ने ही उन राम और लक्ष्मण की सारी कहानी लव और कुश को सुना डाली। जब लव और कुश ने वह सारी कहानी सुनी कि राजा दशरथ के चार पुत्र हैं। बड़े पुत्र राम का विवाह पुत्री सीता से हुआ। बाद में कैकई के वचन को निभाने के लिए राम जी ने वनवास स्वीकार किया, भरत को राजगद्दी दी गई और यह सब सुनने के बाद में वह सीता का हरण भी हुआ। सीता को उस लंका से

लेकर के आए। युद्ध में रावण का वध हुआ और पुनः अपने अयोध्या में जा पहुँचे और उसके बाद में जब नारद जी ने कहा कि वह सीता कुछ दिन ही उस अयोध्या में रहने के बाद में फिर से उसका प्रजाजनों ने कुछ अपवाद कर दिया। जिसके कारण से राम को उन्हें त्याग करना पड़ा। उस लोक अपवाद के कारण से उन्होंने उस सीता को फिर से वन में भेज दिया। यह बात जब उन लव और कुश ने सुनी तो उन्होंने कहा कि वैसे तो श्रीराम ने सब अच्छा किया लेकिन यह बात अच्छी नहीं लगी। श्री राम की यह बात न्याय प्रियता को नहीं बताती है और वह राजा हैं, यह बात ठीक है। एक पत्नी की खातिर उस सीता ने उन राम की बात को मान लिया। पति के आदेश को मान लिया लेकिन उन्होंने सीता के साथ अन्याय किया। लव कुश ने कहा राजा को सब की बातें सुनना चाहिए लेकिन सब की बातों में आ नहीं जाना चाहिए। यह राजा के गुण होते हैं और आप जिन राम की तारीफ कर रहे हैं उन्होंने झूठ और सच को परखे बिना, जाँचे बिना और कुछ पता लगाए बिना उन्होंने ऐसा निर्णय कैसे ले लिया? जब उन्हें खुद भी पता था कि सीता शीलवती है और अपनी शील की रक्षा करते हुए ही वह लंका में रही है। यह जानते हुए भी उस सीता को पुनः वन में भेज देना यह बात नीतिज्ञता की बात नहीं है। यह कुल वालों की रीति नहीं है। यह अच्छे क्षत्रिय राजा का दूरदर्शी पना नहीं है। यह लव-कुश नारद से कहने लगे और फिर लव-कुश के मन में आया ऐसे अन्यायी राजा को दण्ड देना भी नीति प्रिय राजा का काम होता है। और वे लव कुश उन राम लक्ष्मण को दण्ड देने के लिए मन में विचार करते हैं कि ऐसे राजा दण्ड देने योग्य है। जिन्होंने अनीति की है, सीता को बिना सोचे समझे घर से बाहर निकाल दिया। सीता को न्याय हम दिलाएँगे और राम और लक्ष्मण से हम युद्ध करेंगे।

युद्ध का समाचार सुनकर सीता दुःखी हुई

यह जब विचार उनके मन में आ जाता है और वह लव और कुश वास्तव में युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। राजा वज्रजंग से कहते हैं- दूरदराज के अपने जितने भी देशों में रहने वाले बड़े-बड़े राजा हैं, उन सब राजाओं को

बुलाओ। उन सब की सेना के साथ में हम अयोध्या चलेंगे और उन राम और लक्ष्मण पर चढ़ाई करेंगे। जब यह बात सीता ने सुनी तो बहुत दुःखी हो गई और नारद जी से कहने लगी यह आप ने क्या कर दिया? अच्छे भले बच्चे बड़े हो रहे थे, जीवन जी रहे थे, आपने फिर से यह युद्ध करने की तैयारी करवा दी। ये बच्चे जब अपने पिता को ही बैरी मानने लग जाएँगे तो फिर कैसे संसार चलेगा? नारद जी थोड़े से तिलमिला गए, विचलित हो गए। कहने लगे लग रहा है कुछ मैंने गलत कर दिया लेकिन आप निश्चिन्त रहो जो भी होगा अच्छा होगा, कुछ भी गलत मैं होने नहीं दूँगा। सीता को इस तरह का वह विचार दे करके नारद जी तो चले गए और वह सीता फिर से रोने लग गई। लव कुश को समझाने लग गई बेटा! ऐसा युद्ध का विचार बड़े-बड़े राजाओं के साथ में छोटी-छोटी बातों को लेकर कि नहीं किया जाता। अभी तुम बाल हो, तुम्हारा पराक्रम केवल एक राजा पृथु को जीतने से नहीं हो जाएगा। वह बहुत बड़े नारायण और बलभद्र जैसे महापुरुष हैं। उनसे युद्ध लड़ना अच्छी बात नहीं और वह सीता ऐसा कहते-कहते रोने लग गई, विलाप करने लग गई, दुःखी हो गई। उस समय पर वह लव और कुश पूछते हैं कि यह राम और लक्ष्मण की बात को लेकर के आप इतना दुःखी क्यों हो गए और लव कुश को कुछ पता नहीं है। तब वह सीता कहती है कि यह राम और लक्ष्मण जिसे तुम युद्ध करने जा रहे हो, यही यह राम जी तुम्हारे पिता हैं और वह लक्ष्मण जी तुम्हारे चाचा हैं। इन से युद्ध करने जा रहे हो, यह सुनकर के मुझे बहुत ही दुःख हो रहा है। वह दुख इसलिए भी हो रहा है कि क्या अब यह सीता और भी कुछ अशुभ देखना चाहती है? अपने जीवन में इतना तो मैंने सब कुछ देख ही लिया, अब मुझे और क्या दुःख भोगने को बचा है कि मेरे बेटे भी अब युद्ध करने के लिए जाएँगे, पिता से युद्ध करेंगे और यह भी मुझे अपनी आँखों से देखना पड़ेगा। ऐसा विचार करते हुए वह लव कुश को समझाती हैं लेकिन वह लव-कुश भी अपने पिता की तरह दृढ़ संकल्पित हैं और वह भी उस समय पर कहते हैं- माँ इतनी सी बात के लिए दुःखी होना अच्छी बात नहीं। तुम्हें अपने पुत्रों की वीरता पर भी गर्व होना चाहिए और अपनी पुत्रों के पराक्रम

पर भी विश्वास होना चाहिए। यह बात मैंने पहले से ही मन में सोच ली है किस सीता के प्रति राम जी ने अन्याय किया है और सीता को उन्होंने वन में बिना विचारे छोड़ दिया, यह उनकी नीतिज्ञता का परिचय नहीं है और ऐसे अन्यायी राजा के लिए मैं जरूर दूँगा। उनके प्रति मेरे अन्दर शत्रुता का भाव है लेकिन अगर आपने कहा है कि वह मेरे पिता जन हैं, मेरे गुरु जन हैं तो मैं आपसे इतना विश्वास दिलाता हूँ कि मैं बिना युद्ध किए हुए उन्हें अपना परिचय नहीं दूँगा। मैं वीरों का पुत्र हूँ तो मैं उनसे यह नहीं कहूँगा कि मैं आपका पुत्र हूँ। उन्हें भी उस पुत्र की पहचान उसी वीरता के साथ होगी। तभी हमारा स्वाभिमान हमारे लिए उन पिता से मिलाने के लिए जब सामने आएगा तभी हमें अच्छा लगेगा। हमने संकल्प कर लिया है कि युद्ध तो होगा लेकिन उस युद्ध में हम इतना विश्वास दिलाते हैं कि हम ऐसे कोई भी बाण अस्त्र-शस्त्र नहीं छोड़ेंगे जिससे कि उनका शरीर छलनी हो, उनका शरीर घायल हो, यह विश्वास दिलाते हैं लेकिन युद्ध होगा। यह युद्ध इसलिए भी होगा कि हम कभी भी उनके सामने दीनता के वचन नहीं बोल सकते हैं कि हम आप के पुत्र हैं इसलिए मुझे स्वीकार कर लो। अगर उन्होंने स्वीकार नहीं किया तो फिर मेरा क्या स्वाभिमान रह जाएगा। इसलिए युद्ध होना तो निश्चित है और ऐसा कह के वह युद्ध की तैयारी होती है। सीता चुप रह जाती है और वह जिनेन्द्र भगवान की वन्दना करके अपना धर्म ध्यान करते हुए सब शान्ति हो, मंगल हो, ऐसा भाव करके अपने ही घर में बैठी रह जाती हैं। इधर युद्ध की तैयारी करते हुए लव और कुश अयोध्या पहुँचते हैं। अचानक से फिर से राजाओं की फिर से राजाओं की सेनाओं की राजाओं के दूतों की फिर से अयोध्या में आने की खबर सुनकर के राम लक्ष्मण सब तैयार होते हैं कि यह कौन से नए राजा आ गए जो अब हम से युद्ध करने के लिए आ रहे हैं?

राम, लक्ष्मण और लव-कुश में युद्ध और फिर पिता-पुत्र का मिलन

लेकिन नारद ने भामण्डल के पास जाकर के यह बता दिया था कि इस युद्ध में सीता को भी ले कर के आ जाना ताकि अगर कोई आशंका दिखाई दे किसी तरह की तो यह युद्ध उसी समय पर रुक सके। भामण्डल जी

सीता के पास गए और सीता को मना करके कि मैं आपके कहे बिना राम का लक्ष्मण का कोई ऐसा परिचय नहीं करा आऊँगा, उनके पास नहीं ले जाऊँगा लेकिन दूर से आपको यह युद्ध जरूर देखते रहना है कि यह हो क्या रहा है? इधर राम जी ने सुग्रीव आदि सभी वानर वंशी विद्याधरों को बुलाया और युद्ध करने के लिए तत्पर हुए और उसमें हनुमान जी भी शामिल थे और वह सब विद्याधर वह सभी सुग्रीव हनुमान आदि बड़े-बड़े योद्धा वह युद्ध करने के लिए निकल पड़े। वह युद्ध होने लग जाता है। बहुत देर तक राम का युद्ध लव के साथ होता है और लक्ष्मण का युद्ध कुश के साथ होता है। धीरे से जा करके नारद जी ने सुग्रीव को बता दिया कि लव-कुश कौन हैं और हनुमान जी को भी बता दिया कि लव-कुश कौन हैं? इसलिए सुग्रीव और हनुमान जी वहाँ लड़ने से शान्त हो गए। बस! राम और लक्ष्मण अनजाने बने हुए उन लव और कुश से लड़ रहे हैं। राम लव के ऊपर बाण छोड़ते हैं, लव राम के ऊपर बाण छोड़ते हैं कुश लक्ष्मण से भिड़े हुए हैं और इस तरह से जब बहुत देर तक यह लड़ाई होती रही, बहुत देर तक यह लड़ाई का कोई अन्जाम नहीं निकलता है तो लक्ष्मण जी अपना वह चक्र रत्न याद करते हैं। इतनी बात बढ़ गई। जब वह चक्र रत्न उन्होंने याद किया और चक्र रत्न भी उन्होंने उसके ऊपर छोड़ दिया तो लोग उस समय पर फिर आश्चर्यचकित हो गए कि यह क्या होने वाला है? उस समय पर जब वह लक्ष्मण ने चक्र रत्न फेंका और कुश के ऊपर भी वह चक्र रत्न का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह चक्र रत्न वापस लौट कर के आ गया तो राम और लक्ष्मण उस समय पर चिन्ता में पड़ करके इधर-उधर देखते हैं। नारद जी खड़े हैं, सुग्रीव खड़े, हनुमान खड़े हैं। कहते हैं कि क्या ये कोई नए नारायण और बलभद्र पैदा हो गए। क्या केवली भगवान की वाणी झूठी हो जाएगी कि एक बार में एक ही नारायण और एक ही बलभद्र होते हैं। यह दूसरे कौन से अपराजित हमारे सामने योद्धा आ गए क्योंकि जो चक्र रत्न होते हैं वह कभी अपने वंश के लोगों पर नहीं चला करते। कोई भी ऐसी दिव्य शक्तियाँ होती हैं वे अपने वंश के ऊपर नहीं चला करती हैं।

यही बात आपको भरत बाहुबली युद्ध में भी पता होगी। कोई भी चक्र कभी भी अपने भाई के, अपने कुल के अग्रजों पर नहीं चला करता। उस पर कोई प्रभाव नहीं दिखाता है। ये चक्र रत्न की विशेषताएँ होती हैं। यह बात जब राम और लक्ष्मण वहाँ पर आश्चर्य चकित हो करके इधर-उधर के लोगों से पूछते हैं और देखते हैं कि भाई तुम लोग तो सब बिल्कुल ढीले पड़ गए। युद्ध क्यों नहीं कर रहे हो? सारी सेना खड़ी है और मैं अकेला युद्ध कर रहा हूँ। सब मुस्कुरा कर के उस समय पर नारद जी विशेष रूप से रामजी के पास, लक्ष्मण जी के पास जाकर के कहते हैं-

केवली भगवान के वचन जिन वचन कभी भी अन्यथा नहीं होते और लक्ष्मण जी से कहते हैं- यह जिनके ऊपर तुम चक्र चला रहे हो, यह तुम्हारे भतीजे हैं और राम जी से कहते है यह तुम्हारे बेटे हैं इसलिए इनके ऊपर यह चक्र अस्त्र-शस्त्र नहीं चल सकते हैं। ऐसा सुनकर के उन सीता के पुत्रों ने जब यह देखा कि राम और लक्ष्मण ने हथियार डाल दिए हैं तब वह दोनों पुत्र जाकर के राम और लक्ष्मण के चरण स्पर्श करते हैं और वह राम लक्ष्मण उन दोनों पुत्रों को गले लगा लेते हैं। उन्हें ससम्मान अपने नगर में ले जाते हैं और सीता दूर से ही उन पिता-पुत्र का मिलाप देखती हैं, प्रसन्न होती हैं लेकिन वह वापस उन्हीं वज्रजंग राजा के साथ में उसी पुण्डरीक पुर नगरी में वापस आ जाती है क्योंकि राम की आज्ञा के बिना सीता उनके पास नहीं जा सकती।

सीता में पृथ्वी समान सहनशीलता है

यह नारी का कितना बड़ा धैर्य है और इसलिए शायद यह सुना जाता है कि नारी सब कुछ सह लेती है लेकिन कुछ कहती नहीं है। उस नारी की यह गरिमा आज भी अनेक नारियों में इस तरह से सहनशीलता के मामले में दिखाई देती है कि हमेशा नर से ज्यादा नारी सहनशील होती है। इसीलिए उस नारी को क्षमा की पृथ्वी की मूर्ति कहा जाता है। जैसे पृथ्वी सहनशील होती है, सहिष्णु होती है, ऐसी नारी के अन्दर भी बहुत क्षमता होती है। यह क्षमता जब सीता के अन्दर लोगों को दिखाई दी तब उस

सीता को चाहने वाली कई नारियाँ आनन्दित हो उठी कि कभी भी अपने स्वाभिमान की रक्षा अगर की जाए तो सीता की तरह की जाए। अगर पति ने हमारा किसी भी तरह से निष्कासन कर दिया है तो जब तक वह पति हमको न बुलाए तो तब तक मैं उनके घर पर भी नहीं जाऊँगी यह भी नारियों का सम्मान और सीता ने सब को प्रदान किया। यह स्वाभिमान है और यह क्षत्रिय वंश की ऐसी नारियाँ इन सीता को अपना आदर्श मान करके आज भी चलती हैं। जब सीता अपने नगर में वापस लौट गई, कुछ दिनों के बाद में फिर हनुमान जी, सुग्रीव जी जिनको यह सब पता था कि सीता का विरह यह आखिर कब तक चलेगा? उन्होंने जा कर के फिर राम जी से कहा कि आपने लोक अपवाद के कारण से उस सीता को छोड़ तो दिया। क्या इसका कोई समाधान नहीं है? क्या अब आप उसका ग्रहण नहीं कर सकते? यह कब तक आप उस सीता का त्याग किए रहेंगे? जब आपने अपने पुत्रों को अपने पास बुला लिया तो सीता को अपने पास क्यों नहीं बुला सकते हैं? यह कौन सा आपने अपना वज्र का हृदय बना लिया है? यह विचार जब हनुमान जी ने, सुग्रीव जी ने राम जी के पास रखा तो उस समय पर वह रामजी कहने लगे मैं मानता हूँ कि सीता पवित्र है, मैं मानता हूँ कि सीता निर्दोष है। लेकिन उस सीता को यहाँ रहने के लिए, मुझे वापस बुलाने के लिए प्रजा जनों की साक्षी में उसे कुछ न कुछ परीक्षा देनी पड़ेगी तब मैं उसको स्वीकार कर पाऊँगा। यह बात हनुमान जी ने जाकर के सीता जी को कही तो सीता जी कहती है- मैं हर परीक्षा देने को तैयार हूँ। इसी बात को लेकर के वह हनुमान जी सीता को लेकर के पुनः अयोध्यापुरी में पहुँचते हैं और वहाँ पर उस महेन्द्र उद्यान में जो महेन्द्र उदय नाम का उद्यान है वहाँ पर सीता रात्रि व्यतीत करती है। दूसरे दिन जब सीता का राज्यसभा में प्रवेश होता है तो वहाँ पर सभी राजा बैठे होते हैं, राम बैठे होते हैं और सीता जैसे-जैसे राम के पास जाती हैं तब भी श्रीराम की दृष्टि में प्रसन्नता नहीं आती। सीता सोचती है, इनका मन अभी भी उदासीन है, विरक्त है मुझसे, मैं तो हर्षित हो करके इनके पास आई हूँ और यह अभी भी मुझे उस तरह का सम्मान नहीं दे रहे हैं जो एक रानी के

लिए देना चाहिए। इनके मन में अभी भी मुझसे नाराजगी है और इस तरह का वह मन में विचार करते-करते वहाँ रुक जाती है। फिर कहती है कि मुझे इनके निकट अपनी इच्छा से नहीं जाना और जब वह जाते-जाते रुक जाती है तो फिर उस समय पर हनुमान जी पुनः दूत बनकर के राम जी के पास पहुँचते हैं।

सीता की अग्नि परीक्षा

सीता सामने खड़ी है, वह आना चाहती है लेकिन आपकी आज्ञा के बिना आप के निकट नहीं आएगी। बोलिए क्या करना है? जब सीता सामने खड़ी थी तब राम बड़ी गम्भीरता से अपने आपको अपने मन को सम्भालते हुए बोले, मैं जानता हूँ तुम निर्दोष हो लेकिन यह लोक, यह जगत बुराइयाँ ढूँढता है, अपवाद करता है, कुटिल चित्त वाला यह पूरा लोक होता है। इसकी कुटिलता दूर करने के लिए इसको विश्वास दिलाने के लिए, तुम्हें कुछ इनकी शंका को दूर करने के लिए तुम्हें कुछ करना पड़ेगा। ऐसे वचन सुनकर के वह सीता कहती है, मैं हर तरह की परीक्षा देने को तैयार हूँ। बताइए क्या करना है? आप कहो तो मैं जहर का प्याला पी लूँ और आप कहो तो मैं किसी पर्वत से कूद पड़ूँ, आप कहो तो मैं किसी अग्नि में भस्मसात हो जाऊँ। बताओ? इस लोक को प्रसन्न करने के लिए, इस लोक को विश्वास में लाने के लिए कौन सी परीक्षा देना है? मैं आपके ऊपर छोड़ती हूँ। इस सीता के विश्वास भरे वचन सुनकर के राम जी फिर विचलित हुए और विचार करने लगे कि इस सीता को अब क्या कहें? क्या करने को कहें? मन में विचार करते-करते उन्होंने अपने मन में ही यह भाव कर लिया कि सीते तुम्हें लोक को अपना शील का विश्वास दिलाने के लिए अग्नि परीक्षा देनी चाहिए। सीता ने बड़ी प्रसन्नता के साथ में यह स्वीकार कर लिया कि मैं अग्नि परीक्षा दूँगी, आप तैयारी कीजिए। उस अग्नि परीक्षा देने के लिए जब सीता ने अपना विश्वास सबके सामने रख दिया और अपनी स्वीकारता सबके सामने रख दी, उस समय पर सभी लोग चिन्तित हो गए। हनुमान जी चिन्तित हो गए, सुग्रीव चिन्तित हो गए, लक्ष्मण

चिन्तित हो गए कि अग्नि का काम तो जलाना है। उसमें तो कोई भी जाता है, वह जलता है। उसे क्या पता कि उसके अन्दर क्या डाला जा रहा है? यह अग्नि परीक्षा यह सुकुमारी सीता कैसे देगी? यह सब के लिए चिन्ता का विषय बन गया। राम ने कहा कि उसी महेन्द्र उद्यान में एक अग्नि वेदी तैयार की जाए और उस अग्नि वेदी में वह ईंधन प्रज्ज्वलित किया जाए, जिसके माध्यम से वह अग्नि सब को स्पष्ट रूप से दिखाई दे। श्रीराम के कहे अनुसार 300 हाथ लम्बी चौड़ी और गहरी एक वापिका के रूप में वह अग्नि वेदी तैयार की गई। जिसमें तमाम ईधन जिसके अन्दर भरा गया, अनेक प्रकार के चन्दन आदि की लकड़ियाँ उसके अन्दर रखी गई और उस ईंधन को भरने के बाद में वह अग्नि वहाँ पर प्रज्वलित की गई। उस अग्नि को प्रज्वलित करते हुए देख कर के सब लोग उस समय पर अपनी साँसों को थाम करके यह देख रहे हैं कि यह क्या होने जा रहा है? राम जी बिल्कुल अपनी प्रतिज्ञा में दृढ चित्त हैं और सीता भी उनकी बात को सहर्ष स्वीकार करके उन्हें उस अग्निपरीक्षा को देने के लिए वह तैयार है। कोई रोकना भी चाहे तो किसको रोके? राजा जब आज्ञा दे चुका होता है तो उसके बाद में राजा अपने उन वचनों को वापस नहीं ले सकता। उसमें किसी भी प्रकार की अब कोई भी बदलाहट नहीं की जा सकती और उस राजा के निर्णय को अटल जानते हुए सीता उस अग्निकुण्ड के समीप धीरे-धीरे आने लग जाती है। जिस अग्निकुण्ड में बहुत सारा घी डाला हुआ है। जिस अग्निकुण्ड में अनेक सुगन्धित लकड़ियाँ पड़ी हुई हैं और वह इतना बड़ा अग्निकुण्ड बनाया गया है जिसे देख कर के एक सामान्य इंसान दहल जाए और उस अग्निकुण्ड के चारों ओर प्रजा खड़ी हुई है। सीते उस अग्निकुण्ड के समक्ष उस समय पर आ रही है और उस समय पर सब के लिए यह लगता है कि यह राम कितनी बार अपनी मर्यादाओं में रह करके स्वयं भी कष्ट को सहन करेंगे और अपने परिवार को कष्ट में डालेंगे। शायद इसलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है और इसी मर्यादा पुरुषोत्तम की यह कहानी जब आगे बढ़ती है तो हम थोड़ा सा यह भाव कर ही लेते हैं।

मर्यादा पुरुष श्रीराम, है सिद्ध प्रभु बलराम।
आदर्श बने जन जन के, वसुधैव कुटुम्ब थे जिनके।
जो भी ले इनका नाम, बिगड़े बनते सब काम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम
मर्यादा पुरुष श्री राम,है सिद्ध प्रभु बलराम।
दशरथ जिन के जनक कहाय, कौशल्या नन्दन जनग़ाए।
इक्ष्वाकु वंश की शान, क्षत्रिय जग दया निधान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु
मर्यादा पुरुष श्रीराम, है सिद्ध प्रभु बलराम।

अग्निकुण्ड से सरोवर बन जाता, यह सत्य की महिमा सारी है।

जिस समय पर वह अग्नि वेदी तैयार है और अयोध्या के निकट उस महेन्द्र उद्यान में उसी समय पर एक सर्वभूषण मुनि महाराज को केवल ज्ञान हुआ है और उसी समय पर अनेक देवगण आ करके उनके दर्शन करने के लिए आते हैं। इधर सीता की परीक्षा करने के लिए अग्निकुण्ड देखा जाता है तो वहाँ पर जो इन्द्र हैं, वह इन्द्र एक देव को नियुक्त करके जाता है कि सीता के ऊपर उपसर्ग आने वाला है और यह उपसर्ग हो रहा है, इस उपसर्ग से तुम रक्षा करना और एक मेघकेतु नाम के देव को वहाँ पर नियुक्त कर जाता है। वह बाकी के सब देव वहाँ सर्वभूषण मुनि के पास में केवल ज्ञान का उत्सव मनाने के लिए चले जाते हैं।

इधर सीता अग्नि वेदी की ओर बढ़ती है और उस समय पर जितने भी लोग वहाँ खड़े होते हैं सब सोचते हैं, राम से कहते हैं -

हे देव! न ऐसा कोप करो, माता नहीं बचने पाएगी।
हे राम! सिया हैं महासती पर आग अवश्य जलाएगी॥
राम कहे ऐसा ही था, क्यों किना अपवाद?
अब तो मेरी जानकी ही करवाए विश्वास॥
देव प्रसन्न अब होइए, कहे विभीषण राय।
भामण्डल हनुमान भी, रो-रोकर समझाय॥
लव कुश सोचें हाय क्या, हो गया काज अकाज।

माता फिर दीखें नहीं, क्या सोची रघुराज॥
नारद भी कहते यही, सुन ले राम-सरोष।
अवधिज्ञान बल मैं कहूँ, है सीता निर्दोष॥
है सीता निर्दोष न झूठी, करें प्रशंसा साधु।
माने मेरी सीख रोक दें, है ये काम असाधु॥
अग्नि भड़कती जाती थी, निर्घोष राम कर बोले।
अग्नि परीक्षा होनी होगी, जो होना सो होले॥
बात नहीं किसी की मानी जी, जो निश्चय मन ठानी जी
राम ने वही कराया।
देख पति हठ सुकुमारी, ने आगे कदम बढ़ाया॥
इधर सिया का पग बढ़ा, आगे सुनो बयान।
उसी समय श्री सकल मुनि, पाया केवल ज्ञान॥
वन्दन करने श्री इन्द्र देव, देवों के संग में आते हैं।
वहाँ अग्नि जलती देख, ध्यान में सब घटनाएँ लाते हैं॥
सीता की अग्नि परीक्षा है, सतवन्ति का सत् कायम हो।
हे मेघ रुको और करो मदद, जिससे सीता यश कायम हो।
इतना कह कर के इन्द्र चले और मेघ वहाँ रह जाता है।
चलते-चलते सीता का पग अग्नि समीप आ जाता है।
ऋषि नारद और नरेशों की., भी हाय सीख मैं न मानी।
यह सोच सिया पग बढ़ा देख, नयनों में राम भरे पानी॥
इतने में सीता उठती है, सिद्धों को स्मरण करती है।
नवकार मन्त्र का जाप करे, सम्यग्दृष्टि न डरती है।
ज्वाला लपटों के निकट पहुँच, सीता सिद्धों का ध्यान किया।
नवकार जपा सम्यग्दृष्टिन, मन से भय पाप निकाल दिया॥
राजा परजा देखते, सुन्दर सिया शरीर।
जलकर अब राख हो, सब ही हुए अधीर॥
सीता करती प्रार्थना, हे प्रभु दीनदयाल।
सत्यव्रत यही है मेरा, आप करो प्रतिपाल॥

सीता अपने हृदय में पूरा धर्म ध्यान धारण करके, अपने इष्ट देव को नमस्कार करती हुई, सिद्ध भगवन्तों को ध्यान करती हुई, जो पूर्व में अनेक-अनेक महापुरुष सिद्ध हुए हैं और इस तरह के अनेक-अनेक उपसर्गों को सहन किए हैं, उन सबको याद करती हुई, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान को स्मरण करती हुई, वह सीता प्रार्थना करती हुई एक-एक कदम आगे बढ़ाती जाती है। आप जानते हैं कि जिस समय पर आदमी विपत्ति में होता है उस समय पर उसके चित्त की एकाग्रता बहुत बड़ी होती है। धर्म ध्यान अपने आप उसके चित्त में एकाग्रता के साथ होता है। धर्म की अगर कोई परीक्षा होती है तो वह ऐसी विपत्तियों में ही होती है। इसलिए महापुरुष कभी भी विपत्तियों से डरते नहीं और हर व्यक्ति को विपत्ति में ही धैर्य धारण करना चाहिए। धर्म की परीक्षा अगर उसे कभी अपने ऊपर लेनी पड़े तो वह सोचना चाहिए कि अगर हमने अपने जीवन में पुण्य किया है, धर्म किया है तो हमारा कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है। अगर हमारे गुण, हमारा शील अगर निर्दोष है तो यह अग्नि भी आज पानी बनेगी ऐसा विश्वास सीता के अन्दर था और किसी के अन्दर नहीं था। इस तरह का विश्वास लेकर के वह सीता सिद्धों का स्मरण करते हुए उस अग्नि की ओर चलती चली जाती है।

करी प्रार्थना सिया ने, बढ़ी अग्नि में जाय।
जिधर जिधर बढ़ते चरण, अग्नि बनी जल जाए॥
अग्नि से सरोवर बन जाता, ये सत्य की महिमा सारी है।
चहुँ ओर कमल है फूल रहे, आश्चर्य भरे नर नारी है।
देवों ने रच के स्वर्ण कमल, शतदल वाला पधराई।
आरती उतारी कर पूजा, सती की महिमा है गाई॥

जैसे-जैसे सीता के कदम आगे बढ़ते चले गए, अग्नि की लपटें उस उस स्थान पर जल बनती चली गई और जहाँ-जहाँ सीता ने अपना कदम आगे रखा उसके नीचे कमल बिछते चले गए।

सीता के कहने से देवों ने जल प्रवाह रोक दिया

यह सब उस मेघ केतु देव के माध्यम से यह उपसर्ग दूर किया गया और उस समय पर सारी प्रजा ने जब यह देखा कि यह जल बढ़ता चला जा रहा है तो उस जल को कोई भी नहीं रोक पा रहा है और वह जल का प्रवाह इतना हो रहा है, इतना हो रहा है कि प्रजा उसमें आधी-आधी डूबने लग जाती है।

फिर उस जल ने लेकर उछाल, मैदान सरोवर कर डाला।
घुटनों से लेकर शीश तलक, सबको ही वहाँ डुबा डाला॥
नर नारी सब घबरा जाते हैं, बच्चों को अधर उठाते हैं।
सीता से प्रार्थना सभी करें, कृपा की आस लगाते हैं॥
हे जिनवाणी सम शुद्ध सिये, सच्ची अखण्ड सिया माता।
हम निरपराध हैं क्षमा करो, दुर्जन को करो दण्ड माता॥
तब सीता ने देवों से कह, पानी को कम करवाया है।
घटते घटते चरणों तक ही, जाकर के वह ठहराया है।

जब सीता ने देवों से कहा कि यह पानी लोगों के लिए हानिकारक हो रहा है, अब इसको बन्द किया जाए। तब जाकर के देवों ने उन सीता की बात मान कर के उस पानी को कम किया। फिर वह पानी घटते घटते जो सिर तक पहुँच गया था, वह धीरे-धीरे फिर वह पैरों तक आ गया। उस समय पर लव कुश सब तैरते-तैरते जब तक माँ के पास आ जाते हैं और धीरे-धीरे राम भी अब उस सीता को पाने के लिए उसके पास उनके पास निकट तक आने लग जाते हैं।

लव कुश आके माता के दोनों, ओर खड़े हो जाते हैं।
अग्नि में तपे स्वर्ण जैसी, वह चमक सिया में पाते हैं।
थी भीषण मूर्ति देवांगना सी, जानकी तेजमयी सोहती।
रघुवीर खड़े अनुराग भरे, सब तन मन उसका है मोहति॥
रघुवीर आ पास सीता के, ले क्षमा याचना करते हैं।
अब मेरे साथ चलो रानी, आँखों में आँसू भरते हैं॥

सीता जी का वैराग्य और आर्यिका दीक्षा

राम जी अब अपनी आँखों में अपने चेहरे पर प्रसन्नता लिए हुए, अनुराग भरे हुए अब सीता के आगे पहुँचते हैं। सीता के आगे हाथ बढ़ाते हैं और सीते से कहते हैं- चलो! आज तुमने इस लोक में विश्वास दिला दिया। अब यह लोक सन्तुष्ट हो गया। अब इस प्रजा जन के लिए कोई भी तरह की शंका नहीं रही। चलो! अब राजमहल की ओर चलते हैं। अब हम अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे और उसी समय पर सीता के भाव बदल जाते हैं और सीता कहने लगती है-

तब सीता कहने लगी, हो करके गम्भीर।
नहीं सुख थिर संसार में, स्वामी धरिए धीर॥
स्वामी धरिये धीर, बहुत कर्मों के दृश्य देखे हैं।
देव आपके साथ बहुत, दुनिया के भोग भोगे हैं॥
अब तो इच्छा है आगे, मैं नारी जन्म नहीं पाऊँ।
इसलिए मैं करूँ साधना, बन्धन से छूट जाऊँ।

सीता कहती है- हे देव! आपके साथ बहुत दुनिया के भोग, भोग लिए, बहुत आपके साथ रह ली। बहुत हमने अपने जीवन में रानी का सुख प्राप्त कर लिया, आपका कोई दोष नहीं है। दो-दो बार मेरा वन में गमन हो गया, पुत्र हो गए, तरह-तरह के युद्ध देख लिए। इस अस्थिर संसार के अन्दर क्या एक नारी को सुख मिल सकता है वह भी हमने देख लिया। अब मुझे कोई सांसारिक सुखों की चाह नहीं है। मेरा हृदय इस संसार की करतूतों को देखकर के बहुत भर चुका है। संसार में रह-रहकर के संसार के सुख-दुःख को सह करके अब मैं इस अबला नारी को कब तक इस तरह से अपने सहनशीलता के साथ में इसको समझाती रहूँगी? यह नारी होने का कब तक मैं यह अभिशाप अपने अन्दर बनाए रखूँगी? आप पुरुष हैं, राजा हैं। आपके लिए हक था कि आपने एक नारी को उससे बिना पूछे, उसको बिना कुछ कहे जिसे आप अपनी अर्धांगिनी मानते हैं, उससे एक बार भी बिना बताए आपने उसे वन में पहुँचा दिया, यह आपका हक

था क्योंकि आप राजा थे। आप पुरुष हैं और मैं अबला हूँ, नारी हूँ। इसलिए मैं कभी कुछ आपसे कह नहीं पाई। अब मैं यही संकल्प लेती हूँ कि हे भगवन्! मैं कुछ ऐसे कर्मों के बन्धन तोड़ूँगी। मैं ऐसी आत्म साधना करूँगी कि मुझे अब किसी भी जन्म में स्त्री न बनना पड़े। मैं भी पुरुष होकर के इस आत्मा को इतना तपाऊँगी कि मैं भी उस सिद्ध लोक को प्राप्त होगी, जहाँ पर संसार के कोई भी अपवाद नहीं होते और जहाँ संसार की कोई बन्धन नहीं होते। ऐसा विचार करके वह सीता राम से कहती है अब आप मुझे क्षमा करें अब मैं आपके साथ पुनः महल में नहीं जाऊँगी मैंने संकल्प लिया है।

यह संकल्प मेरा उसी समय हो गया था कि अगर आज मैं बच जाती हूँ, अगर आज ये अग्नि की लपटों में भस्म सात होने से मुझे कोई बचा लेता है तो फिर मैं अब दुनिया में किसी के लिए नहीं जीऊँगी, मैं सिर्फ अपनी आत्मा के लिए जीऊँगी, मैं सिर्फ अपनी आत्मा के लिए मरूँगी। अब मेरा दुनिया में कोई भी नहीं है, मेरा संसार से दिल भर चुका है। मैं अब विरक्त चित्त होकर के आर्यिका के पास जाती हूँ और जहाँ मुझे अध्यात्म की शिक्षा मिलेगी, अध्यात्म का सुख मिलेगा, आत्मा का ज्ञान मिलेगा। मैं उस आत्मा का ज्ञान, उस आत्मा की आराधना करने के लिए उन जिनेन्द्र भगवान के मार्ग का अनुसरण करने वाली उन आर्यिका के पास जाती हूँ। जहाँ जाकर के मुझे वह सब कुछ त्याग करके वह जिन दीक्षा ले करके मुझे अपना जीवन आगे बिताने का सौभाग्य मिले। अब इसी सौभाग्य के साथ मुझे जीना है। हे स्वामी! अब मुझे इस कार्य में बाधा नहीं बनिए और मैं अब आपकी किसी भी बात को अब स्वीकार नहीं कर सकती। यह विचार मैंने तभी कर लिया था जब मेरा एक एक कदम अग्निपथ की ओर बढ़ रहा था। तभी मैंने यह संकल्प कर लिया था कि इस अग्नि से अगर बच पाई तो मेरा अब यह तीसरी बार वन में गमन मेरी इच्छा से होगा। दो बार वन में गमन आपकी इच्छा से हुआ है, अब तीसरी बार में वन गमन स्वयं करूँगी और इस तरह से वह विचार करती हुई वह रानी सीता सबसे क्षमा माँगती हुई वहाँ से निकल जाती है।

क्षमा अब मुझको करना जी, दोष मम् मत मन धरनाजी।
नहीं अभिलाषा है कोई।
दीक्षा लेना चाहूँ स्वामी, आज्ञा दीजे सोई॥
काले घुंघराले मसृण, लम्बे लम्बे केश।
करकमलों से लोंचकर, किया अर्जिका वेश॥
श्रीराम देखते ही रहते, चरणों में उनके फेंक दिए।
दोनों कुमार थे पास खड़े, नैनों में अपने नीर लिए॥
श्रीराम को तब मूर्छा आई, उत सिया मुनिजी पास गई।
केवली सकल भूषण समीप, ली दीक्षा श्री जिन धर्ममई॥
लक्ष्मण ने कर भ्राता सचेत, बहुभांति उन्हें समझाया है।
पर मोह वशी हो पद्मनाभ, देवों पर रोष के दिखाया है।
कहते हैं मेरी रानी को, यदि आज देव नहीं देवेगे॥
मैं उनसे युद्ध करूँगा निश्चित, वह मुझसे बच नहीं पाएँगे।

केवली सकलभूषण जी द्वारा राम सीता, लक्ष्मण आदि सबके पूर्व भवों का वर्णन

इधर वह केवली जो सकलभूषण केवली थे, उनका निकट में ही केवल ज्ञान हुआ था तो सभी राम लक्ष्मण और वह सीता उन्हीं केवली के समीप जाकर के पृथ्वीमती आर्यिका के पास में वह यह आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर लेती हैं। दीक्षा ग्रहण करने के उपरान्त जब सभी लोग दुःखी होते हैं। राम विशेष रूप से दुःखी होते हैं तो उस समय पर सब उन केवली भगवान मुनि महाराज के समीप बैठ करके उनसे उपदेश प्राप्त करने के लिए निवेदन करते हैं। उस समय पर वह केवली भगवान उन राम लक्ष्मण को समझाते हैं और उन सब के भव-भवान्तर का भी वर्णन किया जाता है। यह बताया जाता है कि सीता अब जिस तरह का यह निर्णय ली है यही सीता के लिए यह निर्णय उचित था क्योंकि सीता के भाग्य में राज सुख था ही नहीं और इसी कारण से इस सीता को बार-बार अपवाद का पात्र बनना पड़ता था। उन केवली भगवान ने इस सीता के पिछले भवों का वर्णन

किया और कहा कि इस सीता के अपवाद होने का जो मुख्य कारण है कि इसने पूर्व जन्म में कुछ कर्म बन्ध किया था। वह कर्म बन्ध इसने हँसी-हँसी में कर लिया था। एक बार यह स्त्री पर्याय में ही थी और पिछले जन्म में अपने घर की खिड़की पर बालकनी में बैठकर के झरोखों से देख रही थी। इसे सामने एक मुनि महाराज दिखाई दिए। उन मुनि महाराज के पास में उस समय पर उनकी पूर्व जन्म की ही उनकी वह बहन मिलने के लिए उनके पास में आई थी और वह उनके पास बैठी थी और वह मुनि महाराज उससे बात कर रहे थे। इस सीता ने उस समय पर उन मुनि महाराज के लिए अपवाद किया था। देखो! यह दिगम्बर मुनि होकर के भी कैसे स्त्रियों से बातें कर रहे हैं? ऐसे हँस रहे हैं जैसे मानो पति पत्नी हो। इस तरह का यह अपवाद उसने अपने अनेक लोगों के साथ में, अपनी सहेलियों के साथ में, उनकी हँसी उड़ा करके किया था। उसी अपवाद के साथ में जो उसने उस समय पर कर्म का बन्ध किया, यह उसी का परिणाम था जो उसे इस जन्म में बार-बार वन गमन करना पड़ता और बार-बार उसके लिए कोई न कोई अपवाद उसके सामने आ जाता। अब इसे अपने कर्म बन्ध से छूटने के लिए यही तपस्या करना उचित है और इस तरह से उनके केवली भगवान ने जब सीता के बारे में बताया तो वहाँ पर सुग्रीव हनुमान जी आदि सभी खड़े थे। सबने राम और रावण उनके बारे में भी पूछा और यह पूछा कि रावण क्यों सीता को हरण करके ले गया? तब केवली भगवान ने अपने ज्ञान के माध्यम से उनके पिछले भवों के बारे में बताया कि यह रावण का जीव सीता के जीव से कई भवों से प्रेम करता आ रहा है। हर भव में यह राम और लक्ष्मण उसके साथ में वैर रखकर के उसे सीता प्राप्त नहीं करने देते। इस भव में भी उसी संस्कार के कारण से उस रावण ने उस सीता को प्राप्त करने की इच्छा की लेकिन वह नहीं कर पाया। यह जन्म जन्मान्तरों का इनके साथ वैर चला आ रहा है। राम और लक्ष्मण का प्रेम भी जन्म जन्मान्तरों से चला आ रहा है। सीता का प्रेम भी राम लक्ष्मण के साथ में जन्म जन्मान्तरों से चला रहा है। यह सब जन्म जन्मान्तरों के संस्कार हैं। इन्हीं संस्कारों के कारण से यह जीव इस संसार में आकर के अनेक तरह

से सुख या दुःख भोगा करता है। जब सबने केवली भगवान की यह वाणी सुनी, सीता जी भी वैराग्य को प्राप्त हो करके अपनी तपस्या कर रही हैं इधर और भी अनेक सुग्रीव आदि राजा धीरे-धीरे वैराग्य को प्राप्त होते हैं।

श्रीराम की मुनिदीक्षा और केवल ज्ञान की प्राप्ति

धीरे-धीरे यह बात जब श्रीराम को पता पड़ती है कि सब अपने जीवन के अन्त में आत्म कल्याण करने के लिए वन गमन करते हैं तो उनके मन में विचार आता है कि आखिर हम इस मोह की माया में कब तक पड़े रहेंगे? ऐसा विचार करके उन्हें अपना लक्ष्य याद आता है। यह लक्ष्य क्या है? वह लक्ष्य आपको भी जानना है कि क्षत्रिय पुरुषों का लक्ष्य केवल राजत्व नहीं होता है। राजा बन करके सुख भोगना ही क्षत्रिय पुरुषों का लक्ष्य नहीं होता है। क्षत्रिय पुरुषों का लक्ष्य कुछ और भी होता है। यह बात मैथिली शरण गुप्त ने पंचवटी नाम की एक छोटी सी किताब में इस लक्ष्य के बारे में लिखी है वह मैं आपको बता रहा हूँ।

होता यदि राजत्व मात्र ही लक्ष्य हमारे जीवन का,
तो क्यों अपने पूर्वज उसको छोड़ मार्ग लेते वन का।
परिवर्तन ही यदि उन्नति है तो हम बढ़ते जाते हैं,
किन्तु मुझे तो सीधे सच्चे पूर्व भाव ही भाते है।

यह मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ हैं जो उन्होंने उस समय पर लिखी है जब राम लक्ष्मण एक पंचवटी में वन के अन्दर विश्राम कर रहे हैं। वह उस समय पर भी विचारते हैं क्योंकि आदर्श का विचार हमेशा किया जाता है। राम इस समय पर भी यही विचारना करते हैं कि मात्र राजत्व होना ही यही हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं है। हमारे पूर्वजों ने हमेशा इस राजत्व को छोड़कर के वन के मार्ग को अपनाया है और हमें भी इसी वन गमन का मार्ग अपनाना है। क्योंकि सन्यास आश्रम के बिना, वानप्रस्थाश्रम को स्वीकार किए बिना इस जीवन का कभी भी अच्छा समापन हो नहीं सकता है। यह विचार करके उस समय पर वह श्रीराम अपने मन में यह भाव करते हैं कि हमारे मोह के कारण से अनेक लोगों को सुख भी मिला

है, तो दुःख भी मिला है। कितने ही लोगों से हमने शत्रुता ली? कितने ही राजाओं से हमने लड़ा? लड़ने के बाद भी आज हमारा यह राजत्व अगर हमारे लिए ही एक वैर का कारण बन जाता है। भले ही हमारी दासता में कई लोग हमारे सामने रह लें लेकिन कहीं न कहीं उनके अन्दर भी आता है कि हम इनकी दासता कब तक स्वीकार करेंगे? इसलिए अनाधिकार किसी पर अपना दबाव बनाना उचित नहीं। यह उन राजा को भी भासने लग जाता है।

इधर उनका जो कृतान्तवक्र सेनापति है वह भी धीरे से जा करके वह भी वैराग्य को प्राप्त हो करके उनका सेनापति पद को छोड़ कर के निकल जाता है। उस समय पर जब राम अपने आप को बिल्कुल अकेला महसूस करने लग जाते हैं क्योंकि लव कुश भी जा कर के अपना आत्म कल्याण करने के लिए गृह त्याग कर देते हैं और इस तरह से क्षत्रियों की पद्धति निरन्तर चल रही होती है। तब श्रीराम भी अपने अन्दर यह भावना करते हैं और उसी भावना के परिणाम स्वरुप वह सुब्रत नाम के एक महामुनि राज के पास में जा कर के दिगम्बर जिन दीक्षा लेते हैं। यह जैन रामायण के अन्दर उनका जीवन का एक समापन का बहुत सुन्दर तरीका बताया गया है। सब प्रकार के मोह का त्याग करके जब वह जिन दीक्षा लेते हैं तो अनेक प्रकार के उनके अन्दर तपस्या करने के परिणाम आते हैं। और उन तपस्या के प्रभाव से उनके अन्दर अनेक तरह की ऋद्धियाँ प्रकट हो जाती हैं। अनेक तरह की सिद्धियाँ प्रकट हो जाती हैं। वह आहार करने के लिए निकलते हैं जैसे मुनि महाराज आहार करने के लिए निकलते हैं, वैसे ही वन में आहार करने के लिए निकलते हैं। उनका संकल्प होता है कि मैं 5 दिन के बाद आहार ग्रहण करूँगा। वह 5 दिन में एक बार आहार ग्रहण करने के लिए निकलते हैं और वन में भी उन्हें आहार की विधि मिलती है, पंचाश्चर्य होते हैं। इस तरह से वह अपने जीवन के कई वर्ष वह इसी तरह साधना के साथ में से व्यतीत करते हैं । हर आत्मा अपने अन्दर के परमात्मा तत्त्व को प्रकट करने के लिए इसी तरह की आत्म साधना करता है तब वह परमात्मा बनता है।

आत्मा परमात्मा कैसे बनेगा जब वे अपनी अन्तरात्मा के अन्दर अपनी ही आत्मा को शुद्ध बनाएगा और अपने सारे पुराने संस्कारों को, पुराने कर्मों को हटाएगा, नष्ट करेगा, तब उसके अन्दर की आत्मा से वह परमात्मा तत्त्व प्रकट होता है।

ज्यादातर लोग इस दुनिया के अन्दर श्री राम को भगवान सिर्फ इसलिए मानते हैं कि उन्होंने रावण का वध कर दिया आप विचार करें क्या केवल एक रावण को मारने से राम भगवान बन जाते हैं। किसी एक व्यक्ति को अगर कोई मार देता है तो क्या यही उनके लिए भगवान बनने के लिए sufficient होता है। यह विचार एक अच्छे विचार शील व्यक्ति को जरूर करना चाहिए। इसलिए मैं आप से कहता हूँ कि आपकी वह रामायण तब तक अधूरी रहेगी जब तक आप राम को राम भगवान के रूप में न देख ले और राम को राम भगवान के रूप में देखना है तो आपको उन्हें इस रूप में देखने को तभी मिलेगा जब आप उनके जीवन के अन्त को भी देखें कि उन्होंने अपने जीवन के अन्त में क्या किया ?

अपने जीवन के अन्त में उन्होंने सबसे मोह त्याग करके, सबसे क्षमा माँग करके जब व्यक्ति अपने ही चरित्र को उज्जवल बनाता है तो वह केवल स्व में स्थित होता है, स्व की आराधना करता है, केवल अपने अस्तित्व को ही देखता है, दुनिया के हर व्यक्ति, हर पशु, हर पक्षी, हर जीव के प्रति उसके मन में बराबर का भाव रहता है। समभाव की आराधना होती है और वह समभाव इस संसार के राजपाट को त्याग हुए बिना नहीं आ सकता। सब जीवों के प्रति समता भाव राजा बन करके नहीं आ सकता क्योंकि राजा बन कर के तो हमें बहुत जिम्मेदारियों का निर्वाह करना पड़ता है। दूसरे आततायी राजाओं से लड़ना पड़ता है, समभाव कहाँ रहेगा। सब जीवो के प्रति समभाव, दया भाव, करुणा भाव यह भाव जब लाने होते हैं तब वह जीव सब तरह के अपने परिग्रह का त्याग करता है, संगति का त्याग करता है और इसी तरह का त्याग करके वह श्री राम दिगम्बर मुनि महाराज बनकर के वनों वनों में, जंगलों जंगलों में भी वह तपस्या करते हैं

और तपस्या करते करते वह उस कोटि शिला के पास पहुँचते हैं। ध्यान है! लक्ष्मण जी ने उस कोटि शिला को उठाया था। वह पवित्र कोटि शिला देव रक्षित शिला होती है और श्री राम जी एक रात्रि में उसी कोटि शिला के ऊपर जा कर के बैठ जाते हैं और वहाँ आत्म ध्यान लगाते हैं व उस रात्रि में उन्हें इतना आत्म ध्यान लगता है, इतनी एकाग्रता आती है आत्मा की कि वह आत्मा के अन्दर छिपी हुई, छुपी हुई वह जो सर्वज्ञता है, ज्ञान की जो पूर्णता है, जिसे केवल ज्ञान कहा जाता है। वह केवल ज्ञान उन श्री राम को प्रगट हो जाता है और वह उस समय पर परमात्मा बन करके इस संसार से ऊपर उठ जाते हैं। कोटि शिला से भी ऊपर उठ जाते हैं। आकाश में अधर में आ जाते हैं और उस समय पर अनेक देवता लोग उनकी पूजा करने के लिए आते हैं, उत्सव मनाते हैं और उनके चरणों में बैठकर के वह श्री राम भगवान को अब भगवान के रूप में देखते हैं और उस समय पर उनकी श्री राम केवली भगवान की जय, इस तरह की जय, जयकारों से सारा संसार गुंजायमान होता है। अब वे भगवान बनते हैं। जब भीतर का आत्मा जागृत हो जाता है, जब हमारे अन्दर का ज्ञान परिपूर्ण हो जाता है और जिस ज्ञान के अन्दर हमें दुनिया की त्रिकालवर्ती सब बातें दिखाई देने लग जाती हैं ऐसे त्रिकालदर्शी, त्रिकालज्ञाता वह सर्वज्ञ भगवान, श्री राम बन जाते हैं। तब जाकर के हम उनको श्री राम केवली भगवान कहते हैं। उस दशा में जब वह केवली के रूप में विराजमान होते हैं तब भी वह जगह जगह पर विहार करते हुए, उपदेश देते हुए अपना आयु का पूर्ण समय व्यतीत करते हैं। आयु तो हर किसी की पूर्ण होना है और आयु पूर्ण होना यह निश्चित है लेकिन वह आयु कैसे पूर्ण करना? अगर उसी आयु के पूर्ण होने से पहले कोई जीव अपने अन्दर सर्वज्ञता प्राप्त कर लेता है। भगवत दशा को प्राप्त कर लेता है तो फिर आयु पूर्ण होने के बाद में वह शरीर तो छूट जाता है। लेकिन आत्मा हमेशा के लिए परमात्मा ही बना रहता है उसे फिर किसी योनि में जाकर के जन्म नहीं लेना पड़ता है ऐसी वह अपनी आयु को पूर्ण कर रहे हैं।

श्री राम चरित्र कथा हम सबके लिए एक विशेष शुभ gift है।

जैन रामायण के अन्दर राम भगवान की आयु 17000 वर्ष की बताई है, कितना वह दिव्य पुरुष हैं, महापुरुष हैं, लेकिन ऐसा नहीं कि किसी भगवान ने कोई अवतार ले लिया हो। वह भगवान यहाँ आकर के बने हैं और वह भगवान बनते हैं तो इसी तरह का पुरुषार्थ करते हुए बनते हैं जिसे मोक्ष पुरुषार्थ कहा जाता है। चार पुरुषार्थो में अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष पुरुषार्थ होता है। इस मोक्ष पुरुषार्थ को अपनाए बिना कभी भी कोई भी जीवात्मा भगवान नहीं बन सकता तो वह श्रीराम भी अनेक जन्म जन्मान्तरों से होते हुए जब इस श्री राम की पर्याय में आए तो उन्होंने अपने मोक्ष पुरुषार्थ के माध्यम से अपनी वह उस आयु के अन्त, अन्त में केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया और उस देह में रहते हुए उन्होंने उस समय पर पूरा जीवन की साधना की। लगभग उन्होंने 25 वर्ष तक उन्होंने मुनि जीवन जिया लेकिन केवली भगवान बनने के बाद में उनकी आयु 7 वर्ष की शेष रह गई थी और 7 वर्ष तक उन्होंने केवल भगवान बन करके विहार किया और जब उनकी वह 7 वर्ष की भी आयु पूर्ण हो गई तो वह सब प्रकार से इस शरीर और इस शरीर को उत्पन्न करने वाले जितने भी कर्म हैं उन आयु आदि कर्मों को छोड़कर के वह हमेशा हमेशा के लिए लोक के अग्रभाग पर सिद्ध प्रभु के रूप में विराजमान हो जाते हैं। यही सिद्ध भगवान श्रीराम कहलाते हैं। भगवान की यह यात्रा, एक आत्मा की यह यात्रा परिपूर्ण दशा में जो सिद्धत्व की ओर होती है। यह उन्होंने यात्रा पूरी की, लोक में इस यात्रा का ज्ञान बहुत कम लोगों को होता है। लोग केवल सीता की अग्निपरीक्षा तक ही बस राम को जान पाते हैं उसके आगे नहीं जान पाते हैं। आप लोगों का यह सौभाग्य है कि आप लोगों ने पहली बार शायद श्रीराम के पूरे जीवन चरित्र को सुना है और श्री राम की वह यात्रा जो नर से नारायण की यात्रा है, जो एक आत्मा से परमात्मा बनने की यात्रा है यह यात्रा आपने पूर्ण सुनी है और यह पूर्ण यात्रा 11 दिनों के अन्दर यह जैसा संकल्प लिया गया था, श्रीराम के प्रभाव से ही वह संकल्प शायद पूर्ण हुआ

और निर्विघ्न रुप से यात्रा एकादशी को शुरू हुई थी ग्यारस को, 11 दिन में यह यात्रा पूर्ण हुई है। इस यात्रा के समापन में आचार्यो ने लिखा है, आचार्य रविषेण महाराज ने लिखा है पद्मपुराण के समापन में कि जो ऐसे श्री राम का जीवन चरित्र सुनता है और उन श्रीराम के जीवन चरित्र को पढता है, लोगों को सुनाता है उस जीव के अन्दर उसकी यशः कीर्ति बढ़ती चली जाती है और उसके लिए अपने इष्ट वस्तुओं की प्राप्ति होती चली जाती है। जो भी लोग किसी भी तरह से दुखी हैं आज संसार में उन सारे लोगों के लिए, हर जाति, हर सम्प्रदाय, हर धर्म के लोगों के लिए मैं यह एक gift देना चाहता हूँ। श्रीराम के इस जीवन चरित्र की gift सबके लिए कि सबका जीवन आनन्दित हो, मंगलमय हो, सबके जीवन के कष्ट दूर हो आपको अपने जीवन के किसी भी प्रकार के बुरे ग्रह हो, चाहे राहु केतु की बुरी दशाएँ चल रही हो। आचार्यो ने लिखा हैं केवल राम चरित्र को सुनना आपके सारे ग्रह केतुओ की दशाएँ सब दूर हो जाएँगे। आपके सारे जीवन में मंगल होगा और आपसे यह कहना चाहता हूँ अगर आपको यह राम कथा का श्रवण अच्छा लगा हो आप अपने जीवन में निरन्तर मंगल चाहते हो तो यह राम भगवान का कीर्तन करते रहना और यह कीर्तन अपने मन में उनके गुणों के अनुसार उसको सुनने की कोशिश करना। अगर आप अपने लिए यह मन बना सके, यह भाव ले सके कि हमें अपने जीवन में किसी भी तरह का कोई भी इष्ट वस्तु की प्राप्ति करना है, आपके मन की कोई भी इच्छा है वह इच्छा को पूर्ण करना है, आपके अन्दर अगर कोई भी अपने परिवार के लिए धन सम्पदा के लिए कुछ करने का भाव है मैं आज आपसे कह रहा हूँ यह 11 दिन में पूर्ण हुआ राम का जीवन चरित्र जो व्यक्ति 11 बार सुन लेगा उसके जीवन में किसी भी तरह का अमंगल होगा वह दूर हो जाएगा। आपको यह 11 दिन के 11 एपिसोड 11 बार सुनने हैं और कुछ नहीं करना आपको। यह राम भगवान का यह कीर्तन और उनकी आराधना आप अगर निरन्तर करेंगे तो आपके जीवन में हर तरह की अभाव दूर होंगे, रोग दूर होंगे, विघ्न बाधाएँ दूर होंगी और यह बात आप अपने अन्दर अगर संकल्प के साथ तो आपके अन्दर का आत्म विश्वास, संकल्प

शक्ति भी बढ़ेगी। आपको वह हर चीज मिलेगी जो आप चाहते हो ऐसा विचार जो भी लोग करें उनके लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है कि वे लोग 11 बार कम से कम इस रामकथा को फिर से सुने और अनेक अनेक लोगों को सुनाने के लिए भी प्रेरित करें जिससे कि आपके पुण्य की वृद्धि होगी। पुण्य तभी बढ़ता है जब हम कथा को स्वयं भी सुने और दूसरे को भी सुनाये तो आप कैसे सुना सकते हो? हर जगह तो आप कथा बाँचने बैठ नहीं सकते हो। जो आप के लिए यह साधन मिले हुए हैं, आजकल इस डिजिटल मीडिया के माध्यम से उन साधनों का उपयोग करते हुए आप उस कथा को दूसरों के पास भी पहुँचाए तो आपके लिए भी वह पुण्य भाव की वृद्धि होगी और हमेशा इस कीर्तन को आप करते रहें। जो कीर्तन आपके सामने पहले भी किया है लेकिन पूर्ण एक भी बार नहीं हुआ शायद एक बार बीच भी पूर्ण किया था। आज इस कीर्तन का फिर से समापन करने के समय पर इसको पूर्ण रूप से कीर्तन करते हैं और यह कीर्तन आपको हमेशा याद रखना है। इसी को गुनगुनाते रहना है। आपके हृदय में हमेशा राम रहेंगे तो आराम भी रहेगा किसी भी तरह का कोई कष्ट कभी भी नहीं होगा

मर्यादा पुरुष श्रीराम है सिद्ध प्रभु बलराम
आदर्श बने जन जन के, वसुधैव कुटुम्ब थे जिनके।
जो भी ले इनका नाम बिगड़े बनते सब काम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम, है सिद्ध प्रभु बलराम।
दशरथ जिनके जनक कहाए, कौशल्या नन्दन जन गाए।
इक्ष्वाकु वंश की शान, क्षत्रिय जग दया निधान।
प्रभु श्रीराम,प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम, हैं सिद्ध प्रभु बलराम।
स्वार्थ मोह को तज के, उपकार लोक का करके
अपवाद का रखते ध्यान, पाते खुद में सम्मान।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम हैं सिद्ध प्रभु बलराम।

हर प्राणी जिनको गाता, न जातिभेद मन लाता।
सीता के स्वामी प्राण, हनुमान के जो अभिमान।
प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीराम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम है सिद्ध प्रभु बलराम।
पितु वचन निभाने खातिर, तज के राजा सुख आखिर
राजा वन वन करते विश्राम, अन्याय अनीति न काम।
प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्री राम, प्रभु श्रीराम।
मर्यादा पुरुष श्रीराम, है सिद्ध प्रभु बलराम।

बोलो सिद्ध प्रभु 1008 श्री राम भगवान की जय।